PRIMARYKOSH.

FOR THE USE OF

The Students of the Middle and Primary Schools.

BY

B. G. S.

प्राइमरीकोष

मिडल और प्राइमरी स्कूलों के छात्रों के उपकारार्थ ।

बी० जी० एस० रचित.

Fourth Edition—Revised and enlarged.



पटना—"खड्गविलास" प्रेस—बांकीपुर ।
बाबू चण्डीप्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित और प्रकाशित ।
१८९५.

श्रीगणेशाय नमः ।

भूमिका ।

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे तु जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥

यह छोटा अभिधान हाथ में लेते ही पाठकगण अवश्य सोचेंगे कि जब सात आठ सौ या अधिक पृष्ठ के कोष हिन्दी भाषा में वर्तमान ही हैं तब इस छोटे से ग्रन्थ के लिये श्रम करने का क्या प्रयोजन ? इस के लिखे जाने का मुख्य कारण यही कहना होगा कि जितने कोष आज तक बने हुए हैं किसी से हिन्दी के पाठकों का पूरा काम नहीं निकलता ; विशेष कर बिहार तथा संयुक्त प्रदेश के शिक्षाविभाग में जब से नये परिवर्तन की पुस्तकें प्रचलित हुई हैं। तब से, छात्रों और अनेक शिक्षकों को भी, कठिन २ शब्दों के अर्थ जानने में बड़ी कठिनता आ पड़ी है । इस लिये बहुत से कोषों के सारांश तथा अनेक हिन्दी के बड़े २ ग्रन्थों और शिक्षाविभाग की प्रायः सभी पुस्तकों के कठिन २ शब्दों से इस का निर्माण किया गया है। यद्यपि यह ग्रन्थ छोटा है पर छात्रों के लिये बड़े २ कोषों से बहुत अधिक लाभकारी होगा, ऐसी दृढ़ आशा होती है।

स्कूलों की पाठ्य पुस्तकों में उर्दू शब्द तो मिलते ही थे, अब कतिपय अंगरेज़ी शब्द भी मिलने लगे हैं, जिन के अभिप्राय

जानने में छात्रों को विशेष कठिनता होने लगी है ; इसलिये हिन्दी में व्यवहृत अङ्गरेज़ी भाषा के शब्द भी संग्रह किये गये हैं। और जब अङ्गरेज़ी भाषा के शब्द संग्रह किये गये तो उन का अङ्गरेज़ी स्पेलिंग (हिज्जे) लिख देना भी उचित जान पड़ा। प्रायः ऐसेही उर्दू शब्दों के रूप भी उर्दू में लिखे गये हैं।

अन्यान्य कोषों में स्त्रीलिङ्ग पुलिङ्ग तो लिखे गये हैं पर पार्टस औफ़ स्पीच (Parts of Speech) वा पद नहीं लिखे गये हैं। मुझे शिक्षाविभाग के कई उच्च श्रेणी के सुयोग्य कर्मचारियों ने कहा था कि पार्टस औफ़ स्पीच के सहित एक कोष की बड़ी ही आवश्यकता है। अतएव उस अभाव को दूर करने के लिये इस कोष में प्रत्येक शब्द के साथ २ संज्ञा, क्रिया, अव्यय, कर्तृवाचक, कर्मवाचक, भाववाचक, गुणवाचक और स्त्रीलिङ्ग पुलिङ्ग सूचक सङ्केत दिये गये हैं।

एक तो कोष को व्याकरण से सम्बन्ध ही है दूसरे इस में जो सङ्केत दिये गये हैं उन को स्पष्ट जानने के लिये व्याकरण के कुछ नियम दिये गये हैं।

जिन जिन सज्जनों से मैं ने सहायता पाई है उन लोगों की कृतज्ञता प्रकाश किये विना भूमिका समाप्त करना उचित नहीं। अतः, प्रथम, मैं मोतिहारी ट्रेनिङ्ग स्कूल के द्वितीय शिक्षक पं० रामकृष्ण पाण्डे को अनेक धन्यवाद देता हूं कि जिन्हों ने इस के संग्रह में कठिन परिश्रम स्वीकार कर सहायता की है। यदि

आरम्भ में उन की ऐसी सहायता न मिलती तो इस के प्रकाश में अधिक विलम्ब होता। दूसरे, मैं पण्डितशिरोमणि, शील-निधि, शिक्षादर्पण, बालचन्द्रिका आदि ग्रन्थों के कर्त्ता, श्री कन्हैयालाल त्रिपाठी, संस्कृत प्रोफ़ेसर पटना कौलेज, को सहस्रशः धन्य वाद देता हूं, जिन्हों ने अपना अमूल्य समय लगा कर प्रत्येक फ़ौर्म के प्रूफ़ का संशोधन भली भांति किया तथा उचित और आवश्यक शब्दों को जोड़ दिया। तीसरे, पण्डितवर श्रीयुक्त शिवप्रसाद पाण्डेय काव्यतीर्थ को अनेक धन्यवाद देता हूँ, जिन्हों ने अपने पाठ का अमूल्य समय लगा इस के प्रत्येक फ़ौर्म का प्रूफ़ सुविचारपूर्वक देखा है।

चौथे, मैं पण्डित भानुदत्त वैशारद 'शब्दार्थ भानु' के कर्त्ता, 'बृहत् प्रकृतिबोध अभिधान' के प्रकाशक, मुंशी राधालाल 'हिन्दी शब्दकोष' के कर्त्ता, बाबा बैजूदास 'विवेक कोष' के कर्त्ता, पण्डित श्रीधर पाठक 'श्रीधरकोष' के कर्त्ता' पादरी एम॰ टी॰ ऐडम साहिब 'हिन्दी कोष' के संग्रहकर्त्ता को भी मैं अनेक धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, क्योंकि इन लोगों के ग्रन्थों से मुझे बड़ी भारी सहायता मिली है।

प्रथम बार, यदि शीघ्रता के कारण कुछ त्रुटियां और भूलें रह गई हों तो सज्जनगण कृपा कर मुझे सूचित करेंगे कि मैं उन्हें दूसरी बार सुधार दूं और उन की कृतज्ञता प्रकाश कर सकूं।

बालकों के विशेष उपकारार्थ मैं ने कविवर चन्दनराम कृत अनेकार्थ भी, जिन के दोहे कण्ठ कर लेने से बालक कृदादि अर्थ सुगमता से कर सकेंगे, इस के साथ जोड़ दिया है।

यदि इस कोष से हिन्दी के पाठकों का कुछ भी उपकार होगा तो मैं अपना श्रम सफल समझूंगा।

जी. एस.।

सङ्केत।

सङ्केत।	पूरा शब्द।
अ॰	अव्यय।
सं॰	संज्ञा।
पु॰	पुल्लिङ्ग।
स्त्री॰	स्त्रीलिङ्ग।
गु॰	गुणवाचक।
क्रि॰ वि॰	क्रिया विशेषण।
क॰	कर्तृवाचक।
र्म॰ र्म॰	कर्मवाचक।
सर्व.	सर्वनाम
भा॰	भाववाचक।
क्रि॰ अ॰	क्रिया अकर्मक।
क्रि॰ स.	क्रिया सकर्मक।
समु॰	समुच्चयबोधक।
उप॰	उपसर्ग।

धि· अधिकरणवाचक ।

पू· क्रि· पूर्वकालिक क्रिया ।

व्याकरण ।

सार्थक शब्द के तीन भेद हैं—संज्ञा, क्रिया और अव्यय ।

संज्ञा पदार्थ के नाम को कहते हैं। जैसे वृक्ष, नदी, पर्वत आदि ।

क्रिया काम के करने वा होने को कहते हैं। जैसे करेगा, होता है और गया इत्यादि।

अव्यय उसे कहते हैं जिस में कारकों के कारण विकार न हो। जैसे 'और, पर, परन्तु' इत्यादि ।

संज्ञा तीन प्रकार की होती हैं—रूढ़ि, यौगिक और योगरूढ़ि ।

रूढ़ि संज्ञा वे कहाती हैं जिन के टुकड़े सार्थक न हो सकें। जैसे घर और घोड़ा।

यौगिक संज्ञा वह है जो प्रकृति प्रत्यय अथवा शब्दों के संयोग से बनी हो। जैसे धनवान् और पाठशाला इत्यादि।

योगरूढ़ि संज्ञा का लक्षण यह है कि पूर्वोक्त प्रकार से बनी तो हो, परन्तु अपने सामान्य अर्थ को छोड़ कर किसी विशेष अर्थ को जनावे। जैसे पङ्कज, पीताम्बर, यहां पङ्क=कीच, ज=जन्म

के चिन्ह ' को ' के स्थान में ' से ' आता है। जैसे पिता ने पुत्र से एक बात कही।

४ सम्प्रदान वह है जिस के 'निमित्त' क्रिया की जाय। उस के चिन्ह 'के लिये', 'के अर्थ', 'को' और 'निमित्त' इत्यादि हैं। जैसे मोहन के लिये, वा अर्थ, वा के निमित्त पुस्तक लाये हैं अथवा मोहन को दिया है। नमस्कारवाचक शब्द के साथ भी सम्प्रदान कारक होता है। जैसे " आप को प्रणाम है" ।

५ अपादान विभाग को कहते हैं। उस का चिन्ह 'से' आता है। जैसे वृक्ष से पत्र गिरते हैं। और जब मुख्य कर्म नहीं रहता तो 'से' के स्थान में 'को' हो जाता है। जैसे दरिद्र धनी से धन को जांचते हैं, गाय से दूध दुहते हैं। जब धन और दूध पहिले कर्म उड़ा देते हैं तो गाय को दुहते हैं, दरिद्र धनी को जांचते हैं ऐसा बोलते हैं। कभी 'से' को 'को' होता है और कभी पद्य में 'पै' अधिकरण का चिन्ह आता है। जैसे 'बलि पै जाचतही गये, वामन तन कर्तार' इत्यादि।

६ सम्बन्ध का अर्थ स्वत्व है, अर्थात् जहां अपनापन प्रकाशित होता है वहां सम्बन्ध कारक होता है और उस के चिन्ह 'का', 'के' "की" आते हैं। जैसे राजा का घोड़ा, ब्राह्मण का घर इत्यादि।

७ अधिकरण आधार को कहते हैं। उस के चिन्ह 'में', 'पै' 'पर' हैं। जैसे तपस्वी कुटी में रहता है, खेत में अन्न उपजता है। " पर्वत पै खोदे कुवां कैसे निकले तोय।"

८ सम्बोधन का अर्थ चिताना है, उस में प्रथम कारक होता है और उस के चिन्ह 'हे', 'अरे', 'हरे', 'हो', 'आ, 'ए' इत्यादि हैं जैसे हे राम, अरे नीच, कृष्ण हो इत्यादि।

क्रिया धातु से बनती है और धातु वह है जिस के अर्थ से कोई व्यापार अर्थात् काम समझा जाय और उस के अन्त में ना होवे।

धातु दो प्रकार के होते हैं—१ अकर्मक, २ सकर्मक। अकर्मक धातु उसे कहते हैं जिस का फल और व्यापार दोनों एकही ठौर हो, अर्थात् काम का करना और उस के जो फल सिद्ध हों दोनों ही एकत्र रहें। जैसे मोहन सोता है इस में सोने का काम अर्थात् नेत्रादि बन्द करना मोहन में है और उस का फल अर्थात् निद्रित हो जाना दोनों मोहन में ही हैं इस लिये सोना अकर्मक धातु है। ऐसे ही जागना, भागना, उठना, बैठना, आदि। और जब फल और व्यापार दोनों भिन्न २ रहें तो सकर्मक धातु होता है। जैसे मोहन पुस्तक देखता है। मोहन के नेत्र में का विकाशादि व्यापार है, उस का फल देखा जाना पुस्तक में है, इस कारण देखना सकर्मक हुआ। ऐसे ही सुनना, कहना आदि जानो।

कृदन्तीय कर्तृवाचक संज्ञा से कर्ता का बोध होता है। जैसे पालनेवाला, पालनेहारा, बजवैया, गवैया, मिलनसार, होनहार, विलासी आदि। किन्तु तद्धितीय कर्तृवाचक कुछ कृदन्तीय कर्तृ-वाचक सा किसी क्रिया के व्यापार का करनेवाला नहीं होता,

आ—सीमा और विरोधता जताता है। जैसे आगम, आरोग्य।
अधि—प्रधानता का बोधक है। जैसे अधिपति, अधिराज।
अपि—निश्चयता का बोधक है। जैसे अभिधान।
अति—अतिशयता का बोधक है। जैसे अतिकाल, अतिहर्ष।
सु—उत्तमता का बोधक है। जैसे सुदेश, सुगम।
उत्—उच्चता का बोधक है। जैसे उत्कर्ष, उत्पत्ति।
अभि—प्रधानता जताता है। जैसे अभिप्राय।
कु—बुराई बताता है। जैसे कुरीति कुसङ्ग।
प्रति—विरोधता बताता है। जैसे प्रतिषेध, प्रतिवादी।
परि—सम्पूर्णता बताता है। जैसे परिपूर्ण, परिजन।
उप—समीपता बताता है। जैसे उपवन, उपपत्ति।
अ—निषेधता बताता है। जैसे अनन्त, असत्।

समुच्चय बोधक—उसे कहते हैं जो शब्द, वा वाक्यों को जोड़े वा अलग करे। जोड़नेवाले को संयोजक कहते हैं। जैसे—औ, और, एवं, कि। अलग करने वाले को विभाजक कहते हैं। जैसे वा, अथवा, परन्तु, चाहे।

विस्मयादि बोधक—उसे कहते हैं जिस से मन का विस्मय आदि प्रकाशित हो। जैसे हुश, हा, ओहो, धिक् २, वाह २।

तृतीय संस्करण की भूमिका।

दोहा।

राम बाम दिसि जानकी, लखन दाहिनी ओर।
ध्यान सकल कल्यानमय, सुरतरु तुलसी तोर ॥

बड़े हर्ष की बात है कि ईश्वर की कृपा से प्राइमरीकोष के तीसरे संस्करण का सुअवसर प्राप्त हुआ। प्रथम संस्करण १६०५ ई० में और द्वितीय संस्करण १६०६ में हुआ था।

बड़े संतोष की बात है कि शिक्षाविभाग ने इस का विशेष आदर किया है। संयुक्त प्रदेश के स्कूलों में भी इस का प्रचार बढ़ता जाता है। इस से बोध होता है कि इस के द्वारा हिन्दी पढ़ने वाले छात्रों का कुछ उपकार होता है। विशेष उपयोगी करने के लिये इस बार प्रायः १२०० विशेष प्रयोजनीय शब्द जोड़ दिये गये हैं।

प्रथम संस्करण में कुछ प्रतियों के साथ "अनेकार्थ" के २८५ दोहे दिये गये थे, पर ग्राहकों की उस ओर रुचि न देख कर दूसरे संस्करण में अनेकार्थ छोड़ देना पड़ा।

ग्राहकों के अतिरिक्त मुज़फ़्फ़रपुर भू० ब्रा० कौलेज के हिन्दी प्रोफ़ेसर बाबू रामदास राय को अनेक धन्यवाद देता हूँ, जिन्हों ने इस के परिवर्द्धन कार्य में बड़ी सहायता की है।

बी० एन० कौ० स्कूल के प्रधान संस्कृताध्यापक साहित्य-मर्म्मज्ञ पण्डितवर विजयानंद त्रिपाठी ने इस बार संशोधन करके परम कृतज्ञ और अनुगृहीत किया है।

च० कृ० ७ }
सं० १९६६ } गोकर्ण सिंह।

चौथी बार की भूमिका।

ईश्वर की कृपा से प्राइमरी कोष के चतुर्थ संस्करण का सुअवसर प्राप्त हुआ। ग्राहकों के उत्साह दिलाने से तीसरी बार में हजारों शब्द जोड़े गये थे। इस बार भी हजारों उपयोगी शब्द जोड़ दिये गये हैं। पं० विजयानन्द त्रिपाठी का मैं बहुत अनुगृहीत हूँ, जिन्हों ने इस बार आकार वृद्धिमें बहुत सहायता की है।

भा० कृ० ८ सं० १९७२ 'गोकर्ण सिंह'

प्राइमरीकोष

दोहा।

जनकराजतनयासहित , रतनसिंहासन आज।
राजित श्री रघुराज ! मम, सफल करहु यह काज ॥

अ

अ—(अ०) नहीं (सं० पु०) विष्णु, एक अक्षर का नाम।

अऊत } —(सं० पु०) जिसे लड़का बाला न हो, निर्वंश, अनव्याहा,
ऊत } मूर्ख, जाहिल, प्रेत।

अंटी,—(सं० पु०) हाथ तले, मुट्ठी में, टंट।

अंश—(सं० पु०) भाग, टुकड़ा, हिस्सा।

अंशु—(सं० पु०) किरण।

अंशुमाला—(सं० स्त्री.) किरणों की पांती।

अंशुमाली—(सं० पु.) सूर्य।

अंकोर—(सं० पु०) घूस।

अकण्टक—(गु.) चैन से, शत्रुहीन बेखटके।

अकड़—(सं० स्त्री०) ऐंठ।

अकथ, अकथनीय—(गु·) जो कहने योग्य न हो, बयान से बाहर।
अकनि— पु. क्रि·) सुन कर।
अकरन—(गु·) न करने लायक।
अकरा—(गु.) महंगा।
अकर्म—(सं· पु·) बुरा काम, पाप।
अकर्मक—(गु·) बिना कर्म का।
अकर्मदाय—(गु·) बेकार, निकम्मा।
अकल —(गु·) परमात्मा, अङ्गहीन, विना अङ्ग के, अखण्ड।
अकलंक, अकलंकित —(गु·) बेदाग, निर्दोष।
अकस्मात्—(क्रि. वि·) अचानक, एकाएक, संयोग से।
अकस—(सं· स्त्री.) बैर, अखज, अदावत।
अक्स—(सं· पु·) छाया।
अक्सर—(अव्यय) बहुधा, (गु.) अकेला।
अखसीर—(सं. पु·) रसायन, (गु·) अव्यर्थ जरूर फायदा करनेवाला।
अकाज—(सं· पु·) हानि, घटी, बिगाड़।
अकाम—(गु·) विना इच्छावाला, निष्काम।
अकारण—(क्रि· वि·) विनाकारण, बेसबब, बेवजह, बिना हेतु।
अकारथ—(गु.) व्यर्थ, नाहक, निष्फल, बेफायदा।
अकाल—(गु.) कुसमय, बुरा समय, (सं· पु·) दुर्भिक्ष, महंगी।
अकालमृत्यु—(सं· स्त्री·) विष आदि से मरना, अधूरी उमर में मरना।

अकिञ्चन—(गु·) निर्धन, तंगदस्त, मुफलिस, दरिद्री, कङ्गाल ।

अकीरति }
अकीर्ति } —(भा· स्त्री·) अयश, बदनामी ।

अकुण्ठ—(गु·) नाशहीन, तीक्ष्ण, तेज़, पैना ।

अकुलीन—(गु·) नीच, कुजात, कुलहीन, कमीना ।

अकूपार—(सं. पु.) समुद्र ।

अक्रूर—(सं· पु·) श्रीकृष्ण के एक चचा और मित्र (गु·) नम्र-स्वभाव, कोमल स्वभाव, नर्म्म दिल ।

अक्ष—(सं· पु.) पहिया, धुरी वा कील, पांसा, जुआ, गाड़ी, रथ, आंख, रुद्राक्ष, रावण का पुत्र ।

अक्षत—(गु· पु·) पूजा के काम का अरवा चावल, स्थिर, घाव के विना (अ-आछन) रहते, वर्त्तमान ।

अक्षय—(गु.) जिस का नाश न हो, अमर ।

अक्षयवट—(सं· पु·) पुराना वट का वृक्ष जो प्रयागादि तीर्थों में है ।

अक्षर—(सं· पु·) अकार आदि वर्ण (गु.) जिस का नाश न हो ।

अक्षांश—(सं· पु·) पृथ्वी के मध्य से उत्तर वा दक्षिण केन्द्र तक नब्बे २ अंश तक की दूरी, लैटीच्यूड । (Latitude)

अक्षि—(सं. स्त्री·) आंख ।

अक्षैवृक्ष }
अक्षयवृक्ष } —(सं· पु·) ऐसा पेड़ जिस का कभी नाश न हो ।

अक्षोभ—(गु·) निडर, निर्भय, बेख़ौफ़ ।

अक्षौहिणी—(सं· स्त्री.) वह सेना जिस में १०९३५० पैदल, ६५६१० घोड़े, २१८७० रथ, २१८७० हाथी हों ।

अखण्ड—(गु·) खण्डरहित, सब, पूरा, सम्पूर्ण।
अखण्डनीय—(गु·) न तोड़ने लायक, अमिट।
अखण्डित—(गु·), पूरा, सब।
अखबार—(सं. पु.) समाचारपत्र।
अखर्व—(गु.) बड़ा, ऊंचा।
अखाड़ा—(सं· पु·) बैठक, कुश्ती लड़ने की जगह।
अखाद्य—(गु·) जो खाने योग्य न हो, निषिद्ध भोजनसामग्री, अभक्ष्य।
अखिल—(गु·) पूरा, सब, सारा सम्पूर्ण, कुल।
अखिलेश्वर—(सं. पु·) सब का मालिक ईश्वर।
अख्याति—(गु·) अप्रसिद्ध, जिस को सब कोई न जानता हो।
अख्याति—(सं. स्त्री·) अकीर्ति, बदनामी, अयश।
अग—(सं· पु·) जो चले नहीं, पहाड़।
अगति—(सं· स्त्री·) बुरी गति, दुर्दशा,
अगजग—(सं· पु·) जड़चैतन्य, चराचर।
अगणित—(गु·) जिस की गिनती न हो सके, अपार, बेशुमार, बेहिसाब, अनगिनत।
अगद—(सं· पु·) औषधि या दवा (गु·) नीरोग।
अगम—(गु·) नहीं जानने या जाने योग्य, विकट, औघट, गहरा, अथाह, अपहुंच।
अगर—अगरु (सं· पु·) एक प्रकार की सुगन्धित लकड़ी।
अगरि—(पु· क्रि·) अगरा के, खुश होकर, आगे बढ़ कर।

अगस्त } —(सं· पु·) एक ऋषि का नाम, एक तारे का नाम,
अगस्त्य } एक पेड़ का नाम ।

अगवानी—(सं· स्त्री·) कुछ दूर बढ़ के लिवा लाना, पेशवाई ।

अगहुड़—(अव्य·) अगाड़ी, आगे, अगौढ़ी ।

अगाध—(गु·) अथाह ।

अगाऊ—(गु·) आगे की ।

अगार—(सं· पु·) घर, मकान ।

अगुआ—(सं· पु·) मुखिया, घटक, वर्तुहार ।

अगुण—(गु·) निर्गुण, बेहुनर, निर्गुण, ब्रह्म ।

अगेन्द्र—(सं· पु·) सुमेरु, हिमालय, पहाड़ों का राजा ।

अगोचर—(गु·) जो देखने में नहीं आवे, अदृश्य, लुप्त, गायब, अलख ।

अग्नि—(सं· पु० भा· स्त्री·) आग ।

अग्निकुण्ड—(सं· पु·) होम की आग का स्थान ।

अग्निकोण—(सं· पु·) पूरब दक्खिन के बीच का कोना ।

अग्निक्रीड़ा—(सं· स्त्री·) आतिशबाजी ।

अग्निपूजक—(सं. पु·) पारसीजाति, आतिश परस्त ।

आग्न्यस्त्र—(सं· पु·) पलीते या आग से चलने वाले बन्दूक आदि ।

अग्निबोट—(सं· पु· अं·) धुंआंकश, छोटा जहाज़ ।

अग्निसंस्कार—(सं· पु·) मुर्दे को आग देना, जलाना, दाग देना ।

अग्निहोत्री—(सं· पु·) होम करनेवाला, आग को पूजनेवाला ।

अग्र—(अव्य) आगे, प्रथम ।

अग्रज—(गु.) आगे पैदाहुआ, बड़ा भाई ।

अग्रभाग—(सं॰ पु॰) आगेका हिस्सा ।
अग्रशोची—(सं॰ पु॰) आगे का सोचने वाला, दूरन्देश ।
अग्राह्य—(गु॰) न लेने योग्य,
अग्रिम—(गु॰) अगैंढ़ा, पेशगी, जो पहले ही लिया जाय ।
अग्रगण्य, अग्रगामी, अग्रसर, अग्रणी —(सं॰ पु॰) प्रधान, मुखिया, नायक, सरदार, (गु॰) आगे चलनेवाला, अगुआ जो सब में अच्छा गिना जाय ।
अघ—(सं॰ पु॰) पाप, गुनाह, दोष ।
अघटित—(गु.) असम्भव, अनहोती ।
अघनाशक—(सं.) पापदूरकरनेवाला ।
अघनाशन—(सं॰) पाप का नाश, पाप हटाने वाला ।
अघाना—(अ॰ क्रि.) पेट भर जाना छक जाना, तृप्त होजाना ।
अघी—(गु॰) पापी, दोषी, अपराधी ।
अघमर्षण—(भा॰ पु॰) पापनाशक मंत्र जो सन्ध्योपासन में पढ़ा जाता है ।
अघासुर—(सं॰ पु॰) एक राक्षस का नाम जो कंस की ओर से कृष्ण को मारने के लिये गया था ।
अघोर—(सं॰ पु॰) शिव, (गु॰) डरावना; भयानक ।
अङ्क—(सं. पु॰) चिन्ह, अङ्क, संख्या, गोद ।
अङ्कन—(क्रि॰) छापना, चिन्हित करना ।
अङ्कविद्या—(सं. स्त्री॰) गणित, हिसाब ।
अङ्कित—(सं॰) चिन्हित,, चिन्ह किया हुआ, लिखित, लिखा हुआ, खुदाहुआ ।

अङ्कुर—(सं. पु.) अंखुआ, कोपल, बांसका कोंपड़।
अङ्कुरोद्गम—(भा. पु.) अंकुर निकलना, अंखुआना।
अङ्कुरोत्पादक—(गु.) अंखुआ पैदा करनेवाला।
अङ्कुश—(सं. पु.) एक लोहे का कांटा, जिस से हाथी वश में रहता है, द्वेष, डाह।
अङ्ग—(सं. पु.) देह, भाग, हिस्सा।
अङ्गज—(सं. पु.) देह से पैदा हुआ, बेटा,
अङ्गद—(सं. पु.) बाजूबन्द, बिजायठ, बालि का बेटा।
अङ्गना—(सं. स्त्री.) स्त्री,
अङ्गन—(सं. पु. आँगन, अंगना।
अङ्गराई—(सं. स्त्री.) अंगेठी, अंगतोड़ना।
अङ्गराग—(सं. पु.) देह में लगाने के लिए अतर चन्दन आदि।
अङ्गसञ्चालन—(भा. पु.) अङ्ग हिलाना, डोलाना, कसरत करना,
अङ्गहार—(सं. पु.) हाथ आदि के हिलाने से भाव बना कर नाचना, नृत्य का भेद।
अङ्गार—(सं. पु.) जलता कोयला।
अङ्गाङ्गिभाव—(सं. पु.) लगाव, किसी दुबले का भी किसी प्रबल से सम्बन्ध आदि।
अङ्गारक—(सं. पु.) मंगल ग्रह।
अङ्गारकारक—(सं. पु.) कोयला बनानेवाला।
अंगिया—(सं. स्त्री.) चोली, मैदा चालने की चलनी।
अङ्गीकार—(भा. पु.) स्वीकार, क़बूल, मानना, मंजूर।
अङ्गीठी—(सं. स्त्री.) आग रखने का बर्तन।

अङ्गारा—(सं· पु·) आग का टुकड़ा।

अङ्घ्रि—(सं· पु·) पांव, पैर, पेड़ की जड़।

अच—(सं· पु·) स्वर।

अचम्भा—(सं. पु·) अचरज।

अचम्भित—(गु·) अचरज में आया हुआ।

अचगरी—(सं· स्त्री·) दुष्टता।

अचर
अचल } —(गु·) नहीं चलनेवाला, स्थिर, अटल, (सं· पु·) पहाड़।

अचला—(सं· स्त्री·) पृथ्वी।

अचानक—(क्रि· वि·) एकाएक, संयोग से, अकस्मात्।

अचार—(सं· पु·) रीति, भांति, धर्म, व्यवहार, ढंग, एक प्रकार की भोजनसामग्री।

अचिन्त—(गु·) चिन्ता से रहित, लापरवाह।

अचिर—(अव्य.) तुरत।

अचीता—(गु·) अचिन्तित, विना चाहा।

अचेत
अचेतन } —(गु·) बेसुध बेख़बर, विना ज्ञान के।

अच्युत—(सं· पु·) विष्णु का नाम (गु·) ठहरा हुआ, अटल, नित्य, अमर।

अछत—(गु·) विनाचोट का।

अछाम—(गु·) दुबला नहीं, मोटा ताजा।

अछूता—(गु·) जो छूआ न हो, पवित्र,देवता वा ऋषिमुनि के लिये शुद्ध भोग आदि।

अक्षेम—(सं· पु·) दुख, कुशल नहीं।
अज—(सं· पु·) ब्रह्मा, विष्णु, ब्रह्म, शिव, दशरथ राजा के पिता का नाम, जीव, बकरा, मेष, राशि।
अजगव—(सं· पु·) शिव का धनुष।
अजगुत—(गु·) अचरजवाला, अपूर्व।
अजन्ता—(गु·) जिस का जन्म नहीं।
अजय—(गु·) जो जीता न जाय।
अजर—(गु·) जो कभी बूढ़ा न हो सदा जवान बना रहे, देवता।
अजस्र—(गु·) लगातार, सदा।
अजहुँ—(अव्य.) अब तक, आज भी।
अजा—(सं· स्त्री·) बकरी, प्रकृति, माया।
अजात—(गु·) जो पैदा न हुआ हो।
अजातशत्रु—(गु·) जिस का काई शत्रु पैदा ही न हुआ हो।
अजान—(गु·) अज्ञ, अबूझ।
अजित / अजीत—(गु·) जो हारे नहीं, जो किसी से कभी जीता न गया हो।
अजिन—(सं· पु·) मृगछाला।
अजिर—(सं· पु·) आंगन, अंगनाई, चौक।
अजीर्ण—(सं· पु·) अपच, नहीं पचना, हज़म न होना, बदहज़मी।
अजेय—(गु·) जो जीतने लायक न हो।
अजों—(अव्य.) अब भी, अबतक।
अञ्चल—(सं· पु·) आंचर, पल्ला, धोती का छोर।
अञ्चित—(गु·) पूजित, संवारा हुआ।

अञ्जन—(सं· पु·) सुर्मा जिस के लगाने से आंख का मैल साफ होता है और आंख ठंढी रहती है।

अञ्जलि—(सं· स्त्री·) अंजुली, जोड़ा हुआ, दोनों हाथ।

अञ्जि—(पू· क्रि·) आँज कर, लगाकर।

अञ्जित—(गु·) आँजा हुआ, आँजन से शोभित।

अज्ञ, अज्ञान—(गु·) मूर्ख, बेवकूफ, अजान, अबूझ, अनजान, असमझ।

अज्ञानता—(सं· भा· स्त्री·) मूर्खता, बेवकूफी।

अटक—(सं· स्त्री·) रुकावट, सिन्धनद।

अटकना—(क्रि·) रुकना, ठहरना।

अटकल—(सं· पु·) अन्दाज, कूत, अनुमान।

अटकाव—(सं· पु·) ठहराव, रुकाव।

अटखेली—(सं· स्त्री·) खेलवाड़, शरारत।

अटन—(सं· पु·) अटायों (भा·) फिरना, चलना।

अटवी—(स्त्री·) जंगल।

अटल—(गु·) जो टले नहीं।

अटा, अटारी—(सं· स्त्री·) कोठा।

अट्टहास—(भा· पु·) खिलखिला कर हंसना, बड़े जोर से हंसना, ठट्ठाका।

अट्टालिका—(सं· स्त्री·) अटारी, कोठा।

अटूट—(गु·) बहुत, बेहद, मजबूत, पोख्ता।

अड़—(सं· स्त्री·) हठ, झगड़ा।

अड़चन—(गा· स्त्री.) रुकावट, झंझट ।

अड़ियल—(गु) हठी, रुकनेवाला, झक्की ।

अड्डा—(सं· पु·) ठहरने की जगह, कबूतर की छतरी, अखाड़ा, जमायत, सराय, चट्टी ।

अडोल—(गु·) दृढ़, अटल, जो न हिले डोले ।

अट्टुक—(सं· पु·) ठेस, ठोकर ।

अणुमात्र—(गु·) जरा भी, तनक भी, थोड़ा भी ।

अणि—(सं· स्त्री·) धार, नोक ।

अणिमा—(सं· स्त्री·) आठ सिद्धियों में एक सिद्धि, छोटा बन जाने की शक्ति ।

अणु—(सं· पु·) कण, कनिका, परमाणु (गु·) बहुत ही छोटा, महीन ।

अण्टा—(सं· पु·) खेल की गोली ।

अण्टाचित—(गु·) उत्तान, पीठ के बल ।

अण्ड—(सं· पु·) अंडा ।

अण्डकटाह—(सं· पु·) ब्रह्माण्ड ।

अण्डज—(सं· पु·) अण्डे से पैदा होनेवाले जानवर, जैसे पक्षी, सांप, मछली आदि ।

अण्डाकार
अण्डाकृति } —(गु.) अण्डा सा गोल, अण्डे की शकल का ।

अतः
अतएव } —(अ·) इस लिये ।

अतनु—(गु.) मोटा, बिना देह, बहुत बड़ा कामदेव ।

अतर्क्य
अतर्क } —(गु·) जो तर्क करने [illegible] बेदलील ।

अतल—(गु.) गहरा, अथाह, एक लोक।
अतसी—(सं· स्त्री·) तीसी।
अति—(अव्य.) अधिक, बहुत (सं. स्त्री.) अन्याय।
अतिकाय—(सं· पु·) बड़ा शरीर, एक राक्षस का नाम, (गु·) बड़ा शरीरवाला।
अतिकाल—(अव्य) देर, अबेर, विलम्ब।
अतिक्रम—(सं· पु·) पार जाना, (अ·) उलटा।
अतिथि—(सं· पु·) पाहुना, मिहमान, अभ्यागत, योगी, संन्यासी।
अतिरिक्त—(गु·) सिवाय, अलावे, छुटा हुआ, बिना।
अतिरिक्त—(सं· पु·) बहुतायत, अधिकता।
अतिशय—(गु·) बहुत, अत्यन्त, निहायत, अधिक।
अतिसार—(सं· पु·) पेट चलना, पेट की बीमारी।
अतीत—(गु·) बीता हुआ।
अतीव—(अव्य.) अधिक, बहुत, अत्यन्त।
अतीथ—(सं· पु·) संन्यासी, अतिथि, एक जाति।
अतुल
अतुलित
अतोल } —(गु·) जिस की बराबरी न हो, बे जोड़।
अत्यन्त—(गु·) अति, अधिक, बहुत।
अत्यल्प—(गु·) बहुत कम, बहुत थोड़ा।
अत्याचार—(भा· पु·) कुव्यवहार, अन्याय, बेइन्साफ, जुल्म।
अत्यानन्द—(सं· पु·) बहुत आनन्द, बहुत खुशी।
अत्यावश्यक—(गु·) बहुत जरूरी।

अत्युक्ति—(सं· स्त्री·) एक अलङ्कार का नाम, (भा·) बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कहना, झूठी सराहना।

अत्युक्ति—(सं· स्त्री·) बढ़ा के कहना।

अत्युग्र—(गु·) बहुत, चढ़ा बढ़ा, अधिक।

अत्युत्तम—(गु·) बहुत अच्छा, ठीक।

अत्र—(अ·) यहां, इस जगह, 'भवान्' शब्द के साथ आदरवाचक जैसे अत्रभवान्।

अथ—(सं· अ·) फिर आरंभ, शुरू, इस के पीछे।

अथर्व—(सं· पु·) चौथा वेद।

अथाई—(सं· स्त्री) बैठक, सभा, कचहरी, अखाड़ा, अड्डा।

अथवना—(भा·) डूबना, अस्त होना।

अथवा—(अ·) या, वा।

अथाह—(गु·) गहरा, अगाध।

अथै—(क्रि·) डूबना, अस्त होना।

अथोर—(गु·) बहुत, अधिक।

अर्थसाधक—(गु·) अर्थ को साधनेवाला, काम की चीज़।

अर्थदण्ड—(सं· पु·) रुपये पैसे आदि का दण्ड अर्थात् जुर्माना।

अदन—(सं· पु.) भोजन, खाना, एक बन्दरगाह का नाम।

अदभ्र—(गु·) बहुत, अधिक।

अदिन—(सं. पु.) बुरे दिन, कुसमय।

अदिति—(सं. स्त्री.) कश्यप की स्त्री, देवों की माता।

अदिष्ट—(सं. पु.) भाग्य, विपत, बुरा दिन।

अद्वितीय—(गु.) एकही, जिस के ऐसा दूसरा नहीं, लासानी।

अदृश्य
अदृष्ट } —(गु.) जो देखने में न आवे, गुप्त, अदेख।

अदेय—(गु.) नहीं देने योग्य।

अद्भुत—(गु.) आश्चर्य्य, अनोखा, अजीब।

अद्य—(अव्य.) आज, अब।

अद्यापि—(क्रि. वि.) आज तक, अब तक।

अद्यावधि—(क्रि. वि.) अभी तक, इस समय तक।

अद्रव्य
अद्राव्य } —(गु.) नहीं गलनेवाला या नहीं गलने योग्य।

अद्रि—(सं. पु.) पहाड़, वृक्ष, पेड़।

अद्वैत—(गु.) अद्वितीय, अकेला।

अधः—(अव्य.) नीचे, नरक।

अधः पतन } (सं. पु.) नाश, अवनति।
अधः पात
अधोगति } (सं. स्त्री.) नाश, नरक में पड़ना।

अधम—(गु.) नीच, पापी, कमीना।

अधमाई—(सं. स्त्री.) नीचपन, नीचता।

अधमता—(गु.) नीचपना।

अधमर्ण—(गु.) ऋणुक, कर्जखोर।

अधर—(सं. पु.) नीचे का होठ, (गु.) शून्य, नीच।

अधरामृत—(सं. पु.) अधर=होठ + अमृत= अमी, होठ का स्वाभाविक जल, होठ का अमृत।

अधर्म—(सं. पु.) पाप, बुरा काम, नहीं करने योग्य काम।

अधर्मी—(गु.) पापी, दोषी ।

अधार—(सं. पु.) आसरा, आड़, खाना, भोजन ।

अधि—(उप.) मुख्य, ऊपर, बहुत, सामने ।

अधिकरण—(सं. पु.) आधार, व्याकरण में ६ टां कारक ।

अधिकार—(सं. पु.) अख़्तियार, हक़, स्वत्व, शासन, आरम्भ ।

अधिकारी—(सं. पु.) पाने के योग्य, पुजारी, मालिक ।

अधिकृत—(सं.) अधिकार किया हुआ, कब्ज़ा किया हुआ ।

अधित्यका—(सं. स्त्री.) पहाड़ की चोटी पर की चौरस भूमि ।

अधिप }
अधिपति } —(सं. पु.) राजा, मालिक, स्वामी ।

अधिमास—(सं. पु.) लौंद, मलमास ।

अधिकमास—(सं. पु.) बढ़ा, मास ।

अधिमास—(सं. पु.) बढ़ा मास ।

अधिराज—(सं. पु.) महाराज ।

अधिरूढ़—(सं. पु.) चढ़ा हुआ, सवार, जिस की जड़ जम गई हो ।

अधिवास—(सं. पु.) घर, रहने की जगह ।

अधिवासी—(क. पु.) बसनेवाला, रहनेवाला, बाशिन्दः ।

अधिवेशन—(सं. पु.) सभा, दरबार, इजलास, बैठक, बैठ ।

अधिष्ठाता—(सं. पु.) मालिक, पालनेवाला, स्वामी, रक्षक ।

अधिष्ठान—(सं. पु.) आधार, आसरा, घर, कल्पना का मूल ।

अधीन—(गु.) वश में, आज्ञाकारी ।

अधीति—(भा. स्त्री.) पढ़ना ।

अधीर—(गु.) घबराया, चंचल ।

अधीश—(सं· पु·) स्वामी, मालिक।
अधीश्वर—(सं· पु·) स्वामी, राजा, मालिक।
अधुना—(क्रि· वि·) अब, इस समय, इस वक्त।
अधूरा—(गु·) जो पूरा न हुआ हो।
अधेड़—(गु·) आधी उम्र बीता हुआ।
अधोमुख—(गु·) मुख नीचे किये हुए, उदास।
अध्यक्ष—(सं· पु·) मालिक, मुखिया, अधिकारी।
अध्ययन—(सं· पु) पढ़ना, ब्राह्मणों के ६ कर्मों में एक कर्म।
अध्यवसाय—(सं· पु·) उद्यम, उपाय, रोजगार।
अध्यापक—(सं· पु·) गुरु, पढ़ानेवाले।
अध्यापिका, अध्याययित्री—(सं· स्त्री·) पढ़ानेवाली।
अध्यापन—(सं· पु·) पढ़ाना।
अध्याय—(सं· पु·) पर्व, प्रकरण, टुकड़ा।
अध्यारोप—, अध्यास—(सं· पु·) भ्रम, कल्पना।
अध्याहार—(भा· पु.) किसी शब्द को ऊपर से ले आना, सम्बन्ध का आक्षेप।
अध्येता—(सं. पु.) विद्यार्थी, पढ़नेवाला।
अनख—(सं. स्त्री.) क्रोध, डाह, अनखाना (गु.) जिस को नख न हो।
अनखाना—(सं. पु.) क्रोध करना।
अनघ—(गु.) निर्दोष, बेगुनाह, पवित्र।

अनङ्ग—(सं. पु.) कामदेव, जिस को शरीर न हो।
अनचित—(गु.) अचानक, एकाएक।
अनत—(क्रि. वि.) और जगह।
अनन्त—(सं. पु.) शेषनाग, विष्णु, धरती, ब्रह्म (गु.) जिस का अन्त न हो।
अनन्तर—(अ.) बाद, पीछे, (गु.) अव्यवहित, समीप।
अनन्ता—(सं. पु.) जवासा, धरती।
अनन्य—(सं. पु.) जिसे दूसरे का भरोसा न हो, एक ही।
अनपत्य—(गु.) निर्वंश, पुत्रहीन, लावल्द।
अनपावनी—(गु.) नहीं मिलनेवाली।
अनपायिनी—(सं. स्त्री.) दृढ़, अचला, नाशरहित।
अनभल—(सं पु.) बुराई, अमङ्गल।
अनभिज्ञ—(गु.) नादान, अजान, नावाक़िफ़।
अनमना—(गु.) उदास।
अनय—(सं. पु.) अनीति, बुराई, अन्याय, (गु.) नीतिहीन, अन्यायी।
अनर्गल—(गु.) निर्बाध्य, बेरोकटोक, व्यर्थ।
अनर्थ—(सं. पु.) हानि. (गु.) नाहक, व्यर्थ, बेफ़ायदा।
अनरस—(भा. पु.) अनबनाव, फूट, अपच।
अनल—(सं. पु.) आग, अग्नि।
अनलस—(गु.) फुर्तीबाज़, तेज, जो आलसी न हो।
अनवकाश—(गु.) जिसे फ़ुरसत न मिलती हो, सदा काम में फसा हुआ (सं. पु.) अवसर का न होना, फ़ुरसत न मिलना।
अनवद्य—(गु.) निर्दोष, बेदोष, बेगुनाह, सुन्दर।

अनवट—(सं. पु.) पैर के अंगूठे में पहनने का गहना।
अनवधान—(गु.) ध्यान रहित, मन्द, कुन्दजेहन, वेवकूफ, जो किसी बात का खयाल न रखता हो।
अनवरत—(गु.) निरन्तर, लगातार, सदा।
अनवस्थित—(गु.) अचेत, वेसुध, गाफिल। जो किसी बात पर दृढ़ न हो।
अनवहित—(गु.) अचेत, वेसुध।
अनशन—(सं. पु.) उपवास, लंघन, न खाना पीना, अठान।
अनश्वर—(गु.) नाशरहित, स्थिर, जिस का नाश कभी न हो।
अनहित—(सं. पु.) वैर, बुराई, (गु.) बुरा।
अनाचार—(सं. पु.) बुरा चालचलन, बुरी रीति।
अनाड़ी—(गु.) मूर्ख, अजान, निर्बुद्धि।
अनाथ—(गु.) जिस का कोई रक्षक न हो, गरीब, दुखिया।
अनाथालय—(सं. पु.) यतीमख़ाना, मुहताजख़ाना, अनाथों के रहने का मकान।
अनादर—(सं. पु.) अपमान, हलकापन।
अनादि—(गु.) आदिरहित, सनातन, अजन्मा।
अनामय—(भा. पु.) आरोग्यता, नीरोगपन (गु.) नीरोग, भला, चंगा।
अनामिका—(सं. स्त्री.) कनगुरिया के पास की अंगुली।
अनायास—(गु.) सुगम; सहज, वेमिहनत, (सं. पु.) चैन, आसानी सुगमता।

अनार्य्य—(सं· पु·) जो आर्य्य नहीं है, जंगली जाति।

अनावश्यक—(गु·) वेज़रूरी, बिना काम के।

अनावृष्टि—(सं· स्त्री·) वर्षा न होना।

अनाश्रम—(गु·) जिस का ब्रह्मचर्य्य आदि कोई आश्रम न हो, बिना घरका।

अनाश्रय—(गु·) निराधार, जिसका कोई आश्रय न हो।

अनाहत—(गु·) एक प्रकार का शब्द जो कान मूंदने पर सुन पड़ता है, बिना पहना वस्त्र, नया, कोरा।

अनाहार—(भा· पु·) उपवास, उपास, भूखा रहना।

अनिच्छा—(सं. स्त्री·) अरुचि, इच्छा का अभाव।

अनित्य—(गु·) जो सदा न रहे, नाशवान, झूठा।

अनियत—(गु·) वेठिकान।

अनिरुद्ध—(सं· पु·) श्रीकृष्ण के पोते का नाम, (गु·) जो रोका न गया हो।

अनिर्वचनीय—(गु·) जो कहने में न आवे।

अनिल (सं· पु·) पवन, वायु, हवा, बतास।

अनिश्चित—(गु·) विना निश्चय का, वेठहराया हुआ।

अनिष्ट—(गु·) वेचाहा हुआ, अप्रिय, अनिच्छित, ख़राब, बुरा।

अनी—(सं· स्त्री·) सेना, फ़ौज, नोक, तीखी धार।

अनीक—(सं· स्त्री·) सेना, कटक, फ़ौज।

अनीति—(सं· स्त्री·) अन्याय, वेइन्साफ।

अनीप—(सं. पु.) सेनापति, सरदार।

अनीश—(सं. पु.) वेमालिक का, असमर्थ, वेचारा।

अनीह—(गु॰) इच्छाहीन, चेष्टारहित, वेरूप, आलसी, योद्दा।
अनीहा—(भा॰ स्त्री॰) इच्छा नहीं होना, उदासीनता, बेपरवाही।
अनु—(उप.) पीछे, साथ, अनुसार, बराबर, पास, कम, थोड़ा।
अनुकम्पा—(भा॰ स्त्री॰) दया, कृपा, मिहर्बानी।
अनुकरण—(सं॰ पु॰) नकल करना, अनुरूप।
अनुकूल—(गु॰) अनुसार, मुताबिक, सहायक, अच्छा।
अनुकृत—(गु॰) नकल किया हुआ, देखादेखी किया हुआ।
अनुक्रम—(सं॰ पु॰) यथाक्रम, क्रम के अनुसार।
अनुक्रमणिका—(सं॰ स्त्री॰) सूची, तालिका।
अनुक्षण—(अव्य॰) हर घड़ी, हमेशा, सदा।
अनुग—(सं. पु॰) अनुचर, सेवक।
अनुगत—(पु॰) अनुगामी, अनुकूल, सेवक।
अनुगति—(सं॰ स्त्री॰) अनुगमन, पीछा करना, मुताबिक चलन फर्मांवर्दार।
अनगमन—(भाव॰) अनुसरण, अनुगति।
अनुगामी—(सं॰ पु॰) अनुगत, सेवी।
अनुग्रह—(भा॰ पु॰) कृपा, मिहर्बानी, दया, प्रसन्नता।
अनुग्राहक, अनुग्राही—(गु॰) दया रखने वाला, मिहर्बान।
अनुगृहीत (गु॰) दया किया गया, इहसानमन्द।
अनुचर—(सं. पु॰) पीछे चलनेवाला, दास, नौकर।
अनुचित—(गु॰) अन्याय, अयोग्य, असंगत, जो उचित न हो।
अनुज, अनुजन्मा—(सं॰ पु॰) जो पीछे जन्मा हो, छोटा भाई।

अनुजा—(सं· स्त्री·) छोटी बहिन।
अनुजीवी—(सं· पु·) नौकर, दास।
अनुज्ञा—(भा· स्त्री·) आज्ञा, हुक्म, ताकीद।
अनुतप्त—(सं· पु·) दुख से भरा हुआ, दुःखित।
अनुताप—(सं· पु·) दुःख, पछतावा।
अनुत्तम—(गु·) सब से अच्छा, जिस से उत्तम और न हो।
अनुदिन—(क्रि· वि·) रोज २।
अनुधावन—(गु·) दूर तक सोचना।
अनुध्यान—(गु·) स्मरण, चिन्ता, शुभकामना।
अनुनय—(सं· पु·) विनय, अदब।
अनुपम—(गु·) उपमारहित, जिस के तुल्य कोई न हो, बेनज़ीर।
अनुपयुक्त—(गु· पु·) योग्य नहीं, अयोग्य, नामुनासिब।
अनुपल—(सं· पु·) पल का ६०वां हिस्सा, हरघड़ी।
अनुपात—(सं· पु·) बराबर सम्बन्ध, त्रैराशिक।
अनुपान—(सं· पु·) औषध का साथी या सहायक।
अनुप्रास—(सं· पु·) एक प्रकार का अलङ्कार जो समान जाति के अक्षरों से बनता है (Alliteration)।
अनुबन्ध—(सं· पु·) सम्बन्ध, अनुरोध।
अनुभव—(भा· पु·) ज्ञान, विचार, अनुमान, सोचना, समझना, बूझना।
अनुभाव—(सं· पु·) प्रभाव, तेज, महिमा, सामर्थ्य।
अनुमत—(गु·) सलाह दिया गया।
अनुमति—(सं. स्त्री·) सलाह।

अनुमरण—(भा· सं·) स्वामी के मरने पर मरना, सती होना।
अनुमान—(भा. सं·) तर्क, अटकल, प्रमाणों में २रा प्रमाण।
अनुमानगम्य—(गु·) जो अनुमान से जाना जाय।
अनुमित—(गु·) अनुमान किया गया। अनुमेय (गु·) अन्दाज़ के लायक।
अनुमोदन—(सं· पु·) समर्थन, ताईद करना, प्रशंसा,।
अनुमोदित—(र्म· पु·) आह्लादित, आनन्दित, खुश, समर्थन किया गया।
अनुयायी—(क· पु·) पीछे जानेवाला, नौकर, शिष्य, चेला।
अनुयोग—(सं· पु·) प्रश्न करना, पूछना।
अनुरक्त—(गु· पु·) प्रेमी, चाहक, अनुकूल, आशिक।
अनुरञ्जन—(भा· सं·) खुश करना, किसी विषय को बढ़ा चढ़ा कर कहना।
अनुरञ्जित—(गु·) प्रसन्न किया गया, अत्युक्ति से वर्णन किया गया।
अनुराग—(सं· पु.) प्रेम, भक्ति, श्रद्धा।
अनुरागी—(गु·) प्रेमी, भक्त, सेवक।
अनुरुद्ध, अनुरोधित—(र्म· पु·) रोका गया, क़ैद किया गया, अनुरोध किया गया।
अनुरूप—(पु·) उसी रूप का, समान, एकसां, बराबर।
अनुलित—(गु·) चन्दन आदि से लिपा गया, चर्चित, शामिल।
अनुलेपन—(सं· पु·) घोरा हुआ चौरठ, घिसा हुआ चन्दन आदि

(भा· सं·) चन्दन आदि लगाना, लीपना, पोतना।

अनुवर्त्तन—(भा· सं·) अनुसरण, पीछे से ले आना, पीछे चलना।

अनुवर्त्ती—(सं· पु·) सेवक, अनुचर।

अनुवाद—(भा· पु·) उलथा, तर्जुमा।

अनुवीक्षणयन्त्र—(सं· पु·) वह कल जिस से बहुत छोटा पदार्थ भी देखा जाता है खुर्दबीन।

अनुवृत्ति—(सं· स्त्री·) सेवा, मार्ग, पदों को दूसरे स्थान से ले आना, ज़रिया, तामील, वसीला।

अनुशासन—(भा· पु·) आज्ञा, हुक्म, शिक्षा, सीख।

अनुशीलन—(भा· पु·) सेवन, अभ्यास करना, मनन करना, विचारना, आलोचना।

अनुष्ठाता—(सं· पु·) करनेवाला, पुरश्चरण करनेवाला।

अनुष्ठान—(भा· पु·) आरम्भ, शुरू, अमल।

अनुसन्धान—(सं· पु·) खोज, ढूंढ़, पता, तलाश, तहक़ीक़ात, इन्तिज़ाम।

अनुसरण—(सं. पु·) उसी के अनुसार, पीछे चलना, अनुकरण, नक़ल।

अनुसार—(भा· पु·) मुताबिक़, बराबर।

अनूठा—(गु·) अनोखा, नया, अपूर्व।

अनूपा—(गु·) जिस के बराबर कोई न हो, उत्तम, श्रेष्ठ, सब से अच्छा, जलमय प्रदेश, पनजङ्गल देश।

अनृत—(गु·) भूठा, (स्त्री·) भूठ।

अनेक—(गु·) बहुत, कितने ही।

अनैक्य—(गु·) मतभेद, फुटमत, भेद, बिगाड़, अनबन।
अनैसे—(क्रि· वि·) बुरे प्रकार से, कुदृष्टि से, टेढ़े।
अनोखा—(गु·) अद्भुत, नया, अनूठा।
अन्त—(सं· पु·) नाश, अखीर, जिस के बाद कुछ न हो, सीवाना, हद्द।
अन्तक—(सं· पु·) यमराज, नाश करनेवाला।
अन्ततः—(अव्य·) आखिरस, आखिरकार, आखीर में, बाद।
अन्तर—(सं· पु·) भेद, व्यवधान।
अन्तर—(अव्य·) भीतर, बीच में।
अन्तरीप—(सं· पु·) जो जमीन का भाग क्रम २ से पतला हो कर पानी में दूर तक चला गया हो उस के आगे के हिस्से, को अन्तरीप कहते हैं।
अन्तरी(रि)क्ष,—(सं· पु·) धरती और आकाश के बीच का भाग, शून्य, अधर।
अन्तःकरण—(सं· पु.) मन, चित्त, बुद्धि,।
अन्तर्गत—(गु·) भीतरी, भूला हुआ, विस्मृत, मनोगत, मध्यगत।
अन्तर्दाह—(सं· पु·) भीतरी ज्वाला, हृदय की जलन।
अन्तर्द्धान—(भा· सं·) गायब होना, आंख से ओट होना, न देख पड़ना।
अन्तर्यामी—(गु·) भीतर का हाल जाननेवाला, दिल की जानने वाला (पु·) ईश्वर, परमेश्वर।
अन्तरावरण—(सं· पु·) भीतर का ढकना, भीतर का परदा, फूल

के भीतर का पत्ता, भीतर का छिलका।

अन्तपट—(सं· पु·) पर्दा, आड़।

अन्तःपुर—(सं· पु·) महल, रनिवास।

अन्तर्हित—(गु·) अन्तर्द्धान, छिपा।

अन्त्रावलि—(सं· स्त्री·) अँतड़ियों की पंक्ति, बहुत सी अँतड़ियां।

अन्ध—(गु·) अंधेरा, अन्धकार, अन्धा, बे आंख का, सूर।

अन्धकार—(सं· पु·) अंधेरा

अन्धकूप—(सं· पु·) गहरा अंधेरा, गहरा कुआँ, एक नरक।

अन्न—(सं· पु·) नाज।

अन्नद—(सं· पु·) अन्न दान करनेवाला।

अन्नदा—(सं· स्त्री·) सब को भोजन देने वाली, भगवती, अन्नपूर्णा।

अन्नप्राशन—(सं· पु·) बच्चों का एक संस्कार जो छठें महीने में किया जाता है, मुंहलगनी, बच्चों को पहले पहल अन्न खिलाना।

अन्नपूर्णा—(सं. स्त्री·) दुर्गा, देवी।

अन्य—(गु.) दूसरा, पर, और।

अन्यतम—(गु·) बहुतों में से एक।

अन्यत्र—(अव्य·) और कहीं।

अन्यथा—(क्रि· वि·) और प्रकार से, नहीं तो, (गु·) उलटा, बेइन्साफ, अन्याय।

अन्यान्य—(अव्य·) और २, दूसरे २।

अन्याय—(सं· पु·) बेइन्साफी, अनुचित।

अन्वित—(सं· पु·) युक्त, शामिल, पूरा।

अन्वय—(सं· पु·) पदच्छेद, पदों को सिलसिलेवार बैठाना,

सम्बन्ध, वंश, कुल।

अन्वह—(अव्य·) रोजरोज, प्रतिदिन, हमेशा।

अन्वीयमान—(गु. पु·) मिलित, पूर्ण, पूरा, शामिल।

अन्वेषण—(सं· पु·) खोजना, ढूंढ़ना, पता लगाना।

अप, अप् —(उप·) उलटा, हानि, बुरा, भेद, छिपाव, अलग, (सं·) पानी, जल।

अपकर्ष—(भा· पु·) खींचना, न्यूनता, निरादर।

अपकार—(भा· पु·) बुरा कर्म, बिगाड़, बुराई।

अपकीर्त्ति—(भा· स्त्री·) बुराई, बदनामी, अपयश।

अपघात—(सं· पु·) आत्महत्या कुदाव।

अपंग—(गु·) लंगड़ा, अपाहिज, अंगहीन।

अपचय—(सं. पु·) नाश, हानि, घटती।

अपछ्रा—(सं. स्त्री.) अप्सरा, स्वर्ग की वेश्या।

अपटु—(गु·) मूर्ख, बोदा, अजान।

अपत—(गु·) बे पत्ते का, ठूंठ, बेइज्जत।

अपत्य—(सं· पु·) पुत्र, वंश, सन्तान, औलाद।

अपथ—(सं· पु·) कुराह, बेराह का।

अपद—(गु·) बे पैर का, कुपद, अशुद्ध पद।

अपदस्थ—(गु·) अपनी जगह से उतरा हुआ, पदच्युत, बेइज्जत।

अपदेश—(सं· पु·) बहाना, मिस, टालना।

अपभ्रंश—(भा· पु.) गंवारी बोलचाल, बिगड़ा हुआ शब्द।

अपमान—(भा· पु·) अनादर, बेमान, बेइज्जती।

अपमृत्यु—(सं. स्त्री·) विष आदि से मरना, अधूरी उम्र में मरना,

बुरी मौत।

अपयश—(भा॰ पु॰) बदनामी, अयश।

अपर—(सं॰ पु॰) दूसरा, कोई, उच्च, ऊपर का।

अपरम्पार—(गु॰) बेहद, अपार।

अपराध—(सं॰ पु॰) दोष, कसूर।

अपराह्न—(सं॰ पु॰) तीसरा पहर।

अपरिचालक—(क॰ पु॰) आसपास में नहीं फैलानेवाला, जो नहीं चला सके।

अपरिचित—(गु॰) बे पहिचान का।

अपरिमार्ज्जित—(गु॰) अशुद्ध, मैला, बे मुहावरे।

अपरिमित—(गु॰) जिस की सीमा न हो, बहुत अधिक।

अपरिष्कार—(भा॰ पु॰) अपवित्र, मैला।

अपवर्ग—(सं॰ पु॰) मुक्ति, मोक्ष, छुटकारा।

अपबाद वा अपवाद—(सं॰ पु॰) गाली, बदनामी, निन्दा।

अपवित्र—(गु॰) अशुद्ध, नापाक।

अपव्यय—(सं॰ पु॰) बुरा खर्च, अधिक खर्च, फजूल खर्च।

अपशकुन—(सं॰ पु॰) बुरा सगुन।

अपशब्द—(सं॰ पु॰) कुशब्द, गुदा की वायु, अशुद्ध।

अपस्मार—(सं॰ पु॰) मृगी रोग, मूर्च्छा।

अपहरण—(भा॰ सं॰) चोराना, छीनना।

अपहारी—(गु॰) चोरानेवाला, छीननेवाला, चोर।

अपहृत—(गु॰) छीना गया, हरा गया।

अपादान—(सं॰ पु॰) पाँचवां कारक।

अपान—(सं· पु·) गुदा, अधोवायु, (गु·) अपना; अपनापन, सुधबुध।

अपाय—(सं· पु.) बिगाड़, नाश।

अपार—(गु·) बहुत।

अपारदर्शक—(क· पु·) काठ पत्थर आदि दूसरी ओर नहीं दिखाने वाले पदार्थ।

अपावन (गु·) अशुद्ध।

अपाहज—(गु·) लंगड़ा, लूला।

अपि—(उप·) भी, निश्चय।

अपूर्ण—(गु·) अधूरा, भरा नहीं।

अपूर्व—(गु·) अनोखा, जिस को पहले कभी नहीं देखा हो, अनूप, नया।

अपृष्ट—(सं· पु·) बेपूछे, बिना पूछा हुआ।

अपेक्षा—(सं· स्त्री.) आशा, इच्छा, सम्बन्ध, निसबत।

अपेक्षाकृत—(गु·) उस की अपेक्षा अल्प वा अधिक।

अपेक्षित—(गु·) आवश्यक, जरूरी।

अपेय—(गु.) नहीं पीने योग्य।

अप्सरा—(सं. स्त्री.) स्वर्ग की स्त्री, इन्द्र की सभा में नाचनेवाली।

अप्रतिम—(गु.) अनूप, अनुपम, लासानी।

अप्रतिष्ठा—(सं.स्त्री·) अपमान, बेइज़्ज़ती।

अप्रतिहत—(गु·) बेरोक, अमोघ, अव्यर्थ।

अप्रमेय—(सं· पु·) अपार, अनन्त।

अप्रिय—(गु.) बुरा, नापसन्द, कड़ुआ, तीखा।
अप्रीतिकर—(गु·) निठुर, जो दुखानेवाला, बुरा।
अपेल—(गु·) अलंघनीय, दृढ़, अटल।
अबला—(गु· स्त्री.) कमज़ोर, दुबली, (सं· स्त्री·) स्त्री, नारी।
अबाक्, अवाक्—(गु·) अबोल, गूंगा, मौन, चुप।
अवात—(गु·) निर्वात, जहां हवा न आती हो।
अवार—(सं स्त्री·) देर, विलम्ब।
अबुध—(गु.) बेवूफ़, मूर्ख, नासमझ, बेवकूफ।
अबोध—(गु·) अजान, मूर्ख, नासमझ।
अब्ज—(सं· पु.) कमल, शङ्ख, चांद, १४ रत्न जो समुद्र से निकले।
अब्द—(सं· पु·) बादल, मेघ, बरस, साल।
अब्धि—(सं· पु.) सागर, समुद्र, समुद्रफेन, सात की गिनती।
अभङ्ग—(गु.) दृढ़, अटल (सं. पु·) एक मराठी छन्द।
अभय—(गु·) निडर, निर्भय, बेडर, बेखौफ, बेधड़क।
अभयदान—(सं· पु·) भय से बचाने की प्रतिज्ञा।
अभाग्य—(गु·) अभाग, बदनसीबी ।
अभाव—(सं. पु·) नहीं होना, कमी, नाश।
अभिक्रम—(सं· पु.) चढाई, हमला, आक्रमण।
अभिगमन—(सं· पु·) निकट जाना।
अभिचार—(सं. पु·) मारण मोहन आदि अनुष्ठान।
अभिजात—(गु·) कुलीन, प्रतिष्ठित, पण्डित।
अभिजित—(सं. पु.) एक नक्षत्र, एक मुहूर्त विशेष।
अभिधान—(सं. पु·) कोष।

अभिनन्दन—(सं. पु.) अनुमोदन, ताईद करना, प्रशंसापत्र।
अभिनय—(सं. पु.) नाटक का खेल।
अभिनव—(गु·) ताजा, नया।
अभिप्राय—(सं· पु.) मतलब, आशय, चाह, सम्मति।
अभिभावक—(सं. पु·) रक्षक, गार्जियन, देखरेख करनेवाला, सहायक।
अभिभूत—(गु·) हारा, दबाहुआ, आक्रान्त।
अभिमत—(गु· पु.) चाहा हुआ, वांछित, सम्मत, इष्ट, मनभाया।
अभिमान—(सं· पु.) घमंड, गर्व, अहङ्कार, ग़रूर, शेख़ी।
अभिमुख—(गु·) सामने, सोहीं, आगे, रूबरू।
अभियान—(सं· पु.) चढ़ाई, युद्धयात्रा।
अभियुक्त—(गु·) प्रतिवादी।
अभियोग—(सं. पु·) नालिश।
अभियोगी—(सं· पु·) वादी, मुद्दई।
अभिराम—(गु·) सुन्दर, प्यारा, मनोहर, रमणीय।
अभिरुचि—(सं· स्त्री) इच्छा, पूरी, चमक।
अभिलाषा—(सं· स्त्री.) चाह, इच्छा, ख़ाहिश।
अभिवाद—(सं· पु·) प्रणाम, नमस्कार।
अभिवादन—(भा· पु.) स्तुति, नमस्कार, वंदगी।
अभिशाप—(सं. पु·) झूठा दोष लगाना, शाप (श्राप)।
अभिषिक्त—(सं· पु.) अभिषेक किया गया।
अभिषेक—(भा. पु.) राजतिलक देने के समय का स्नान, शांति स्नान।
अभिसार—(भा. सं·) सङ्केतभवन में जाना।

अभिसारिका— सं स्त्री.) प्रियतम के संकेत भवन में जाने-वाली स्त्री।

अभिज्ञ – गु·) जानकार, विद्वान्, चतुर।

अभीप्सित— गु·) प्रिय, मनोवांछित।

अभीष्ट—(सं· पु·) चाहा हुआ, मनमाना, पसन्द।

अभूतपूर्व—(गु·) आश्चर्य, नया, जो पहले न हुआ हो, अजीव।

अभेद / अभेव } (गु·) एक, जिस में भेद न हो, एक प्रकार का सम्बन्ध।

अभ्यर्थना—(भा. स्त्री.) निवेदन, आरज़ू।

अभ्यन्तर—(गु·) भीतरी, अन्दरूनी।

अभ्यागत—(सं· पु·) अतिथि, पहुना, अपने घर आया हुआ, भिखारी आया हुआ।

अभ्यास—(सं पु·) साधन चिन्तन, मश्क।

अभ्यस्त—(सं· पु·) कण्ठस्थ, मंजा हुआ।

अभ्युदय – (सं· पु· बढ़ती, उन्नति, तरक्की, मङ्गल।

अभ्र—(सं· पु·) मेघ, आकाश, बादल।

अभ्रक—(सं· पु·) अबरख, बुका, भोडर।

अमर—(गु·) नहीं मरनेवाला, अविनाशी, (पु·) देवता, अमर-कोष का बनानेवाला।

अमराई, आम्राई—(सं· स्त्री. आम का बन, आम का उपबन।

अमरावती – (सं· स्त्री.) स्वर्ग, इन्द्र की राजधानी, देवलोक।

अमरेश—(सं पु·) इन्द्र, देवताओं का राजा।

अमर्ष—(सं· पु) क्रोध, गुस्सा।

अमर्षण—(गु.) क्रोधी, न सहनेवाला।

अमल—(गु·) शुद्ध, निर्दोष, साफ।
अमात्य—(सं· पु·) मन्त्री, वज़ीर आज़म।
अमानुषिक—(गु·) मनुष्य से असंभव, दैवी या राक्षसी।
अमायिक—(गु.) सरल, निश्छल, सीधा, सच्चा।
अमित—(गु·) अपार, अपरिमित, वेहद्द।
अमिय, अमी—(सं· पु.) अमृत, सुधा, पीयूष।
अमीकर—(सं· पु·) चन्द्रमा।
अमीयमूरि, अमियमूरि —(सं· स्त्री·) सजीवन बूटी, सजीवन जड़ी।
अमृत—(सं· पु.) अमी, सुधा, देवताओं का भोजन, रस जिस के पीने से अमर हो जाते हैं।
अमुक—(सर्व.) फलाना, कोई, वह।
अमूलक—(गु.) बेजड़ का, वेप्रमाण।
अमेध्य—(गु·) अपवित्र, न छूने योग्य।
अमोघ—(गु.) सफल, अव्यर्थ, फलदाता, जो खाली न जाय।
अमोनिया (Ammonia)—(सं. पु·) नौसादर।
अम्बर—(सं· पु·) आकाश, कपड़ा, सुगन्धित वस्तु, अभ्रकधातु।
अम्ब, अम्बा (सं· स्त्री·) मा, माता, दुर्गा, देवी, काशिराज की एक कन्या।
अम्बक—(सं· पु·) आंख, नेत्र, नयन।
अम्बन—(गु.) खट्टा।
अम्बर—(सं· पु.) कपड़ा, आकाश।

अयुत—(सं· पु·) दश सहस्र, दश हज़ार।

अरई—(सं· स्त्री·) पैना जिस के सिरे पर लोहा लगा रहता है।

अरगजा—(सं· पु.) सुगन्धित वस्तु।

अरगाई—(गु·) अलग, चुप।

अरणा—(सं· पु·) जंगली भैंसा। [निकलती है।

अरणि—(सं· स्त्री·) एक प्रकार की लकड़ी जिस के घिसने से आग

अरण्य—(सं. पु·) बन, जगल।

अरविन्द—(सं· पु·) कमल, कंवल, पद्म।

अरहट—(सं· पु·) रहट, पानी भरने का चरखा।

अरसरी—(गु.) विचित्र, अनूठा।

अरहर—(सं· पु·) रहर।

अराजकता—(भाव.) उपद्रव, हलचल।

अराति—(सं· पु.) वैरी, शत्रु, दुश्मन।

अराधना—(क्रि· पु·) पूजना, (सं· स्त्री·) पूजा।

अरि—(सं· पु·) वैरी, शत्रु, अराति, दुश्मन।

अरिष्ट—(सं· पु·) विघ्न, कौआ, नींव वृत्त, वृषभासुर दैत्य।

अरिहा—(सं. पु·) शत्रु को मारनेवाला।

अरु—(अ.) और, फिर।

अरुचि—(भा. स्त्री·) नफरत, घृणा।

अरुण—(सं. पु·) सूर्य, सूर्य का सारथी, सिन्दूर, कुंकुम (गु·) लाल।

अरुणचूड़—(सं. पु·) मुर्गा।

अरुणशिखा—(सं· पु·) मुर्गा, कुक्कुट।

अरुणोदय—(सं· पु·) भोर, बिहान, तड़के।

अरुणोपल—(सं· पु·) लाल, पद्मराग, लाल पत्थर।
अरुन्तुद—(गु·) दुःखदाई, मर्मछेदक।
अरुन्धती—(सं· स्त्री·) वशिष्ठ मुनि की स्त्री।
अर्क—(सं· पु·) सूर्य, अकवन, मंदार, औषधों का रस।
अर्गजा—(सं· पु·) एक चन्दन सी सुगन्धित चीज।
अर्गल—(सं· पु·) जंजीर, विलाई, वेलहन।
अर्घ—(सं· पु·) ईश्वर या देवता या किसी बड़े को कई चीज मिला कर अर्पण करना।
अर्घा—(सं· पु·) अर्घ देने या तर्पण करने का पात्र, शिवलिङ्ग बैठाने की चौकी।
अर्चना—(सं· स्त्री·) पूजना, सेवा, पूजा या आगत स्वागत करना।
अर्जन—(सं· पु·) कमाई, संग्रह।
अर्जुन—(सं· पु·) श्वेत, एक पेड़, युधिष्ठिर के ३ रे भाई, एक हैहय राजा।
अर्जित—(गु·) कमाया, पैदा किया हुआ।
अर्णव—(सं· पु·) समुद्र, सागर।
अर्थ—(सं· पु·) धन, मतलब, मानी, लिये, वास्ते।
अर्थशास्त्र—(सं· पु·) धन सम्पत्ति की विद्या, राजनीति।
अर्थी—(गु·) चाहने वाला, याचक, भिखारी।
अर्द्ध—(गु·) आधा, टुकड़ा।
अर्द्धचंद्र—(सं· पु·) गर्दनिया।

अर्द्धदग्ध—(गु·) अधजला, कुछ जला हुआ।

अर्द्धाङ्ग—(सं· पु.) आधा अङ्ग।

अर्द्धाङ्गी—(सं· स्त्री.) स्त्री, जोरू।

अर्द्धनिमिष—(सं· पु.) आधा पल।

अर्द्धोपवास—(क्रि· वि·) आधा उपवास रहना।

अर्द्धाङ्गी—(सं· पु·) स्त्री, नारी।

अर्पण—(सं· पु) भेंट, दान, समर्पण, नज़र।

अर्पित—(गु.) दिया हुआ।

अर्व—(सं· पु·) सौ करोड़।

अर्भ
अर्भक } —(सं· पु·) पुत्र, लड़का, बालक, शिशु (गु·) छोटा।

अर्ल (Earl)—(सं. पु.) विशेष योधा, अंगरेज़ी पदवी, ख़िताब।

अर्वाचीन—(गु·) नया।

अर्श —(स· पु.) बवासीर रोग।

अरश परश—(सं. पु.) शुद्धि के लिये जल छिड़कना, धूना, अचमन।

अर्हण—(भाव. सं·) पूजा, खातिर।

अर्हन्त—(सं. पु.) जैनियों के एक मुनि।

अलक—(सं स्त्री.) केश, बाल।

अलका—(सं· स्त्री.) कुबेर की पुरी।

अलकावलि—(सं. स्त्री·) वेणी, घूंघरे बाल, जुल्फ़।

अलख—(गु·) जो देख या समझ न पड़े (सं· पु·) ईश्वर, ब्रह्म,

परमात्मा।

अलक्षि—(गु·) लक्ष्मीहीन, कंगाल, दरिद्री, धनहीन।

अलक्षित—(गु·) छिपा हुआ।

अलङ्कार—(सं· पु·) गहना, शोभा, साहित्य का एक भाग, कविता का गुण दोष बताने वाला शास्त्र।

अलङ्कृत—(सं. पु·) शोभित, संवारा हुआ।

अलबेला—(सं· पु·) छैला, चिकनियां।

अलभ्य—(सं· पु·) जो मिल न सके, दुर्लभ।

अलम्—(अ·) बहुत, पूरा, काफी, मत करो, बेफायदे, फजूल।

अलवाई—(सं· पु.) थोड़े दिन की ब्याई, अलवांति।

अलसी—(सं· स्त्री·) तीसी, अन्न।

अलसेट—(सं· पु.) लगाव, लाग।

अलान—(सं· पु·) फन्दा, हाथी बांधने का खम्भा।

अलि, अली, अलिन्—(सं पु) भौंरा, बिच्छू, कोयल, काग, शराब।

अलिनी—(सं· स्त्री·) भ्रमरी, भौंरी।

अलीक—(सं· पु·) मिथ्या, झूठा, असत्य, (स्त्री.) झूठ।

अलीन—(गु·) अयोग्य, नाजायज़।

अलीहा—(गु·) झूठ, मिथ्या, दरोग़।

अलोना—(गु.) फीका, विना नमक का।

अलेप—(गु·) निर्दोष, शुद्ध, (सं· पु·) निरञ्जन, परमात्मा, ब्रह्म।

अलोल—(गु·) अडोल, स्थिर, दृढ़।

अलौकिक—अनोखा, अपूर्व, अनूठा।
अल्प—(गु·) थोड़ा, कुछ छोटा।
अल्पज्ञ—(गु·) थोड़ा जानने वाला, मूर्ख।
अल्हड—(गु·) अनारी, वेशऊर।
अल्प कटाल—(सं. पु·) छोटा ज्वार भाटा।
अवकाश—(सं· पु) औसर, सुभीता, फुरसत, मोहलत, छुट्टी।
अवगत—(गु·) जाना हुआं, ज्ञात।
अवगाह—(सं· पु·) नहाना, थाह लेना।
अवगाहा—(गु·) अथाह, बहुत।
अवगुण—(सं· पु·) खोटा, दोष
अवघट—(गु·) वेघाट, कुजगह
अवचट—(गु·) धोखे, अचानक।
अवच्छिन्न—(गु·) युक्त, सीमाबद्ध।
अवडार—(पूर्व· क्रि·) वहकाके, धोखा देकर।
अवढर—(गु·) जल्द, अपूर्व, असीम।
अवज्ञा—(सं· स्त्री·) अपमान, बुराई, दोष, अनादर।
अवतंस—(सं· पु.) भूषण, गहना, कर्णफूल, मुकुट, प्रसिद्ध, नामी।
अवतरण—(सं· पु.) उद्धरण, पूर्व पीठिका, उतरना, [से प्रकाश।
अवतार—(सं· पु·) जन्म, प्रगट, उत्पन्न, ईश्वर का मनुष्यादि रूप
अवतीर्ण—(गु·) प्रगटे हुए, अवतार लिये हुए।
अवदात—(गु·) उज्ज्वल, सुन्दर, उत्तम। [नीय।
अवद्य—(सं· पु·) पाप, दोष, अपराध (गु·) नीच, पापी, निन्द-

अवध } —(सं. स्त्री·) वचन, सीमा, समय. अवधेश, अयोध्या-
अवधि } पुरी, नहीं मारने योग्य।

अवध्य—(गु·) न मारने लायक।

अवधान—(भा· पु) कृपा, दया, ध्यान, खेयाल।

अवधेश—(सं· पु·) अयोध्या के राजा।

अवधूत—(गु·) फटकारा हुआ, योगी।

अवनत—(गु.) झुका हुआ, प्रणत।

अवनति—(भा· स्त्री·) घटती, उतार, नीचे को झुकना।

अवनि, अवनी—(सं· स्त्री·) धरती, पृथ्वी, भूमि, ज़मीन।

अवनिकुमारी—(सं. स्त्री·) सीता, जानकी।

अवनिप, अवनीश—(स. पु·) राजा, बादशाह।

अवन्ति—(स. स्त्री·) मालवा देश।

अवयव—(स· पु·) टुकड़ा, अंश, भाग।

अवर—(गु·) छोटा, पीछे पैदा हुआ।

अवराधना—(भा· क्रि.) सेवा, पूजा करना।

अवरेख—(स· स्त्री·) गिनती।

अवरेखना—(स· क्रि.) ध्यान से देखना।

अवर्त—(स. पु.) भंवर।

अवरोध—(स. पु.) रुकाव, अटकाव, रनिवास, रोक, अटक।

अवरोह—(स. पु.) उतार, चढ़ना, घरोह।

अवराधन—(सं· पु·) सेवा।

अवर्षण—(सं· पु.) रौदी, सुखार, वरसा न होना।

अवलम्ब—(सं· पु·) सहारा, आधार, आसरा।
अवली—(सं. स्त्री.) पांती, लकीर।
अवलोकन—(भा· पु·) दृष्टि, दीठ, नज़र, देखना, दर्शन।
अवलोकना—(क्रि· पु.) देखना।
अवशिष्ट—(गु·) शेष, अधिक, बाकी।
अवशेष—(भा· पु·) बाकी।
अवश्य—(क्रि· वि.) निश्चय, चाहिये, ज़रूर।
अवश्यम्भावी—(गु·) जरूर होने वाला।
अवसन्न—(क· पु·) उदास।
अवसर—(सं· पु·) मौका, छुट्टी, घात, वक्त।
अवसान—(सं· पु·) अन्त।
अवसेरी—(भा· स्त्री.) देर।
अवस्था—(सं· स्त्री·) दशा, उम्र, हालत।
अवस्थान—(सं. पु·) ठहरना, बैठना।
अवस्थित—(गु·) ठहरा हुआ।
अवहेला—(सं· स्त्री·) अनादर, उपेक्षा, लापरवाही।
अवाक्—(गु·) चुप।
अवाच्य—(गु.) गाली गुता, न कहने योग्य।
अवाध—(गु·) वेरोक, स्वतन्त्र।
अवाध्य—(गु·) वेकहा, विगड़ैल, जो किसी का रोब न माने।
अविकल—(गु·) पूरा, ज्यों का त्यों।
अविगत—(क· पु·) व्यापक, सब जगह मौजूद।
अविचल—(गु·) अचल, अटल, जो चले नहीं, मजबूत

अविद्या—(सं· स्त्री.) मूर्खता, अज्ञानता, भूल।
अविनय—(सं पु·) ढिठाई।
[परमेश्वर।
अविनाशी—(गु·) अक्षय, नाशरहित, जिस का नाश न हो,
अविरल—(गु·) गहरा, गाढ़ा, मोटा, सदा, निविड़, हमेशा।
अविराम—(गु·) सदा, हमेशा, लगातार।
अविवेक—(सं. पु·) अविचार, अज्ञानता, बेविचार।
अवैध—(गु·) अनुचित।
अव्यक्त—(गु.) छिपा हुआ, अदृश्य, (पु·) विष्णु, परमेश्वर।
अव्यय—(सं· पु·) विष्णु, परमेश्वर, जिन शब्दों में कारक के चिन्ह नहीं होते हैं; जैसे और, वा, अथवा, परा, सम इत्यादि को अव्यय कहते हैं। (गु·) व्यय रहित, जो खर्च न हो।
अव्यर्थ—(गु·) अचूक, अमोघ, जो कभी व्यर्थ वा बेकार न हो।
अव्यवसाय—(सं· पु·) निरुद्यम, बिना काम का।
अव्यवसायी—(गु·) सिद्धान्तरहित, निरुद्यमी, बेकार।
अव्यवहार्य्य—(सं· पु·) जिस का व्यवहार नहीं किया जाय।
अव्यवस्थित—(गु·) चञ्चल, बेहोश, अनुचित, तितिरबितिर।
अव्याहत—(सं· पु·) बेरोक, आशावान्।
अशकुन—(सं· पु·) बुरा सगुन, अपशकुन।
अशक्त—(क· पु·) निबल।
अशक्य—(गु·) जो न किया जा सके, असाध्य।
अशंक—(गु·) निर्भय।

अशन, असन—(भा· पु·) भोजन, खाना।
अशनि—(सं. पु·) बिजली, वज्र, इन्द्र का शस्त्र।
अशरण—(गु·) अनाथ, हीन, बेचारा।
अशान्त—(गु·) चंचल, शान्तिहीन।
अशिव—(गु·) अशुभ, अमंगल।
अशिष्ट—(गु·) नीच, अधम, दुष्ट, बुरा।
अशिक्षित—(गु·) अनसीखा, मूर्ख, कुपढ़।
अशुचि—(गु·) अपवित्र, नापाक।
अशुद्धि—(सं· स्त्री·) अपवित्रता, गल्ती, भूल।
अशुभचिन्तक—(गु·) वैरी, दुश्मन, बुराई सोचनेवाला।
अशेष—(गु·) पूरा, बिलकुल।
अशोक—(सं· पु·) एक वृक्ष, एक राजा का नाम, (गु·) सुख
विना शोक।
अशोधित—(गु·) मैला, विना शोधा हुआ।
अशौच—(सं· पु·) छूतक।
अश्रु—(सं. पु.) आंसू, लोर।
अश्लील—(गु·) असभ्य, बुरा, जो कहने के योग्य न हो।
अश्व—(सं· पु·) घोड़ा।
अश्वतर—(सं· पु·) खच्चर।
अश्वत्थ—(सं· पु·) पीपल का वृक्ष।
अश्वमेध—(सं. पु·) घोड़े का यज्ञ जिस में घोड़ा होमा जाता है।
अश्वशाला—(सं· स्त्री.) स्तबल, तबेला, घोड़शाला।
अश्वारोही—(सं· पु·) घोड़सवार, घोड़े पर चढ़ने वाला या

घोड़े पर चढ़ा हुआ।

अस्ट—(सं. पु·) आठ।

अष्टधातु—(सं· पु·)आठ धातु, अर्थात् १ सोना, २ चांदी, ३ तांबा, ४ पीतल, ५ रांगा, ६ कांसा, ७ सीसा, ८ लोहा।

अष्टसिद्धि—(सं. स्त्री.) आठ सिद्धि अर्थात् १ अणिमा, २ महिमा, ३ लघिमा, ४ प्राप्ति, ५ प्राकाम्य, ६ ईशिता, ७ वशिता, ८ कामा वसायिता।

अष्टाङ्गप्रणाम, आष्टाङ्गप्रणाम—(सं· पु·) आठ अङ्गों (हाथ, पैर, जांघ, हृदय, आंख, सिर, वचन और मन) से प्रणाम करना।

असंगत—(गु·) अनुचित, अयोग्य।

अस—(अव्य.) ऐसा।

असत्—(गु) झूठ, खराब, अनुचित।

असंख्य—(गु.) अनगिनत, बेशुमार, बहुत।

असती—(गु·) व्यभिचारिणी स्त्री।

असत्य—(गु·) झूठ, मिथ्या।

असफल—(गु·) व्यर्थ।

असभ्य—(गु·) गंवार, अनाड़ी, जो सभा के योग्य न हो।

असमंजस—(सं· पु·) सन्देह, द्विविधा।

असमर्थ, अशक्त—(गु·) दुर्बल, निर्बल, शक्तिहीन।

असम्भव—(गु·) नहीं होने वाला, जो नहीं हो सके, गैरमुमकिन।

असम्भाव्य—(गु·) अनहोना, जो होने लायक न हो।

असमय—(गु.) बेवक्त, बेमौका, बुरा दिन।

असमशर—(सं· पु.)कामदेव।

असहाय—(गु·) अकेला, वेसहारे का।
असह्य—(गु·) जो सहने योग्य न हो।
असाध, असाध्य—(·) कठिन, जो साधने में न आवे।
असार—(गु·) जिस में सार न हो, अर्थात् वेमतलब, पोला।
असावधान—(गु.) अचेत, वेखबर।
असि—(सं· स्त्री.) तलवार, शमशेर।
असित—(गु·) काला, कृष्ण।
असिद्ध—(गु·) अधूरा, निष्फल।
असीम—(गु·) वेहद, अधिक, बहुत।
असु—(सं· पु.) प्राण।
असुर—(सं· पु·) राक्षस।
असूया—(भा. स्त्री·) निन्दा।
असृक—(सं· पु·) खून, रक्त, लोहू।
अस्त—(गु·) गायब, डूबा।
अस्तमित—(गु·) डूबा हुआ, नष्ट।
अस्ति—(गु·) तितिरवितिर, उलटा पुलटा।
अस्ताचल—(सं· पु·) जिस पर सूर्य्य डूबता है वह पहाड़।
अस्ति—(क्रि. संस्कृत) है, विद्यमान, मौजूद।
अस्तित्व—(भा. सं.) होना, सत्ता, स्थिति।
अस्तु—(क्रि· संस्कृत) होय, हो।
अस्त्र—(सं· पु·) बाण, तीर आदि हथियार जो फेंक के मारा जाय।
अस्थि—(सं· पु·) हड्डी, हाड़।
अस्तिचर्मावशिष्ट—(क· पु·) जिस में केवल हड्डी चमड़ा रह गया

हो, बहुत दुबला।
अस्थिपञ्जर—(सं· पु·) हाड़ की ठटरी।
असमात्—(अ·) संस्कृत शब्द, पञ्चमी विभक्ति, इस से, अतएव।
असञ्चालक—(गु·) जो नहीं चला सके।
अस्वीकार—(सं· पु.) न मानना, नाकबूल, नाही कर देना।
अहः—(अव्य·) दिन, आह।
अहमुख—(सं· पु.) भोर, सुबह, फजिर।
अहम्मन्य—(गु·) अहङ्कारी, घमण्डी।
अहमिति—(सं. स्त्री·) अहङ्कार, घमण्ड।
अहर्निशि, अहर्निश—(सं· स्त्री·) दिन रात।
अहही—(क्रि·) हैं, वर्तमान है।
अहार—(सं· पु·) भोजन, खाना।
अहि—(सं· पु·) सर्प, पथिक, वृत्रासुर।
अहित—(सं· पु·) शत्रु, दुश्मन, बुराई।
अहिनी—(सं· स्त्री·) सर्पिणी, सांपिन।
अहिंसा—(स्त्री·) दया।
अहिपति—(सं· पु·) सांपों का राजा, शेष जी, वासुकी।
अहिफेन—(सं· पु·) अफीम।
अहिमुख—(सं· पु·) सांप का मुंह, सपमूंहा।
अहिवात—(सं· पु.) सौभाग्य, सोहाग।
अहिवेलि—(सं. स्त्री·) नागवेलि, पान।
अहीश—(सं. पु.) सर्पराज, शेष नाग।
अहेर—(सं· स्त्री·) आखेट, मृगया, शिकार।

अहोरात्र—(सं. पु.) दिन रात।

अहङ्कार—(सं. पु.) अभिमान, घमण्ड, गरूर।

अक्ष—(सं. पु.) धुरी, पाशा।

अक्षत—(सं. पु.) पूजा का चावल।

अक्षदण्ड—(सं. पु.) मेरुदण्ड।

अक्षम—(गु.) असमर्थ।

अक्षय—(गु.) नाशरहित, स्थिर, अटूट।

अक्षर—(सं.) वर्ण, हरूफ (गु.) नित्य, ब्रह्म।

अक्षि—(सं. पु.) आंख।

अक्षुण्ण—(गु.) रक्षित, ज्यों का त्यों।

अक्षुब्ध—(गु.) शान्त, निर्विकार।

अक्षोभ—(गु.) निर्भय, बेडर, शान्त।

अक्षौहिणी—(सं. स्त्री.) एक प्रकार की बड़ी भारी सेना।

आंक—(सं. पु.) अङ्क।

आंकना—(क्रि.) अन्दाज लगाना।

आंजि—(अ. क्रि.) अंजन लगा कर।

अज्ञ—(गु.) अजात, मूर्ख।

अज्ञाता—(भा. सं. मूर्खता, नासमझी।

अज्ञात—(गु.) बेजाना, छिपा।

अज्ञाता—(सं. पु.) अज्ञ, मूर्ख।

अज्ञान }
अज्ञानी } (गु.) अजान, मूर्ख, बेवकूफ़।

अज्ञानता—(भा. सं.) अजानपन, नासमझी।

आ

आंट—(सं. पु.) गांठ, वैर।

आंत—(सं. स्त्री.) अंतड़ी।

आक—(सं. पु.) अकवन, मदार।

आकर—(सं. स्त्री.) खान, खानि, धातु वा रत्नादि के उत्पत्तिस्थान, आ कर के।

आकर्ष—(भा· पु·) खींचना, बटोरना।

आकर्षक—(क· पु.) खींचनेवाला, चुम्बक पत्थर।

आकर्षण—(भा· पु·) खिंचाव, खींचने की शक्ति।

आकर्षित—(गु·) खींचा गया।

आकलन—(सं· पु·) सोचना, सुनना, विचारना, गिनना।

आकांक्षा—(सं· स्त्री·) इच्छा, अभिलाषा, चाह, वांछा।

आकार, आकृति—(सं· पु·) रूप, डौल, स्वरूप, सूरत, चिन्ह, आ—स्वर।

आकाश—(सं· पु·) आसमान।

आकाशवृत्ति—(सं. स्त्री·) स्वर्गासरा, अनिश्चित जीविका।

आकाशकुसुम—(सं· पु·) असंभव।

आकीर्ण—(गु·) भरा हुआ।

आकुञ्चन—(भा· पु·) संकोचन, सिकुड़ना।

आकुल— (गु·) घबराया हुआ, व्याकुल, दुखी, परेशान।

आकृष्ट—(सं· पु·) आकर्षित, खींचा हुआ।

आक्रमक—(क· पु.) घेरनेवाला, हमला करनेवाला।

आक्रमण—(भा. पु·) व्यापन, घेरना, हमला करना।

आक्रान्त—(सं· पु.) घेरा हुआ, घेरा गया, हमला किया गया, (क.) थका हुआ, श्रान्त।

आक्रोश—(भा. पु·) क्रोध, रोना, गुस्सा।

आक्षेप—(सं· पु·) बुरी बात, निन्दा, फेंकना, एक अर्थालङ्कार का नाम।

आखर—(सं. पु·) अक्षर, वर्ण, हर्फ।

आखा—(सं· पु·) गोनि, लादने का बोरा।

आखु—(सं. पु·) मूषक, मूस, मूसा, चहा,

आखेट—(सं· पु·) शिकार, अहेर।

आखात—(सं· स्त्री·) बहुत चौड़ी खाड़ी का नाम है।

आख्या—(सं· स्त्री·) नाम, संज्ञा।

आख्यात—(सं· पु·) उक्त, कहा हुआ, मज़कूर।

आख्यान— } (सं· पु.) बात, कथा, वृत्तान्त, वर्णन, इतिहास।
आख्यायिका—

आगत—(क· पु·) आया हुआ, पहुंचा, उपस्थित।

आगन्तुक—(क· पु·) आनेवाला, अजनबी।

आगम—(सं· पु·) शास्त्र, भविष्यत्।

आगमन—(भा· पु·) आना, अवाई।

आगर—(गु· पु·) बहुत चतुर, घर।

आगामी—(क· पु·) आनेवाला, भावी, जो आगे आनेवाला है।

आगार—(सं· पु·) घर, स्थान, जगह, मकान।

आगुल्फ—(गु·) ठेहुने तक।

आग्रह—(भा· पु·) पकड़ना, घेरना, छीनना, लेना, कसना, छेड़ना, हठ करना, जिद् पकड़ना।

आघात—(सं· पु·) चोट, मारना, मारने की जगह।

आघूर्णित—(गु·) घूमाहुआ, चक्कर खाता हुआ।

आघ्राण—(भा· पु·) सूंघना, गन्ध लेना।

आघ्रेय—(र्म· पु·) सूंघने के योग्य।

आङ्गारिकाम्ल—(सं· पु·) कोयले के जलने से उत्पन्न हुई हवा, कारबोनिक एसिड गैस।

आचमन—(भा· पु·) खाने के बाद हाथ मुंह धोना, सन्ध्या करने के समय चुल्लू से तीन बार मुंह में पानी लेना।

आचरण, आचार—(भा· पु·) चालचलन, व्यवहार, रीति।

आचरित—(गु·) किया हुआ।

आचार्य्य—(क· पु·) गुरु, पढ़ानेवाला, उपदेश करनेवाला।

आच्छन्न—(गु·) ढका हुआ, घिरा हुआ।

आच्छादक—(क· पु·) ढांकनेवाला, छिपानेवाला।

आच्छादन—(भा· पु·) ढकने का कपड़ा, चद्दर, ढकना।

आच्छादित—(र्म· पु·) ढका हुआ, मुंदाहुआ, आवृत्त।

आच्छिन्न—(र्म. पु·) घेरा हुआ, भलीभांति काटाहुआ, छिनाहुआ।

आछे, आछें—(गु·) अच्छे।

आजा—(सं· पु·) दादा, पितामह।

आज़म (फा॰)—(गु·) बड़ा, बहुत बड़ा, जैसे वज़ीर आज़म।

आजीव—(सं· पु·) जीविका, पेशा, रोज़गार।

आजीविका—(सं· स्त्री·) रोजी।

आज्ञा—(सं॰ स्त्री॰) हुक्म, आदेश, आयसु।

आज्ञाकारी
आज्ञानुवर्त्ती } —(क॰ पु॰)आज्ञा मानने वाला, सेवक, तावेदार।

आज्ञापत्र—(सं॰ पु॰) हुक्मनामा।

आज्य—(सं॰ पु॰) घृत, घी, घीव।

आटोप—(सं॰ पु॰) घमण्ड, अभिमान, दर्प, अहङ्कार।

आडम्बर—(सं॰ पु॰)हर्ष, घमण्ड, बनावट, बनाव, मेघ का गरजना

आढ़त—(सं॰ स्त्री॰)अड्डा, व्यापार की जगह।

आढ़तिया—(सं॰ पु॰) माल चलान करनेवाला।

आतङ्क—(गु॰) डर, पीड़ा, दुख, (पु॰)घाम, धूप।

आततार्इ—(सं॰ पु॰) आग लगानेवाला, हत्या करनेवाला जीविका और स्त्री हरने वाला, मारने पर उतारू।

आतप—(सं॰ पु॰) धूप, घाम, सूर्य्य की गर्म्मी।

आतपत्र—(सं॰ पु॰) छाता।

आतिथेय—(गु॰ पु॰) अतिथि के लिये भोजनादि, अतिथिसेवक।

आतिथ्य—(भा॰ पु॰) अतिथिसेवा, सम्मान।

आतुर—(गु॰) घबराया हुआ, दुखी, व्याकुल, रोगी, (क्रि॰ वि॰) शीघ्र, झटपट।

आत्मगौरव—(सं॰ पु॰) अपना महत्व, अपनी बड़ाई।

आत्मघात— सं॰ पु॰) आत्महत्या, अपने को मारडालना।

आत्महत्या—(सं॰ स्त्री॰) अपनी हत्याकरना।

आत्मज—(सं॰ पु॰) पुत्र, बेटा, सन्तान।

आत्मरक्षा—(सं. स्त्री.) अपनी रक्षा, अपना बचाव।

आत्मा—(सं. स्त्री.) जीव, प्राण, आप, मन।

आत्मीय—(गु. पु.) अपना, स्वकीय, बन्धु।

आत्म सम्वर्द्धन(—सं. पु.) अपनी उन्नति।

आदरणीय—(सं. पु.) सन्मानयोग्य, खातिर के लायक।

आदर्श—(सं. पु.) नमूना।

आदान—(भा. पु.)ग्रहण, लेना, स्वीकार, मंजूर।

आदि—(गु.) पहला, प्रथम, आरम्भ, मूल, इत्यादि।

आदि कवि—(सं. पु.) वाल्मीकि, पहला कवि, ब्रह्मा।

आदित्य-(सं. पु.) सूर्य, देवता।

आदित्यवार-(सं. पु.) एतवार।

आदिम—(गु.) पहला, प्रथम।

आदिपुरुष—(सं. पु.) पहला पुरुष, विष्णु, परमेश्वर।

आदिष्ट—(सं. पु.)हुकम दिया गया, आज्ञा पाया हुआ।

आदेश—(सं. पु.) आज्ञा, हुक्म, एक अक्षर को दूसरे से बदलना।

आद्य—(गु.) पहला।

आद्याचार्य्य—(सं. पु.) (आदि+आचार्य्य=आद्याचार्य्य) आरम्भ के गुरु।

आद्योपान्त—(सं. पु.) आदि से अन्त तक।

आद्दृत—(सं. पु.) मान किया गया।

आधान—(सं. पु.) गर्भधारण, गर्भ, हमल।

आधार—(सं. पु.) आसरा, पालनेवाला, आहार, पात्र, अधिकरण।

आधि—(सं. स्त्री.) मन की पीड़ा, रहन, थाती।

आयोजन—(सं· पु.) तैयारी।

आरज—(गु·) बड़ा, श्रेष्ठ।

आरत—(गु.) दुखी, व्याकुल, घबराया हुआ।

आरति—(सं· स्त्री·) दुःख।

आरती—(सं· स्त्री·) देवताओं को दीप या कपूर बाल कर पूजा करना, नीराजन।

आरसी—एक गहना जो दर्पण का काम देता है।

आरब्ध—(सं. पु.) आरम्भित, आरम्भ किया गया।

आरम्भ—(सं. पु·) प्रारम्भ, शुरूअ।

आराति—(सं· पु·) वैरी।

आराधक—(क. पु·) आराधना करनेवाला, पूजनेवाला,सेवक,भक्त।

आराधना—(सं. स्त्री·) पूजा, देवसेवा।

आराम—(सं. पु·) फुलवारी, बाग़ीचा, वाटिका।

आरूढ़—(गु·) सवार, तय्यार।

आरोग्य—(सं· पु·) कुशल।

आरोप—(भा. पु·) स्थापन।

आरोपित—(सं· पु·) सौंपा हुआ, सुपुर्द, रक्खाहुआ, रोपाहुआ।

आरोह, आरोहण—(सं· पु.) ऊपर चढ़ना, सीढ़ी।

आर्जव—(गु·) सीधापन, दयालुता, सुशीलता, दया, नम्रता।

आर्द्र—(सं· गु·) भींगा, गीला, ओदा, रसीला, तर।

आर्य्य—(सं. पु·) बड़ा, श्रेष्ठ, कुलीन, पूज्य, पूजनीय, हिन्दू।

आर्य्यावर्त्त—(सं· पु.) भारतवर्ष की वह भूमि जो हिमालय और विन्ध्यपहाड़ के बीच पूर्व समुद्र से पश्चिम समुद्र तक फैली है।

आलय—(सं. पु·) घर, स्थान।
आलवाल—(पु·) थाला। आला—(पु·) ताक़।
आलान—(सं. पु·) हाथी बांधने का खम्भा।
आलिङ्गन—(सं. पु.) प्यार से मिलना, गले लगाना।
आलि / आली —(सं· स्त्री.) पांति, सखी, सहेली।
आलोक—(सं. पु·) दर्शन, चमक, बड़ाई, प्रकाश।
आलोकन—(भा· पु·) दर्शन, देखना।
आलोचना—(भा· पु.) विचारना, शुद्ध करना, चर्चा करना, नजरसानी करना।
आलोच्य—(गु·) विचारने का विषय।
आलोडन—(सं· पु·) मथना, डूब कर खोजना, अवगाहन।
आवभगत / आवभक्ति —(स्त्री०) आदर, मान। आव—(स्त्री.) उम्र।
आवरण—(सं. पु) ढाल, ढकना, पर्दा, ढाकने की वस्तु।
आवर्त्त—(सं. पु·) भंवर, चक्र, चकोह, फेर, घुमाव।
आवलि—(सं· स्त्री.) पांति।
आवश्यकता—(भा· स्त्री·) निश्चय, कर्त्तव्य, ज़रूरत।
आवागवन—(सं· पु·) आनाजाना, आमदरफ़्त।
आवाहन / आव्हान —(भा· पु·) आदर से बुलाना, पूजा के समय देवताओं को बुलाना।
आविर्भाव—(भा· पु·) प्रगट होना, जाहिर होना।

आविर्भूत—(गु·) प्रगट, जाहिर, प्रत्यक्ष।
आविष्कार—(सं· पु·) नई बात पैदा करना, ईजाद करना।
आविष्क्षत—(गु·) निकला हुआ।
आविष्ट—(क· पु·) बैठा, घुसा।
आवृत—(र्म· पु·) आच्छादित, ढाका हुआ, घेरा हुआ।
आवृत्ति—(सं· स्त्री·) दुहराना, पढ़े हुए को बारबार पढ़ना, पाठ करना, उद्धरणी।
आवेदन—(भा· पु.) निवेदन, गुजारिश।
आवेश—(भा· पु·) प्रवेश, घुसना, घमण्ड, क्रोध, (गु·) पकड़ा हुआ, ग्रस्त।
आवेशन—(सं· पु.) शिल्पशाला, घुसना।
आशक्त, आसक्त—(क· पु·) लगा हुआ, मोहित, लीन।
आशङ्का—(सं· स्त्री.) डर, सन्देह।
आशय—(सं· पु.) मतलब, अभिप्राय।
आशयदण्ड—(सं· पु.) सहारे की लाठी, फूल में डंटी।
आशातीत—(गु·) आशा से अधिक।
आशु—(क्रि· वि·) शीघ्र, तुरत, जल्द।
आशुतोष—(सं· पु·) शिव, महादेव।
आश्चर्य्य—(सं· पु·) अचम्भा, ताज्जुब।
आश्चर्य्यजनक—(क· पु·) अचम्भा पैदा करनेवाला।
आश्चर्य्यान्वित—(गु.) अचरज युक्त, अचम्भे में आयाहुआ।
आश्रम—(धि. पु.) ऋषियों के रहने की जगह, १ ब्रह्मचर्य्य, २ गार्हस्थ्य, ३ वानप्रस्थ, ४ संन्यास।
आश्रय—(सं· पु·) शरण, अवलम्ब, घर, स्थान, पास।

आश्रित—(सं. पु·) शरणागत।
आश्लेष—(सं· पु·) मिलना, लगना।
आश्वासन—(भा· पु.) धैर्य्य, ढाढ़स।
आसनस्थ— (गु·) आसन पर स्थित।
आश्विन—(सं· पु·) कुआर महीना, आसिन।
आसन—(सं. पु·) बैठने का बिछावन।
आसन्न—(गु·) पास का, निकट का, नगीच।
आसव—(सं· स्त्री.) मदिरा, शराब, प्राण, मद।
आसावसन—(भा· पु·) नंगा।
आसीत—(गु·) बैठा हुआ।
आशु—(अव्य.) शीघ्र, जल्दी, तुरत।
आस्तिक—(क. पु·) जो लोग ईश्वर और परलोक का होना मानते हैं, परमेश्वर में विश्वास रखनेवाला एक ऋषि।
आस्पद—(धि. पु·) पद, स्थान।
आस्फालन—(सं· पु·) छटपटाना।
आस्वाद— सं· पु·) सवाद, मजा।
आस्य—(सं· पु·) मुख, मुंह।
आहट—(सं· पु.) शब्द, टोह।
आहत—(सं··पु·) घायल, चोटीला, मृत।
आहार—(सं· पु.) भोजन, खाना।
आहि — (अव्य.) दुःख का शब्द, आह।
आही—(क्रि·) है।
आहुति—(सं· स्त्री·) होम।

अहूत—(गु·) बुलाया हुआ, पुकारा गया।
आह्निक—(सं. पु.) प्रति दिन का धर्मकार्य।
आह्लाद—(सं. पु.) आनन्द, सुख, खुशी।
आह्लादित—(गु·) आनन्दित, हर्षित, खुश।
आव्हान—(सं. पु·) बुलाना, ललकारना।
इ—(सं. पु.) कामदेव।
इकटक—(क्रि. वि·) एक टक से, विना पलक गिराये।
इकलौता—(गु·) एक ही, केवल।
इक्षु—(सं. स्त्री·) ऊख, ईख, केतारी, गन्ना।
इक्षुरस—(सं· पु.) ऊख का रस, राव।
इक्ष्वाकुवंशी—(गु.) इक्ष्वाकु राजा के घराने के सूर्य्यवंशी क्षत्रिय।
इङ्गलिश (English) —(गु·) अंगरेज़ी।
इच्छा—(सं· स्त्री·) चाह, कामना, ख्वाहिश।
इच्छु—(क. पु.)चाहनेवाला, इच्छा करनेवाला, ख्वाहिशमन्द।
इज्या—(सं. स्त्री.) यज्ञ, पूजा, सेवा।
ईड़ा—(भा· स्त्री.) स्तुति करना, बड़ाई करना, (सं·स्त्री·)एक नाड़ी।
इठलाना—(सं· पु·) अगराना,इतराना, चोन्हा करना, घमण्ड करना।
इण्डिया—(सं· पु·) हिन्दुस्तान, भारतवर्ष।
इण्डियन—(सं. पु·) हिन्दुस्तानी, भारतवर्ष के रहने वाले।
इत—(अव्य.) इधर, यहां, इस ओर।
इतर—(सं. पु.) दूसरा, नीच (सं. स्त्री·) इत्र।
इतराना—(सं. पु.) घमण्ड करना, अगराना।
इतस्ततः—(अव्य.) इधर उधर।

इति—(अ.) इस प्रकार, ऐसे , यहां तक, पूरा, खतम ।
इतिवृत्त—(सं. पु.) पूरा हाल, कथा, इतिहास ।
इतिहास—(सं. पु.) पुरानी कथा, वृत्तान्त, तवारीख ।
इतेक—(गु.) इतना भर ।
इत्थम्—(अ.) इस प्रकार, इस तरह ।
इङ्ग—(सं. पु.) चराचर, चेष्टा, अद्भुत, ज्ञान ।
इङ्गलैण्डीय—(गु.) इङ्गलैण्ड का ।
इङ्गित—(भा. पु.) सैन, इशारा, चिन्ह ।
इन्दिरा—(सं. स्त्री.) लक्ष्मी ।
इन्दीवर—(सं. पु.) नीलकमल ।
इन्दु—(सं. पु.) चांद, चन्द्रमा, कपूर, मृगशिरा नक्षत्र ।
इन्दुर— सं. पु.) मूसा, चूहा ।
इन्द्र—(सं. पु.) देवताओं के राजा -(गु.) राजा, प्रधान, मुखिया ।
इन्द्रगोप— सं. पु.) वीर बहूटी ।
इन्द्रजाल—(सं. पु.) जादू का खेल, माया, कपट ।
इन्द्रजित—(सं. पु.) रावण का बेटा, मेघनाद, इन्द्र को जीतनेवाला ।
इन्द्रधनुष, इन्द्रधनु—(सं. पु.) धोरो, पनसोखा ।
इन्द्रप्रस्थ—(सं पु.) दिल्ली ।
इन्द्रवधू—(सं. स्त्री) इन्द्राणी, लालकीड़ा, वीरबहूटी ।
इन्द्रयव—(सं. पु. . कुटज का फल ।
इन्द्राणी—(सं. स्त्री.) शची, इन्द्र की स्त्री, एक दवाई ।
इन्द्रासन—(सं. पु.) इन्द्र का सिंहासन ।

इन्द्रामन—(सं॰ पु॰) वृक्ष विशेष जिस का फल लाल पर कड़वा होता है, दूनारुन ।

इन्द्रायुध—(सं॰ पु॰) वज्र, विजुली, वोरो, इन्द्रधनुष ।

इन्द्रिय, इन्द्री—(सं॰ स्त्री॰) जिस से रूप रस अथवा करना, चलना आदि का ज्ञान होता है । १ हाथ, २ पांव, ३ वाक् ४ लिङ्ग, ५ गुदा ये पांच कर्म इन्द्रिय हैं । १ आंख, २ नाक, ३ कान, ४ जीभ, ५ शरीर पर का चमड़ा (त्वचा) ये पांच ज्ञानेन्द्रिय हैं ।

इन्धन, ईंधन—(सं॰ पु॰) जलावन, लकड़ी ।

इभ—(सं॰ पु॰) हाथी ।

इमारत—(عمارت)—(सं॰ स्त्री॰) कोठा, घर, धन ।

इमि—(अ॰) ऐसे, इस प्रकार ।

इला—(सं॰ स्त्री॰) धरती, नारी, भवानी, देवी, बुद्धि, सरस्वती ।

इलाज—(علاج)—(सं॰ पु॰) दवाई, दवा, औषध ।

इल्ल—(सं॰ पु॰) मासा ।

इव—(अ॰) बराबर, समान, जैसे ।

इष—(सं॰ पु॰) वाण ।

इषुधि—(धि॰ पु॰) (इषु = वाण, धि = रखना) तूण, तरकश, वाण-धार ।

इष्ट—(सं॰ पु॰) अपना देवता, अपना प्यारा, (मं.) चाहाहुआ ।

इष्टदेव—(सं. प.) माना हुआ देवता ।

इस्टेशन—ष्टेशन—(सं. पु॰) ठहरने की जगह, ठिकाना, मुकाम ।

इह, इहि—(अ॰) यह, यहां, इस जगह ।

ई

ई—(स्त्री·) लक्ष्मी।

ईक्षक—(क· पु.) देखैया, देखनेवाला, नाज़िर।

ईक्षण—(सं. पु·) आंख, दर्शन, देखना।

ईक्षित—(सं· पु·) देखा हुआ, दर्शित।

ईख—(सं· पु·) ऊख, गन्ना।

ईगल—(सं· पु.) गीध, उकाब।

ईठ—(सं. स्त्री·) इष्ट, वांछित, मित्र, प्रिय, ईठि—(स्त्री·) दोस्ती।

ईति—(सं· स्त्री·) अतिवर्षा आदि खेती के नाश करनेवाले छः या सात प्रकार के उपद्रव।

ईदश—(अ·) ऐसा, इस भांति का, इस प्रकार का।

ईरान—(ایران)—(सं· पु·) एक देश का नाम, फ़ारिस।

ईप्सा—(स्त्री·) वांछा।

ईर्ष्या, ईर्षा—(सं· स्त्री·) डाह, द्रोह, द्वेष।।

ईश, ईस—(सं· पु·) ईश्वर, परमेश्वर, शिव, राजा, स्वामी, मालिक।

ईशान—(सं. पु·) शिव, पूर्व उत्तर के बीच का कोन।

ईशिता—(सं, स्त्री.) शासन करनेवाला, हाकिम, बड़ाई, बड़प्पन, एक सिद्धि का नाम।

ईषत्—(अ·) थोड़ा, अल्प।

ईस्ट—(East)—(सं· पु·) पूर्व दिशा।

ईहा—(सं· स्त्री·) यत्न, चेष्टा, उपाय, इच्छा।

उ

उ—(सं· पु·) शिव, महादेव, वर्णमाला का एक स्वरवर्ण।
उकताना—(क्रि·) घबड़ाना, ऊब जाना।
उकसन—(क्रि·) उठना, उभड़ना, निकलना।
उकसाना—(क्रि.) बढ़ादेना, इस्तालक देना, बहकाना, इशारा करना।
उक्त—(सं· पु·) कहा हुआ, बोला हुआ, कथित।
उक्ति—(सं. स्त्री·) कहना, बोलना, बोलने की शक्ति।
उगाहना—(क्रि.) बटोरना, जमा करना, मांगलाना।
उखा—(सं· स्त्री·) बटुली, डगची।
उग्र—(गु·) कठोर, डरावना, महादेव का नाम।
उग्रता—(भा. स्त्री·) कठोरता, तेजी।
उग्रसेन—(सं· पु·) आहुक का बेटा, मथुरा का राजा, कंस का चचा।
उग्रस्वभाव—(सं· पु·) कठोर चित्त, तेजमिजाज़।
उघरे—(पू. क्रि·) अण्डा फूटने पर।
उघरना—(क्रि·) खुलना, अण्डा फूटना।
उघार—(गु·) नङ्गा, उलङ्ग।
उचकना—(क्रि·) ऊपर उठना, एंड़ी के बल खड़ा होना।
उचकाना—(क्रि.) उठाना, अलगाना।
उचक्का—(सं. पु·) चोर, ठग, चाइँ छ्थलपका।
उचित—(गु·) मुनासिब, ठीक।
उच्च—(गु·) ऊंचा, लम्बा।
उच्चार—(सं. पु·) उच्चारण, मल, विष्ठा, कथन, वर्णन।

उच्चारण—(सं· पु·) बोलना, शब्द का कहना, तलफ़्फ़ुज़ ।

उच्चशिखर की शिक्षा—(सं. स्त्री.) ऊंचे दर्जे की तालीम ।

उच्चैःश्रवा—(सं· पु·) इन्द्र का घोड़ा ।

उच्छ्वास, उच्छ्वास—(सं· पु·) श्वास, आशा, उम्मीद, तरङ्ग ।

उच्छिन्न—(गु·) कटा हुआ, उखड़ा हुआ, निर्मूल ।

उच्छिष्ट—(सं· पु·) जूठा, भोजन का अवशेष ।

उच्छेद—(भा· पु·) विनाश, काटना ।

उछंग—(सं, स्त्री·) गोदी, गोद ।

उछाह—(सं. पु·) आनन्द, हर्ष, खुशी ।

उजड्ड—(सं. पु.)मूर्ख, बेवक़ूफ़ ।

उजागर—(गु·) नामवर, प्रतापी, यशस्वी, यशवाला ।

उज्ज्वल—(गु·)स्वच्छ, श्वेत, साफ, सफेद ।

उझकना, उझक कर — (क्रि· पु·) झांक कर, उठा कर, उठ कर देखना, झांकना ।

उझलना — (क्रि.) औंधना, उलटना, गिराना ।

उट—(सं. पु·) तृण, तिनका, पत्ता ।

उटज—(सं. पु·) पर्णशाला, पत्तों का घर ।

उठल्लू—(गु·) चंचल, नाहतवार ।

उठाईगिरा—(गु·) चोट्टा, ठग, उचक्का, हथमार ।

उड़ाऊ—(गु·)लुटाऊ, फज़ूल खर्च ।

उड़ाकू—(गु.) उड़नेवाला, पंखगर ।

उड़ान—(गु.) उड़ना ।

उड्डीन—(भा· पु·) उड़ा हुआ। उड्डीयमान (गु.) उड़नेवाला, [उड़ता हुआ।
उडु—(सं. पु·) तारा, नखत।
उडुगण—(सं· पु·) तारों का समूह।
उडुप—(सं· पु·) चन्द्र, चांद, डोंगी, प्लव, कोल।
उत—(अव्य.) उधर, उस तरफ, उस ओर।
उतङ्ग, उतुङ्ग—(गु·) बहुत ऊंचा।
उतावला—(गु·) अकुताया हुआ, हड़बड़ाया हुआ, जल्दबाज।
उत्—(अ·) ऊपर, ऊंचा।
उत्कट—(गु.) मत्त, अधिक, तीव्र, क्रोधी (पु०) क्रोध।
उत्कट—(गु·) तेज, अधिक, कठोर।
उत्कण्ठा—(भा. स्त्री·) लालच, चाह, चाहना, इच्छा।
उत्कल—(सं. पु·) उडीशा देश, ओडिया, उड़ीसानिवासी।
उत्कर्ष, उत्कर्षता } (भा· पु·) बड़ाई, सराह, प्रशंसा।
उत्कृष्ट—(गु·) सब से अच्छा, प्रधान, उत्तम।
उत्क्षेपणी—(गु·) ऊपर फेकनेवाली।
उत्तप्त—(गु·) गर्म, तपा हुआ।
उत्तम—(गु.) सब से अच्छा, मुख्य, श्रेष्ठ, बड़ा।
उत्तमर्ण—(सं· पु.) कर्ज देनेवाला, साहु।
उत्तमाङ्ग—(सं· पु.) शिर, माथा, मस्तक।
उत्तर—(सं· पु·) जवाब, उत्तर दिशा, पिछला, पीछे।
उत्तराधिकारी—(सं. पु.) मरने के पीछे धन का अधिकारी, वारिस।

उत्तरायण—(सं० पु·) माघसे आषाढ़ तक आधा वर्ष जिन दिनों में सूर्य विषुवत रेखा से उत्तर रहते हैं, अर्थात् मकर की सक्रान्ति से लेकर कर्क संक्रान्ति तक का समय।

उत्तरार्द्ध—(सं· पु·) पिछला, आधा।

उत्तरोत्तर—(अव्य·) आगे, आगे, दिन पर दिन, रोज रोज।

उत्ताल—(गु·) ऊंचा, वहुत उठता हुआ।

उत्तानपात्र—(सं· पु·) तवा, तावा, सोधारकवा वर्तन।

उत्तानपाद—(सं· पु·) एक राजा का नाम, ध्रुव के पिता।

उत्तीर्ण—(क· पु·) पार गत, पार पहुंचना, कामयाव, पास।

उत्तेजक—(क· पु·) धमकानेवाला, प्रेरणा करनेवाला। वढ़ानेवाला, भड़कानेवाला, उसकानेवाला।

उत्तेजना—(भा· स्त्री·) प्रेरणा करना, भड़काना, धमकाना, तेज करना।

उत्तेजित—(र्म्म· पु·) प्रेरित, धमकाया गया, जिसने उत्तेजना का पाया।

उत्तोलन—(पु·) तोलना, ऊपर को उठाना।

उत्थान—(भा· पु·) उठान, उठाव, उद्योग।

उत्थापन—(भा· पु·) उठाना।

उत्पतन—(भा· पु·) ऊपरऊसे गिरना, पतझड़।

उत्पत्ति—(सं· स्त्री·) पैदा होना, पैदावारी।

उत्पन्न—(गु·) पैदा हुआ, लाभ पाया हुआ, जन्मा हुआ।

उत्पल—(सं· पु·) कमल, कंवल।

उत्पाटन—(भा· पु·) उखाड़ना।

उत्पात—(सं· पु·) उपद्रव, ऊधम, वखेड़ा।

उत्पादक—(भा· पु·) जनक, उत्पन्न करनेवाला।

उत्पादन—(भा· पु·) जनना, पैदा करना।

उत्प्रेक्षा—(भा· स्त्री·) वरावरी, उपमा, सादृश्य, एक अलङ्कार का नाम।

उत्प्लुत—(क॰ पु॰) ऊपर उड़ना, कूदा हुआ।
उत्सर्ग—(सं॰ पु॰) न्याय, त्याग, दान, रोक।
उत्सङ्ग—(सं॰ पु॰) गोदी, कोरा।
उत्सर्ज्जन—(सं॰ पु॰) त्याग करना, दान। (आदि।
उत्सव—(सं॰ पु॰) आनन्द का काम, व्याह, जनेऊ, नाच, रंग
उत्साह—(सं॰ पु॰) आनन्द, उछाह।
उत्सुक—(गु॰) चाहनेवाला, उत्कण्ठित।
उत्सृष्ट—(गु॰) छोड़ा हुआ, दिया हुआ।
उथये—(गु॰) उखड़े।
उथलपुथल—(गु॰) उलटा पुलटा, उलटफेर।
उथला (गु॰) छिछला, कम गहरा।
उद, उदक—(सं॰ पु॰) पानी, जल।
उदजन—(सं॰ पु॰) हाइड्रोजन (Hydrogen)।
उदधि—(सं॰ पु॰) समुद्र, सागर।
उदय—(सं॰ पु॰) उगना, बढ़ती।
उदयाचल—(सं॰ पु॰) सूर्य्य के उगने का पहाड़।
उदाच—(सं॰ पु॰) अग्नि।
उदर—(सं॰ पु॰) पेट।
उदरम्भरि—(सं॰ पु॰) पेट, पेट पोसना, पेटार्थी, खाऊ।
उदरामय—(सं॰ पु॰) पेट का रोग।
उदात्त—(सं॰ पु॰) ऊंचा स्वर, दान, एक अलङ्कार।
उदान—(सं॰ पु॰) कंठ की वायु।
उदार—(गु॰) दाता, दानी, देनेवाला, बड़ा, महान्।
उदासीन—(सं॰ पु॰) सन्यासी, वैरागी, वानप्रस्थ, उदास।
उदाहट—(सं॰ पु॰) भूरापन, एक रंग।
उदाहरण—(सं॰ पु॰) दृष्टान्त, मिसाल। [बढ़ा हुआ
उदित—(क॰ पु॰) कहा हुआ, निकला हुआ, प्रकाशित, प्रगट

उदीरण—(भा॰ पु॰) कथन, कहना।
उदीरित—(गु॰) कहा गया, कथित।
उद्योत—(सं॰ पु॰) प्रकाश, प्रगट।
उद्दाम— गु॰) बे मर्य्याद, खुला।
उद्दालक—(सं॰ पु॰) एक ऋषि का नाम जो ६ महीने में एक बार खाते थे, वन का कोदव।
उद्दिष्ट—(र्म॰ पु॰) लक्षित, दिखाया गया।
उदीची—(सं॰ स्त्री॰) उत्तर दिशा। [का विभाव।
उद्दीपन—(सं॰ पु॰) पचानेवाला, भस्म करनेवाला, एक प्रकार
उद्देश, उद्देश्य—(सं॰ पु॰) चाह, खोज, पता, प्रयोजन, मतलब, जिस के विषय में कुछ कहा जाय।
उधार - (सं॰ पु॰) पैंचा, दस्तगर्दा।
उद्गम—(सं॰ पु॰) झरना, ऊपर जाना।
उद्गमस्थान या निकाश—(सं॰ पु॰) जहां से नदी निकलती हो, उपजने की वा निकसने की जगह।
उद्गार— सं॰ पु॰) डकार।
उद्धत—(गु॰) उदण्ड, उजड्ड।
उद्धार—(सं॰ पु॰) उबार, बचाव।
उद्धारण—(सं॰ पु॰) उबारना, बचाना, उरिण करना।
उद्धृत—(र्म॰ पु॰) ऊंचा किया गया, उठाया गया।
उद्भव—(सं॰ पु॰) जन्म, उत्पत्ति, पैदा होना।
उद्भावन—(सं॰ पु॰) विचारना, ईजाद करना, नयी उपज।
उद्भावित—(र्म॰ पु॰) मालूम होना, जाना हुआ, कल्पित, कथित, निकाला हुआ, ईजाद किया हुआ।
उद्भिद्
उद्भिज्ज } —(सं. पु.) पेड़, लत्तर, लखाड़, जो ऊपर को छेद कर जन्मे, घास इत्यादि।

उद्भूत—(गु०) उत्पन्न हुआ पैदा हुआ।
उद्यत—(गु०) तय्यार, प्रवृत्त, लगा हुआ।
उद्यान—(सं० पु०) बाग़, बगीचा, उपवन, मतलब, प्रयोजन।
उद्यापन—(सं० पु०) किसी व्रत की प्रतिष्ठा बैठाना, समाप्ति का पूजा।
उद्योग—(सं० पु०) उपाय, उद्यम, चेष्टा, यत्न।
उद्योत—(सं० पु०) चमक, उजेला, प्रकाश, उजियाला।
उद्विग्न—(गु०) व्याकुल, उदास, घबड़ाया।
उद्वेग—(पु०) घबराहट, व्याकुलता, चिन्ता, शोच।
उधेड़ना—(स्त्री०) सुलझाना, खोलना, उखाड़ना।
उधेड़बुन—(सं० पु०)चाराविचार, शोच विचार, ब्योंत लगाना शोच सांच।
उनई—(गु०) घिरआई, उमड़ आई।
उनहार—(सं० स्त्री०) सदृश; सम, ऐसा।
उनींदे—(गु०) नींद भरे, अलसाए हुये।।
उन्नत—(गु०) ऊंचा, लम्बा, वर्द्धित।
उन्नति—(सं० स्त्री०) बढ़ती, वृद्धि, उदय, तरक्की।
उन्माद—(सं० पु०) पागलपन, एक रोग।
उन्मादक—(गु०) पागल बनानेवाला।
उन्मीलन—(भा० पु०) खिलना, फूलना, विकसना।
उन्मत्त, उन्मद—(गु०) मतवाला, विक्षिप्त, बौराहा, पागल, नशेबाज।
उन्मुख—(सं० पु०) सन्मुख, सामने, तैयार, मुस्तैद।
उन्मूलन—(सं० पु०) उखाड़ना, उपाटना।
उन्मेष—(सं० पु०) बुद्धि, पलक।
उप—(अव्य) पास, नजदीक, निकट।

उपकरण—(सं० पु०) सामग्री, सामान ।
उपकण्ठ—(पु०) तट, तीर ।
उपकार—(सं० पु०) भलाई, सहायता, कृपा ।
उपकूल—(सं० पु०) समुद्र के किनारे की भूमि ।
उपकृत—(गु०) अनुगृहीत, उपकारवाला, जिस का उपकार किया गया है ।
उपक्रम—(सं० पु०) प्रारम्भ, सूचना, भूमिका ।
उपखान, उपाख्यान—(सं० पु०) कथा इतिहास । उपजत (गु०) मिला ।
उपगुरु—(सं० पु०) छोटा गुरु, मानीटर ।
उपचय—(सं० पु०) बढ़ती, वृद्धि, तरक्की ।
उपचरित—(गु०) माना हुआ, मान लिया गया ।
उपचार—(सं० पु०) सेवा; मन्त्र का जपना, वैद्य का काम, चिकित्सा उपाय, घूस, इलाज, रिशवत ।
उपज, उपजा—(सं० स्त्री०) फसिल, गान, तान, अन्तरा अनोखा विचार ।
उपजाऊ—(गु०) उपजाने की शक्ति रखनेवाला ।
उपजीवी—(क० पु०) आश्रयी, अवलम्बी, आसरागीर ।
उपढौकन—(सं० पु०) भेंट, नजर, उपहार ।
उपत्यका—(सं० स्त्री) पहाड़ तली, तराई, घाटी, ।
उपदंश—(सं० पु०) गर्मी का रोग, काटना ।
उपदेश —(सं० पु०) शिक्षा, सीख, सिखावन ।
उपदेशक, उपदेष्टा—(क० पु०) उपदेश देनेवाला, शिक्षक, गुरु ।
उपद्रव—(पु०) बखेड़ा, विघ्न ।
उपद्वीप—(सं० पु०) टापू, छोटा द्वीप, पेनिन्सुला (Peninsula) ।
उपधान—(सं० पु०) तकिया ।
उपनाम—(सं० पु०) पदवी, उपाधि, तखल्लुस ।

उपनयन—(सं॰ पु॰) यज्ञोपवीत = जनेऊ-संस्कार, वरुश्रा।
उपनिवेश—(सं॰ पु॰) नवीन देश, नई बस्ती।
उपनिषद—(सं॰ पु॰) वेद का उत्तम भाग, वेदान्त शास्त्र।
उपनेत्र—(सं॰ पु॰) चश्मा।
उपन्यास—(भा॰ पु॰) त्याग, हाथ, कथन, करना, रखना, स्थापन, गद्यकाव्य।
उपपति—(सं॰ पु॰) जार, यार।
उपपाप—(पु॰) छोटा पाप।
उपपत्ति—(सं॰ स्त्री॰) योग्यता, युक्ति, समाधान, प्रमाण, सबूत।
उपपादन—(पु॰) सम्पादन, बनाना। उपपाद्य (गु॰) बनाने योग्य।
उपमा—(भा॰ स्त्री॰) बराबरी, समानता, एक अलङ्कार।
उपमान—(सं॰ पु॰) जिस से उपमा दी जाय, अधिक गुणवाला।
उपमित—(सं॰ पु॰) उपमा दिया हुआ।
उपमेय—(सं॰ पु॰) न्यून गुणवाला जिस की बराबरी दूसरे से दिखलायी जाय, मुशब्बा।
उपयुक्त उपयोगी—(गु॰) योग्य, ठीक, उचित, शामिल।
उपरना—(सं॰ पु॰) एकपट्टा, दुपट्टा, ओढ़नी, गमछा, चादर।
उपराग—(स॰ पु॰) ग्रहण, गहन। उपराम (पु॰) वैराग्य, त्याग।
उपरान्त—(क्रि॰ वि॰) पीछे, फिर, इस के पीछे।
उपर्युक्त—(र्म्म॰ पु॰) ऊपर कहा हुआ।
उपल—(सं॰ पु॰) पत्थर।
उपलब्धि—(भा॰ स्त्री॰) प्राप्ति, हासिल, मिलना।
उपलक्ष—(सं॰ पु॰) उद्देश्य, बदले।
उपवन—(सं॰ पु॰) बाग़, बागीचा, फलवाड़ी, वाटिका।
उपवास—(भा॰ पु॰) व्रत, लंघन, उपास, अनाहार, भूखा रहना।
उपवीत—(सं॰ पु॰) जनेऊ, यज्ञसूत्र।

उपवेद—(सं· पु·) आयुष, गान्धर्व, धनुष, स्थापत्य, ये चारों प्रधान वेदों के सिवाय ४ वेद हैं।
उपशम—(सं· पु·) शान्ति, समता, समाई।
उपसर्ग—(सं· पु·) अव्यय, उपद्रव, पीड़ा, ग्रह।
उपस्थित—(गु·) तैयार, हाजिर, सामने।
उपस्थिति—(सं· स्त्री·) हाजिरी।
उपहार—(सं· पु·) भेंट, पूजा, खेल, गिफ्ट (Gift)।
उपहास, उपहास्य—(सं· पु·) हंसी ठट्ठा।
उपाख्यान—(सं· पु·) कथा, कहानी।
उपादान—(सं· पु·) कारण विशेष जिस से कोई चीज बनी हो।
उपाधि—(सं· स्त्री·) पदवी, खिताब।
उपाध्याय—(सं· पु·) पढ़ानेवाला, गुरु, ब्रह्मणों की एक पदवी।
उपानह—(सं· पु·) जूता, पनही। उपायन (पु·) भेंट।
उपाय—(सं· पु·) यत्न, चेष्टा, तदबीर।
उपायन—(सं· पु·) भेंट, नजर, सलामी।
उपार्जन—(सं· पु·) संग्रह, कमाना।
उपार्जित—(गु·) एकत्र किया हुआ, कमाई।
उपालम्भ—(सं· पु·) शिकायत, गिला, उलहना, निन्दा।
उपासक—(क· पु·) उपासना करनेवाला, सेवक।
उपासना—(सं· स्त्री·) सेवा, पूजा।
उपासनीय, उपास्य—(गु·) पूजने-सेवने योग्य।
उपासित—(गु·) सेवित, पूजित।
उपेत (क·) शामिल, युक्त।
उपेक्षा—(भा· स्त्री·) त्याग, ढीला, लापरवाही, गफलत।
उपेक्षित—(गु·) छोड़ा हुआ, बिसारा हुआ।
उपेन्द्र—(सं· पु·) वामन, इन्द्र का छोटा भाई।

उफान—(सं॰ पु॰) फफाना, उतराना, उठना।
उबरना—(क्रि॰) बचना, छूटना।
उबसना—(क्रि॰) सड़ना, गलना।
उबासी—(सं॰ पु॰) ऊपर सांस लेना, जम्हुआई, जम्हाई।
उभय—(सं॰ पु॰) दो, दोनों,।
उभरना—(क्रि॰) उठना, निकलना।
उमंग—(सं॰ पु॰) आनन्द, चाव, लहर, तरङ्ग।
उमंगना—(क्रि॰) उठना, उमड़ना।
उमड़ना—(क्रि॰) उमंगना, लहराना।
उमा ·(सं॰ स्त्री॰) पार्वती, भवानी।
उमापति—(सं॰ पु॰) (उमा+पति = उमापति) महादेव, शिव।
उमासुत -(सं॰ पुं॰) कार्तिकेय।
उमेश—(सं॰ पु॰) (उमा+ईश = उमेश) महादेव, शिव, शङ्कर।
उर —(सं॰ पु॰) छाती, हृदय।
उरग—(सं॰ पु॰) उर = छाती, ग = गमन करना जो छाती के बल चले, सांप।
उरगाद } —(सं॰ पु॰) (उरग+अरि = उरगारि उरग+अद। उरगारि } गरुड़ सांप का शत्रु।
उरज —(सं॰ पु॰) स्तन, छाती।
उरु—(गु॰) चौड़ा, विशाल, बहुत, अधिक, ज्यादा। (सं॰ जांघ।
उरुज—(सं॰ पु॰) वैश्य, बनिआ।
उरुझ } —(सं॰ पु॰) उलझाव, अटकाव, झंझट। उरुझन }
उरिण—(सं॰ पु॰) बिनकर्ज़, उद्धार।
उरेहा—(भा॰ पु॰) बनाना, चित्रादि अङ्कित करना, रचना।

उरोज—(सं० पु०) छाती, स्तन।
उर्व्वरा—(सं० स्त्री०) उपजाऊ धरती।
उर्वशी—(सं० स्त्री०) एक अप्सरा, धुक धुकी, गहना।
उर्व्वी—(सं० स्त्री०) धरती, पृथ्वी। उर्विजा (स्त्री०) सीता।
उर्विजा—(सं० स्त्री०) सीता, जानकी; अवनि कुमारी।
उलझन—(भा०) झंझट बखेड़ा।
उलझना—(क्रि०) फंसना, झगड़े में पड़ना।
उलहना / उलाहना—(सं० पु०) ओरहना, ओरहना देना, शिकवा शिकायत करना।
उलीचना—(क्रि०) चीछना, पानी निकालना।
उलुक—(सं० पु०) उल्लू, घुग्घू।
उल्था—(सं० पु०) अनुवाद।
उल्लङ्घन—(भा० पु०) उलटा करना, रीति तोड़ना, लांघना।
उल्का—(स्त्री०) लुक, आसमान से गिरा तारा।
उल्कामुखी—(सं० स्त्री०) गीदड़ी, स्यारिन।
उल्लास—(सं० पु०) आनन्द, खुशी, परिच्छेद, अध्याय, बयान।
उल्लिखित—(गु०) पूर्वोक्त, कथित, कीर्तित, जिक्र किया हुआ।
उल्लेख—(भा. पु.) वर्णन, बखान (सं. पु०) एक अलङ्कार।
सीसा (सं० पु०) सिरहाने।
उल्मुक—(सं० पु०) लुआठ, जलती लकड़ी। लुकारी, लुकवारी अंगौरा।
उशना—(सं० पु०) शुक्राचार्य्य।
उशीर—(स० पु०) खश, खशखश, कतरेका शोर।
उष—(सं० पु०) / उषा—(सं० पु०) प्रभात, भोर बाणासुर की बेटी, अनिरुद्ध की स्त्री।

उष्ट्र—(सं॰ पु॰) ऊंट।
उष्ण—(गु॰) गर्म।
उष्णता—(स्त्री॰) गर्मी।
उष्णकटिबन्ध—(सं॰ पु॰) पृथ्वी का मध्यस्थान।
उष्णताविकिरण—(भा॰ पु.) गर्मी फैलाना।
उष्णमापकयन्त्र—(सं॰ पु॰) एक यन्त्र जिस से गर्मी नापी जाती है। थर्मामेटर।
उपम—(सं॰ पु॰) गर्मी, ताप, अउस, सड़ीगर्मी।
उसास, निसास—(भा॰ पु॰) ऊपर नीचे सांस लेना, सांस लेना और छोड़ना।

ऊ

ऊ—(सं॰ पु॰) शिव. महादेव, ब्रह्मा, वन्धन, चांद, मुक्ति।
ऊघट—(गु॰) बीहड़ राह।
ऊद, ऊदबिलाव—(सं॰ पु॰) पानी के एक जानवर का नाम।
ऊत—(गु॰) मूर्ख, बेवकूफ, उल्लू, बेशऊर।
ऊदा—(गु.) भूरा, धुंधला।
ऊधम—(सं॰ पु॰) हल्ला, भीड़, उपद्रव।
ऊन—(सं॰ स्त्री॰) रोंआं, कमती, थोड़ा, न्यून।
ऊरु—(सं॰ पु॰) जंघा जांघ।
ऊर्णा—(सं॰ स्त्री॰) रोम, पशम, रोंआ। ऊर्ण नाभ—(सं॰ पु॰) मकड़ी।
ऊर्ध्व—(सं॰ पु॰) ऊपर, ऊंचा, लम्बा।
ऊर्द्ध्वपुण्ड्र, उर्द्धपुण्ड्र—(सं॰ पु॰) लम्बा तिलक, वैष्णवं तिकल।
ऊर्द्ध्ववाहु—(सं० पु॰) ऊंचा हाथ रखने वाला, तपसी तपस्वी।
उर्द्धरेता—(सं॰ पु॰) सन्यासी, ऋषि और जितेन्द्रिय, जिस क

स्त्रीप्रसंग में कामपतन न हो । बालब्रह्मचारी ।
ऊर्ध्वसांस—(सं॰ पु॰) सांस, ऊपर को दम फेकना, मरते समय ऊपर चलती सांस ।
ऊर्मि—(सं॰ स्त्री॰) लहर, तरङ्ग ।
ऊसर, ऊसर—(सं॰ पु॰) खारी धरती, बंजर ।
ऊषाकाल—(सं॰ पु॰) प्रातःकाल, विहान, भोर ।
ऊह, ऊहा—(सं॰ स्त्री॰) दलील, तर्क, अनुमान से समझना ।

ऋ

ऋ—(सं॰ स्त्री॰) अदिति, देवताओं की माता, सूर्य्य, गणेश, विष्णु ।
ऋक्—(सं॰ पु॰) ऋग्वेद, पहला वेद ।
ऋक्ष—(सं॰ पु॰) भालू, नक्षत्र ।
ऋचा—(सं॰ स्त्री॰) वेद का मन्त्र ।
ऋक्षेश; ऋक्षेश—(सं॰ पु॰) जामवन्त, चन्द्रमा ।
ऋजु—(गु॰) सीधा, सरल, सोभा, कोमल ।
ऋजुभुज क्षेत्र—(सं॰ पु॰) सीधी रेखाओं से घिरा हुआ ।
ऋण—(सं॰ प॰) कर्ज, घाव का चिन्ह ।
ऋणपत्र—(सं॰ पु॰) तमस्सुक ।
ऋणी—(सं॰ पु॰) कर्जदार ।
ऋत—(सं॰ पु॰) सत्य, मोक्ष, जल, पूजन ।
ऋतु—(सं॰ पु॰ स्त्री॰) वर्ष में छः ऋतु दो दो महीने की होती हैं । १वसन्त, २ ग्रीष्म, ३ वर्षा, शरद, ५ हिम और ६ शिशिर ।
ऋतुविपर्य्यय, ऋतुपरिवर्तन—(भा॰ पु॰) सर्दी गर्मी की तबदीली, जो भिन्न २ देशों में भिन्न २ समय पर होती हैं ।
ऋतुमती—(सं॰ स्त्री॰) कपड़ों से होना, रजस्वला ।

ओल्ड (Old)—(वि॰) पुराना, बुड्ढा ।
ओषधालय—(सं॰ पु॰) दावाखाना, हस्पताल ।
ओषधि—(सं॰ स्त्री॰) औषध (पु॰) दवाई, दवा ।
ओषधीश—(सं॰ पु॰) चन्द्रमा ।
ओष्ठ—(सं॰ पु॰) होंठ, ओठ ।
ओस—(सं॰ पु॰) शीत, शबनम ।
ओसर, ओसरि—(सं॰ स्त्री॰) कलोर गैंस, याछी, पारी, बारी, क्र
ओहदा—(सं॰ पु॰) दर्जा, पद, जगह ।
ओहो—(अ॰) वाह वाह, आहा ।

औ

औ—सं॰ पु॰) अनन्त ।
औक्सिजन, आक्सिजन (Oxygen)—(सं॰ पु॰) प्राणप्रद वायु जिलानेवाली हवा ।
औगाह—(वि॰) अथाह, गम्भीर ।
औगुण—(सं॰ पु॰) दोष, चूक, बुराई ।
औघट—(सं॰ पु॰) बुरा मार्ग, खराब रास्ता, बुरा, (बीहड़ घाट, कुघाट ।
औचक, ओचक—(सं॰ पु॰) अचानक ।
औटि—(पू॰ क्रि॰) औटकर, गाढ़ा, गर्म सर के ।
औत्कर्ष—(सं॰ पु॰) उत्तमता, वृद्धि ।
औत्सुक्य—(सं॰ पु॰) उत्कण्ठा, चाव, बढ़ी हुई लालसा ।
औतार—(सं॰ पु॰) जन्म, प्रगट ।
औथरो—(गु॰) उथला, छिछला ।
औदात—(गु॰) धौल, श्वेत, साफ ।

औदार्य्य—(भा॰ पु॰) दयालुता, उदारता।
औदास्य—(सं॰ पु॰), उदासी, अनमनाहट।
और्व—(सं॰ पु॰) वड़वानल।
और—(अ॰) तथा, एवम्, दूसरा, अन्य।
औरस—(सं॰ पु॰) व्याही स्त्री से पैदा लड़का।
औला—(गु॰) ढेर, बहुत।
औंला—(सं॰ पु॰) अंवरा, एक पेड़ या फल।
औंलासार—(सं॰ पु॰) एक तरह का गन्धक।
औसत—(सं॰ स्त्री॰) गड़, पड़ता।
औसना—(क्रि॰) उबसना, सड़ना, उसिन देना, बड़ी गर्मी देना।
औसर—(सं॰ पु॰) समय, मौका।
औसान—(सं॰ पु॰) साहस, चेतना, काम निकालना, पहचान, अन्त, अखीर।
औषधालय—(सं॰ पु॰) अस्पताल, दवाईघर, दवाखाना।
औसेर—(सं॰ स्त्री॰) चिन्ता, खटका।
और्द्धदैहिक—(वि॰) मृतक की क्रिया।
औलाद—(सं॰ स्त्री॰) सन्तान।

क

क—(सं॰ पु॰) ब्रह्मा, सुख, कामदेव, हवा, जल, आग।
कगर—(सं॰ स्त्री॰) छोर, अन्त, कगरी, किनारा, पास।
कङ्क—(सं॰ पु॰) कौआ, केकड़ा, चाहा पक्षी, कङ्काल।
कङ्कण, कङ्कन—(सं॰ पु॰) स्त्रियों के पहुचे में पहनने का गहना, बाला या घेरा, कंगना, कड़ा।
कंगूरा—(सं॰ पु॰) शिखर, चोटी।
कंजर—(सं॰ पु॰) एक जाति के मनुष्य जो डोरी बेचते और सांप पकड़ते हैं।

कंस—(सं॰ पु॰) मथुरा का राजा, उग्रसेन का बेटा, कांसा, पान-
पात्र, सुरापात्र, मंजीरा, झांझ।

ककरेजा—(गु॰) बैंगनी रङ्ग, बैंजनी। [घास।

कक्ष—(सं॰ स्त्री॰) कटिबन्ध, ज्योतिष चक्र, कांख, बगल, सूखी

कक्षा—(सं॰ स्त्री॰) श्रेणी दर्जा, क्लास।

कच—(सं॰ पु॰) केश, बाल।

कचनार—(सं॰ पु॰) एक वृक्ष का नाम।

कच्छप—(स॰ पु॰) कछुआ, कमठ, कूर्म।

कछनी—(सं॰ स्त्री॰) जांघिया।

कछार—(सं॰ पु॰) किनारा, तीर, तट।

कछवाहा—(सं॰ पु॰) राजपूतों की एक जाति जो रामचन्द्र
के बेटे कुश के वंश में से हैं, जैसे जैपुर के महाराजा।

कछौटा—(सं॰ पु॰) कच्छा, काछा।

कजरारे—(गु॰) काले (नैन) श्याम।

कज्जल—(सं॰ पु॰) काजल, अञ्जन, सुरमा।

कजाकी—(सं स्त्री॰) शोखी, बदमाशी, ढिठाई।

कञ्चन—(सं॰ पु॰) सोना, सुवर्ण, जातिविशेष।

कञ्चनी—(सं॰ स्त्री॰) पतुरिया, वेश्या।

कञ्च , कञ्च को—(सं॰ स्त्री॰) चोली, अंगिया, कुरती।

कञ्चुकी—(सं॰ पु॰) राजा के महल में आने-जानेवाला बूढ़ा
ब्राह्मण, चोपदार।

कञ्ज—(सं॰ पु॰) कमल, कँवल, ब्रह्मा, केश, बाल।

कटक—(सं॰ पु॰) सेना, फ़ौज। वलया।

कटरा—(सं॰ पु॰) चौक, शहर का बीच, बड़ा बाजार, लम्बा
मकान, महल्ला।

कटा—(सं॰ स्त्री॰) काट, वेध।

कटाक्ष—(सं॰ पु॰) तिर्छी चितवन. टेढ़ी आंख से देखना।

कटाह—(सं· पु·) कड़ाह, (गु·) कटहा, काटनेवाला।
कटि—(स्त्री·) कमर, लङ्क।
कटिबद्ध—(भा· पु·) कमर बांधे हुए, तैयार, मस्तैद।
कटिबन्ध—(भा· पु·) कमर बंध. पृथ्वी के ठंढे गर्म आदि भाग।
कटीला—(गु·) काटवाला, बांका, पैना (सं· पु·) एक पौधा।
कट्टर—(वि·) पक्का।
कटु—(गु·) तीव्र, कड़वा, तीखा, तीता डरावना, प्रचण्ड।
कठोल—(सं· पु·) चण्डाल, बुरा।
कड़खा—(सं· पु·) लड़ाई में दिल बढ़ाने-के गीत।
कड़खैत—(सं· पु·) भाट. चारण, कड़खा गानेवाला।
कड़ाड़ा, करारा—(सं· पु·) नदी का ऊंचा किनारा।
कड़ा—(सं· पु·) वालया (गु·) कठिन, कठोर।
कड़ी—(सं· स्त्री·) वाली, (गु·) कठिन, लागू, कडुई तीखी, जो नर्म न हो।
कण—(सं· पु·) अनाज का दाना, कना, कनिका, कनिक, पिसान परमाणु, लव।
कणाद—(सं·पु·) एक ऋषि का नाम, वैशेषिक न्याय के आचार्य।
कण्टक—(सं· पु·) कांटा, वैरी, बाधा डालनेवाला, शत्रु, नीच, कृपण, दुखदायी।
कण्ठ—(सं· पु·) गर्दन, गला।
कण्ठला—(सं· पु·) माला जो लड़के के लिये बहु यन्त्रयुत बनाते हैं।
कण्ठस्थ, कण्ठाग्र—(गु·) मुखाग्र, मुखस्थ, वरज़ुबां, जबानी याद।
कण्डन—(भा· पु·) फोड़ना,, दांवना, मीजना।
कण्डु—(सं· स्त्री·) खुजली, खाज।
कत—(अव्य·) कहां, क्यों।
कतिपय—(गु·) चंद, थोड़े, कम।

कथनीय —(म्नी· पु·) कहने के योग्य।
कथोपकथन —(सं· पु·) बातचीत।
कद —(क्रि· वि·) कब, किस समय। (सं· स्त्री·) डीलडौल।
कदन—(क· पु·) मारनेवाला, मारना, पाप।
कदर्य्य—(गु·) डरपोक, कायर, सूम, कृपण।
कदली—(सं· पु·) केले का वृक्ष या फल।
कदाचित्, कदापि —(क्रि· वि·) कभी, कभीकभी, शायद।
कनक—(सं· पु·) सोना, सुवर्ण, धतूरा।
कनककशिपु—(सं· पु·) हिरण्यकश्यप, प्रह्लाद का पिता।
कनकलोचन—(सं· पु·) हिरण्याक्ष।
कनखजूरा —(सं· पु·) कनसलाई, कनगोजर।
कनिक—(सं· पु·) चूना, पिसान, आटा।
कनिष्ठ—(गु·) छोटा, लहुरा।
कनिष्ठा, कनिष्ठिका—(सं· स्त्री·) छोटी अंगुली।
कनेर—(सं· पु·) कनैल, एक प्रकार का फूल का वृक्ष।
कनौड़े—(गु·) कौड़ी के तीन, कौड़ी काम के नहीं, बेइज्जत, खराब, बरबाद, परवश।
कन्त—(सं· पु·) पति, स्वामी, भर्त्ता, प्यारा।
कन्था —(सं· स्त्री·) गुदड़ी, कथरी (ड़ी)।
कन्द —(सं· पु·) जड़।
कन्दरा—(सं· पु·) खोह।
कन्दर्प—(सं· पु·) कामदेव, काम, मदन।
कन्दुक—(सं· पु·) गेंद।
कन्ध—(सं· पु·) कन्धा।
कन्धरा—(सं· स्त्री·) गर्द न।

कन्या—(सं· स्त्री·) बेटी, लड़की, कुमारी।
कपट—(सं· पु·) छल, धोखा, खोटाई, दग़ा।
कपर्दिन्, कपर्दी—(सं· पु·) महादेव।
कपर्दिका—(सं· स्त्री·) कौड़ी।
कपाट—(सं· पु·) किवाड़, किवाड़ी, द्वार।
कपाल—(सं· पु·) शिर, मूड़ भाग्य।
कपाली—(सं· पु·) महादेव।
कपि—(सं· पु·) बन्दर, वानर।
कपित्थ—(सं· पु·) कैत का वृक्ष या फल।
कपिन्द, कपीश, कपिपति } - (सं· पु·) वानरों का राजा, सुग्रीव, हनुमान, अंगद।
कपिध्वज—(सं· पु·) कपिचिन्हाङ्कित ध्वजावाले, अर्जुन।
कपिल (सं· पु·) सांख्यशास्त्र के बनानेवाले एक मुनि का नाम, (गु·) एक प्रकार का पीला (केला) रंग।
कपोत—(सं· पु·) कबूतर, परेवा।
कपोल—(सं· पु·) गाल।
कफ—(सं· पु·) खांसी, थूक।
कबन्ध—(सं· पु·) बिना शिर का धड़, एक राक्षस का नाम।
कबरा—(गु·) चितकबरा, रंगबिरंग का।
कबारू—(सं· पु·) हुनर, गुन, धंधा।
कमठ—(सं· पु·) कछुआ, कच्छप, कूर्म।
कमठा—(सं· पु·) धनुष।
कमनीय—(गु·) सुन्दर, सथरा, सुहावना, मनोहर, दिलचस्प।
कमलबन्धु—(सं· पु·) सूर्य, कमल के प्यारे।
कमला—(सं· स्त्री·) लक्ष्मी।
कमलापति—(सं· पु·) विष्णु भगवान, नारायण।
कमिटी (Committee)—(सं·स्त्री·) पंचायत, सभा, गरोह, झुण्ड।

कमोदिनी } —(सं· स्त्री·) कुमुदिनी, कोईं, कैरावेणी, जो रात को
कमलिनी } खुलती और दिन को बन्द हो जाती है।
कमोरी—(सं· स्त्री·) गगरी, कलसी।
कम्बु—(सं· पु·) शंख, घोंघा, हाथी।
कम्बुग्रीव—(गु·) जिस की गर्दन शङ्ख ऐसी हो।
कपटी—(सं· स्त्री·) टिकोरा।
कर—(सं· पु·) हाथ, हाथी की सूंड़, किरण, महसूल, मालगुज़ारी।
करज—(सं· पु·) नख, नाखन।
करटक } —(सं· पु·) कौवा, हाथी का गाल।
करट }
करघर्षण—(भा· पु·) हाथ मलना, मींजना।
करण—(सं· पु·) साधन, हथियार, तीसरा कारक, समकोण त्रिभुज में समकोण के सामने की भुजा।
करण्ड—(सं· पु·) काकपक्षी, कौवा, डिब्बा, डब्बा।
करणी } —(सं· स्त्री·) काम, धंधा, थापी जिस का मूल न हो।
करनी } करतूत।
करतल—(सं· पु·) हथेली, हाथ का ताल।
करतलधुनि—(सं· स्त्री·) तलहथ्थी का शब्द, थपड़ी बजाने का शब्द।
करताल—(सं· पु·) कठताल, एक प्रकार का बाजा।
करतूति—(सं· स्त्री·) करनी।
करद—(क· पु·) कर देनेवाला, मालगुजारी देनेवाला, खिराजी।
करनिकर—(गु·) किरणों का समूह, हस्तसमूह।
करपुट—(सं· पु·) हाथ जोड़ना, दोनों हाथ मिलाना, अञ्जली।

करवाल—(सं॰ पु॰) तलवार।
करवीर (सं॰ पु॰)—कनेल, तलवार।
करभ—(सं॰ पु॰) हाथी या ऊट का बच्चा, पहुंचा से कानी उंगली तक हथेली का वाहरी भाग।
करारा—(सं॰ पु॰) कड़ाहा, नदी का ऊंचा किनारा।
करवा—(सं॰ पु॰) मेटा, मिट्टी का कमण्डल, टुइआं।
कराल—(गु॰) भयानक, भयङ्कर, डरावना, बड़ा लम्बा।
कराहना—(क्रि॰) कहरना।
करि—(सं॰ पु॰) हाथी, गज, मतङ्ग। [वृक्ष]
करिया—(सं॰ पु॰) कर्णधार, पतवार थामनेवाला, मांझी।
करीर—(सं॰ पु॰) वांस का अंकुर, करील, एक प्रकार का कंटीला
करुणा—(सं॰ स्त्री॰) दया, नवरस में एक रस।
करुणार्द्र—(सं॰ पु॰) करुणामय, दयालु।
करौंदा—(सं॰ पु॰) एक फल का नाम।
करेणु—(सं॰ पु॰) हथिनी, हस्ती।
कर्क, कर्कट—(सं॰ पु॰) केंकड़ा, चौथी राशि।
कर्कवृत्त, कर्कट क्रांति—(सं॰ पु॰) जो वृत्त विषुववृत्त से २३½ अंश की दूरी पर उत्तर को खींचा है, यही रेखा उत्तरायण की सीमा है।
कर्कश—(गु.) कठोर, कठिन। कर्कशा— (स्त्री॰) लड़ाकी स्त्री।
कर्छा, कर्छी—(सं॰ स्त्री॰) जिस से दाल परोसते हैं, कलछुल।
कर्ण—(सं॰) कान, पतवार।
कर्णधार— (सं॰ पु॰) मांझी, जहाज़ चलानेवाला, नाविक।
कर्णफूल—(सं॰ पु॰) कान में पहनने का गहना, करनफूल।
कर्णिका—(सं॰ स्त्री॰) हाथी की सूंड़ की नोक, हाथ की बीच की अंगुली, मध्यमा, लेखनी, करनफूल, क़लम। कमल के फूल की विचली थली।

कर्णवेध—(सं॰ पु॰) कन छेदन ।
कर्त्तन—(सं॰ पु॰ काटना, छांटना, कातना, कतरना ।
कर्त्तव्य—(सं॰ पु॰) करने योग्य, फर्ज़ ।
कर्त्ता, कर्त्तार—(क॰ पु॰) करनेवाला, रचनेवाला, ईश्वर ।
कर्द, कर्दम—(सं॰ पु॰) कीचड़, कादो, चहला ।
कर्धनी—(सं॰ स्त्री॰) कंधनी, कमर में पहनने का गहना डंडा, डाड़ा ।
कर्पूर—(सं॰ पु॰) कपूर ।
कर्म्म—(सं॰ पु॰) काम, भाग्य, द्वितीय कारक ।
कर्म्मकार—(सं॰ पु॰) काम करनेवाला, लहार । [रिकृशनसॉंग ।
कर्म्मसङ्गीत—(सं॰ पु॰) काम करते हुए जो गीत गाया जाय,
कर्म्मेन्द्रि—(सं॰ स्त्री॰) काम करने की इन्द्री, हाथ, पांव, वाक, लिङ्ग, गुदा ये ही पांच कर्मेन्द्रिय हैं ।
कर्ष—(सं॰ पु॰) वैर, विरोध, रोष, ईर्षा ।
कर्षक—(सं॰ पु॰) खेतिहर, किसान ।
कर्षण—(सं॰ पु॰) खैंच, तान, जोतना, खेती करना ।
कल—(सं॰ स्त्री॰) जंत्र, यंत्र, बंदूक की कल, (पु॰) चाप, दाव, पेंच, वीज (गु॰) चैन, आराम, सुख, सुन्दर, मीठा शब्द ।
कलकण्ठ—(सं॰ पु॰) कोयल, (गु॰) सुन्दर या मीठे कण्ठवाली ।
कलकल—(सं॰ भा॰ पु॰) कोलाहल, कचकच, भकभक, बकबक, हल्ला ।
कलक्टर (Collector)—(सं॰ पु॰) तहसीलदार, लगान संग्रह करनेवाला, जिलाधीश ।
कलङ्क—(सं॰ पु॰) निशान, दाग, चिन्ह, लाञ्छन, दोष ।
कलत्र—(सं॰ स्त्री॰) पत्नी, भार्या, लुगाई, स्त्री ।
कलधौत—(सं॰ पु॰) सोना, (गु॰) मलरहित ।
कलन—(सं॰ पु॰) गिनना, चिन्ह ।

कलभ—(सं॰ पु॰) हाथी का बच्चा।
कलश—(सं॰ पु॰) घड़ा, गगरा, मन्दिरों के ऊपर का शिखर।
कलहंस—(सं॰ पु॰) राजहंस।
कला—(सं॰ स्त्री॰) बहुत छोटा, भाग, अंश का साठवां हिस्सा, चन्द्रमण्डल का सोलहवां भाग, समय का हिस्सा, छल, कपट, बहाना, गुण, हुनर, गाना, बजाना, कला ६४ है।
कलाधर—(सं॰ पु॰) चन्द्रमा।
कलापक—(सं॰ पु॰) पिच्छ, मोर पंख।
कलापी—(सं॰ पु॰) मोर, मयूर।
कलावत्तून—(सं॰ पु॰) सोने चांदी का तार।
कलावंत—(गु॰) गवैया।
कलिङ्ग, कलङ्ग—(सं॰ पु॰) कटक से मंदराज तक का देश।
कलिका, कली—(सं॰ स्त्री॰) बिनखिला फूल, कोंपल, कौड़ी।
कलित—(गु॰) सुन्दर।
कलिन्दजा—(सं॰ स्त्री॰) यमुना नदी।
कलिमल—(सं॰ पु॰) कलियुग का पाप, दोष।
कलुष—(सं॰ पु॰) पाप, गदला, नाराज।
कलेवर—(सं॰ पु॰) देह, शरीर।
कलोर—(सं॰ स्त्री॰) ओसर, नयी गाय।
कलोल—(सं॰ पु॰) खेलकूद, क्रीड़ा, आनन्द।
कल्की—(सं॰ पु॰) विष्णुका दशवां अवतार।
कल्प—(सं॰ पु॰) वेद के छः अङ्गों में से एक अङ्ग, ब्रह्मा का एक दिन रात जो मनुष्यों के हज़ार चौयुगी अथवा ४३०००००० का होता है, प्रलय, विकल्प, सन्देह, अभिप्राय, कामना, मनोरथ, योग्यता, उचितता।
कल्पतरु, कल्पद्रुम, कल्पवृक्ष—(सं॰ पु॰) मनोकामना देनेवाला वृक्ष जो इन्द्र के बाग में है।

कल्पित—(स्मं· पु·) माना हुआ, कृत्रिम ।
कल्याण—(सं· पु·) कुशल, एक रागिनी का नाम ।
कल्मप—(सं· पु·) पाप, नरक, मल ।
कल्ला—(सं· पु·) जबड़ा ।
कवच—सं· पु·) झिलम, वख्तर, वर्म ।
कवि—(सं· पु·) काव्य बनानेवाला, शायर ।
कवीश्वर—(सं· पु·) बड़ा कवि, वाल्मीकि ।
कव्य—(सं· पु·) पितरों के लिये जो अन्नादि दिया जाय ।
कशा—(सं· स्त्री·) कोड़ा, चाबुक ।
कश्य—(सं· पु·) मदिरा, घोड़े का तंग ।
कश्यप—(सं· पु·) अज्ञाननाशक, विशेष ज्ञानवान, आत्मज्ञानी, परब्रह्म, सृष्टिकर्त्ता, देव, दैत्यों के पिता ।
कपाय—(सं· पु·) काढ़ा, क्वाथ । (गु·) कसैला रस
कष्ट—(सं· पु·) दुःख, क्लेश, रञ्ज, ग़म ।
कसक—(सं· स्त्री·) पीड़ा, दुःख ।
कसावा—(सं· पु) शकरकंद ।
कसेरा—(सं· पु·) ठठेरा ।
कसेरू—(सं· पु·) एक प्रकार का कन्द जो जल में होता है ।
कसौटी—(सं· स्त्री·) एक पत्थर जिस से सोना चाँदी परखा जाता है ।
कस्तूरी—(सं· स्त्री·) सुगन्धित वस्तु जो हरिण की नाभि में मिलती है, मृगमद, मश्क़ ।
कहं—(अव्य·) कहां, को ।
कहर—(सं· पु·) उत्पात, कुहराम, धूम ।
कहतूति—(सं· स्त्री·) कहावत, मसल ।
कहुं—(अ·) कहीं, किसी ।
कांजी—(सं· पु·) खट्टा, मांड़, तुरानी, पीछ ।

काउएटी (County)—(सं॰ स्त्री॰) ज़िला, चकला।
काग, काक—(सं॰ पु॰) कौआ, वायस।
काकपक्ष—(सं॰ पु॰) पट्टा, ज़ुल्फी।
काकिणी—(सं॰ स्त्री॰) छदाम, कच्ची, दो दमड़ी, कौड़ी।
काकातूआ—(सं॰ पु॰) सूए की जाति का पहाड़ी पक्षी।
काकली—(सं स्त्री॰) मीठी बोली।
काकू—(सं॰ पु॰) व्यंगवचन, कड़ीबात।
कांक्षा—(सं॰ स्त्री॰) इच्छा, चाहना, अभिलाष, ख़्वाहिश।
कांग्रेस (Congress)—(सं पु॰) मेल, मिलाप, बड़ी सभा।
कागर—(सं॰ पु॰) किनारा, सर्प की केंचली।
काछनी—(सं॰ स्त्री॰) लंगोटी, जांघिया।
कांजी—(सं॰ स्त्री॰) खटाई, खट्टा मांड़।
काञ्चन—(सं. पु.) सोना, सुवर्ण, तिला।
काञ्चनमयी—(गु.) सुनहली, सोना से जड़ी हुई।
काट—(सं. स्त्री.) तलछट, दाव पेच, घात।
काठी—(सं. स्त्री.) जीन, शरीर, डौल डौल।
काण्ड—(सं. पु.) सर्ग, खण्ड, प्रकरण, अध्याय, भाग, विभाग, समूह, डंठल, समय, बाण, सेन, घोड़ा, तन्त्र।
कातर, कादर—(गु.) कायर, डरपोक, घबराया हुआ।
कादम्बरी—(सं. स्त्री.) शराब, मदिरा, दारू, एक पुस्तक और एक गन्धर्वराज की कन्या का नाम।
कादम्बिनी—(सं. स्त्री.) मेघमाला, घटा।
कान—(सं. स्त्री.) लाज, मर्य्याद (सं. पु.) कर्ण,।
कानन—(सं. पु.) जंगल, वन, विपिन।
काना—(सं. पु.) स्वामी।
कानि—(सं. स्त्री.) लाज।

कान्त—(सं. पु.) पति, प्यारा, सुन्दर, कन्त, कान्ता, (स्त्री.) स्त्री, प्यारी, सुन्दरी।
कान्ति - (सं. स्त्री.) शोभा, सुन्दरता. प्रकाश, चाह,इच्छा।
कापुरुष—(सं. पु.) खोटा मनुष्य, बुरा मनुष्य, डरपोक।
काम—(सं. पु.) चाह, कार्य्य, कामदेव, आराम, लाज, धन्धा।
कामद—(क. पु.) मनवाञ्छित फल देनेवाला।
कामदेव—(सं. पु.) प्यार का देवता, मदन।
कामधेनु—(सं. स्त्री.) इन्द्र की गाय, मनकामना देनेवाली गाय, गाय जो बहुत दूध देती हो।
कामातुर—(गु.) कामी, मस्त, काम से पीड़ित।
कामारि—(सं. पु.) काम का शत्रु, शिव, महादेव।
काम्य—(मर्स.) सुन्दर, अच्छा। (गु.) फल की इच्छा से जो किया जाय।
कामिनी—(सं. स्त्री.) स्त्री, परम सुन्दरी, प्यारी, प्रिया।
कामुक—(क. पु.) कामी, ऐय्याश।
काय—(पु.) शरीर।
कायर—(गु.) डरपोक।
कायिक—(गु.) शारीरिक, दैहिक, देह का।
कारक—(सं. पु.) करनेवाला।
कार्वोन—(Carbon) (सं. पु.) निराला कोयला।
कारागार—(स. पु.) कैदखाना, जेल, वन्दीखाना।
कारुणिक—(क. पु.) दयालु, कृपालु।
कार्पण्य—(सं. पु.) कन्जूसी, कृपणाई, दीनता।
कार्य्य - (सं. पु.) काज, काम, प्रयोजन, कारण, हेतु।
कार्य्यदक्ष—(गु.) कारगुजार, काम में चतुर।
काल—(सं. पु.) समय, ऋतु. यमराज, महंगी, अकाल, मौत।
कालकूट—(सं. पु.) विष, जहर, हलाहल, सांप का जहर।

कालक्षेप—(भा. पु.) समय विताना, दिन काटना, वक्त कटना।
कालयमन—(सं. पु.) एक राजा का नाम।
कालान्तर—(सं. पु.) बहुत दिनों के बाद, दूसरे समय।
कालिन्दी—(सं. स्त्री.) यमुना नदी, सूर्य की बेटी जो कृष्ण को ब्याही थी।
कालिमा—(सं. पु.) कालिख, कलङ्क।
काश—(सं. पु.) एक घास, राढ़ी, राढ़ी खोखी।
काष्ट—(सं. पु.) काठ।
काष्ठा—(सं. स्त्री) दिशा, हद्द।
काशि—(सं. पु.) सूर्य प्रकाशक।
कासार—(सं. पु.) कवाव, तालाव।
किंशुक, किंसुक—(सं. पु.) पलाश, टेसू, फूल।
किंकर—(स. पु.) दास, नौकर।
किङ्किणी—(सं. स्त्री) करधनी, कटिबन्धी।
किञ्चित—(अ.) थोड़ा, कुछ, कुछेक, अल्प।
किण्डरगार्टेन (Kindergarten)—(सं. पु.) बालकों का बाग फ्रॉवेल ( )Froebel) की निकाली एक शिक्षाप्रणाली का नाम, फुलवारी।
कित—(अव्य) किधर, कहां, किसतरफ।
किन्तु—(अ.) पर, परन्तु, लेकिन।
किन्नर—(सं. पु.) गन्धर्व देवताओं का गवैया, कुवेर, के सेवक जिनका मुंह घोड़े का और धड़ आदमी का है।
किमि—(अव्य) कैसे, किस प्रकार।
किम्पुरुष—(सं. पु.) किन्नर, देवताओं का गवैया।
किम्वदन्ती—(गु. स्त्री.) गप्प, अफवाह।
किम्वा—(अ.) अथवा।
किरण—(सं. स्त्री.) सूर्य का तेज, चन्द्र का प्रकाश, रश्मि।

किरवान—(सं॰ पु॰) तलवार, खड्ग ।
किरात—(सं॰ पु॰) भील, निषाद, जंगली मनुष्यों की एक जाति, भूनिम्ब, चिरायता ।
किर्च—(सं॰ स्त्री) एक प्रकार की सीधी लम्बी तलवार।
किरीट—(सं॰ पु॰) मुकुट, ताज ।
किल—(क्रि॰ वि॰) निश्चय, ऐसा सुनाजाता है, लोग कहते हैं।
किल्विष—(सं॰ पु॰) पाप ।
किशलय, किसलय (सं॰ पु॰) नरम पत्ता, नया दल ।
किशोर—(सं॰ पु॰) १० से १५ बरस की उमर का लड़का, जवानी की पहली अवस्था, हाथी का बच्चा, सूर्य
कीकड़—(सं॰ पु॰) बबूल, कटीला पेड़ ।
कीच—(सं॰ पु॰) कादा, पांक, कीचड़ ।
कीचक—(सं॰ पु॰) एक दुष्ट राजा और राक्षस का नाम, छेद सहित खोखला बांस जो हवा लगने से बोलता है ।
कीट—(सं॰ पु) कीड़ा, पिलुआ ।
कीटकोष—(सं॰ प॰) रेशम का कोआ ।
कीदृक्—(गु) कैसा, किस प्रकार।
कीर—(सं पु) तोता, सूगा, सुग्गा ।
कील—(सं स्त्री॰) खूटी, मेख ।
कीर्ति—(सं॰ पु॰) यश, नामवरी ।
कीर्त्तन—(भा॰ पु॰) गुणवर्णन, यश बखान, सराह, गाना, कहना,
कीश, कीस—(सं॰ पु॰) बन्दर, वानर ।
कु—(अ॰) बुरा, नीच, कम, थोड़ा, झूठा, (सं॰ स्त्री) धरती, पृथ्वी, जमीन ।
कुचरा—(गु॰) निन्दक, शिकायत करनेवाला ।
कुञ्चकी—(सं॰ स्त्री॰)अंगिया, चोली, कांचुली ।

कुवर
कुमार
कुंअर
—(सं· पु·) राजा का लड़का, लड़का, बेटा, राजकुमार

कुकर्म—(सं· पु·) बुरा काम, पाप, अन्याय।
कुक्कुट—(सं· पु·) मुर्गा, कुकड़ा।
कुक्षि—(सं· स्त्री·) पेट, कोख।
कुङ्कुम—(सं· पु) केशर, सुगन्धित वस्तु, रोरी।
कुच—(सं· पु·) छाती, चूची, थन, स्तन।
कुज—(सं· पु·) मंगल, पेड़।
कुञ्जलीवन
कजलीवन
—(सं· पु·) हाथियों का बन, जिस जंगल में हाथी बहुत रहते हैं।
कुञ्चित—(स्मै· पु·) सिमटा हुआ, टेढ़ा, घुघुराला।
कुञ्ज—(सं· पु·) वह स्थान जहां सघन पेड़ आदि हों, गंजान, हाथी की टूड़ी।
कुञ्जर—(सं· पु·) हाथी, हस्ती, मतंग।
कुटज—(सं· पु·) एक दवाई का नाम, इन्द्रजव। कोरैया।
कुटनी—(सं· स्त्री·) दूती, भेद पहुंचानेवाली स्त्री।
कुटिल—(गु·) टेढ़ा, क्रूर, कपटी।
कुटी, कुटीर—(सं· पु·) झोपड़ी, मढ़ी।
कुटेव—(सं· स्त्री·) बुरी आदत, लत।
कुठार—(सं· पु·)कुल्हाड़ी, टांगी, फरसा।
कुण्ठक—(फ· पु·) मूर्ख, मन्द, जाहिल, रूठनेवाला।
कुण्ठित—(वि·) भोथर, आलसी, लज्जित, थका हुआ।
कुण्डल—(सं· पु·) कान में पहनने का गहना।
कुण्डली—(सं· स्त्री·) जन्म पत्री, गेंडर।
कुतर्क—(सं· पु·) सूखा—कोरा तर्क, नाहक बे दलील, हुज्जत।
कुतूहल—(सं· पु·) खेल, क्रीड़ा, तमाशा, लीला, चाव।

कुत्सित—(गु·) निन्दित, नीच, बुराई करने योग्य, नीचा।
कुथ—(सं· पु·) हाथी का भूल।
कुथर—कुथल—(गु·) बुरा स्थल, कुजगह, ऊसर, टांड, बंजर।
कुधर—(सं· पु·) पहाड़, पर्वत, शैल।
कुधातु—(सं· स्त्री·) लोहा।
कुनवा—(सं· पु·) कुटुम्ब, खान्दान, कुल।
कुनह—(सं· पु·) वैर, बिगाड़।
कुनीति—(सं· स्त्री·) बुरी चाल, बुरी नीति।
कुनैन(Quinine) (सं· पु·) एक प्रकार की दवा।
कुन्त—(सं· पु·) बरछी, भाला।
कुन्ती—(सं· स्त्री·) कृष्ण की फूफी का नाम, पाण्डु की स्त्री।
कुन्तल—(सं· पु·) बाल, केश, पान पत्र, जौ।
कुन्द—(सं·पु·) एक तरह का उजला फूल, मोगरा। (गु·) मन्द।
कुन्दन—(सं· पु·) उत्तम सोना।
कुपात्र—(गु·) अयोग्य, बुरा, नालायक।
कुपित—(गु·) क्रोधित, जो क्रोध में हो।
कुब्जा—(सं· स्त्री·) कुबड़ी, टेढ़ी पीठवाली स्त्री।
कुमुद—(सं· पु·) कुमोदनी, कोई जो रात को खिलती और दिन को बन्द हो जाती है। एक वानर का नाम, जिस के नाम लेने से ज्वर छूटता है।

" वाराणस्या दक्षिणे भागे कुमुदो नाम वानरः।
यस्य स्मरणमात्रेण ज्वरो याति रसातलम्॥ "

इस मन्त्र को कम से कम १०८ वार पढ़े और प्रति वार मस्तक सुहराता जाय तो ज्वर निवृत्त हो जाता है।

कुम्भ—(सं· पु·) घड़ा, हाथी का शिर।
कुम्भज—(सं· पु· अगस्ति ऋषि का नाम, अगस्त्य।
कुम्भकार—(सं· पु·) कुम्हार, घड़ा बनानेवाला।

कुम्भीपाक—(सं॰ पु॰) एक नरक का नाम, जहां पापी गर्म तेल के कड़ाह में डाले जाते हैं।

कुम्भीर—(सं॰ पु॰) मगर, मच्छ, घड़ियाल, ग्राह।
कुररी—(सं॰ स्त्री॰) क्षेमकरनी पक्षी, चील्ह, भेड़ी।
कुरङ्ग—(सं॰ पु॰) हरिन, मृग, भृंग, भौंरा।
कुरा—(सं॰ स्त्री॰) चबनी, नरम हड्डी।
कुरो—(सं॰ पु॰) सब लोग, कुल।
कुरु—(सं॰ पु॰) दिल्ली का एक राजा, (संस्कृत क्रिया) कीजिये।
कुरूप—(गु॰) बदशकल, कुडौल, भद्देसा, बुरी सूरत का।
कुलकानि—(सं॰ स्त्री॰) कुल की लाज, कुल की मर्यादा।
कुलटा—(सं॰ स्त्री॰) व्यभिचारिणी,
कुलवन्ती, कुलवती—(गु॰) सती, पतिव्रता।
कुलांच—(सं॰ स्त्री॰) कूद फांद, छलांग, चौकड़ी।
कुलिश—(सं॰ पु॰) वज्र, इन्द्र का शस्त्र।
कुलीन—(गु) कुलवान, अच्छे घराने का, श्रेष्ठ।
कुलह—(सं॰ पु॰) टोपी जो बाज, बहरी आदि शिकारी चड़ियां की आंख बन्द रखने के लिये चढ़ी रहती है।

कुवलय—(सं॰ पु॰) कमल, कोई, सफेद या नीला कमल।
कुविहंग—(सं॰ पु॰) बाज, जुर्रा, शाहीन।
कुबेर—(सं॰ पु॰) धन का देवता।
कुष्ठ -(सं॰ पु॰) कोढ़, एक रोग का नाम।
कुष्माण्ड, कूष्माण्ड—(सं॰ पु॰) कोंहड़े का फल।
कुसुम—(सं॰ पु॰) फूल, बर्रे का फूल जिस के लाल रंग में कपड़े रंगे जाते हैं।
कुसुमशर—(सं॰ पु॰) कामदेव।
कुसुमित—(गु॰) फूला हुआ, पुष्पित।

कुहर—(सं· पु·) कुहासा, छेद, गुफा।
कुहराम—(सं· पु·) शोर गुल, हाय हाय, वाप-दैया।
कुहाव—(भा· स्त्री) रूसना, रूठना।
कुहिरा—(सं· पु·) धूध, कुहासा।
कुहू —(सं· स्त्री·) कोयल की बोली। अमावस।
कूक—(भा· पु·) कूकना, कुहूकने का शब्द, आवाज़।
कुकर—(सं· पु·) कुत्ता।
कूजना—(क्रि·) चहकना, बोलना।
कूट—(सं· पु·) पहाड़ की चोटी, ढेर, छल, मसखरी, निहाई, कुटिलाई, कागज़।
कूत—(सं· पु·) अन्दाज।
कूप—(सं· पु·) कूवा, कुआं, इनारा।
कूर—(गु·) निठुर, मूर्ख।
कूर्म्म—(सं· पु·) कछुवा, कच्छप, कमठ।
कूलद्रुम—(सं· पु·) तट के वृक्ष, नदी के किनारे के पेड़।
कृच्छ्—(पु·) कठिनता, सख्ती।
कृतकार्य्य—(र्म्म· पु·) फलीभूत, कामयाब, जिस का काम पूरा हुआ हो।
कृतकृत्य—(र्म्म· पु·) निहाल, धन्य, कृतार्थ।
कृतघ्न—(सं· पु·) जो उपकार को नहीं माने, गुण नहीं मानने-वाला, नमकहराम, नाशुकरा, पहशानफरामोश।
कृतयुग—(सं· पु·) सत्ययुग।
कृतविद्य—(सं· पु·) पढ़ागुना, शिक्षित, पण्डित, ग्रेजुयेट।
कृतज्ञ—(क· पु·) जो उपकार को माने, नमकहलाल, पहशानमन्द।
कृतज्ञता—(सं· स्त्री·) शुक्रगुजारी।
कृतान्त—(सं· पु·) यम, काल, मौत।
कृतार्थ—(र्म्म· पु·) सन्तुष्ट, निहाल, धन्य, कामयाब।

कृति—(सं· स्त्री·) कार्य्य, काम। [जो असली न हो।
कृत्रिम—(सं· प·) किया हुआ, बनाया हुआ, बनावट का, कल्पित
कृपण—(सं· पु·) कंजूस, सूम, बखील।
कृपा—(सं· स्त्री·) दया, मिहर्बानी।
कृपाण—(सं· स्त्री·) तलवार।
कृपिन—(सं· पु·) कंजूस।
कृमि, क्रिमि—(सं· पु·) कीड़ा, मकोड़ा, पतंगा।
क्रुमिनल (Criminal)—(सं· पु·) फौजदारी।
कृश—(गु·) दुबला, पतला, दुर्बल, क्षीण।
कृशानु—(सं· पु·) आग, अग्नि।
कृषक—(सं· पु·) किसान, खेतीहर, हल जोतनेवाला।
कृषि—(सं· स्त्री·) खेती।
कृष्ण—(गु·) काला, अंधेरा, (सं· पु·) कृष्ण भगवान।
कृष्णसार—(सं· पु·) काला मृग।
कृष्णा—(सं· स्त्री·) नदी विशेष, द्रौपदी, यमुना।
क्रम—(सं· प·) नियमित, मामूली, बकायदा, पूरा।
केका—(सं· स्त्री·) मोरध्वनि मोर की बोली।
केकी—(सं· पु·) मोरनी, मयूरी, मोरैली।
केतकी—(सं· स्त्री·) केवडा, केवडे की जाति का एक फल।
केतन—(सं· पु·) ध्वजा, पताका, घर।
केतिक—(अ·) कितना।
केतु—(सं· पु·) नवां ग्रह, पुच्छल तारा, झंडा, फरहरा, ध्वजा।
केथोपोका—(सं· पु·) एक प्रकार का कीड़ा।
केदली—(सं· स्त्री·) केला।
केदार—(सं· पु·) क्यारी, खेत।
केन्द्र—(सं· पु·) वृत्त के बीच का विन्दु, मध्यस्थान, मर्कज़, सेन्टर।
केप (Cape)—(सं· पु·) अन्तरीप।

केयूर—(पु॰) अङ्गद, बहूंटा, बिजायठ।
केलि—(सं॰ स्त्री॰) खेल, क्रीड़ा, विहार।
केवट—(सं॰ पु॰) धीवर, मछुआ, मल्लाह, नाव चलानेवाला।
केवल—(अ॰) एकही, सिर्फ।
केश—(सं॰ पु॰) बाल, रोआं।
केशर, केसर—(सं॰ पु॰) कुंकुम, सिंह की गरदन पर के बाल।
केशरिया—(गु॰) केशर के रंग में रंगा हुआ।
केसरी—(सं॰ पु॰) सिंह, मृगराज, हनुमान के बाप का नाम।
केशव—(सं॰ पु॰) श्री कृष्ण, विष्णु।
केशी—(सं॰ पु॰) एक राक्षस का नाम।
केहरी—(सं॰ पु॰) शेर, सिंह, मृगराज।
कै—(अव्य॰) क्या।
कैटभ—(सं॰ पु॰) एक राक्षस का नाम।
कैधों—(अव्य॰) क्या।
कैमरा (Camera)—(सं॰ पु॰) चित्र खींचने की कल।
कैरव—(सं॰ पु॰) कुमुदिनी, सफेद कंवल, कोईं।
कैवर्त्त, कैवर्त्तक—(सं॰ पु॰) केवट, धीवर, मल्लाह।
कैवल्य—(सं॰ पु॰) मुक्ति, मोक्ष।
कोक—(सं॰ पु॰) चकवा, चकवाक, एक काम शास्त्र।
कोकनद—(सं॰ पु॰) लाल कमल।
कोकिल—(सं॰ पु॰) कोयल।
कोट—(सं॰ पु॰) गढ़, किला, दुर्ग, पहनने का कपड़ा।
कोटि—(सं॰ स्त्री॰) सौ लाख, करोड़, त्रिभुज की एक भुजा, शिखर।
कोटर—(सं॰ स्त्री॰) पेड़ में खोखली जगह, खोढ़रा।
कोथमीर—(सं॰ पु॰) कच्ची धनियां, धनियां की हरी पत्ती।
कोतल—(सं॰ पु॰) खाली घोड़ा।

कोदण्ड—(सं· पु·) धनुष, कमान।
कोप——(सं· पु·) क्रोध, गुस्सा, रोस।
कोपीन—(सं· पु·) लंगोटी।
कोयन, कोये—(सं· पु·) आंख का सफेद ढेला, आंख का कोना।
कोल—(सं· पु·) खाड़ी, जंगली जाति विशेष, सूअर।
कोलन (Colon)—(सं· पु·) एक प्रकार के ठहरने का चिन्ह।
कोलाहल—(भा· पु·) कुलाहल, हल्ला।
कोविद—(सं· पु·) पण्डित, बुद्धिमान्।
कोशना, कोसना—(क्रि·) सरापना।
कोशलपुर—(सं· पु·) अयोध्यापुरी।
कोष—(सं· पु·) भंडार, खजाना, डिक्शनरी, अण्डकोष, मियान।
कोषाध्यक्ष—(सं· पु·) खजांची, भण्डारी।
कोष्ठ—(सं· पु·) कोठा, बंधनी।
कोह—(सं· पु·) क्रोध, गुस्सा।
कोही—(गु·) क्रोधी, गुस्सेवर।
कौतुक, कौतूहल—(सं· पु·) कुतूहल, हँसी, खुशी, आनन्द, तमाशा।
कौंधा—(सं· स्त्री·) बिजली।
कौन्सिल (Council = काउन्सिल)—(सं· स्त्री·) सभा।
कौपरसल्फेट (Copper Sulphate)—(सं· पु·) तुतिया,
कौमुदी—(सं· स्त्री·) चांदनी, चन्द्रिका, एक व्याकरण का ग्रन्थ।
कौमोदकी—(सं· स्त्री·) विष्णु की गदा।
कौरव—(सं· पु·) कुरुवंशी, धृतराष्ट्र के पुत्रगण।
कौरोनेशन (Coronation) (सं· पु·) राजतिलक।
कौलिक—(गु·) कुल का, शाक्त, वाममार्गी।
कौशल—(गु·) चतुरता, चतुराई।

कौशिक—(सं॰ पु॰) विश्वामित्र मुनि, उलुआ, घूग्घू।
कौशेय—(सं॰ पु॰) रेशमी, तसरी कपड़ा।
कौस्तुभ—(सं॰ पु॰) विष्णु का मणि जो समुद्रमेंसे निकला था।
क्रम—(पु॰) रीति, परिपाटी, सिलसिला।
क्रमशः—(अव्य॰) क्रम से, धीरे धीरे।
क्रमोत्तर—(क्रि॰ वि॰) क्रम से पीछे।
क्रय—(सं॰ पु॰) वस्तु मोल लेना, खरीदना।
क्रय विक्रय—(भा॰) खरीदना और बेचना, वाणिज्य।
क्रव्य—(सं॰ पु॰) कच्चा मांस।
क्रान्तिमण्डल, क्रान्तिवृत्त लग्नमण्डल—(सं॰ पु॰) खगोल में उस वृत्त का नाम जो सूर्य्य का मार्ग है।
क्रिकेट—(सं॰ पु॰) एक प्रकार का खेल।
क्रीड़ा—(सं॰ स्त्री॰) हँसी, खेल।
क्रोध—(सं॰ पु॰) गुस्सा।
क्रुद्ध—(गु॰) खिसिआया हुआ, क्रोधित।
क्रूर—(गु॰) निठुर, कठोर, कड़ा।
क्रौञ्च—(सं॰ पु॰) बगुला, एक द्वीप का नाम, चकवा।
क्लौक (Clock = क्लौक)—(सं॰ पु॰) धर्म्मघड़ी।
क्लान्त—(क॰ पु॰) थका, मांदा, थकित, थका हुआ।
क्लिन्न—(क॰ पु॰) आर्द्र, ओदा, तर, दुखी।
क्लिष्ट—(गु॰) कड़ा, सख्त, कठिन।
क्लीव—(सं॰ पु॰) नपुंसक, नामर्द, हिजरा, डरपोक, कायर।
क्लेद—(सं॰ पु॰) पीप, मवाद।
क्वचित्—(अ॰) कहीं कहीं।
क्षत—(सं॰ पु॰) घाव, चोट।
क्षति—(सं॰ स्त्री॰) हानि, घटी, नुकसान।
क्षणकालीन—(गु॰) थोड़ी देर के लिये।
क्षमा—(सं॰ स्त्री॰) सहन शीलता, धरती।

क्षमता—(सं· स्त्री·) सामर्थ्य, योग्यता, सहनशीलता ।
क्षमी—(सं· पु·) शान्त, गमखोर ।
क्षय –(सं· पु·) नाश ।
क्षान्त –(गु·) सहनेवाला, धीरजवान, सन्तोषी ।
क्षाम—(गु·) क्षीण, दुबला ।
क्षार—(सं· पु·) राख, खार, नमकीन ।
क्षालित—(र्म्स· पु·) धोया हुआ ।
क्षिति—(सं· स्त्री·) धरती, पृथ्वी, धरणी ।
क्षितिज—(सं· स्त्री.) वह है जो शिखर और पदतलबिन्दु से ६० अंश की दूरी पर खिंचा हो ।
क्षितिधर—(सं· पु·) पहाड़, पर्वत, भूपाल ।
क्षिपक—(क· पु·) योद्धा. बहादुर, फेंकनेवाला ।
क्षिप्र—(क्रि· वि·) जल्द, तुरत, शीघ्र ।
क्षीण –(गु·) दुबला, पतला, कमज़ोर ।
क्षीर –(सं·, पु·) दूध, पानी ।
क्षुद्र –(गु·) छोटा, तुच्छ, नीच ।
क्षुर—(सं· पु·) छुरा ।
क्षुधा—(सं· स्त्री·) भूख, खाने की चाह ।
क्षुधातुर, क्षुधार्त, क्षुधित—(गु·) भूख से व्याकुल, भूखा ।
क्षेत्र—(सं· पु·) खेत, वह स्थान जहां बहुत लोगों के भोजन का प्रबन्ध रहता है, सदावर्त का स्थान ।
क्षेत्रज—(सं· पु·) अपनी स्त्री में दूसरे से जना पुत्र, जारज ।
क्षेपक—(क· पु·) फेंकनेवाला,
क्षेपणी—(क· स्त्री·) गुफनी, ढिलवासी ।
क्षोणि, क्षौणि—(सं· स्त्री·) धरती पृथ्वी, ज़मीन ।
क्षोभ—(सं· पु·) डर, मोह, छोह, हड़बड़ाहट ।

क्षोभित, क्षुभित—(गु·) डरा हुआ, घबड़ाया हुआ।
क्षौर—(सं· स्त्री·) हजामत, मुण्डन ।
क्ष्मा—(सं· स्त्री·) पृथ्वी, धरती ।

ख

ख—(सं· पु·) आकाश, आसमान, स्वर्ग, शून्य, इन्द्री, गृह ।
खग—(सं पु·) पक्षी, पखेरू, गृह, हवा, तीर।
खगना—(क्रि) चुक जाना, घटना, खट जाना।
खगहा—(सं· पु) गंदा, बाज।
खगपति, खगेन्द्र, खगेश—(सं पु) गरुड़।
खगोल—(सं पु) आकाशमण्डल।
खग्ग—(सं. पु) तलवार ।
खचित—(वि.) जड़ा हुआ।
खञ्ज—(गु.) लंगड़ा, लूला, पंगु।
खञ्जन—(सं. पु.) एक पखेरू का नाम।
खञ्जर—(सं. पु.) कटार, कटारी ।
खञ्जरीट—(सं. पु.) खंढ़लिच पक्षि।
खटका—(सं. पु.) डर शंका ।
खटराग—(सं. पु.) झंझट, जंजाल, फूट।
खड्ग—(सं. स्त्री.) तलवार, तरवार ।
खड्क—(सं. स्त्री.) गोशाला।
खड़िया, खड़ी—(सं. स्त्री.) खल्ली, चाक।
खण्ड—(सं. पु.) टुकड़ा, भाग।
खण्डन —(भा. पु.) काटछांट, अशुद्ध बनाना ।
खण्डित—(गु.) अधूरा, कम, टूटा या कटा हुआ।
खण्डहर—(सं. पु.) टूटे फूटे मकान ।
खत्ता—(सं. पु.) कोठा, नाज रखने का खड्डा, गड़हा।

खदिर—(सं. पु.) खैर, कथ।
खद्योत—(सं. पु.) जुगनू, अगिया, चमकनेवाला कीड़ा
खनिज—(क. पु.) खान से पैदा हुई चीज़।
खपत—(सं. स्त्री.) कटती, बिक्री।
खप्पर—(सं. पु॰) वह खपड़ा जिस में नेवतिहे, आग बालते हैं, वामर देने की वोरसी, योगिनियों का पात्र।
खपाच—(सं॰ पु.) फांस, किर्च, बांस का नोकदार टुकड़ा।
खभार—(सं. पु.) खड़बड़ी, खलबली।
खर—(सं. पु.) गधा, खच्चर, एक राक्षस का नाम, तृण, (गु.) तीक्ष्ण, चतुर।
खरभर, खलवल, खरबर—(सं. स्त्री.) हलचल, खड़बड़, खलबली
खरल—(सं॰ स्त्री॰) औषध पीसने के लिये पत्थर का बरतन, खल।
खरा—(गु॰) सीधा, सच्चा, तीखा चोखा।
खरारि—(सं॰ पु॰) रामचन्द्र।
खरांट—(गु॰) बुड्ढा, पुराना।
खर्राटा—(सं॰ पु॰) सोतेमें नाक की आवाज।
खरी—(सं॰ स्त्री॰) खली, गधी।
खर्व—(गु॰) वामना, नीचा, नाटा, खोटा, छोटा, सौ अरब।
खल—(गु॰) दुष्ट, नीच, कठोर, क्रूर, बेरहम, (सं॰ स्त्री॰) दवा पीसने का बरतन, खर्ग।
खलीज—(सं॰ पु॰) समुद्र के उस भाग को कहते हैं जिस के प्रायः चारो तरफ़ ज़मीन हो।
खलु—(अ॰) निश्चय, हेतु निषेध।
खसो—(गु॰) गिरा, पड़ा।
खसीमाल—(स्त्री॰) पत्थर विशेष।
खांग—(सं॰ पु॰) गैंडे का सींग सूअर का बड़ा दांत।

खांड (सं॰ स्त्री.) शक्कर।
खांगे—(क्रि॰) कम पड़े, घटे।
खाज—(सं॰ स्त्री॰) खजुली।
खाण्डव—(सं॰ पु.) इन्द्रप्रस्थ के निकट का वन।
खांडा—(सं॰ स्त्री॰) एक प्रकार की तलवार। [चला गया हो।
खाड़ी—(सं॰ स्त्री॰) समुद्र का छोटा भाग जो जमीन में दूर तक
खात—(म्र्म॰ पु॰) खाई, खन्दक, परिखा, दुर्गवेष्टन।
खान—(सं॰ स्त्री॰) आकर, अबरख आदि निकलने की जगह।
खानिक—(गु॰) खानिका, खान में पैदा हुआ।
खाद्य—(सं॰ पु॰) खाना, खाने की वस्तु। [करता है।
खार—(सं॰ पु॰) निमक, लोना, रेह जिस से धोवी कपड़ा साफ
खारा—(गु॰) नमकीन।
खिन्न—(म्र्म॰ पु॰) दुखी, थकित, सताया हुआ।
खीर—(सं॰ पु॰) दूध और चावल से बनी हुई एक खाने की वस्तु।
खील—(सं॰ स्त्री॰) भुना हुआ और छिलका निकाला हुआ चावल, लावा।
खीस—(भा॰ स्त्री॰) खराब हुई, दांत निकालना (सं॰ स्त्री॰) क्रोध।
खीसा—(सं॰ पु॰) जेब, खलीता।
खुटाना—(क्रि॰) कम होना।
खूंदन—(क्रि॰) (घोड़े का) पैरों से धरती खोदना, टाप मारना।
खेचर—(सं॰ पु॰) ग्रह, वायु, पक्षी, प्रेत, विद्याधर, आकाश में चलने वाला।
खेड़ा (रा)—(सं॰ पु॰) गांव, पुरवा।
खेद—(सं॰ पु॰) सोच, दुःख, शोक, पछतावा, अफसोस।
खेदित—(म्र्म॰ पु॰) दुखित, दुखी, पीड़ित।
खेस—(सं॰ पु॰) एक कपड़ा।
खेह—(सं॰ पु॰) खरपात, गर्द।

ोटि }
ोती } —(गु·) खोटाई, दोष, चूक, कसूर।

ोरी, खोरि—(सं· स्त्री·) गली, दोष, खुटाई, कसूर।

ोह—(सं· स्त्री·) गुहा।

ौड़, खौर,—(सं· स्त्री·) तिलक, त्रिपुण्ड।

ोरे—(गु·) लँगड़े।

्यात—(ग·) नामवर, प्रसिद्ध, मशहूर, उजागर।

्याति—(भा· स्त्री·) यश, नाम, कीर्त्ति, सराह, नामवरी।

्रीष्ट—(सं· पु·) ईशा।

्याल—(सं· प·) तमाशा, कौतुक, नमक, खेल, चेत, ध्यान।

ग

ा—(सं· प·) गणेश, गन्धर्व, यात्री, गीत।

ंजना—(क्रि.) नाश करना।

ंजा—(गु·) जिस के सिर में गंज हो, चंदला।

ंडा—(सं· पु·) चार कौड़ी, गंठीला तागा जो लड़के के गले में बांधते हैं।

गन्धी—(सं· पु·) अतर, गुलाब जल आदि बेचनेवाला।

गगण, गगन—(सं· पु·) आकाश, आसमान।

गगनचर—(सं· प·) पक्षी, चिड़िया, आकाश में चलने वाला, ग्रह।

गगनचुम्बी—(गु·) आकाश छूता हुआ, बहुत ऊंचा।

गंगाजमुनी—(सं· स्त्री·) गांगी जमुनी, कान का गहना, वाली, घोड़े और बैलों की धौली काली भूल, धौला और काला, कहीं सोने और कहीं चांदी का काम।

गङ्गाधर—(सं· पु·) शिव।

गज, गजराज—(सं· पु·) हाथी, हस्ती।

गजर—(सं· पु·) ४।८।१२ बजनेपर दोहरी आवाज।
गजरा—(सं· स्त्री·) फूल की मोटी माला।
गजवदन, गजानन—(सं· पु·) गणेश जी।
गजारि—(सं· पु·) सिंह, हाथी का शत्रु।
गजेन्द्र—(सं· पु·) मतवाला हाथी, इन्द्र का हाथी।
गंज—(सं· पु·) ढेर, खजाना, भंडार, हाट, बाजार।
गठन—(भा· प·) जोड़, मिलाव, बनावट।
गठी—(सं· स्त्री·) समूह, सनमत, मेल, गुट्ट।
गड्डी—(सं· स्त्री·) कागज के दश दस्ते।
गण—(गु·) समूह, (सं· पु·) शिव के दूत।
गणक—(क· पु·) ज्योतिषी, गिननेवाला।
गणनाथ, गणपति, गणराऊ, गणाधिप—(सं· पु·) गणेश जी।
गणिका—(सं· स्त्री·) वेश्या, पतुरिया, कञ्चनी, गिनती करनेवाली
गणितज्ञ—(क· पु·) हिसाब जाननेवाला, अङ्कगणित जाननेवाला
गणितपटु—(गु·) गणित में चतुर।
गण्ड—(सं· पु·) गाल, हाथी का गाल।
गत—(क· पु·) गया हुआ, बीता हुआ, पाया हुआ।
गतागत—(भा· पु·) आनाजाना, आमदरफ्त, ऊलट-फेर।
गताक्ष—(सं· पु·) अन्धा।
गतायु—(गु·) वह मनुष्य जिस की उम्र पूरी हो गयी।
गति—(सं· स्त्री·) दशा, चाल, मोक्ष, शरण।
गथ—(सं· पु·) दाम, मोल।
गद—(सं· पु·) रोग, बीमारी।
गदका—(सं· पु·) पटा, गदा (स्त्री·) सोटा, लाठी।
गद्गद—(गु·) प्रसन्न, खुश।
गदाधर—(सं· पु·) विष्णु का नाम, गदा रखनेवाला।
गदित—(मर्भ·) कहा हुआ।

गदेला—(सं॰ प॰) रूई भारा हुआ बिछौना, बचा।
गद्य—(सं॰ पु॰) वार्त्तिक, नसर।
गन्ता—(क॰ पु॰) गमनकर्त्ता, जानेवाला।
गन्तु—(सं॰ पु॰) पथिक।
गन्धर्व—(सं॰ पु॰) स्वर्ग का गवैया।
गन्धवह—(सं॰ पु॰) हवा।
गन्धार—(पु॰) कन्धारदेश, राजविशेष।
गमनागमन—(भा॰ पु॰) जाना आना।
गमी—(क॰ पु॰) जानेवाला।
गम्य—(गु॰) जानने योग्य।
गयन्द—(सं॰ पु॰) बड़ा हाथी।
गर—(सं॰ पु॰) गला, विष।
गरल—(सं॰ पु॰) विष, जहर, माहुर, हलाहल।
गरिष्ठ—(गु॰) भारी, गरुआ, गरू।
गरिमा—(स्त्री॰) बड़ाई।
गरुड़ध्वज—(सं॰ पु॰) विष्णुभगवान्।
गर्त्त—(सं॰ पु॰) गढ़ा।
गर्द—(सं॰ स्त्री॰) धूर।
गर्दभ—(सं॰ पु॰) गदहा।
गनी—(غنی)—(गु॰) धनी।
गर्व, गर्भ—(सं॰ पु॰) घमण्ड, गरूर, अभिमान।
गर्भ—(सं॰ पु॰) गाभ, पेट, हमल, पांव भारी होना।
गर्भकेशर—(सं॰ पु॰) पुङ्गकेशर और डिम्बकोष के मध्य का भाग।
गर्हित—(गु॰) निन्दित।
गलगण्ड—(सं॰ पु॰) घेघा, गला फूलना।
गलित—(सं॰ पु॰) गला हुआ, गिरा हुआ।
गवन—(भा॰ पु॰) जाना, चलना।

गवय—(सं. पु.) गाय सा जानवर, वन की गाय, नील गाय।
गवर्नमेंट (Government)—(सं. स्त्री) सरकार, हुकूमत।
गवर्नर (Governor)—(सं. पुं.) शासक, हाकिम, लाट।
गवर्नर-जेनरल (Governor-General)—(सं. पु.) प्रधान शासक, बड़ा लाट।
गहन—(गु.) कठिन (सं. पु.) वन, ग्रहण।
गवहि—(अ.) धीरे से।
गवाक्ष—(सं. पु.) झरोखा, गाय की आंख, मोखा, एक वानर का नाम
गवासा—(सं. पु.) गाय खानेवाला, कसाई।
गवेषणा—(सं. स्त्री.) खोज, विचार।
गव्य—(पु.) दूध आदि, (गु.) गाय का।
गहरु—(सं. पु.) देरी, देर, विलम्ब।
गहगह—(गु.) प्रसन्न, जोरका।
गह्वर—(सं. स्त्री.) गुफा, गुहा, सघन।
गहबरि—(पू. कि.) गद्‌गद होकर।
गाज—(सं. स्त्री.) बिजली।
गाजना—(स्त्री.) खुशहोना।
गाडर—(सं. स्त्री.) भेड़ी (सं. पु.) एक तरह की घास।
गाण्डीव, गाण्डिव—(सं. पु.) अर्जुन का धनुष।
गात, गात्र—(सं. पु.) शरीर, देह, बदन।
गाथा (सं. स्त्री.) कथा, गीत, छन्द।
गाधितनय—(सं. पु.) विश्वामित्र।
गामी—(क. पु.) चलनेवाला. जानेवाला।
गाइ, गोठ—(सं. स्त्री.) गोशाला।
गारुड़ी—(सं. पु.) विष उतारनेवाला।

गार्टन (Garten)
गार्डन (Garden) } —(सं. पु.) बागीचा, फुलवारी।

गाहा—(सं. स्त्री.) कथा, समूह।

गार्हस्थ्य—(सं. पु.) गृहस्थी का।

गारा—(सं. पु.) दीवार बनाने के लिये बनाई मिट्टी, गिलावा।

गावदी—(गु.) मूर्ख, भोला, बेवकूफ, अज्ञानी।

गिरा—(सं. स्त्री.) वाणी, वचन, सरस्वती, कविताई।

गिरि—(सं. पु.) पहाड़, पर्वत गिर कर।

गिरिजा—(सं. स्त्री.) पार्वती।

गिरिधर, गिरिधारी—(सं. पु.) श्रीकृष्ण जी।

गिरिन्द्र—(सं. पु.) हिमालय पहाड़, बड़ा पहाड़, सुमेरु।

गिरिवर—(सं. पु.) बड़ा पहाड़, पहाड़ों में उत्तम।

गिरीश—(सं. कु.) महादेव, शिव, हिमालय।

गुच्छा—(सं. पु.) गुलदस्ता, फूलों का गुच्छा।

गुञ्जन—(भा. पु.) गूंजना।

गुञ्जा—(सं. पु.) लाल करजनी।

गुटिका—(सं. स्त्री.) गोली।

गुड़िया—(स्त्री.) लड़कियों का खिलौना, पुतरी।

गुडाकेश—(सं. पु.) अर्जुन, शिवजी।

गुण—(सं. पु.) स्वभाव, विशेषण, हुनर, रस्सी, डोरी, तांत, रोदा, भला, वार।

गुणक—(सं. पु.) जिस अङ्क से गुणा करें।

गुणग्राहक—(क. पु.) गुण ग्रहण करनेवाला।

गुणग्राम—(सं. पु.) गुणों का समूह।

गुणज्ञ—(क. पु.) गुण को जाननेवाला।

गुणवान—(क. पु.) गुणवाला।

गुणित—(सं. पु.) गुणा हुआ।
गुदा—(सं. स्त्री.) मूलस्थान, मलस्थान।
गुदारा—(सं. पु.) लोही लगना; पौ फटना, अरुणोदय।
गुनह—(सं. पु.) दोष।
गुप्त—(पु.) छिपा हुआ, लुका हुआ, बचा हुआ, रक्षित।
गुप्ती—(सं. स्त्री.) छड़ी के भीतर छिपी हुई तलवार।
गुमटी—(सं. स्त्री.) कलसी, कोठरी।
गुम्फ—(भा. पु.) गूथना, (सं. पु.) बांह का गहना।
गुरु—(सं. पु.) उपदेशक, शिक्षक, मन्त्र देनेवाला, भारी।
गुरुजन—(सं. पु.) बड़े लोग, सरदार।
गुरुतर, गुरुतम—(गु.) बड़ा, अति गरू, वजनदार।
गुरुत्व—(भा. पु.) बड़ाई, बोझ, भार गरुआई।
गुल्फ—(सं. पु.) पैर की गांठ, घूठी, फीली,।
गुल्म—(सं. पु.) वायुगोला, प्लीहा, झाड़ लता, थांध।
गुलाल—(सं. पु.) अबीर,।
गुह—(सं. पु.) निषाद।
गुहा—(सं. पु.) दो पहाड़ वा पहाड़ी के बीच पतली राह, खोह, कन्दरा।
गुह्य—(गु.) छिपाने योग्य, गुदास्थान।
गुह्यक—(सं. पु.) कुवेर का दूत, एक प्रकार के देवता।
गूजर—(सं. पु.) ग्वाला, गोप, अहीर।
गूढ़—(गु.) सूक्ष्म, कठिन छिपा [भद की बातें छिपी हों।
गूढ़नीति—(सं. स्त्री.) कठिन वा छिपी नीति, ऐसी नीति जिसमें
गूदा—(स. पु.) भेजा, फल का सारांश।
गृध्र—(सं. पु.) गीध, गिद्ध गृद्ध,।
गृध्रराज—(सं. पु.) जटायु पक्षी।
गृह—(सं. पु.) घर, गेह।
गृहचर्य्या—(सं. स्त्री. घर का काम।

गृहस्थाश्रम—(सं॰ पु॰) गृहस्थ का धर्म्म वा काम।
गृहिणी—(सं॰ स्त्री॰) पत्नी, घरवाली, स्त्री, भार्या।
गृहीत—(र्म्म॰ पु॰) लिया हुआ, पकड़ा हुआ।
गेंदतड़ी—(सं॰ स्त्री.) खेल विशेष।
गेय—(र्म्म॰) गाने के योग्य, गीत, ज्ञेय।
गेह—(सं॰ पु॰) घर, मकान।
गैल—(सं॰ पु॰) मार्ग, रास्ता, बाट।
गैस (Gas)—(सं. पु.) वाष्पीय पदार्थ, हवा।
गो—(सं. स्त्री.) इन्द्रिय, गाय, पृथ्वी, वाणी, भूमि (पुं.) बैल, किरण, बाण, लोम, चन्द्र, वृष, वज्र, स्वर्ग।
गोकर्ण—(सं. पु.) पुरुष विशेष, मृग, सर्प विशेष, एक तीर्थ का नाम, जिस का कान गाय सा हो।
गोकुल—(सं. पु.) व्रज, गौओं का झुंड। [स्थान, चारागाह।
गोचर—(ग.) जो इन्द्रियों से जाना जाय, गौओं के चरने का
गोत्र—(सं. पु.) वंश, जाति।
गोतीत—(गु॰) जो इन्द्रियों से नहीं जाना, जाय अगोचर।
गोधन—(सं॰ पु॰) गाय रूप धन।
गोधूम—(सं॰ प॰) गेहूं।
गोप—(सं॰ पु.) गले में पहनने का एक गहना, ग्वाला, अहीर।
गोपनीय, गोप्य,—(गु.) छिपाने योग्य।
गोवरगणेश—(गु.) मूर्ख।
गोमय—(सं. पु.) गोवर।
गोमर—(सं॰ पु॰) चाण्डाल, कसाई।
गोमायु—(सं. पु.) सियार, गीदड़, शृगाल। [जीतना।
गोमेध—(सं. पु.) गाय की बली, गोवध यज्ञ, इन्द्रियों को
गोरटी—(स्त्री.) गोरी स्त्री, सुन्दरी, ग्वालिन।
गोलक—(सं. पु.)विधवा से जारज पुत्र, आंख का स्थान।

गोलार्द्ध—(सं. पु.) गोले का आधा, पृथ्वी का आधा।
गोल्ड (Gold)— (सं. प.) सोना।
गोवर्द्धन—(सं. पु.) एक पहाड़ जो वृन्दावन में है।
गोविन्द—(सं. पु.) श्रीकृष्ण का नाम, विष्णु।
गोष्ट—(सं. पु.) गोत, कुल, वंश, जाति, पहाड़।
गोष्ठ—(सं. पु.) गोशाला, थथान।
गोष्ठी—(सं. स्त्री.) सभा।
गोस्वामी—(सं. पु.) गुसांई, महन्त, ईश्वर।
गौड़—(सं. पु.) मालदह जिले में बंगाल की पुरानी राजधानी, ब्राह्मण जाति विशेष, कायस्थ विशेष।
गौण—(ग.) अमुख्य, अप्रधान, जो ठीक न हो।
गौरण्ड—(गु.) गोरा।
गौरव—(गु.) बड़ाई, मान, गुरुत्व।
गौरी—(सं. स्त्री.) पार्वती।
गौरीश—(सं. पु.) [गौरी+ईश] शिव, महादेव।
ग्रथित—(र्म्म. पु.) गुथा हुआ, पिरोया हुआ।
ग्रन्थ—(सं. पु.) पुस्तक, शास्त्र, गुरु नानक की बनाई सिक्खों की धर्मपुस्तक।
ग्रन्थावली—(सं. स्त्री) पुस्तकों की श्रेणी, सूची, तालिका।
ग्रन्थि—(सं. स्त्री.) जोड़, गांठ, सन्धि।
ग्रसना—(क्रि.) पकड़ना, निगलना, खाना; जैसे—ग्रससि न मोहि कहा हनुमाना।
ग्रस्त—(र्म्म. पु.) खाया हुआ, पकड़ा हुआ, लिया हुआ।
ग्रह—(सं. पु.) सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनिश्चर, राहु और केतु ये नौ ग्रह, नक्षत्र, घर, बुरा दिन।
ग्रहण—(क्रि.) लेना, पकड़ना, गहना, सूर्य्य चन्द्रमा का ग्रहन।
ग्राम—(सं. पु.) गांव, वस्तीसमूह, बहुतायत।
ग्रामटिका—(सं. स्त्री.) छोटी बस्ती, छोटा गांव।
ग्रामवासी—(क. पु.) गांव में बसनेवाला।

ग्राम्य, ग्रामीण—(गु.) देहाती, गांव का रहनेवाला, गंवार, गंवैयां।
ग्रास—(सं. प.) कौर, कवल, लुकमा।
ग्राह—(सं. प.) मगर, घड़ियाल, मच्छ, कुम्भीर।
ग्रीवा—(सं. स्त्री.) गर्दन, गला, कण्ठ।
ग्रीष्म—(सं. स्त्री.) गर्मी की ऋतु, गर्मी।
ग्रेट (Great)—(सं. पु.) बड़ा।
ग्रेन (Grain)—(सं. पु.) आधा रत्ती के लगभग तौल।
ग्लानि—(सं. स्त्री.) घिन, नफ़रत, थकावट, मांदगी, पश्चात्ताप।
ग्वैंड़ा—(स. पु.) नगर वा गांव के पास।

घ

घ—(सं. पु.) घण्टा, मेघ, घाम।
घंघरा—(सं. पु.) लहंगा।
घट—(सं. पु.) घड़ा, देह, कूट, कपट, मन, जी, अन्तःकरण, कम।
घटक—(सं. पु.) मध्यस्थ, अगुआ, वर्तुहार, दलाल, बिचवैया, योजक, मिलानेवाला।
घटज, घटयोनि—अगस्त्य ऋषि जो घड़े से पैदा हुए थे।
घटना—(सं. स्त्री.) संयोग, जोगाड़, वाकया।
घटाटोप—(सं पु.) पालकी वा रथ के ढांकने का कपड़ा, ओहार। (गु.) भरपूर, घटा घिर आना।
घटिया—(गु.) थोड़े मोल का, सस्ता।
घटी, घटिका—(सं. स्त्री.) घड़ी, साठ पल महूर्त, छोटा घड़ा।
घड़ियाल—(सं. स्त्री.) घण्टा, घड़ी, मगर, मच्छ।
घड़ियाली—(सं. पु.) घण्टा बजानेवाला।
घड़ी—(सं. स्त्री.) ६० पल का समय, समय जानने की कल।
घन—(सं. प.) बादल, घट, हिसाब में एक ही अङ्क को तीन बार गुणा, हथौड़ा। (गु.) ठोस, घना, गहरा, दृढ़।

घनघोर—(गु.) डरावना, गहरा, भारी।
घननाद—(सं. पु.) मेघनाद, रावण का बेटा, गरजन।
घनेरा—(गु.) बहुत, अधिक।
घनश्याम—(सं. पु.) श्रीकृष्ण, मेघ के समान काला, प्यारा।
घनसार—(सं. पु.) कपूर, पारा, जल।
घना—(गु.) सघन।
घमण्ड—(सं. पु.) अभिमान, दर्प, ग़रूर।
घमोई—(सं. स्त्री.) नरसल; नरकट, सरकंडा, नल, बेत, भमोई
घरनई—(सं. स्त्री.) चौघड़ा, बेड़ा।
घरणी, घरनी—(सं. स्त्री.) घरवाली. स्त्री, पत्नी, भार्या।
घर्म्म—(सं. पु.) गर्मी, घाम, धप।
घर्षक—(क. पु.) घिसनेवाला, घिसवैया।
घर्षण—(क्रि.) घसना, रगड़ना।
घवारे—(सं. पु.) गंच्छा, घौदवाला।
घाई—(सं. स्त्री.) ओर, पक्ष।
घाघ—(सं. पु.) बूढ़ा; चतुर, एक चिड़िया, तिर्हुत का एक मशहूर आदमी जिस ने बहुत सी भावी और सिखावन की बातें कविता में कही हैं। जैसे, रात निबइरदिन को छाया। कहै घाघ तब बरसा गया।
घाघरा—(सं. स्त्री.) सरयू नदी (पु.) नद विशेष।
घाटी—(सं. स्त्री.) पहाड़ में गली या तङ्ग रास्ता, दर्रा।
घात—(सं. प.) दांव, दाव, चोट, विचार।
घात—(सं. प.) रूक, मोल से अधिक लिया जानेवाला।
घाती, घातक—(क. पु.) घाव करनेवाला, मारनेवाला।
घातसहत्व—(गु.पु.) पीटने पर फैलनेवाला अर्थात् चोट सहनेवाला।
घामड़—(गु.) भोला, सीधा, उल्लू।
घालक—(सं. पु.) मारनेवाला।

घिण, घिन—(सं॰ स्त्री.) नफरत, ग्लानि, अवज्ञा, चिन्ता।
घिरनी—(सं. स्त्री) चरखी, छोटा पहिया, घुड़, पहल (स्त्री) चार पहियों का रथ जिस में घोड़े जतते हैं।
घघची—(सं. स्त्री॰) रत्ती, लाल करजनी।
घूघ, घघट—(सं. पु.) अंचले की आड़, ओढ़नी के अंचले से मह ढांकना
घूघू—(सं. पु॰) उल्लू, एक जानवर का नाम।
घूघरू—(सं॰ पु.) नूपुर, नेउरा।
घूड़पहल—(स्त्री.) चार पहियों का रथ जिस में घोड़े जुतते हैं।
घूर्णित—(क. पु.) भ्रमित, घुमाया गया।
घूस—(सं॰ पु॰) रिशवत, उत्कोच।
घस, घुईस—(सं. पु॰) बड़ा मूसा, बड़ा चूहा।
घणा—(सं॰ स्त्री॰) घिन, नफरत।
घृणाजनक—(क॰ पु॰) घिन पैदा करनेवाला।
घणित—(र्म॰ पु॰) अनादृत, निन्दित।
घृणास्पद—र्म॰ पु॰) घृणा के योग्य, अनादर करने के योग्य।
घत—(सं॰ पु॰) घी, घीव।
घेघा—(सं॰ पु॰) गले का रोग।
घोरनिद्रा—(सं. स्त्री॰) गहरी नींद, मृत्यु।
घोल—(सं. पु॰) मठा छाछ, मही।
घोसला—(सं॰ पु॰) खोंता।
घोप—(सं॰ पु॰) शब्द, गोठ, बथान, खरिक।
घोपक—(क॰ पु॰) रटनेवाला।
घोपणापत्र—(सं॰ पु॰) विज्ञापन, इश्तिहार, नोटिस (Notice)
घोसी, घोषी—(सं॰ पु॰) मुसलमान ग्वाला।
घ्राण—(सं॰ पु॰) नाक, नासिका, सुगन्ध लेना, संघना।
घ्राणेन्द्रिय—(सं स्त्री.) सूंघने की इन्द्री, नाक, नासिका।

चपल—(गु·) चञ्चल, चलायमान।
चपला—(सं· स्त्री.) लक्ष्मी, बिजली।
चपेटा—(सं. पु·) थप्पड़, तमाचा।
चमत्कार—(सं· पु·) अचम्भा, विस्मय, प्रकाश।
चमर—(सं पु·) चंवर, सुरह गाय की पूंछ।
चमू—(सं· स्त्री·) कटक, दल फौज, जिस में ७२१ हाथी, ७२१ रथ, २१८७ घोड़ा और ३६४५ पैदल हों।
चम्पक—(सं· पु·) चम्पा जिस के फूल पीले रंग के होते हैं।
चम्पत—(क्रि· वि·) छिपा, अन्तर्ध्यान, चला जाना।
चय—(सं· पु·) समूह, ढेर, राशि।
चर—(सं· पु·) दूत, धावन, खाना, दियारा, चलनेवाला, जङ्गम, चार, गोयन्दा।
चरणपीठ—(सं· स्त्री·) खड़ाऊं।
चरपरा—(गु·) तीखा, तीता।
चरसा—(सं· पु·) अधौड़ी, खाल, मोट, पुरवट।
चरणारविन्द (सं· पु·) चरणकमल।
चरणोदक—(सं· पु·) चरणामृत, पैरों का पानी।
चराचर—(सं· पु·) जीव, जन्तु, वृक्ष, पत्थर आदि स्थावर जङ्गम सभी पदार्थ जो सृष्टि में हैं।
चरचना—(क्रि·) चन्दन, अतर आदि सुगन्ध लगाना।
चरु—(सं· स्त्री·) खीर, जाउरि।
चर्चा—(सं· स्त्री·) किसी की बातचीत, जिक्र, बखान।
चर्म्म—(सं· पु·) चमड़ा, ढाल।
चलदल—(सं· पु·) पीपल।
चर्वण—(सं· पु·) चबाना, दांत से पीसना।
चर्य्या—(सं· स्त्री·) काम, सेवा।
चवाई—(सं· स्त्री·) निन्दा, चवाव, चुगुली।
चसका—(सं· पु·) टेव, आदत, लत।

चहला—(सं॰ पु॰) कादा, पाक, पिछली।

बहुदिशि— }
चहुंया— } (क्रि॰ वि॰) चारो ओर।

चाणक्य—(सं॰ पु॰) एक ब्राह्मण का नाम जिस ने मगध के राजा नन्द को नाश कर चन्द्रगुप्त को राजा बनाया।

चाउ—(सं॰ पु॰) लालसा, अभिलाष।

चांकी—(सं॰ स्त्री॰)बिजली।

चाट -(सं॰ स्त्री॰) चसका, स्वाद, आदत।

चाटुकार—(सं॰ पु॰) खुशामद।

चातक, चातृक—(सं॰ पु॰) पपीहा।

चातुरी —(सं॰ स्त्री॰) }
चातुर्य्य —(सं पु॰) } चतुराई, चालाकी।

चातुर्वर्ण्य—(सं॰ पु॰) ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र।

चान्द्रायण—(सं॰ पु॰) एक व्रत का नाम। यह व्रत दो प्रकार का होता है। १ चान्द्रायण२ कृच्छ्र चान्द्रायण, प्रथम जिस में चन्द्रमा का दर्शन कर भोजन करते हैं। कृच्छ्र चान्द्रायण वह है जिस में प्रति दिन चन्द्रमा की कला वृद्धिहास के अनुसार एक २ ग्रास बढ़ाते और घटाते जाते हैं अर्थात् पहले दिन एक ग्रास दूसरे दिन दो इत्यादि अन्त में जब चन्द्रदर्शन नहीं होता तब निर्जल रहना पड़ता है।

चाप—(सं॰ पु॰) धनुष, (भा॰) दबाव।

चापलूसी—(सं॰ स्त्री॰) मंहदेखी, खुशामद, लल्लोपत्तो।

चावी, चाभी—(सं॰ स्त्री॰) कुञ्जी, ताली।

चामीकर—(सं॰ पु॰) सोना।

चामुण्डा—(सं॰ स्त्री॰) देवी, दुर्गा, काली, योगिनी।

चार—(सं॰ पु॰) दूत, जासूस, ४ का अङ्क।

चारा—(सं· पु·) वश, उपाय, अखतियार, घास भूसा आदि पशुभोजन ।
चारण—(सं· पु·) भाट, यश बखाननेवाला ।
चारु—(गु·) सुन्दर, मनोहर, सुहावन, मनभावन ।
चार्वाक—(सं· पु·) वेदनिन्दक, नास्तिक विशेष ।
चालना—(क्रि·) छानना, झाड़ना, चलाना ।
चाय— } (सं· पु·) चाह, खाहिश, लालसा, शौख ।
चाव— }
चापु—(सं· पु·) नीलकण्ठ, कटनाश ।
चाहि–(पु· क्रि·) देख कर चाह कर ।
चिक–(सं· स्त्री·) पर्दा, जवनिका ।
चिक्क—(सं· पुं·) वकर कसाई ।
चिकित्साशाला } (सं· स्त्री·) शिफाखाना, हास्पिटल, दवाखाना।
चिकित्सालय } (सं· पु·)
चिकित्सक—(क· पु·) वैद्य, हकीम, डाक्टर, दवा करनेवाला ।
चिकित्सा—(सं· स्त्री·) दवा, इलाज, (भा.) दवा करना ।
चिकुर—(सं· पु·) केश, बाल ।
चिखुरी—(सं· स्त्री·) गिलहरी, रूखी ।
चितेरा—(सं· पु·) चित्र खींचनेवाला ।
चितला (गु·) चितकबरा ।
चित्त—(सं· पु·) मन, बुद्धि, जी, ज्ञान ।
चित्त मोदक—(क· पु·) मन को प्रसन्न करनेवाला ।
चित्र—(सं· पु·) तसवीर ।
चित्रक –(सं·पु·) चितेरा, चित्ता औषध ।
चित्रकण्ठ } —(सं· पु·) कबूतर, कपोत ।
चित्रग्रीव }

चित्रगुप्त— (सं· पु·) यम का नाम, यमराज का लेखक।
चित्राङ्ग—(सं· पु·) चितकबरा सांप, चित्रित, चित्रविचित्र।
चिदाकाश—(सं· पु·) ब्रह्म, शुद्धस्वरूप।
चिदात्मा, चिदानन्द (सं· पु·) परमात्मा, चैतन्य, परमानन्द।
चिन्ताग्रस्त—(गु·) चिन्तित, सोच में पड़ा हुआ।
चिन्तामणि—(सं· पु·) मनमांगा देनेवाला एक प्रकार का मणि, पारस। संस्कृत कोषलेखक इस शब्द को पुल्लिङ्ग मानते हैं। उचित भी यही है; पर एकाधहिन्दीकोषलेखक भूल से स्त्रीलिङ्ग मानते हैं।
चिबुक—(सं· स्त्री·) ठुड्डी, ठोढ़ी।
चिर—(अ·) बहुत काल।
चिरञ्जीव, चिरञ्जीवी —(गु·)बहुत दिनों तक जीनेवाला।
चिरञ्जीविमुनि—(सं·पु·) मार्कण्डेय।
चिरस्थायी—(गु·) दवामी, कदीमी, बहुत दिनों तक रहनेवाला।
चिराना—(गु·) पुराना, बहुत काल का।
चिलमची—(सं· स्त्री) हाथ धोने का बर्तन।
चिल्ला (सं· पु·) रोदा, धनुष की डोरी।
चिह्नित— (सं· पु·) अङ्कित, जिस पर चिन्ह किया गया हो।
चीखुर—(सं·स्त्री·) गिलहरी।
चीतल } —(सं·पु·) तेंदुवा, (गु·) चितकबरा।
चीता }
चीफ (Chief)—(गु·) प्रधान, मुख्य।
चीर—(सं· पु·)कपड़ा, साड़ी।
चीरा—(सं· पु·) काट, फाड़, घाव।
चुकौता—(सं· पु·) फैसला, निबटेरा।
चुगान—(सं· पु·) कोट के आस पास की गहरी खाई।
चुटकुला—(सं·पु·) हँसी खुशी की बात।

चुनत—(स्त्री·) परत, तह। (क्रि·) चिनता है।
चुनौती—(सं· स्त्री·) सौगन्द, कसम, निशानी, चेतौनी।
चुपड़ना—(अ·क्रि·) चिकनाना।
चुम्बक—(सं· पु·) चुम्बक लोहा पत्थर चूमनेवाला।
चुहल—(सं· स्त्री·)विनोद, हंसी, हर्ष, हुलास, ठट्ठा।
चुल्लू—(सं. पु.) चिरुआ, पसर।
चूक—(सं· स्त्री) भूल, खोट, दोष,भ्रम, खट्टा।
चूड़ा—(सं· पु·) चोटी, चिउड़ा।
चूड़ाकरण—(सं· पु·) मुण्डन।
चूड़ामणि—(सं· स्त्री·) स्त्रियों की चोटी में पहनने का गहना, एक देश का नाम, चोटी का मणि।
चूत—(सं· पु·) आम।
चून—सं· पु·) आटा, चूना।
चेटक—(क· पु·) सेवक, नौकर, टोना, जादू।
चेयरमैन—(Chairman)—(सं· पु·) सभापति।
चेरा—(सं· पु·) नौकर, दास।
चेष्टक—(क· पु·) यत्न करनेवाले, उपायी, तदबीरी।
चेष्टा—(सं· स्त्री·) यत्न, उद्यम, परिश्रम, उद्योग।
चेतकी—(सं स्त्री·) हरें।
चैतन्य—(भा· पु·) जीवात्मा, ब्रह्म, बुद्धि, विचार, विवेचन ज्ञान, (गु·) सचेत, चौकस, सज्ञान।
चैत्य—(सं· पु·) गांव का पूज्य वृक्ष।
चोआ, चोवा—(सं· पु·) सुगन्धित वस्तु, अर्गजा।
चोखा—(गु·) तेज, सच्चा, खरा।
चोंचला—(सं· पु·) मान, नखरा, खेल।
चोज—(सं· पु·) चाव, झुकाव, खेंच।
चोटी—(सं· स्त्री·) शिखा, शिखर, पहाड़ का शृङ्ग।

चोप—(सं· स्त्री·) चाह, इच्छा।
चोट्टी—(सं· स्त्री·) चोर स्त्री।
चोलू—(सं· पु·) मजीठ।
चौक—(सं· पु·) चौराहा।
चौंकि—(पू· क्रि·) चेहा कर, अचम्भे में आ कर।
चौकन्ना } —(गु·) हुशियार, सावधान, सचेत।
चौकस } चोखा, खरा।
चौगान—(सं· पु·) खेल, मैदान।
चौतनी—(सं· स्त्री·) चौगोसिया टोपी।
चौथपन—(सं· पु·) बुढ़ापा।
चौपाया—(सं· पु·) चारपाया, पशु, जानवर।
चौपाला—(सं· पु·) पालकी, डोली।
चौमुखी—(सं. स्त्री·) देवी, चारमुंहवाली दुर्गा, रुद्राक्ष का दाना।
चौवार—(सं· पु·) ओसारा।
चौआई—(सं· स्त्री.) चारो ओर की हवा।
चौरस—(गु·) बराबर, समान।
चौरा—(सं· पु·) चबूतरा, सती या ब्रह्म की वेदी-थान।
चौहट्ट } —(सं· पु.) चौक, चौरास्ता।
चौहट्टा }
चौसर—(सं· पु·) खेल विशेष।
चोष्य—(गु·) चूसने योग्य वस्तु, जैसे आमादि।
च्युत—(गु·) गिरा हुआ, नष्ट।

छ।

छ—(गु.) काटनेवाला, निर्मल।
छन्द—(सं. पु.) श्लोक, काव्य, पद्य, मेल, वेद, इच्छा।
छकड़ा—(सं. पु.) बैलगाड़ी।
छकना—(क्रि.) पीना, अघाना, लजाजाना।

छक्का पंजा—(सं. पु.) दांव, बुद्धि, अकल, हुशियारी।
छक्के छूटना—(क्रि.) हारना घबड़ाना।

छग, छगल
छाग, छागल } —(सं. पु.) बकरा, छाग, भेड़ा, (स्त्री.) भेड़ी, बकरी

छज्जा—(सं. पु.) बरामदा, पत्थर का बाहरी कार्निस।
छटा—(सं. स्त्री.) चमक, शोभा, दमक, चमचमाहट, उजाला।
छत—(सं. पु.) पाटन।
छत्र—(सं. पु.) राजाओं के शिर पर रखने का छाता, छतरी।
छत्रक—(सं. पु.) गोबरपर का छत्ता, कुकुरमुत्ता।
छत्रधारी. छत्रपति—(सं. पु.) राजा, महाराज।
छत्रबन्धु—(सं. पु.) क्षत्रिय जाति में नीच।
छत्रभङ्ग—(सं. पु.) एक प्रकार का रोग (भा.) पति का मरना रंडापा, राजा का मरण।
छद—(सं. पु.) आच्छादन, पंख, पत्ता।
छद्म—(सं. पु.) कपट, छल।
छनजोति—(सं. स्त्री.) बिजुली।
छनदा—(सं. स्त्री.) रात।
छन्न - (गु.) छिपा हुआ, घिरा हुआ, ढंका।
छप्पय—(सं. प.) छः पद का छन्द, भौंरा।
छमा—(सं. स्त्री.) पृथ्वी, सहना, समर्थ।
छरे—(गु.) छंटे, चुने।
छर्दि—(सं. पु.) वमन, कै।
छर्रा—(सं. पु.) छोटी छोटी गोली।

छरीदा
छड़ीदा } —(गु.) अकेला, खाली, बे सामान।

छवि—(सं. स्त्री.) शोभा, सुन्दरता, चमक, प्रकाश।

छबीले—(गु.) रसिया, छैला ।

छल—
छलछिद्र
छलबल
} (सं. पु, कपट धोखा, फरेब ।

छलांग—(सं· स्त्री.) फलांग, फांद, कूदफांद, चौकड़ी ।

छलिया, छळी—(गु.)धोखावाज, कपटी ।

छल्ला—(सं. प.) मुंदरी, अंगूठी ।

छाक—(स· पु.) कलेवा, जलखावा, पीने की भूख ।

छाके—(गु.) छके, मस्त ।

छाछ, छांछ, छाछी—(सं· स्त्री·) मट्ठा, मही ।

छाज—(सं· पु·) सूप, डगरा ।

छाजना—(क्रि·) शोभना ।

छात्र—(सं· पु·) शिष्य, चेला, विद्यार्थी ।

छात्रवृत्ति—(सं· स्त्री·) स्कालरशिप, वज़ीफा, पारितोषिक ।

छादन—(सं· पु·) ढकने का कपड़ा । छाम (गु·) दुबला ।

छायापथ—(सं· पु·) आकाश, पोला, अवकाश, आस्मानी सफेद लकीर मिल्कीपाथ, आकाश में की उजली डहर ।

छार—(सं· स्त्री·) धूलि, रज, खाक, भस्म ।

छाला—(सं· पु·)!फोड़ा, फफोला, फुनसी, चमड़ा ।

छिगुली—(सं स्त्री) उंगली बच्चे की कुर्ती ।

छिति—(सं· स्त्री·) पृथ्वी ।

छिद्र—(सं· पु·) छेद, गढ़ा, दोष, अवगुण

छिन्नभिन्न—(गु·) अलग अलग, तितरवितर, कटा हुआ ।

छिपकली—(सं· स्त्री.) एक जानवर का नाम, बिस्तुइआ ।

छिप्र—(क्रि· वि·) जल्दी ।

छींका—(सं· पु.) सिकहर, झूला ।

छीजना—(क्रि.) घटना, घटन्ती, अवनति ।

छीन—(गु०) क्षीण, मन्द, पतला, दुवला, घटा हुआ।
छीपी—(सं. पु०) वस्त्र छापनेवाला, रंगरेज, छोटी तस्तरी।
छीर—(सं. पु.) क्षीर, दूध।
छूछा, छोछा—(गु.) खाली, व्यर्थ, निष्फल ;
छैल, छैला—(सं० पु.) बांका, चिकनियां।
छोह—(सं० पु.) प्यार, स्नेह, मोह, प्रीति।
छोहरा—(सं० पु.) लड़का।
छौना—(सं० पु०) बच्चा, सूअर का छोटा बच्चा।

ज

ज—(सं० पु०) शिव, विष्णु, जन्मना।
जक—(सं० स्त्री.) जिद, रगड़।
जकजक—(सं० पु.) अकबक।
जग—(सं. पु.) संसार, जङ्गम।
जगदम्बा—(सं. स्त्री,) जगमाता, महामाया, देवी, दुर्गा।
जगत—(सं. पु०) संसार, दुनियां।
जगती—(सं० स्त्री) पृथ्वी, धरती।
जगदाधार—(सं० पु०) अनन्त, शेष जी, संसार का आसरा।
जगदीश, जगन्नाथ—(सं. पु०) (जगत्+ईश=जगदीश। जगत्+नाथ=जगन्नाथ) परमेश्वर संसार के मालिक, विष्णु।
जगन्नियन्ता—(सं. पु०) ईश्वर।
जगमग—(सं० पु०) चमकीला।
जङ्गम—(गु.) चलनेवाला, जिस में चलने की शक्ति हो, एक प्रकार के योगी जो सिर पर जटा रखाये और घंटी वजा के शिव जी के भजन गाया करते हैं।
जंगाल—(सं० पु०) पानी धरने का बड़ा वरतन।
जञ्जाल—(सं० पु.) वखेड़ा, झंझट।
जगन्मान्य—(सं. पु०) संसार के पूज्य।

जगयोनि—(सं• पु•) ब्रह्मा ।
जघन—(सं. पु.) स्त्रियों की कटि का अग्रभाग (Abdomen)
जघन्य—(सं. पु•) अधम, नीच, पिछला ।
जटाजूट—(सं. पु•) बड़ी जटा, बालों का बंधालट । [लाल फूल
जटाधारी—(सं• पु.) शिव जी, जटा रखनेवाला, एक प्रकार का
जटित—(सं• पु•) जड़ाऊ, जड़ा हुआ ।
जटिल—(सं• पु•) सिंह, ब्रह्मचारी, शिव, कठिन, जटावाला, घना ।
जटी—(सं• पु•) बरगद वृक्ष, शिव ।
जठर—(सं• पु•) पेट, उदर, गर्भ, कोख ।
जठराग्नि / जठरानल —(सं• पु•) पेट की गर्मी जिस से भोजन पचता है, भूख, पेट के भीतर का एक तरल पदार्थ (Gastric Juice) जिस से खाई हुई वस्तु पचती है। ये दोनों शब्द संस्कृत में पु. हैं ।
जड़—(सं• स्त्री) मूल, नींव, (गु•) मूर्ख, बेवकूफ ।
जड़ी—(सं• स्त्री•) बूटी• दवा ।
जड़मति—(गु•)मूर्ख• बेवकूफ ।
जड़ाजड़,शास्त्र—(सं• पु•) जिस में सजीव और निर्जीव पदार्थों का वर्णन है, प्राकृतिक इतिहास ।
जताना—(क्रि•) चेताना, हुशियार करना ।
जती—(सं• पु•) यती, योगी, संन्यासी, जितेन्द्रिय, भिखारी ।
जतु—(सं• पु•) लाह, लाख, चपड़ा ।
जद—(अ.) जब, जिस समय ।
जनक—(सं• पु•) पिता, बाप, मिथिला के राजा जानकी के पिता।
जन•कलकल—(सं• पु•) मनुष्यों का कोलाहल, लोगों का हल्ला ।
जनकसुता—(सं• स्त्री•) जानकी, सीता, जनक की कन्या ।
जनकौरा—(गु•) जनक का, जनकपुर ।
जनता—(सं• स्त्री•) जनसमूह ।

जनना—(क्रि·)जन्म होना, पैदा होना, वियाना ।
जननी—(सं· स्त्री·) माता, मा, महतारी, मैया, माई, माय।
जनपद—(सं· पु·) देश, ग्राम, लोक, जाति, जनस्थान।
जनप्रवाद—(सं· पु·) होरा, अफवाह, किम्वदन्ती,जनश्रुति।
जनमेजय—(सं· पु·) राजा परीक्षित का बेटा।
जनयिता—(क· पु·) पिता।
जनयित्री—(सं· स्त्री·) माता।
जनशून्य—(गु·) निर्जन, सुनसान, सूना।
जनाश्रय—(सं· पु·) विश्रामस्थान, अधिकार, मन्त्री। [वाह
जनश्रुति—(सं· स्त्री·) समाचार, खबर, संदेशा, किम्वन्ती,अफ·
जनार्दन—(सं· पु·) विष्णु, भगवान।
जनि—(अव्य·) मति, नहीं, ना।
जनित—(गु·) पैदा हुआ, उत्पन्न हुआ, जन्मा।
जन्तु—(सं. पु.) जीव।
जनेत—(सं· पु.) बराती, (स्त्री·) बारात।
जन्मान्तर—(सं· पु.) दूसरा जन्म, नया जन्म, फिर जन्मना।
जन्मोत्सव—(सं· पु.) जन्म दिन का उत्सव, जन्माष्टमी और रामनवमी का उत्सव।
जपा—(सं· पु·) ओड़हुल का फूल।
जम (यम)—(सं· पु·) यमराज।
जमघट—(सं· पु·) भीड़, समूह, यूथ।
जमाई—(सं· पु.) दामाद, जामाता।
जमी—(सं· पु.) रात्रि, यमपुर जानेवाला, जमुना जी।
जम्बुक, जम्बूक—(सं· पु·) शृगाल, सियार, गीदड़।
जम्बूद्वीप, जम्बुद्वीप—(सं· पु·) सात द्वीपों में पहला द्वीप, जिस में भारतखण्ड हिन्दुस्तान है।
जयपताका—(सं· स्त्री·) जीत का झण्डा।

जयमाल—(सं· स्त्री.) पहले कन्याएं स्वयं पति चुनती थीं–उस समय जो माला वर को पहनाती थीं उसी का जयमाल नाम है।

जयन्ती—(सं· स्त्री·) जन्मदिन, जन्मोत्सव।

जयन्ती —(गु·) जयकारक।

जयी—(पु.) जीतनेवाला।

जर—(सं· पु·) ज्वर, बुखार, धन, माल, ताप (सं· स्त्री) जड़, मूल।

[illegible]–(गु·) जरीदार, जिस में तार का काम किया गया हो।

[illegible] (सं· स्त्री·) दुःख, ताप, जलन, ज्वाला।

जरा (सं· स्त्री-) बुढ़ापा, वृद्धपन, एक राक्षसी का नाम।

जरठ—(गु·) बूढ़ा, पुराना, कठोर, कठिन, क्रूर।

जरायु—(सं· पु.) गर्भाशय, एक चमड़े की झिल्ली जो गर्भ को वेष्ठित किये रहती है।

जरायुज—(क· पु·) पिण्डज, मनुष्यादि।

जर्जर—(गु·) पुराना, जीर्ण, निर्बल, झांझर।

[illegible]—(सं· पु·) इन्द्र का झण्डा, शैवाल, सेवार, इन्द्रधनुष।

जलकुक्कुट—(सं. पु.) जलमुर्गा, मुर्गाबी।

जलचर, जलचारी—(क. पु·) जल में चलनेवाले, मछली इत्यादि जीव।

जलचरकेतु—(सं. पु·) कामदेव, मदन, मकरध्वज।

जलज, जलजात —(सं· पु.)कमल. कंवल, मछली, शङ्ख, चन्द्रमा, मोती।

जलद, जलधर—(सं. पु·) मेघ, बादल, समुद्र।

जलधि, जलनिधि—(सं· पु·) समुद्र, सागर।

जलनिर्गम—(सं· पु·) मोरी, पानी का निकास।

जलपति—(सं· पु·) वरुण देवता, समुद्र।

जलयान—(सं· पु·) नाव, नौका जहाज़।
जलयोनि—(पु·) कमल, जो पानी से पैदा हो।
जलरुह—(सं· पु·) कमल।
जलविहङ्ग—(सं· पु.) जलपक्षी।
जलशायिन्—(सं. पु.) विष्णु, जलचर।
जलाकर—(सं· पु·) झरना तालआदि।
जलाशय—(सं· पु·) तालाव, झील, सरोवर, समुद्र।
जलौका—(सं· स्त्री) जोंक।
जल्पना—(भा.) बक बक, गप्प, डींग।
जवासा—(सं· पु·) एक प्रकार की घास, हिंगुआ।
जवनिका—(सं· स्त्री·) परदा, चिक।
जवार—(सं· पु.) ज्वार,समुद्र की बाढ़।
जन्हु तनया—(सं· स्त्री·) गङ्गा।
जाङ्गल—(सं· पु·) गौरेया पक्षी।
जाजम—(सं· स्त्री·) शतरंजी, दरी सफेद या रङ्गीन फरस।
जागृत—(म्म· पु·) जागा हुआ।
जांगर—(सं. पु.) जांघ, घुटना अङ्ग, देह।
जाज्वल्यमान—(पु.) देदीप्यमान, अति उज्वल।
जाट—(पु·) हिन्दुओं की एक पछाही जाति।
जातक—(सं· पु·) बेटा, जातकर्म, बृहज्जातक आदि ज्योति के ग्रन्थ।
जातरूप—(सं. प.) सोना, सुवर्ण, चांदी।
जातुधान—(सं. पु.) राक्षस, असुर।
जात्यायत—(पु.) जिस क्षेत्र के आमने सामने का भुज तुल और कोन समकोन हों।
जाला—(स्त्री.) तीर्थाटन, जाना।
जानु—(सं. स्त्री.) घुटना, टखना, ठेहुना, जानू।

जाम्बूनद—(सं. पु.) सुवर्ण।
जामाता—(सं. पु.) जमाई, दामाद, बेटी का पति, पाहुन।
जाय—(गु.) व्यर्थ, अकारथ, बेकार, जात, पुत्र, सन्तान।
जाया—(सं. स्त्री) भार्य्या, स्त्री।
जार—(सं. पु.) यार, दूसरा पति, उपपति।
जामिक—(सं. पु.) पहरुआ, पहरादार।
जामिनी—(सं. स्त्री.) यामिनी, रात्रि, रात।
जारज—(सं. प.) जार से पैदा हुआ लड़का, दूसरे से जन्मा लड़का, दोगला।
जाल—(सं. पु.) समूह, फन्दा, फरेब।
जावक—(सं. पु.) महावर।
जाह्नवी—(सं. स्त्री.) गङ्गा, भागीरथी।
जिगीषा—(भा. स्त्री.) जीतने की इच्छा, हिसका।
जिजिया—(सं. पु.) औरंगजेब का लगाया हुआ धर्म पर महसूल, जेठानी, जीजी।
जिज्ञासा—(सं. स्त्री.) पूछना, प्रश्न, जानने की इच्छा।
जितेन्द्रिय—(गु.) इन्द्रियजित, ऋषि, मुनि, यती, संन्यासी।
जिह्वा, जीह—(सं. स्त्री) जीभ, रसना।
जीर्ण—(गु.) पुराना, बूढ़ा आदमी।
जीर्णोद्धार—(भा.) मरम्मत, लेपपोत, लेसलास।
जीमूत—(सं. पु.) मेघ, पर्वत, मोथा, इन्द्री।
जीवनचर्य्या—(सं. स्त्री.) जीवनवृत्तान्त, जीवन भर का काम।
जुग—(सं. पु.) दोनों, युग, सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि ये चार युग कहलाते हैं।
जुगनू—(पु.) सोनकीड़ा, भगजोगनी।
जुगानुजुग—(सं. पु.) कई बरस।
जुगाली—(सं. स्त्री.) पागुर, उगाल।

जुगुप्सा—(स्त्री·) निन्दा, बुराई।
जुझाऊ—(गु·) जुझार, लड़ाई में उत्साहित करने वाला बाजा।
जुवराज—(पु·) युवराज, कुवर, नायब, राजा का बड़ा लड़का।
जुन्हैया—(स्त्री.) चांदनी।
जुबिली (Jubilee)—(सं· स्त्री.) इङ्गलैण्ड देश का राज्योत्सव जो ५० वर्षनिर्विघ्न राज करने पर होता है।
जुहार—(सं. पु·) सलाम, दण्डवत।
जू—(सं· स्त्री.) ढील, चीलर।
जूट—(सं· पु·) पटुआ, समूह।
जूड़ी—(सं· पु·) जड़ैया, शीतज्वर, जाड़ा, ज्वर, ठंढक।
जूप—(पु·) जूआ, यज्ञस्तंभ।
जूरी (Jury)—(सं. पु·) पञ्च, पंचायत।
जूहा—(सं. पु.) यूथ, समूह, झुंड।
ज्यों, जों—(अ.) जैसे, जिस तरह।
जोटा —(सं· पु·) जोड़ी।
जोति, ज्योति—(सं. स्त्री,) चमक, उँजाला, प्रकाश।
जोतिस्वरूप—(गु.) आप से आप प्रकाशित।
ज्योतिष, जोतिष—(सं. पु.) ग्रह, नक्षत्र आदि जानने का शास्त्र।
जोती—(स्त्री.) तराजू के पलड़े की रस्सी।
जोय, जोषित—(सं. स्त्री.) योषित, स्त्री, नारी, लुगाई।
जोहना—(क्रि.) देखना, निरखना।
ज्वर,जर—(सं. पु·) ताप, बोखार।
ज्वलन—(सं. पु.) आग, जलन, दाह।
ज्वलन्त—(पु.) देदीप्यमान।
ज्वलित—(गु.) प्रकाशित।
ज्वार—(सं. पु.) जोंधरी अन्न, समुद्र की बाढ़।
ज्वाला—(सं. स्त्री.) लहर, आंच।

ाता—(क. पु.) जनैया, वाकिफ़, जानकार।
ाति—(सं. स्त्री.) पिता, बाप, सम्बन्धी, जात, भाई।
ानेन्द्रिय—(सं. स्त्री.) आंख, कान, नाक, जीभ, त्वचा।
ापक—(क. पु.) जतलानेवाला, बतलानेवाला, आज्ञादेनेवाला।
यामिति—(सं. स्त्री.) क्षेत्रमिति।
वार भाटा—(सं. पु.) समुद्र के जल के बढ़ने और घटने को कहते हैं
वालामुखी—(सं. पु.) वह जगह जहां से आग निकलती है, आग का पहाड़, (गु.) देवी, अम्बिका, दुर्गा।

झ

झ—(सं. पु.) बृहस्पति, इन्द्र, शब्द, ध्वनि, नेपथ्य, झकोर, मिलाप, स्थिति।
झंखना—(क्रि.) पछताना, रोना।
झंप—(सं. पु.) मूर्च्छा, गश।
झंपाना—(क्रि.) मुरझाना, कालापड़जाना, श्रीहीन हो जाना।
झक—(सं. पु.) क्रोध।
झकोर—(सं. स्त्री.) झोंका।
झगा—(सं. पु.) अंगा, कुर्त्ता।
झगुला—(सं. पु.) बालक के पहनने का कुर्त्ता, चोला।
झड़ी—(सं. पु.) लगातार मेह बरसना।
झंझा—(सं स्त्री.) बरसा के साथ अन्धड़।
झप—(अव्यय.) झट, तुरत।
झपकी—(सं. स्त्री.) पलक लगना, उंघाई।
झर—(सं. पु.) लगातार वृष्टि।
झर्झरा—(सं. स्त्री.) वेश्या, पतुरिया।
झल—(सं. स्त्री) ज्वाला, क्रोध।
झलका—(सं. पु.) फफोला, फोड़ा।
झलना—(क्रि.) पंखा करना।

झल्लाना—(क्रि.) खिशियाना, तमकना, क्रोधकरना ।
झष—(सं॰ पु.) मच्छ, बड़ी मछली, पाठीन ।
झषकेतु –(सं. पु.) कामदेव ।
झाग—(सं. पु.) फेन, गाज ।
झाड़ खण्ड—(सं॰पु.) वन, जङ्गल ।
झाड़खण्डी—(सं. पु.) वैजनाथ दक्षिणी ब्राह्मणों की पदवी ।
झाड़ूकश (جاروب‌کش) (फ. पु.) मिहतर, हलालखोर, बटोरनेवाला
झारी—(अ.) समूह, सब (सं॰ स्त्री.) छोटा हथहर ।
झिलम—(सं. पु॰) लोहे की कुर्ता, कवच, बख़्तर ।
झींकना—(सं॰ पु॰) झंखना, पछताना ।
झीन, झीना—(गु॰) पतला, पतील ।
झील—(सं. स्त्री.) जल के उस भाग को कहते हैं जो चारो ओर स्थल से घिरा हो, बड़ा ताल ।
झूला—(पु.) हिंडोला , औरत की कुर्ती ।
झोंरा, झांवरा, झांवला—(गु॰) सांवला, काला ।
झोरत—(क्रि.) भवरोंका झुण्ड २ गुंजारना, गूजना ।

ट

ट—(सं. पु॰) वामन, शब्द, ध्वनि, चन्द्रमा, गान, रुद्र, अंकुश ।
टक—(स्त्री॰) स्वभाव, दृष्टि, पलक ।
टकसाल—(सं. स्त्री.) मुद्रालय, वह जगह जहां रुपये पैसे आदि सिक्के तैयार होते हैं ।
टकोर—(सं.स्त्री.) ढोल वा धनुष का शब्द, धुनि ।
टखना—(पु॰) गुल्फ, घुटना ।
टङ्क—(सं. स्त्री.) टांक, छेनी, टांकी, तलवार, क्रोध, अहङ्कार सुहागा, खुरपी, एक तौल ४ रुपये भर ।
टङ्कार—(सं. पु.) धनुष के चिल्ले का शब्द, अचम्भा, नामवरी

टर्रा—(गु.) दुष्ट, बकी, जोरावर।
टहनी—(सं. स्त्री.) पेड़ की छोटी डाली।
टाइप—(Type—(सं. पु.) छापने का अक्षर।
टापू—(सं. पु.) धरती का वह टुकड़ा जिसके चारो ओर पानी हो।
टाइमपीस (Time-piece)—(सं. स्त्री.) एकप्रकार की घड़ी।
टिट्टिम—(सं. पु.) टिटिहरी, एक पक्षी का नाम।
टिप्पन—(सं. पु.) टीका, व्याख्या, अर्थ जन्मपत्री।
टिप्पन. टीका (सं. स्त्री.) टीका, विवरण, व्याख्या, अर्थ, टिप्पनी, शरह, जन्मपत्री, तिलक।
टीका—(सं. स्त्री.) तिलक, व्याख्या।
टीला—(पु.) ऊंची धरती।
टीट—(स्त्री.) करीलफल।
टुक—(गु.) थोड़ा, कम, अल्प, जरा।
टेक—(भा. स्त्री.) थूनी, टिकाव, सहारा, खम्भा, प्रण, हठ, संकल्प, प्रतिज्ञा।
टेंट—(पु.) करील का फल।
टेनेन्सी ऐक्ट (TenancyAct)—(सं. प.) प्रजा के भूमि आदि के हक़ या स्वत्वसम्बन्धी नियम।
टेम्पुल (Temple)—(सं. पु.) मठ, मन्दिर।
टेर, टेरि—(सं. स्त्री.) लय, स्वर, तान, पुकार, हांक।
टेव—(स्त्री.) आदत, बान।
टेसू—(सं. पु.) पलास का फूल, एक प्रकार का खेल।
टोल—(सं. पु.) थोक, झुण्ड, सभा, ठट्ट, टोला महल्ला, संस्कृत पाठशाला।
टौन (Town = टाउन)—(सं. पु.) शहर।
टौनहॉल (Town Hall)—(सं. पु.) शहर का एक सर्व साधारण मकान जिस में कमीटी या सभा हुआ करती है।
ट्रेडविण्ड (Trade-wind)—(सं. पु.) वाणिज्य वायु, तिजारती

हवा, यह हवा अरब समुद्र में कुछ दिनों तक एक ओर से चला करती है जिस से व्यापारी जहाज चलने में आसानी होती है ।

ठ

ठ—(सं. पु.) शिव, चन्द्रविम्ब, मण्डल, शून्य, महाध्वनि, मूर्ति।
ठई—(वि·) ठनी, ठहराई ।
ठकुरसोहाती—(गु·) खुशामदी, मुहदेखी बात ।
ठकुराई—(भा· स्त्री.) ईश्वरता, प्रधानता, स्वामीपन, बड़प्पन, मलिकई ।
ठठरी—(सं. स्त्री.) ठट्टर, ठाट, रथी, ढांचा, पांजर, बहुत दुबले मनुष्य की हड्डी, कंकाल, सांचा
ठप्पा—(सं· पु·) छापने की चीज, मुहर ।
ठवनि—(सं· स्त्री·) चाल ।
ठांव, ठाम-(सं· पु.) जगह, ठिकाना, स्थान, लीपी पोती भूमि।
ठाकुर—(सं. पु.) देवता, ईश्वर, देवता की मूर्ति, स्वामी, मालिक, नाथ, प्रधान, नायक, मुखिया, नाई ।
ठाला—(गु·) बेकार, खाली, टोटा, तंगिस ।
ठिंगना (गु·) नाटा ।
ठुड्डी—(सं· स्त्री.) ठोढ़ी, चिबुक, दाढ़ी भूंजा अनाज जिसे टूरी [कहते हैं ।
ठेठ—(गु.) असल, निकेवल, झगड़ालू ।
ठोस—(ग·)पोला नहीं, घना, कठोर, कड़ा, दृढ़, भारी, पोढ़ा, [गाढ़ा ।
ठौर—(सं· स्त्री·) जगह, ठांव, ठिकाना, स्थान ।

ड

ड—(सं· पु·) शिव, डर, शब्द, वाड़वाग्नि ।
डग—(सं· स्त्री·) फाल, डेग, पद, लम्बी चाल ।
डगर—(सं· पु·) रास्ता, राह ।

डङ्क—(सं· पु·) चुभक, बिच्छू आदि की पंछ की सूंग (नोक) जिस में ज़हर भरा रहता है।
डङ्का—(सं· पु·) धौंसा, नक़ारा, बड़ा ढोल।
डच (Dutch) —(सं· पु·) हॉलैण्ड के रहनेवाले।
डण्ड—(सं· पु·) भुजा, एक तरह की कसरत, जुर्माना, लाठी।
डण्डवत—(स्त्री·) साष्टाङ्ग, पालागन, प्रणाम।
डण्डीर, डंरीर—(स्त्री·) धारी, लकीर, रेखा।
डफ—(सं· स्त्री·) एक बाजा।
डरारे—(गु·) डरावना, भयानक।
डबरा, डाबर,—(सं पु·) गदले पानी का छोटा तालाव, गड़्हा, ताल।
डबल (Double)—(गु·) दूना, दुगुना।
डमरू—(सं· पु·) एक प्रकार का बाजा, डुगडुगी।
डमरूमध्य—(सं· पु·) जमीन का तंग हिस्सा जो दो बड़े जमीन के हिस्सों को मिलाता है।
डम्बेल(Dumb-bell)—(सं· पु·) एक लोहे का डंडा जिस के दोनों ओर मुट्ठी के ऐसा मोटा रहता है, कसरत करने की चीज।
डयन—(भा· पु·) उड़ना, आकाशगमन।
डला—(पु·) ढेला।
डँसना—(क्रि·) सांप का काटना, डङ्क मारना।
डहकना—(क्रि·) ठगना, धोखा देना, निराश करना।
डहडहा—(गु.) खिला हुआ, हराभरा, फूला हुआ, प्रसन्न—
डहरुआ—(पु.) एक रोग का नाम।
डाढ़—(स्त्री·) पीसने के बड़े दांत, पिछले दांत, चहू, शाख, डाल।
डांवरू—(सं. पु·) बाघ का बच्चा।
डाइरेक्टर (Director)—(सं. पु.) आज्ञा देनेवाला, राह [समझानेवाला।
डाक्टर (Doctor)—(सं· पु·) वैद्य, हकीम
डाब—(सं· पु.) डाभ, कुशा, तलवार का परतला. कच्चा [नारियल।

डावर (सं॰ पु॰) गोल तालाव, गड़हा, डवरा, गदला पानी।
डायरी (Diary)—(सं॰ स्त्री॰) रोजनामचा।
डाह—(सं॰ स्त्री॰) लाग, वैर, ईर्षा।
डासन—(सं. स्त्री॰) रजाई, ओढ़ना।
ड्राइवर (Driver) —(क॰ पु.) हांकनेवाला, इञ्जिन चलानेवाला।
डिफथेरिया (Diphtheria) कंठ की बीमारी।
डिम्ब, डिम्बक—(सं. पु.) पाखण्ड, लूटपाट. अण्डा, रेंड़ का पेड़।
डिम्बकोष—(सं. पु.) फूल के स्त्रीस्तवक के नीचे का फूला हुआ भाग जो सन्दूक की तरह होता है।
डिस्ट्रिक्टबोर्ड (District Board)—(सं. स्त्री.) (डिस्ट्रिक्ट= ज़िला, बोर्ड = कमीटी) ज़िले की कमीटी, जिस में कलक्टर सभापति और ज़िले के प्रधान २ व्यक्ति सभ्य होते हैं।
डीठ—(स्त्री.) नजर।
डील—(पु.) शरीर।
डींग—(स्त्री.) वड़ाई, झूठा घमण्ड।
डुमरी, डूमर—(सं॰ स्त्री॰ और पु.) गूलर का पेड़ वा फल।
डे (Day)—(सं॰ पु॰) दिन, वार।
डेल्टा (Delta)—(सं॰ स्त्री॰) जव नदी कई धारा होकर समुद्र में गिरती है तव धारों के वीच में जो जगह त्रिभुज सी रहती है उसे डेल्टा कहते हैं।
डेस्क (Desk)—ढालुआं टेवुल।
डोकरा —(सं॰ पु॰) वूढ़ा।
डोकरी —(सं॰ स्त्री॰) वुढ़िया।
डौंड़ी (सं॰ स्त्री॰) ढिंढोरा, मुनादी।
डौल—(पु॰) ढव, आकार, प्रकार, रीतभांत।

ढ

ढ—(सं॰ पु॰) कुक्कुर, वड़ा ढोल, ध्वनि, सर्प, निर्गुण।

तक्र—(पं·) मठा, छाछ।
तक्षक—(क· पु·) पाताल का बड़ा सांप, विश्वकर्मा, सूत्रधार, बढ़ई।
तज्ञ—(गु·) पण्डित, ज्ञाता।
तट—(सं· पु·) किनारा, तीर, निकट, पास।
तटस्थ—(गु·) तीर पर के, तीरवासी, उदासीन।
तटनी, तटिनी—(सं· स्त्री·) नदी, नहर।
तड़फ—(सं· स्त्री·) बेचैनी, धड़क, घबड़ाहट, धड़धड़ाहट।
तड़ाग—(सं· पु·) तालाब।
तड़ित, तडित—(सं· स्त्री·) बिजली, दामिनी, विद्युत्।
तण्डुल—(सं· पु·) चावल।
ततोधिक—(गु.) उस से अधिक।
तत्काल, तत्क्षण—(क्रि· वि·) उसी समय, उसी क्षण, तुरत।
तत्ता—(गु·) गर्म, उष्ण।
तत्पर—(गु·) लीन, लगा हुआ, मुस्तैद, सचेत।
तत्र—(अ·) वहां, तहां, उस जगह।
तत्व—(सं· पु.) सार, मल, यथार्थ, सत्य, स्वभाव, पृथ्वी आदि पञ्चभूत।
तत्वज्ञ, तत्वविद, तत्वज्ञानी—(गु·) यथार्थ वस्तु का ज्ञाती, ब्रह्मज्ञानी।
तत्वज्ञान—(सं· पु·) यथार्थ या ईश्वर, ब्रह्म का बोध।
तथा (अ·) तिस प्रकार, तैसा, तैसे ही, वैसे ही।
तथापि—(अ·) तौ भी, तिस पर भी, उस पर भी।
तथास्तु—(अ·) वैसा ही हो, हां।
तत्थ्य—(पु·) सत्य।
तदनन्तर—(अ·) उस के पीछे, तिस के पीछे।

तद्वत्—(अ·) उसी प्रकार का।
तदीय—(गु·) उस का।
तद्रूप—(गु·) उसी रूप का।
तद्धित—(सं· पु·) उस का हित, दूसरे की भलाई, व्याकरण का एक प्रकरण जिस में संज्ञा के आगे भाव अपत्य आदि के बोधक प्रत्यय लगा कर संज्ञा बनाई जाती है।
तनय—(सं. पु·) बेटा, पुत्र।
तनया—(सं· स्त्री·) बेटी पुत्री।
तनु, तनू—(सं· पु·) शरीर, देह (गु·) पतला, सूक्ष्म, बारीक।
तनुज—(सं· पु·) बेटा, पुत्र लड़का।
तनुजा—(सं· स्त्री·) बेटी, पुत्री, लड़की।
तनुरुह—(सं· पु·) रोआं, बाल, केश।
तन्तु—(सं· पु·) सूत, तागा, धागा, वंश, सन्तान
तन्त्र—(सं· पु·) शास्त्र विशेष, मंत्र, टोना, प्रमाण।
तन्द्रा—(सं· स्त्री·) आलस, थोड़ी नींद, पतली नींद।
तन्दुल—(सं· पु·) चावल।
तन्मय—(गु·) उसी रूप का उसी में मिलजाना।
तन्मात्र—(सं· पु·) शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, उतनाही।
तन्त्री—(सं· स्त्री·) जिस स्त्री का शरीर पतला हो, निद्रा, उंचाई, तार, सितार बीन आदि का बजानेवाला, तन्त्र मंत्र जाननेवाला।
तप—(सं· पु·) गर्मी, तपस्या, ज्वर।
तपन—(भा· पु·) जलन, आग, सूर्य्य।
तपस्वी, तपोधन—(क· पु·) तपस्या करनेवाले, योगी।
तपी—(क· पु·) तपस्वी, जिसे बुखार लगा हो।
तप्त—(गु·) गर्म, तपा हुआ।
तम—(सं· पु·) अंधेरा, अन्धकार, राहु, पाप।
तमक—(भा· स्त्री) घमंड, क्रोध।

तमञ्चा—(सं॰ स्त्री॰) छोटी बन्दूक।
तमारि—(सं॰ पु॰) सूर्य, अन्धकार के नाशक, चन्द्रमा, दीपक।
तमाल—(सं॰ पु॰) एक पेड़ का नाम, चन्दन का टीका, तम्बाकू, मोरपंख।
तमि, तमी—(सं॰ स्त्री॰) रात।
तमचूर, ताम्रचूड़ (पु॰) कुक्कुट, मुर्गा।
तमीचर—(सं॰ पु॰) राक्षस, रजनीचर।
तरङ्ग—(सं॰ स्त्री॰) लहर, ढेऊ, हिलकोरा, उमंग, मौज।
तरङ्गिणी—(सं॰ स्त्री) नदी।
तरण—(सं॰ पु॰) पार होना, नाव, स्वर्ग।
तरणि—(सं॰ पु॰) सूर्य, (स्त्री॰) नाव, नौका।
तरल—(गु॰) चञ्चल, पानी और पानी के ऐसे वहनेवाले पदार्थ।
तरवर—(सं॰ पु॰) तरुवर, बड़ा वृक्ष, उत्तम पेड़।
तरु—(सं॰ पु॰) पेड़, वृक्ष।
तरुण—(गु॰ पु॰) जवान, युवा।
तरुणी—(गु॰ स्त्री॰) जवान स्त्री, युवती।
तरुणाई—(सं॰ स्त्री॰) जवानी।
तरौना—(सं॰ पु॰) कर्ण-भूषण।
तलछट—(सं॰ स्त्री॰) मैल।
तव—(सर्व॰) तेरा।
तर्क—(सं॰ पु॰) वाद, विवाद, शंका, दलील, विचार, न्यायशास्त्र, अनुमान, कल्पना। संस्कृत में यह शब्द पु॰ है हिन्दी भाषा में भी पुल्लिङ्ग ही व्यवहार करना चाहिये।
तर्जन—(सं॰ पु॰) क्रोध डांटना।
तर्जनी—(सं॰ स्त्री॰) अंगूठे के पास की अंगुली।
तर्पण—(सं॰ पु॰) तृप्ति, सन्तोष, पितरों को जल देना।
तश्तरी—(सं॰ स्त्री॰) कांच वा टिन की थाली, रिकाबी।
—(सं॰ स्त्री॰) प्यास, चाह, इच्छा, तृष्णा।

तर्स—(सं· स्त्री·) अफसोस, दया।
तस्कर—(सं· पु·) चोर, चोट्टा। तस्मा (पु·) चमोटा, चमोटी।
ताइत—(पु·) गंडा। ताजी (पु·) घोड़ी भेद।
ताऊ—(पु·) बाप का बड़ा भाई।
ताटङ्क—(सं· पु·) तरकी, कर्णभूषण, कर्णफूल, कान का गहना।
ताण्डव—(सं· पु·) नृत्य विशेष।
तात—(सं· पु·) बाप, प्यारा, प्यार का शब्द, भाई, मित्र, सखा, (गु·) बड़ा, पूज्य, आर्य्य, गर्म, उष्ण।
तात्कालिक—(गु·) उसी क्षण का उसी समय का।
तात्पर्य—(सं· पु·) अभिप्राय, आशय, अर्थ, भावार्थ, व्याख्या मर्म।
तादर्थ्य—(क्रि· वि·) तिस के लिये, तिस वास्ते।
तादृश—(गु·) उस का सा, वैसा।
ताप—(सं· पु·) उष्णता, आंच, विरहज्वर, पश्चाताप, दुःख, पीड़ा, सोच, ज्वर, बुखार।
तापतिल्ली—(सं· स्त्री·) प्लीहा, पिलही।
तापमान यंत्र—(सं· पु·) गर्मा नापने का यंत्र या कल (थर्मामेटर)
ताफता—(सं· पु·) रेशमी कपड़ा जिसे धूपछांह कहते हैं।
तामरस—(सं· पु·) कमल, तांबा, सोना।
तामस—(गु·) तमोगुणी, या अंधेरा, क्रोध, मोह आदि में लगा हुआ, काम, क्रोध, मोह, अहंकार इत्यादि तमोगुण।
ताम्बूल—(सं· पु·) पान, नागर-बेल का पत्ता।
ताम्र—(सं· पु·) तांबा, लाल रंग।
ताम्रचूड़—(सं· पु·) मुरगा, फरोंदा।
तारक—(क· पु·) बचानेवाला, रक्षक, उद्धार करनेवाला, (सं· पु·) एक राक्षस का नाम, एक प्रकार का मन्त्र, तारा।

तारतम्य—(भा॰ पु॰) अन्तर, न्यूनाधिक्य, फर्क, दर्जा बदर्जा।
तारा—(सं॰ पु॰) सितारा, नक्षत्र, आंख की पुतली वालि और बृहस्पति की स्त्री।
तार्किक—(गु॰) नैयायिक, न्यायशास्त्रका ज्ञाता।
ताल—(सं॰ पु॰) ताड़ का पेड़, झील, बांह पर ठोकना, लय।
तालीम—(सं॰ स्त्री) शिक्षा, उपदेश, सिखावन।
तावत्—(क्रि॰ वि॰) तबतक, उतना, इतना।
ताक—(सं॰ स्त्री॰) टोह, खोज. (पु॰) ताखा।
तांगा—(स. पु॰) एक तरह की गाड़ी।
तांता—(सं॰ पु॰) कतार।
तिक्त—(गु॰) तीता, कड़ुआ।
तितिक्षा—(सं॰ स्त्री॰) धीरज, क्षमा, सहनशीलता।
तिन्नी—(सं॰ स्त्री॰) चावल विशेष, टेनी।
तिमि—(अ॰) वैसे।
तिमिर—(सं॰ पु॰) अंधेरा, अन्धकार, नेत्ररोग विशेष।
तिमि—(सं॰ स्त्री॰) एक तरह की मछली।
तिय, तीय—(सं॰ स्त्री॰) स्त्री, नारी, लुगाई।
तिरस्कार—(सं॰ पु॰) निन्दा, घिन, अनादर।
तिरस्कृत—(कर्म॰ पु॰) अपमानित।
तिरिया—(सं॰ स्त्री॰) नारी, लुगाई।
तिरोहित—(गु॰) छिपा हुआ।
तिर्यक्—(गु॰) टेढ़ा, तिरछा, कुटिल, पशु, पक्षी।
तिलक—(सं॰ पु॰) टीका, व्याख्या।
(गु॰) श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य।
तिल—(सं॰ पु॰) अङ्ग का एक काला चिह्न, सोना।
तिलाई—(गु॰) सोनहरी, एक प्रकार की दुलाई।
तिलंगी—(सं॰ स्त्री॰) गुड्डी।

तिलङ्गा—(सं॰ पु॰) सिपाही।
तिलोत्तमा—(सं. स्त्री॰) स्वर्ग की वेश्या।
तिल्ली—(सं॰ स्त्री॰) पिलही।
तीकना—(क्रि॰) निशाना लगाना, लक्ष्य करना।
तीक्ष्ण—(गु॰) तीखा, तीता, चोखा, पैना, चतुर, क्रोधी।
तीतर—(सं॰ पु॰) एक पक्षी का नाम।
तीन तेरह—(गु॰) तितर-बितर, नष्टभ्रष्ट, तहसनहस, जिधर, तिधर।
तीर्थ—(पु॰) पवित्रस्थान, पुण्यस्थान।
तीर्थराज—(सं॰ पु॰) प्रयाग राज जो सब तीर्थों के राजा हैं।
तीव्र—(गु॰) तेज, तीक्ष्ण, बुद्धिमान।
तुक—(स्त्री॰) छन्द के अन्त में अक्षरों का मिलान।
तुङ्ग—(गु॰) ऊँचा, लम्बा,(सं॰ पु॰) एक पेड़ का नाम, पहाड़।
तुङ्गभद्रा—(सं॰ स्त्री॰) एक नदी का नाम जो मैसूर में है।
तुच्छ—(गु॰) छोटा, ओछा, निकम्मा, नीच, हलका।
तुण्ड—(सं॰ पु॰) मुख, होंठ नोक, चोंच।
तुपक—(सं॰ स्त्री॰) बन्दूक, पिस्तौल।
तुमाना—(क्रि॰) धुनवाना।
तुमुल—(सं॰ पु॰) घोर (युद्ध)। भारी, भयानक, रोंगटा खड़ा करने वाला।
तुरङ्ग तुरङ्गम, तुरग, तुरी—(सं॰ पु॰) घोड़ा।
तुराई—(सं॰ स्त्री॰) सेज, शय्या।
तुरही—(सं॰ स्त्री.) रणसिंगा, सहनाई।
तुरीय—(गु॰) चौथा, (पु॰) निर्गुण, ब्रह्म, (स्त्री॰) एक अवस्था।
तुला—(सं॰ स्त्री॰) तराजू, बराबरी, एक राशि का नाम।
तुलाधार—(क॰ पु॰) वैश्य, बनिया बेंआया, हटवई, अन्न जोखने वाला।

तुष—(सं॰ पु.) भूसी।
तुषार, तुहिन—(सं॰ पु॰) पाला, वर्फ।
तुष्ट—(क. पु॰) तृप्त, प्रसन्न, सन्तुष्ट।
तुष्टि—(सं॰ स्त्री॰) सन्तोष, तृप्ति, प्रसन्नता।
तुहिन—(सं॰ पु॰) पाला, वर्फ।
तूण, तूणीर—(सं॰ पु॰) भाथा, तर्कस, पेटी जिस में तीर रखते हैं
तूर्ण—(क्रि॰ वि॰) झटपट, शीघ्र।
तूल—(सं॰ पु॰) रूई।
तृण—(सं॰ पु॰) घास, तिनका, खर।
तृप्त—(गु॰) सन्तुष्ट, सुखी, आनन्दित।
तृषा—(सं॰ स्त्री॰) प्यास।
तृषावन्त—(गु॰) प्यासा, प्यास से व्याकुल।
तृषित—(गु॰) प्यासा हुआ।
तृष्णा—(सं॰ स्त्री.) लालच, प्यास।
तेज—(सं॰ पु॰) प्रताप, चमक, प्रकाश, वल, प्रभाव, वड़ाई महिमा, (गु॰) प्रकाश आदि से युक्त।
तेह—(भा॰ पु॰) क्रोध।
तेवरी—(भा॰ स्त्री॰) घुरकी, धमकी, चढ़ी भौंह।
तैलङ्ग—(सं॰ पु॰) कर्णाटकदेश।
तोड़—(सं. स्त्री॰) धाराका वेग।
तोता—(सं॰ पु॰) सूगा, सुग्गा।
तोम—(स्तोम) समूह।
तोमर—(सं॰ पु॰) बरछी, एक शस्त्र का नाम, राजपूतों की एक जाति-वंश, एक प्रकार का छन्द।
तोय—(सं॰ पु॰) पानी, जल।
तोयद, तोयधर—(क॰ पु॰) बादल, मेघ।
तोयनिधि—(सं॰ पु॰) समुद्र, सागर।

तोरण—(सं· पु·) घर के द्वार के बाहर सिंह के आकार का जो व्याह आदि उत्सव में बांधा जाता है, फूलों की माला या मेहराब जो पर्व अथवा किसी उत्सव में फाटक पर बांधी जाती है, बन्दनवार, बाहरी दरवाजा।

तोरावति—(गु·) तोड़वाली, तेज। (क्रि·) करारा तोड़ती (ढाहती) हुई।

तोष—(सं· पु·) सन्तोष।

तोषक—(क· पु·) सन्तोष करानेवाला।

तौहू—(अ·) तथापि, तोभी।

त्याग—(क्रि·) छोड़ना, देदेना।

त्यागना—(क्रि·) छोड़ना, तजना।

त्याज्य—(म्म· पु·) छोड़ने योग्य, त्यागने योग्य, निषिद्ध।

त्योरी—(स्त्री·) भौंह की सिकुड़न।

त्रपा—(भा· स्त्री·) लज्जा,।

त्रसरेणु—(सं· पु·) सूक्ष्म स्थान के भीतर·रंध्र के द्वारा जो रज सूर्य्य प्रभा में उड़ता दीख पड़ता है।

त्रस्त—(गु·) डरपोक, डराहुवा।

त्राण-(भा· पु·) बचाव, रक्षा, मुक्ति, कवच, लोहे की कुर्ता।

त्रास—(भा· पु·) डर, भय।

त्रिकालदर्शी—(क· पु·) भूत, वर्त्तमान और भविष्य इन तीनों समयों की बात जाननेवाला, ऋषि, मुनि।

त्रिकूट—(सं· पु·) पहाड़ विशेष जिस पर लङ्का है।

त्रिकोणसूची—(सं· स्त्री·) त्रिकोण का सिरा जो सूई के ऐसा हो। △

त्रिगुण—(सं· पु·) तीन गुण, सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण, तिगुना।

त्रिजग योनि—(सं· पु·) पशु, पक्षी आदि।

त्रिजटा—(सं· स्त्री·) एक राक्षसी का नाम।

त्रिताप—(सं॰ पु॰) दैहिक, दैविक, भौतिक ताप।
त्रिदश—(गु॰) जन्मना, विद्यमान रहना, मरना ये तीन अवस्था जिस में हो (पु॰) देवता, देव, सुर
त्रिदोष—(सं॰ पु॰) वात, कफ, पित्त का रोग।
त्रिनयन, त्रिपुरारि—(सं॰ पु॰) शिव, महादेव।
त्रिपथगा—(सं॰ स्त्री॰) गंगाजी।
त्रिपुण्ड—(सं॰ पु॰) आड़ी तिनकंकिया टीका जैसी शिव और शक्ति की पूजा करनेवाले करते हैं।
त्रिपुर—(सं॰ पु॰) दैत्य विशेष जिसे शिव जी ने मारा।
त्रिफला—(सं॰ पु॰) आवंला, हर्रें, बहेरा ये तीनों मिल कर।
त्रिभुवन, त्रिलोक—(सं॰ पु॰) स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल ये तीन लोक।
त्रिया (सं॰ स्त्री॰) स्त्री, नारी।
त्रिलोचन—(सं॰ पु॰) महादेव।
त्रिवली—(सं॰ स्त्री॰) पेटी, पेट की तीन रेखा।
त्रिविक्रम—(सं॰ पु॰) विष्णु भगवान, वामनावतार।
त्रिविध—(गु॰) तीन प्रकार का।
त्रिवेणी—(सं॰ स्त्री॰) गङ्गा, यमुना औ सरस्वती का संगम जो प्रयाग में हुआ है।
त्रिशूलपाणि—(सं॰ पु॰) शिव, महादेव, जिस के हाथ में त्रिशूल हो
त्रुटि—(स्त्री॰) कमी, हानि, न्यूनता, पल भर समय।
त्रैराशिक—(सं॰ स्त्री॰) जानी हुई तीन राशियों का हिसाब।
त्र्यम्बक—(सं॰ पु॰) शिव, महादेव, जिस के तीन नेत्र हों।
त्वक्, त्वचा—(सं॰ स्त्री॰) स्पर्शइन्द्री, छाल, शरीर पर का चाम, बोकला
त्वरा, त्वरित—(क॰ पु॰) तुरत, झटपट, जल्दी, (क्रि॰ वि) वेग से
त्वष्टा—(क॰ पु॰) ब्रह्मा, विश्वकर्मा।

थ

थ—(सं· पु·) पहाड़, खाना. रोग, डर, मङ्गल।
थंभ—(सं· पु·) खम्भा।
थक्का—(सं· पु·) चक्का, जमा हुआ।
थकित—(क· पु·) थका हुआ।
थन—(सं· पु·) छाती, स्तन।
थपक—(सं· पु·) थपथपाने का शब्द, थप्पड़, थपेड़ा, चपत, चपेट।
थर्मामिटर—(Thermometer)—(सं· पु·) एक यंत्र जिस से गर्मी नापी जाती है।
थल— सं· पु·) जगह, सूखी जगह।
थलचर—(क· पु·) धरती पर चलनेवाला, पशु आदि।
थवई—(सं· पु·) कारीगर, राज, मिस्त्री, बढ़ई।
थाती, थाथी—(सं· स्त्री·) धरोहर, अमानत।
थान—(सं· पु.) स्थान, जगह।
थाप—(सं· पु.) विश्वास, शाक, मृदंग पर की थपकी।
थाह—(सं· पु·) तला, पेंदा, इयत्ता, बूझना।
थिति—(भा· स्त्री·) ठहराव, रुकाव, रोक।
थिरकना—(क्रि·) नाचना, ढुरना।
थुथना—(सं. पु·) ऊंट और घोड़े आदि का मुंह।
थूनी—(सं· स्त्री.) खंभा, टेक।
थूहर—(स्त्री·) पौधा विशेष। सीज, सेहुंड़।
थैली——(सं. स्त्री·) बोरा, छोटा थैला।
थोक—(गु·) समूह, झुण्ड।
थोथा—(गु·) व्यर्थ।

द

द—(गु·) देनेवाला, दाता, (पु.) पर्वत, खंडन; (स्त्री·) भार्य्या, पत्नी, शोधन, रक्षा, मेघ, कलत्र।
दई—(सं· भाग्य, ईश्वर। (क्रि·) दिया।
दंश—(सं· पु·) डांस, डंक, दांत, दोष, कवच, महिष, भैंसा।
दक्ष—(सं· पु.) ब्रह्मा का बेटा, एक प्रजापति का नाम, एक मुनि का नाम, महादेव के बैल का नाम, (गु.) चतुर, समर्थ, निपुण, प्रवीण।
दंष्ट्रा—(सं· स्त्री·) दाढ़, बड़े दांत।
दक्षकन्या, दक्षसुता—(सं· स्त्री·) दक्ष की बेटी, दुर्गा, सती।
दक्षिणायन—(सं· पु.) दक्षिण दिशा की ओर सूर्य के जाने का समय जो सावन से पूस अथवा कर्क संक्रांति से धन की संक्रांति तक रहता है।
दगला—(सं· पु.) रूई भरा अंगरखा।
दग्ध—(र्म· पु·) जला हुआ, भस्म।
दङ्ग—(क्रि· वि·) हैरान, हक्काधक्का।
दण्ड—(सं. पु·) लाठी, छड़ी, ताड़ना, सजा, साठ पल का समय, इक्ष्वाकु राजा का पुत्र।
दण्डी—(सं· पु·) एक प्रकार के संन्यासी जो हाथ में लाठी रखते हैं, यमराज, राजा, द्वारपाल,—(गु·) लाठीवाला।
दण्डनीय—(र्म· पु·) सजा करने योग्य।
दण्डकारण्य—(सं· पु·) दण्डकवन।
दण्डधर, दण्डी —(सं· पु·) यमराज, कुम्हार, लकुटधारी, राजा, संन्यासी सिपाही, छड़ी बरदार, एक कविकानाम।
दत्त—(र्म· पु·) दिया हुआ। (सं·) वैश्यों का उपनाम।
दत्तक—(र्म· पु·) गोद लिया हुआ, पोष्यपुत्र, मुतबन्ना।

दत्तात्रेय—(सं॰ पु॰) अत्रि ऋषि के पुत्र जिन्हों ने २४ गुरु किये।
दद्रु—(पु॰) दाद, रोग।
दधि—(सं॰ पु॰) दही, समुद्र।
दधीच—(सं॰ पु॰) एक राजा।
दनुज—(सं॰ पु॰) राक्षस।
दन्तधावन—(सं॰ पु॰) दांतुन, दतवन।
दन्ती—(सं॰ पु॰) हाथी, जमालगोटा।
दम—(सं॰ पु॰) इन्द्रियों को वश में करना, ताड़ना, वश करना।
दमी—(पु॰) योगी, इन्द्रियजित।
दमक—(सं॰ स्त्री॰) झलक, चमक, प्रकाश।
दमन—(सं॰ पु॰) वश करना, नाश करना।
दमनीय—(कर्म॰ पु॰) दाबने के लायक, तोड़ने योग्य।
दमामा—(सं॰ पु॰) नगारा, धौंसा, डंका।
दम्पति—(सं॰ पु॰) स्त्री पुरुष, जोड़ा।
दम्भ—(सं॰ पु॰) पाखण्ड, छल, घमण्ड, जवानबैल।
दम्भी—(गु॰) छली, पाखण्डी, कपटी।
दया—(सं. स्त्री.) कृपा, मेहरबानी।
दयित—(सं. पु.) पति, प्रिय।
दयिता—(सं. स्त्री.) भार्य्या, स्त्री, प्यारी।
दर—(सं. पु॰) भाव, मोल, छेद, डर, शंख, दरवाजा, खोह, गुफा।
दरा, दरी—(स. स्त्री.) खोह, कन्दरा।
दरांती—(सं. स्त्री.) हंसुआ।
दर्प—(सं॰ पु॰) घमण्ड, अहङ्कार।
दर्पण—(सं. पु.) आईना, आरसी।
दर्वी—(सं॰ स्त्री॰) कलछुली, कर्छी।
दर्भ—(सं. पु.) डाभ, कुशा।
दर्शक—(क. प.) दिखानेवाला, द्वारपाल।

दर्शन—(भा. पु.) देखना, दृष्टि, एक दूसरे को देखना, आंख, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त, सांख्य और पातञ्जल ये छः दर्शन शास्त्र।

दल—(सं. पु.) पेड़ का पत्ता, बड़ी सेना, ढेर, समूह, खण्ड, टुकड़ा, कीचड़, आधा।

दलदल—(सं. पु.) कीचड़, पांका, पङ्क।

दलित—(कर्म. पु.) मर्दित, रौंदा गया, फाड़ा गया।

दलैंती—(सं. स्त्री.) चक्की, जांती।

दव—(सं. पु.) वन, वन की आग, वनडाढ़ा।

दवाग्नि, दवारी —(सं. पु.) वन की आग। संस्कृत में अग्नि शब्द पुंलिङ्ग है।

दशकण्ठ, दशग्रीव, दशभाल, दशमुख, दश शीस, दशानन दशास्य इत्यादि —(सं. पु.) रावण।

दशन—(सं. पु.) दांत।

दशमलव – (सं. पु.) दशमांश, दशवां हिस्सा, एक प्रकार का भिन्न।

दशमुखान्तक—(क. पु.) रावण का मारने वाला, रामचन्द्र।

दशा—(स्त्री.) अवस्था, हालत, गति।

दस्तन्दाजी (دست انداری)—(भा.) हाथडालना, हस्तक्षेप करना, दखल देना।

दस्तक (دستک)—(सं. पु.) आज्ञापत्र, हुक्मनामा, लेख।

दस्यु - (सं. पु.) डाँकू, चोर, अग्नि, शत्रु, खल, बड़ा साहसी, लुटेरा।

दह--(सं. पु.) ह्रद, झील।

दहन—(भा. पु.) जलाना, दाह, आग, चित्रक वृक्ष, जलानेवाला।

दहाड़ना—(क्रि.) गरजना, सिंह की बोली ।
दहेड़ी—(सं. स्त्री.) दही की हांड़ी ।
दाऊ—(सं. पु.) बड़ा भाई, बाप, बलदेव जी का नाम ।
दाख—(सं. स्त्री.) अंगूर, मुनक्का किश्मिश ।
दाक्षायणी—(सं. स्त्री.) सती ।
दाक्षिण्य—(गु.) उदारता ।
दाड़िम—(सं. पु.) अनार ।
दातार—(गु.) देनेवाला, दानी, शखी ।
दाद—(सं. पु.) दिनाय, दान, देना ।
दादुर—(सं. पु.) बेंग, मेढ़क ।
दानव—(सं. पु.) राक्षस [कागज, सनद ।
दानपत्र—(सं. पु.) बखशिशनामा, हिबानामा, ब्रह्मोत्तर आदि का
दाना—(सं. प.) अन्न, अनाज, बीज, (गु.) बुद्धिमान, ज्ञाता, अक्लमन्द ।
दानी—(गु.) दाता, देनेवाला, उदार ।
दान्त—(गु.) जितेन्द्रिय, तपस्वी ।
दाप—(सं. पु.) घमण्ड, गरूर, शेखी ।
दाम—(सं. स्त्री.) रस्सी, माला, (गु. पु.) मोल, भाव पैसे का पचीसवां भाग ।
दामिनी—(सं. स्त्री.) बिजली ।
दामोदर—(सं. पु.) श्रीकृष्ण का नाम, विष्णु ।
दाम्भिक—(गु.) पाखण्डी, कपटी ।
दाय—(सं. पु.) बाप दादों का धन, पैत्रिक धन, दान, दहेज । हिस्सा, बखरा ।
दायज—(सं. पु.) दहेज, यौतुक ।
दायभाग—(सं. पु.) बाप दादों के धन का हिस्सा, धर्म्मशास्त्र के एक ग्रन्थ का नाम ।

दायित्व—(म्र्म. पु.) जवाब देही, भार।
दार, दारा—(सं. स्त्री.) भार्या, स्त्री,जोड़ू।
दारिका—(सं. स्त्री.) पुत्री, कन्या, बेटी।
दारु—(सं. स्त्री.) लकड़ी, देवदारु वृक्ष दारु हरदी।
दारुक—(सं. पु.) श्रीकृष्ण के सारथी का नाम, देवदारु वृक्ष, काठ, (स्त्री·) कठपुतली।
दारुण—(गु.) भयानक, कठिन, कठोर, चित्रक वृक्ष।
दारु नारी—(सं. स्त्री·) काठ की पुतली।
दाह, दाहन—(भा· पु.) जलन, दहन, झुलसना।
दिक—(सं. पु.) दिशा।
दिक्पति, दिक्पाल—(सं· पु·) दिशाओं के राजा, जैसे १ पूर्व का इन्द्र २ अग्निकोण का अग्नि, ३ दक्षिण का यमराज ४ नेऋर्त्यकोण का निऋर्ति ५ पश्चिम का वरुण ६ वायव्य कोण का पवन, ७ उत्तर का कुबेर, ८ ईशान कोण का महादेव, ९ ऊपर की दिशा का ब्रह्मा, १० नीचे की दिशा का अनन्त वा विष्णु, और दिशाओं को पालनेवाले १ सूर्य, २ शुक्र, ३ मङ्गल, ४ राहु ५ शनीचर, ६ चन्द्र ७ बुध, ८ बृहस्पति।
दिगन्त—(सं. पु·) दिशा का अन्त।
दिगम्बर—(गु·) नंगा, (सं· प·) शिव का नाम, जैन मत का भिखारी।
दिग्गज—(सं· पु·) (दिक् = दिशा, गज = हाथी) दिशाओं के हाथी।
दिग्विजय—(सं· स्त्री·) दिशाओं का जीतना।
दिग्गी, दिघी—(सं· स्त्री·) छोटी पोखर, तालाब।
दिनकर, दिनमणि—(सं· पु·) सूर्य।
दिनान्त—(सं· पु·) सन्ध्या, सांझ।
दिनामार—(सं· पु·) डेन्मार्क के रहनेवाले।

दिनेश—(सं॰ पु॰) सूर्य ।
दिवस, दिवा—(सं॰ पु॰) दिन । दिव (सं॰ पु॰) स्वर्ग, आकाश ।
दिवाकर—(सं॰ पु॰) सूर्य ।
दिवान्ध—(गु॰) दिन में अन्धा, उल्लू, चमगादड़ ।
दिव्य—(गु॰) स्वर्ग का, स्वर्गीय, सुन्दर, स्वच्छ, (पु॰) गुग्गुल, जौ । एक प्रकार का शपथ ।
देहरा, देहरा—(सं. पु॰) देवता का मन्दिर ।
देहली—(सं॰ स्त्री॰) चौकठ, देहरी ।
दीक्षा—(सं॰ स्त्री॰) गुरु से मंत्र लेना, गुरुमुख होना, यज्ञ ।
दीक्षित—(सं॰ पु॰) मंत्र देनेवाला गुरु, यज्ञ करानेवाले (स्म॰ पु॰) मंत्र लिये हुआ । यज्ञ की दीक्षा लिया हुआ यजमान ।
दीठ—(सं॰ स्त्री.) नजर, दृष्टि ।
दीधिति—(सं॰ स्त्री॰ किरण ।
दीन—(सं॰ पु॰) कंगाल, दुखी, आधीन, नम्र ।
दीनार—(सं॰ स्त्री॰) सोने का एक सिक्का, अशर्फी ।
दीप, दीवा—(सं॰ पु॰) दिया, दीया, चिराग, टापू ।
दीपमालिका—(सं॰ स्त्री॰) दिवाली, एक तिहवार का नाम ।
दीप्ति—(सं॰ स्त्री॰) प्रकाश, शोभा ।
दीप्तिमान—(गु॰) तेजस्वी, प्रकाशमान, शोभायमान ।
दीमक—(सं॰ स्त्री॰) दीयां, वल्मीक. एक प्रकार की सफेद, चिउंटी ।
दीर्घ—(गु॰) लम्बा. बड़ा, ऊंचा, (सं॰ पु॰) द्विमात्रिक स्वर, शालवृक्ष ।
दीर्घग्रीव—(गु॰) लम्बी गर्दनवाला (सं॰ पु॰) ऊंट
दीर्घजङ्घ—(गु॰) सारस पक्षी, ऊंट ।
दीर्घसूत्री—(ग॰) आलसी, सुस्त ।
दीर्घायु—(गु॰) बहुत दिनों तक जीनेवाला, कौवा, सेमल का पेड़, मार्कण्डेय ऋषि ।

दीह—(गु॰) बड़ा।
दुखड़ा—(सं॰ पु॰) दुर्गति, अभाग।
दुःखावह—(क॰ पु॰) दुख देनेवाला।
दुःशासन—(सं॰ पु॰) धृतराष्ट्र का बेटा।
दुःशील—(गु॰) दुष्ट स्वभाव, बदमिज़ाज।
दुःसह—(गु॰) नहीं सहने योग्य, बहुत कठिन।
दुकूल—(सं॰ पु॰) कपड़ा, रेशमी कपड़ा।
दुग्ध—(सं॰ पु॰) दूध।
दुतकार—(सं॰ पु॰) झिड़की, घुड़की।
दुत, द्युति—(सं॰ स्त्री॰) चमक, शोभा, प्रकाश।
दुंदुभि—(सं॰ पु॰) नक़ार, नगारा, धौंसा, वरुण, एक राक्षस का नाम।
दुधार—(गु॰) बहुत दूध देनेवाली, दो धार वाली (ला॰)
दुनी—(सं॰ स्त्री॰) दुनिया, संसार।
दुश्मन—(सं॰ पु॰) दुश्मन, वैरी।
दुविधा—(सं॰ पु॰) सन्देह, खुट का, दुचिताई।
दुभाषी—
दुभाषिया— } (क॰ पु॰) दोनों ओर की बात समझानेवाला, दो भाषा का बोलने वाला।
दुरंत—(ग॰) चंचल, ढीठ जिस का नतीजा बुरा हो।
दुरतिक्रम—(ग॰) कठिन।
दुरद—(सं॰ पु॰) हाथी।
दुरवगाह—(गु॰) अथाह, दुस्तर।
दुराग्रह—(सं॰ पु॰) बुराहठ, जिद्द।
दुरात्मा—(गु॰) दुष्ट, पापी।
दुराचरण, दुराचार—(भा॰ पु॰) बुरा व्यवहार, अन्याय, अधर्म पाप।
दुराचारी—(क॰ पु॰) बुरा व्यवहारवाला, अन्यायी, अधर्मी।
दुराज—(सं॰ पु॰) दो राजों का राज्य।

दुराधर्ष—(गु·) जो दुख से जीता जाय, जो शत्रु से नहीं दबे, दबंग ।
दुराना—(क्रि·) छिपाना, भेद रखना ।
दुराव—(सं· पु·) छिपाव, भेद ।
दुराशा—(सं. स्त्री.) बुरी आशा, नीच आस ।
दुरित—(सं. पु.) पाप ।
दुर्ग—(सं· पु.) गढ़, कोट, क़िला, घाटी, एक राक्षस का नाम (गु.) कठिन, अगम्य ।
दुर्गन्ध—(गु·) बुरी गन्ध, बुरी बास, बदबू । (गु·) बुरी बूवाला ।
दुर्गम—(गु·) कठिन, अगम्य, गंभीर ।
दुर्घट—(गु·) कठिन, असम्भव, न होने योग्य ।
दुर्जन—(सं· पु·) दुष्ट मनुष्य बुरा आदमी ।
दुर्जय—(गु·) अजेय, भारी शूर, जो सहज में जीता न जाय ।
दुर्दशा—(सं· स्त्री·) बुरीगत, विपत ।
दुर्दिन—(सं· पु·) बदरीलादिन, झापस, कुसमय ।
दुर्नीति—(सं· स्त्री·) बुरी नीति-चाल, अन्याय ।
दुर्बुद्धि—(सं· स्त्री·) बुरी बुद्धि । (गु·) मूर्ख कमअक़्ल नासमझ ।
दुर्बोध—(गु·) कठिन, बेअकूफ ।
दुर्भाग्य—(सं· पु·) अभागा, बदकिस्मत ।
दुर्भिक्ष—(सं· पु·) काल, अकाल, असमम, कुसमय महंगी ।
दुर्मति—(गु·) बुरी बुद्धि, मूर्ख ।
दुर्मद—(सं· पु·) महाघमण्डी, उजड्ड ।
दुर्मुख—(गु·) जिस का मुंह बुरा हो, कड़ी बात बोलनेवाला, (सं· पु·) एक राक्षस का नाम ।
दुर्लभ—(गु·) जो दुख से मिले, अलभ्य, अनोखा ।
दुर्वचन—(सं· पु·) गाली, लागूबात ।
दुर्बल—(गु·) दीन, निबल, कमजोर ।

दुर्वा—(सं· स्त्री·) दूब, घास।
दुर्वासना—(सं· स्त्री·) बुरी इच्छा।
दुर्वाशा—(सं· पु·) एक क्रोधी मुनि।
दुर्विपाक—(सं· पु·) बुराफल, दुर्भाग।
दुर्व्यसन—(सं· पु·) बुरी लत।
दुश्चरित— (सं. पु·) पाप, बुरी चाल।
दुश्चरित— (गु·) पापी, बदचलन।
दुष्कर, दुस्तर —(गु·) कठिन, असाध्य, जिस का पार होना कठिन हो।
दुष्कर्म—(गु·) बुरा काम, पाप, कुकर्म।
दुहेला—(गु·) कठिन, भारी।
दुहिता—(सं· स्त्री·) बेटी।
दूती, दूतिका——(सं· स्त्री·) समाचार पहुंचानेवाली, कुटिनी, नायिका।
दुरदर्शी—(सं· स्त्री·) दूर से देखनेवाला, पहले से सोचनेवाला। (पु·) पण्डित, गीध।
दूषण—(भा· पु·) निन्दा, दोष, भूल, चूक।
दूषणीय—(सं· पु·) निन्दा के योग्य, दुष्ट, बदनाम।
दृग—(सं) आंख, चक्षु, नेत्र।
दृश्य—(म्सं. पु·) देखने योग्य, सुहावना, तमाशा, शीत।
दृढ़—(गु· पु·) मजबूत, कठोर. कड़ा।
दृष्टकूट—(सं· पु.) पहेली बुझौवल।
दृष्टान्त—(सं· पु.) उदाहरण, मिसाल, उपमा।
दृष्टिपात—(भा· पु·) दर्शन, कटाक्ष, घूरना, देखना।
दय—(गु·) देने योग्य।
देव—(सं· पु·) देवता, परमेश्वर, राजा, ब्राह्मणों का उपनाम।

देवगुरु—(सं॰ पु॰) बृहस्पति।
देवधुनि—(सं॰ स्त्री॰) गङ्गा, सुरसरि।
देवमातृक—(गु॰) जहां की खेती केवल बरसा के भरोसे हो, नदी नहर आदि शैरावी का कोई उपाय न हो, वह देश।
देवराज—(सं॰ पु॰) इन्द्र।
देवराजपुर—(सं. पु॰) इन्द्रलोक, इन्द्रपुरी, अमरावती।
देशाटन—(भा. पु.) देशों में फिरना, सफर करना।
देशान्तर—(सं॰ पु॰) दूसरा देश, विदेश, मध्याह्न रेखा से पूर्व अथवा पश्चिम की किसी जगह की दूरी।
देहान्त—(सं॰ पु॰) मरण।
देहरा—(सं॰ पु॰) देवता का मन्दिर।
देही—(सं॰ पु॰) प्राण, जीवधारी।
दैत्य—(सं॰ पु॰) राक्षस।
दैत्यगुरु—(सं॰ पु॰) शुक्राचार्य।
दैत्यारि—(सं॰ पु॰) विष्णु, राक्षसों के शत्रु।
दैव—(सं॰ पु॰) भाग, ईश्वर।
दैनिक—(गु॰) रोजाना, प्रत्येक दिन का।
दैवज्ञ—(सं॰ पु॰) ज्योतिषी।
दैन्य—(भा॰ पु॰) दीनता, गरीबी, लाचारी, बेबसी।
दैया—(स्त्री॰) माता, बड़ी बहिन।
दैवात्—(अ॰) संयोग से, अचानक।
दोआबा—(सं॰ पु॰) दो नदियों के बीच की आबाद धरती, गङ्गा और सरयू के बीच बलिया जिले का एक परगना।
दोदना—(क्रि॰) मुकरजाना, नकार जाना, नाहीं करदेना।
दोलन
दोला } —(भा॰ पु॰) झूलना, डोला, महाफा।

दोलिका—(सं॰ पु॰) झूला, डोली।

दोषारोप / दोषारोपण — (क्रि.) दोष लगाना, कलंक लगाना।

दौहित्र—(सं॰ पु॰) नाती, बेटी का बेटा।
द्युति—(सं॰ स्त्री॰) चमक, सुन्दरता, दीप्ति, प्रकाश।
द्यूत—(सं॰ पु॰) पाशाखेलना, जूआ।
द्यूतशाला—(सं॰ स्त्री॰) जूआ का घर।
द्योतक—(क॰ पु॰) चमकनेवाला, चमकानेवाला, प्रकाश [करनेवाला।
द्योरानी—(देवरानी)—(सं॰ स्त्री॰) देवर (पति के छोटे भाई) की स्त्री, वहू।
द्योस—द्यौस—(सं॰ पु॰) दिन, दिवस।
द्रव—(सं॰ पु॰) रस, अर्क, पिघला हुआ, वहता हुआ।
द्रव्य—(सं॰ पु॰) धन, वस्तु, गलने योग्य।

द्रावण / द्रावक —(सं॰ पु॰) गलानेवाला।

द्रष्टव्य—(र्म॰ पु॰) देखने योग्य, दर्शनीय।
द्रष्टा—(क॰ पु॰) देखनेवाला, दर्शक, नाज़िर।
द्राक्षा—(स्त्री॰) दाख।
द्रुत—(अ॰) शीघ्र, जल्दी, तेज।
द्रुतगामी—(गु॰) तेज चलनेवाला।
द्रुम—(सं॰ पु॰) वृक्ष, पेड़।
द्रोण—(सं॰ पु॰) द्रोणाचार्य्य, कौआ।
द्रोणी—(सं॰ स्त्री॰) कन्दरा, खोह, घांटी।
द्रौणी—(सं॰ पु॰) द्रोणाचार्य का बेटा, अश्वत्थामा।
द्रोह—(सं॰ पु॰) वैर, विरोध, डाह।
द्रोही—(गु॰) वैरी, दुश्मन।

द्रौपदी—(सं· पु·) पंचाल देश के राजा द्रुपद की बेटी और पांचो पाण्डवों की स्त्री।

द्वन्द्व—(सं पु·) जोड़ा, जाड़ा गरमी आदि, कलह, झगड़ा, व्याकरण में एक समास का नाम, राग द्वेष।

द्वय—(गु·) दो।

द्वादश— (गु·) बारह, बारहवां।

द्वारा—(क्रि· वि·) कारण से, सहायता से, जरिये से।

द्वारका, द्वारावती—(सं· स्त्री·) द्वारका, कृष्णपुरी।

द्वादशी—(गु·) बारहवीं तिथि,

द्विगुण—(गु·) दूना।

द्विगुणमध्योन्नत—(गु·) दोहरा, बीच में ऊंचा, कुबड़ा, उठा हुआ।

द्विज—(गु·) दो बार जन्मा हुआ, (एक जन्म, दूसरा संस्कार) (पु·) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीनों वर्णों के लोग द्विज कहलाते हैं; अंडे से जिस का जन्म हो जैसे पक्षी चींटी आदि, दांत।

द्विजराज—(सं· पु·) चन्द्रमा, गरुड़, विप्र, शिव।

द्विप—(सं· पु·) हाथी, वृक्ष, नागकेशर।

द्विपद—(गु·) दो पैरवाले मनुष्य।

द्विरेफ—(पु·) भ्रमर।

द्विरद-(द्वरद)-(सं· पु·) हाथी।

द्वीप—(सं· पु·) टापू, धरती का वह बड़ा टुकड़ा जिस के चारो ओर पानी हो। जम्बूद्वीप आदि सात द्वीप।

द्विपिन्—(सं· पु·) व्याघ्र भेद, चीता।

द्वेषी—(क· पु·) डाही, बैरी, शत्रु।

द्वैत—(गु·) दुहरा, एक प्रकार का वेदांतमत, एक वन।

द्वैपायन—(सं· पु·) व्यास जी।

ध

ध—(सं॰ प॰) धर्म, कुवेर, ब्रह्मा, धन।
धज—(सं॰ स्त्री॰) रूप, डौल, आकार, सजधज, धजा।
धाजा—(सं॰ स्त्री॰) ध्वजा, पताका, झण्डा।
धज्जी—(सं॰ स्त्री॰) कपड़ा वा कागज का कतरन, टुकड़ा चाम की चरही।
धड़-धर—(सं॰ प॰) ये माथ की दह, सिल्ली।
धड़ल्ला—(सं॰ पु॰) तांता, कतार।
धत—(सं॰ पु॰) धुतकार, फिटकार।
धन—(सं॰ प॰) दौलत, लक्ष्मी, रुपये आदि।
धनञ्जय—(सं॰ प॰) अर्जुन, आग, एक वृक्ष और प्राण का नाम।
धनद, धनेश—(सं॰ पु॰) कुवेर, (गु॰) दाता, उदार, धन देनेवाला।
धनपति, धनेश, धनाधिप, धनेश्वर।—(सं॰ पु॰) कुवेर, धन का देवता।
धनी—(गु॰) लक्ष्मीवान्। (सं॰ पु॰) स्वामी, अधिकारी।
धनसेठ, धनाढ्य—(गु॰) धनी, मालदार।
धनुर्धर, धन्वी—(क॰ पु॰) धनुषधारी, कमान चढ़ानेवाला, तीरन्दाज।
धनुटंकार—(सं॰ पु॰) धनुष्टङ्कार, धनुष के चिल्लेका शब्द।
धनुर्विद्या—(सं॰ स्त्री॰) तीर चलाने की विद्या।
धन्धक—(क॰ प॰) काम करनेवाला, उद्यमी, काम, पाखण्डी।
धन्य—(गु॰) सराहने योग्य, भाग्यवान।
धन्यवाद—(सं॰ पु॰) सराह, स्तुति, शुकरगुज़ारी।
धन्वन्तरि—(सं॰ पु॰) देवताओं का वैद्य, एक पण्डित का नाम, जो विक्रमादित्य की सभा में था।
धब्बा—(सं॰ पु॰) कपड़े आदि पर का दाग, कलङ्क, अपयश।
धमनी—(सं॰ स्त्री॰) नाड़ी, नाड़िका, नब्ज, रग।
धरित्री, धरा—(सं॰ स्त्री॰) पृथ्वी।

धरहर—(सं॰ स्त्री॰) सहायता, मदद ।
धराशायी—(क॰ पु॰) पृथ्वी पर सोनेवाला अर्थात् भूमि पर गिर-पड़ रहना, मर के लोटजाना ।
धरोहर—(सं॰ स्त्री॰) थाती, अमानत ।
धर्म—(सं॰ पु॰) पुण्य, पवित्र काम, न्याय, पन्थ, मत, कर्त्तव्य, कर्म, यमराज ।
धर्मपत्नी—(सं॰ स्त्री॰) धर्म की रीति से व्याही स्त्री ।
धर्मपुत्र—(सं॰ पु॰) युधिष्ठिर ।
धर्मशास्त्र—(सं॰ पु॰) व्यवस्था शास्त्र, कानून की पुस्तक जैसे मनुस्मृति आदि ।
धर्मज्ञ—(क॰ पु॰) धर्मात्मा, धर्म्मज्ञानी ।
धर्मधुरन्धर—(क॰ पु॰) धर्म्म के काम में प्रधान, धर्मात्मा ।
धर्मध्वजी—(गु॰) पाखंडी ।
धर्मराज—(सं॰ पु॰) यमराज ।
धर्माधिकरण—(सं॰ पु॰) कचहरी, न्यायालय, अदालत ।
धर्म्माधिकारी—(सं॰ पु॰) जज, मुन्सिफ आदि ।
धव—(सं॰ पु॰) प्यारा पति—स्वामी, एक पेड़—(धवा) ।
धवल—(गु॰) धौला, उजला, सुन्दर, एक पेड़ और पर्वत का नाम।
धाक—(सं॰ स्त्री॰) रोब, दबदबा ।
धांधल—(सं॰ स्त्री॰) बेइमानी ।
धाई, धाय—(सं॰ स्त्री॰) लड़के को दूध पिलानेवाली दाई ।
धाम—(सं॰ पु॰) घर, स्थान ।
धाता—(सं॰ पु॰) ब्रह्मा, विष्णु ।
धातृ, धात्री—(सं॰ स्त्री॰) धाय, माता, आंवला, पृथिवी ।
धाप—(सं॰ स्त्री॰) पावमील ।
धारावाहिक—(गु॰) पुरानी राह पर चलनेवाला, लगातार बरा-बर ।
धारि—(सं॰ स्त्री॰) सेना, फौज ।

धारोष्ण—(गु॰) गर्मधार, टटका दुहा हुआ, गर्मागर्म।
धावा—(सं॰ पु॰) हल्ला, हमला, चढ़ाई।
धार्म्मिक—(गु॰) पुण्यवान, धर्मात्मा, साधु।
धराधर—(सं॰ पु॰) वाराह रूप विष्णु, पहाड़, शेषनाग।
धावन, धावक—(क॰ पु॰) दौड़ाहा, चलनेवाला, दूत।
धी—(सं॰ स्त्री॰) बुद्धि, पुत्री।
धीति—(सं॰ स्त्री॰) प्रतीति, विश्वास।
धीमत्, धीमान—(गु॰) अक़्लमन्द, बुद्धिमान।
धीवर—(सं॰ पु॰) मल्लाह, मछुवा।
धुआं—(सं॰ पु॰) भाफ, मरण।
धुआंधार—(गु॰) बड़े ज़ोर से, खब।
धुन, धुनि—(सं॰ स्त्री॰) शब्द, आवाज़।
धुरा—(सं॰ स्त्री॰) रथ की धूरी।
धरवा—(सं॰ पु॰) मेघ।
धुरन्धर, धुरीण—(क॰ पु॰) बोझा उठानेवाला, मुखिया।
धूप—(सं॰ पु॰) गूगल और लोवान आदि सुगंधित वस्तु जिस को पूजा के समय देवता के आगे आग पर रखते हैं, (स्त्री॰) घाम।
धूमकेतु—(स॰ पु॰) पूंछलतारा, आग, केतु, एक राक्षस का नाम
धूमरा, धूमला—(गु॰) धूएं का सा रंगवाला, धुसरा, भूरा, खाकी
धूमवाहनी—(सं॰ स्त्री॰) रेल, रेल की इञ्जिन।
धूर्ज्जटि—(सं॰ पु॰) शिव का नाम, जटाधारी।
धूसर—(गु॰) भूरा, खाकी, मटमैला।
धृत—(सं॰ पु॰) धारण किया हुआ, पकड़ा हुआ।
धृतराष्ट—(सं॰ पु॰) दुर्योधन का बाप और पाण्डवों का चचा।
धृतिमान—(गु॰) बुद्धिमान, अक़्लमन्द, धीर।
धृष्ट, धृष्णु—(क॰ पु॰) ढीठ, साहसी, शोख, निर्लज्ज।
धेनु—(सं॰ स्त्री॰) गाय, दूध देनेवाली गाय, नई व्याई।

धैर्य—(सं॰ पु॰) धीरज दिलेरी।
धौं—(अ॰) न जाने, कि,याकि, क्या।
धोरी—(सं. पु॰) गाड़ी में पहले जुतानेवाला बैल, धुरन्धर, [मुखिया।
धौत—(सं॰ पु.) धोती, (गु॰) धोया हुआ, साफ।
धौरहर—(सं॰ स्त्री॰) अटारी, मीनार।
धौल—(सं॰ स्त्री॰) थप्पड़, तमाचा, (गु॰) उजला, धवल, सफेद।
धौलागिरि—(सं॰ पु॰) हिमालय पहाड़ की एक चोटी।
धौंसा—(सं॰ पु॰) नक्कारा।
ध्यात—(स्म॰ पु॰) चिन्तित।
ध्यान—(सं॰ पु॰) परमेश्वर में मन लगाना, सोच, विचार, चिन्ता, लौ।
ध्यायक—(क॰ पु॰) चिन्तक, विचारी, योगी, भक्त।
ध्येय—(गु॰) ध्यान योग्य।
ध्रुव—(गु॰) ठहरा हुआ, अटल, दृढ़, ठीक, निश्चय, (सं॰ पु॰) एक भक्त, उत्तानपाद राजा का पुत्र, ध्रुव का तारा, उत्तरकेन्द्र।
ध्रुवमत्स्ययंत्र—(सं॰ पु॰) कुतुबनुमा, दक्षिणोत्तरी चुम्बक की [सूई।
ध्वंस—(भा॰ पु॰) नाश, क्षय, हानि।
ध्वंसक—(क॰ पु॰) नाशक, क्षयकारक।
ध्वज, ध्वजा—(सं॰ स्त्री॰) फरहरा, पताका, झण्डा, निशान।
ध्वनि—(सं॰ स्त्री॰) शब्द, स्वर, व्यङ्ग्य।
ध्वनित—(स्म॰ पु॰) शब्दित, कथित, व्यञ्जित।
ध्वस्त—(गु॰) भ्रष्ट, पराजित, गिरा हुआ, तहस नहस किया हुआ
ध्वान्त—(सं॰ पु॰) अन्धकार।

न।

न—(अ॰) नहीं, अभाव, निषेध, (सं॰ पु॰) शनिश्चर।
नकटा—(गु॰) नाक कटा हुआ, निर्लज्ज।

नकसीर—(सं· स्त्री·) नाक की नस वा रग।
नकुल—(सं· पु·) नेवला, महादेव, युधिष्ठिर के भाई का नाम, (गु·) निर्वंश, कुलरहित।
नक्कू—(गु.) अपयशी, निखट्टू।
नकेल—(सं. स्त्री·) ऊंट की नाक की रस्सी।
नक्र—(सं· पु·) मगर।
नक्षत्र—(सं· पु·) अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्रपद, उत्तरभाद्रपद और रेवती येही २७ नक्षत्र, तारा, नखत। [सीप।
नख—(सं· पु.) नाखून, बीस की संख्या, पतंग की डोरी (स्त्री·)
नखत—(सं· पु·) नक्षत्र, तारा।
नखायुध—(गु·) व्याघ्र, कुक्कुट, बिल्ली, मोर, नृसिंह।
नखी—(गु·) नख से फाड़नेवाले जानवर, जिन्हें नख हो, बिल्ली कुत्ता आदि।
नग—(सं· पु·) नगीना, पहाड़, वृक्ष।
नगन, नग्न—(गु.) नंगा।
नगरनारी—(सं. स्त्री·) वेश्या, पतुरिया।
नगपति, नगाधिराज—(सं· पु·) हिमालय पहाड़, सुमेरु।
नगरवासी—(फ· पु·) शहर में बसनेवाले।
नट—(सं· पु.) नटवा, नर्तक, नेटुआ, स्वांगी, इन्द्रजाली।
नटखट—(गु·) कपटी, छली, पाखण्डी।
नटत—(क्रि·) अस्वीकार करता है, नाचता है।
नट्टन—(सं· पु.) नाचना।
नटी—(सं. स्त्री·) नट की स्त्री, वेश्या, सूत्रधार की स्त्री।

नत—(गु·) झुका हुआ।
नतरु—(अ·) नहीं तो।
नताङ्गी—(सं. स्त्री·) झुके अंगवाली, सुन्दरी स्त्री, नारी।
नति—(सं. स्त्री.) नमस्कार।
नद—(सं· पु·) बड़ी नदी जैसे ब्रह्मपुत्र, सोन, सिन्धु आदि।
नदीश—(सं· पु·) समुद्र।
नन्दक—(सं· पु·) विष्णु की तलवार का नाम, आनन्द देनेवाला।
नन्दन—(सं· पु·) बेटा, इन्द्र का बाग, आनन्ददायक।
नन्दिया—(सं. पु.) बसहाबैल, शिववाहन।
नन्दि, नन्दी—(सं· पु·) शिव का द्वारपाल, जुआ खेलना।
नन्दिघोष—(सं· पु·) अर्जुन का रथ, बन्दीगणों का शब्द।
नन्दिनी—(सं· स्त्री·) बेटी, कन्या।
नपुंसक—(सं· पु·) हिजड़ा, खोजा, (गु·) डरपोक, कायर।
नफीरी—(सं· स्त्री·) तुरही, सहनाई।
नभ, नभस—(सं. पु·) आस्मान, सावन का महीना, सूर्य्य मेघ, वर्षा।
नभग, नभचर—(क· पु·) पक्षी, आकाश में चलनेवाला।
नभगेश—(सं· पु·) गरुड़, नभ में उड़नेवाले के स्वामी।
*नमस्कार—(सं· पु·) प्रणाम, जुहार।
नमाज—(نماز) (गु·) स्तुति, विनय।
नम्र—(गु·) झुका हुआ, विनयी, जिस का स्वभाव बहुत सीधा हो।
नय—(सं· पु·) नीति।
नयन—(सं· पु·) आंख।

---

* समाज में यह शब्द प्रणाम अर्थ में केवल अपनी जातियों में व्यवहृत होता है अन्य में नहीं।

नारी —(सं· स्त्री·) स्त्री ।
नाविक—(क· पु.) मल्लाह, नाव चलानेवाला, मांझी ।
नासिका—(सं· स्त्री·) नाक ।
नास्तिक—(क· पु.) ईश्वर और परलोक को नहीं माननेवाला।
नाह—(सं. पु·) नाथ, राजा, स्वामी ।
नाहर—(सं· पु·) बाघ, शेर, सिंह ।
निःशङ्क—(गु·) निडर, निर्भय ।
निःशब्द—(गु·) चुपचाप, सन्नाटा ।
निःस्व—(गु·) दरिद्री ।
निःशेष—(गु·) पूरा, समाप्त ।
निःश्वास—(सं· प·) सांस, पछतावा, नाक से बाहर निकली हवा
निःस्पृह / निस्पृह —(गु·) इच्छारहित, जिस को किसी बात की इच्छा न हो । [सुख से
निष्कण्टक—(गु·) अकंटक, कंटकरहित, बाधारहित, बिना झंझट
निकन्दन—(सं· पु·) नाश, नाश करनेवाला ।
निकर (सं. पु·) समूह ।
निकाई—(भा· स्त्री·) शोभा ।
निकाम—(गु·) निष्काम, इच्छारहित, भली भांति, बेकार, वृथा
निकाय—(सं. पु.) समूह, घर, परमात्मा ।
निकार—(सं· पु·) न्यक्कार, अपमान अन्नदांवते वक्र उकटने व पंचखा
निकुंज —(सं· पु·) झाड़ों के ऊपर लता आदि फैलने से मण्डपर नीचे की भूमि ।
निकृष्ट—(गु·) छोटा, नीच, बुरा ।
निकेत— / निकेतन— (सं· पु·) घर, स्थान ।

निक्षिप्त—(स्मं॰ पु॰) रक्खा हुआ, फेंका हुआ ।
निक्षेप (स्मं॰ पु॰) धरोहर; अमानत, प्रक्षेप, न्यास ।
निखङ्ग, निषङ्ग (सं. पु॰) तरकस ।
निखट्टू—(सं॰ पु॰) सुस्त, उड़ाऊ, निकम्मा ।
निखर्व—(सं. पु॰) अधिक, दीर्घ, ह्रस्व, बौना, दश खर्व ।
निखरना—(क्रि॰ अ॰) चमकना, उजला होना ।
निखारना—(क्रि॰ सं.) मैल छांटना, साफ़ करना ।
निखात—(स्मं॰ पु॰) खत्ता, गर्त ।
निखिल -(गु॰) पूरा, सम्पूर्ण ।
निगड़—(सं. पुं.) बेड़ी ।
निगदित—(स्मं॰ पु॰) कहा हुआ ।
निगम—(सं॰ पु॰) वेद ।
निगूढ़—(गु.) गम्भीर, भारी, गुप्त ।
निगोड़ा—(गु॰) अभागा, दुष्ट ।
निग्रह—(सं॰ पु॰) रोक, कलह, मर्यादा, पराभव, मानखण्डन, चिकित्सा हठ, कैद, घुड़की, धमकी, रोष ।
निचोड़—(सं. पु॰) सारांश, असल मर्म ।
निचोल—(सं॰ पु॰) वस्त्र, जामा ।
निग्रो (Negro)—(सं॰ पु॰) हबश के रहनेवाले जो काले रंग के होते हैं ।
निघण्ट—(सं॰ पु॰) औषध-कोष ।
निछावर—(सं॰ स्त्री॰) बलजाना, वारना, बलैया ।
निज—(सं॰ पु.) अपना ।
निठल्ला—(गु॰) सुस्त, आलसी, निकम्मा ।
निठुर—(गु॰) कठोर ।
नितम्ब—(सं॰ पु॰) चूतड़ ।
नितान्त—(अ॰) अत्यन्त, अति, बिलकुल ।

नित्य—(क्रि. वि.) सदा, हमेशा।
नित्यकर्म—(सं. पु.) स्नान, सन्ध्या, वंदन, तर्पण, पूजा, जप, तप आदि षट् कर्म, हरएक दिन का अवश्य करने के योग्य काम।
निदरि—(पू. क्रि.) अनादर करके, ठेलकर, तुच्छ समझ कर।
निदर्शन—(सं. पु.) उदाहरण, दृष्टान्त।
निदाघ—(सं. पु.) ग्रीष्मकाल। [के हेतु।
निदान—(क्रि. वि.) अन्त में, पीछे, (सं. पु.) मूल कारण, रोग
निदेश—(सं. पु.) आज्ञा।
निधन—(सं. पु.) मृत्यु, नाश। (गु.) कंगाल, गरीब।
निधान—(सं. पु.) घर, स्थान, निधि, खजाना।
निधि—(सं. पु.) कुबेर का भण्डार, आधार, समुद्र।
निन्द्य—(गु.) निन्दा के योग्य।
निनाद—(सं. पु.) शब्द।
निपट—(गु.) बहुत, अत्यन्त, अधिक। [आदि अव्यय।
निपात—(भा. पु.) गिरना, मौत, व्याकरण में च आदि और प्र
निपुण—(गु.) चतुर।
निबन्ध—(सं. पु.) प्रमाण, प्रबन्ध, कारण।
निबिड़—(गु.) घना।
निबुकि—(पू. क्रि.) निकल जाकर, बंच कर, निबह कर।
निबौरी—(सं. स्त्री.) नीम का फल, निमकौड़ी।
निबल—(गु.) दुर्बल, कमजोर।
निमग्न—(गु.) डूबा।
निमज्जन—(सं. पु.) नहाना, गोता मारना।
निभ—(अ.) तुल्य. समान।
निभृत—(गु.) एकान्त, अकेला।
निमन्त्रण—(सं. पु.) नेवता, बुलाहट।
निमिष, निमेष—(सं. पु.) पलक, पल, क्षण।

निमित्त—(पु·) कारण, लिये।
निमीलन—(सं. पु·) संकोचन, आंख मीचना, आंख बन्द करना।
निम्न—(गु·) नीचे, गहरा।
नियत—(र्म्म. पु·) ठहरा हुआ, (क्रि. वि.) लगातार।
नियन्ता—(क· पु·) शिक्षक, सारथी।
नियम—(सं. पु.) रीति, चलन, व्यवहार, प्रतिज्ञा, शर्त, धर्म के [कार्य।
नियमवहिर्भूत—(र्म्म. पु.) वेनियम, गै़रआईनी।
नियार—(सं. पु.) उआदा, रोकसदी के लिये तारीख ठीक करने के लिये सन्देशा।
नियुत—(सं. पु.) दशलाख।
नियुक्त—(र्म्म· पु·) लगा हुआ, स्थापित, मुकर्रर किया हुआ।
नियोग—(सं. पु.) आज्ञा, काम।
निर—(उप.) नहीं, विन, निश्चय, अच्छी तरह से।
निरङ्कार—(गु·) निराकार, आकाररहित, परमेश्वर, विष्णु।
निरंकुश—(गु.) विन रुकावट, स्वतन्त्र, वेअदव।
निरंजन—(गु·) निर्मल परमेश्वर, परब्रह्म, निर्लेप।
निरत—(गु.) लगा हुआ।
निरन्तर—(गु·) लगातार।
निरय—(सं. पु.) नर्क, दोजख़।
निरर्गल—(गु.) वेरोक।
निरर्थक—(गु.) निष्फल, व्यर्थ, अर्थहीन।
निरवद्य—(गु.) निर्दोष।
निरस—(गु.) फीका, वेस्वाद।
निर्वाह—(सं. पु.) निवाहना, पूरा करना, गुज़र।
निरसन—(भा. पु.) परित्याग, समाप्ति, दूर करना, हटाना।
निरस्त—(र्म्म. पु·) मारा गया, जलाया गया, हटाया गया।
निरस्त्र—(गु·) वेअस्त्र, खाली हाथ योधा।

निरा—(गु.) केवल, मात्र।
निराकार—(गु.) आकृति रहित।
निरादर—(सं. पु.) अपमान।
निराना—(क्रि.) घास निकालना, सोहना, खेत साफ करना, [निकाना।
निरामय-(गु.) नीरोग,-(पु.) सूअर, वन का बकरा।
निराला—(गु·) एकान्त, अनूठा।
निरामिष-(गु.) मांस विना, विना मांस का (भोजन)।
निराश—(गु.) आशाहीन।
निराश्रय—(गु.) वेसहारे।
निराहार –(पु.) उपवास, (गु·) विना भोजन, विन खाये।
निरीक्षण—(भा. पु.) देखना, दर्शन, भली भांति देखना। [न हो।
निरीह—(गु.) वे चेष्टा, वे इच्छा, जिस को किसी वस्तु की इच्छा
निरुक्त—(सं. पु.) वेद का एक अङ्ग, वेद का व्याकरण और कोष, (गु.) कहा हुआ, कथित।
निरुपम—(गु.) जिस की उपमा न हो सके, जिस की बराबरी नहीं हो सके, अनूप, अपूर्व, अनुपम, लासानी, वेजोड़।
निरुत्तर—(गु.) चुपचाप, अवाक्, परास्त, हारा।
निरुत्साह—(पु.) सुस्त, आलसी, ढीला।
निरुपाधि—(गु·) गुणरहित, वेझगड़ा।
निरूपण—(पु.) वर्णन, निर्णय, विचार।
निर्गत—(क. पु.) निकला हुआ। [निकास।
निर्गम—(भा. पु.) निकलना, बाहर जाना, पानीआदि का
निर्गुण, निर्गुण—(सं. पु.) परमेश्वर, ब्रह्म, परमात्मा, (गु.) निराकार, निरञ्जन, मूर्ख, गुणहीन, निकम्मा।
निघर्षण—(भा. पु.) घिसना, रगड़ना।
निर्घोष—(सं. पु.) मेघ और बिजुली का शब्द। तड़प, गरजन।

निर्जन—(गु.) एकान्त, जहां कोई न हो।
निर्जल—(गु.) मरुदेश, मारवार, जलहीन, सूखा।
निर्जीव—(गु.) अचेतन, जड़, प्राणहीन।
निर्झर—(सं. पु.) पहाड़ का सोता, झरना।
निर्णय—(सं. पु.) निश्चय, फैसला।
निर्णीत—(गु.) ठीक किया हुआ; सिद्धान्त।
निर्दिष्ट—(र्म. पु.) नियत किया हुआ, दिखलाया हुआ।
निर्दोष—(गु.) निरपराध, दोषहीन, बिनचूक।
निर्द्वन्द्व—(गु.) द्वन्द्वरहित, बिन बखेड़े, झंझट रहित।
निर्धन—(गु.) कंगाल, गरीब, दरिद्र।
निर्धारण, निर्धार—(सं. पु.) निश्चय, निर्णय।
निर्बल—(गु.) बलहीन, दुबला, कमजोर।
निर्भय—(गु.) निडर, बेडर।
निर्भर—(गु.) पूरण, पूरा, मुनहसर।
निर्मम—(गु.) ममतारहित।
निर्मय—(गु.) मायारहित।
निर्मयउ—(क्रि.) बनाया, रचा।
निर्मल—(गु.) पवित्र, शुद्ध, साफ, मलरहित।
निर्माण—(सं. पु.) बनावट, रचना, सार।
निर्मित—(र्म. पु.) बनायाहुआ, रचित।
निर्मूल—(गु.) उखड़ा हुआ, बिना जड़ का, बेठिकान, नाश।
निर्मोही—(गु.) दया मोह से रहित, निठुर।
निर्यास—(सं. पु.) गोंद, गंध।
निर्लज्ज, निलज—(गु.) लाजरहित, बेशर्म।
निर्वान—(सं. पु.) मोक्ष, बुतजाना।
निर्वाचन—(सं. पु.) चुनाव।
निर्वासित—(गु.) निकाला हुआ।

निर्लिप्त—(गु०) स्पर्शहीन, जो लिप्त नहीं है ।
निलय—(सं० पु.) घर ।
निवास—(पु०) वासा, घर ।
निवाह—(सं० पु.) निवाह ।
निर्विकल्प—(गु.) भेद और भ्रम से रहित ।
निर्विकार—(गु०) विना दोष, विकार रहित ।
निर्विघ्न—(गु.) वेखटक, वाधा रहित, विना वाधा के
निविड़—(गु०) गहरा, सघन, घना ।
निवेश—(सं० पु०) घर, मकान, वस्ती ।
निवृत्त—(सं० पु.) छूटा हुआ, मुक्त, पाया हुआ, अलग हुआ ।
निवृत्ति—(भा० स्त्री.) छुट्टी, सुख, सिद्धि ।
निशा—(सं० स्त्री०) रात, हल्दी ।
निशाकर—(सं. पु.) चन्द्रमा ।
निशाचर—(क. पु०) राक्षस, रात को चलनेवाला वा खानेवाला ।
निशिमुख—(सं: पु०) संध्या काल ।
निशि, निसि,—(सं. स्त्री.) रात, रात्रि ।
निशित—(ग.) तीखा ।
निशीथ—(सं. पु.) आधी रात ।
निश्वास—(सं. पु.) वाहर निकली सांस ।
निषङ्ग—(सं. पु.) भाथा. तूण, तूणीर, तर्कश ।
निषरण—(गु.) वैठा ।
निषाद—(सं. प०) मल्लाह ।
निषिद्ध—(ग.) रोका हुआ, वर्जित ।
निषेध—(सं. पु.) रोक, नाहीं ।
निष्कपट—(गु.) वेछल का, कपट रहित ।
निष्कृति—(भा० स्त्री.) छुटकारा पाना ।
निष्णात—(गु.) निपुण, प्रवीण, चतुर, पण्डित ।
निष्ठा—(भा. स्त्री.) धर्म में तत्परता, श्रद्धा ।

निष्ठुर—(गु.) कठोर, दयाहीन, निर्दई।
निष्पत्ति—(सं· स्त्री.) सिद्धि, पूरा होना।
निष्पन्न—(गु.) पूरा, सिद्ध।
निष्पन्द—(गु.) निश्चेष्ट।
निष्फल—(ग·) विफल, निरर्थक, फलहीन।
निसेनी—(सं. स्त्री·) सीढ़ी।
निसूदन—(भा· पु.) मारना, खोदना, मारनेवाला।
निस्तार—(सं· पु.) छुटकारा।
निहत—(गु·) मारा गया।
निहार—(सं. पु.) कुहासा।
नीड़—(सं. पु.) घोसला, खोंता।
निहित—(गु.) स्थापित, ।
निहाई—(सं. स्त्री.) लोहे का चोकोर भारी पिण्ड जिस पर घन या हथौड़ी से लोहा पीटा जाता है, लोहकूट।
नीतिज्ञ—(क· पु.) नीति जाननेवाला।
निहार—(सं· पु·) कुहर, कुहेसा।
नीवार—(सं. पु·) धान्य, एक प्रकार का अन्न, तिन्नी का चावल।
नीर—(सं· पु·) पानी।
नीरज—(सं. पु.) कमल, ऊदबिलाव।
नीरद——(सं. पु.) बादल, मेघ, घन।
नीरनिधि—(सं. पु·) समुद्र, सागर।
नीलकण्ठ—(सं. पु.) महादेव, शिव, जिस का गला नीला हो, मोर, एक पक्षी।
नीलमणि—(सं· पु·) नीलम, जमुर्रद।
नीलाभ—(गु.) नीले रंग का।
नीलाम्बर—(सं. पु.) नीला कपड़ा, शनीचर, बलदेव।
नीलोत्पल—(सं· पु·) नीला पत्थर, नील कमल, नीलमणि।

३ घी, ४ गोबर, ५ गोमूत्र। [हवा, और ५ आकाश।
पञ्चतत्त्व—(सं॰ पु॰) पांच भूत अर्थात् १ पृथ्वी, २ पानी, ३ आग, ४
पञ्चदश—(सं॰ पु॰) पन्द्रह।
पञ्चत्व—(सं॰ पु॰) मौत, मृत्यु, मरण।
पञ्चनखी—(सं॰ पु॰) गोह, सिंह।
पञ्चमुख—(सं॰ पु॰) जिस को पांच मुख हो, शिव, महादेव।
पञ्चशर, पञ्चवान—(सं॰ पु॰) कामदेव, मोहना, मस्त करना, सुखाना, सताना या जलाना और शिथिल अथवा अचेत करना ये पांच कामदेव के वाण हैं।
पञ्चानन—(सं॰ पु॰) शिव, सिंह, शेर।
पञ्चाङ्ग—(सं॰ पु॰) तिथिपत्र, पत्रा, पंजिका।
पञ्चामृत—(सं॰ पु॰) दूध, दही, चीनी, घी, मधु।
पञ्जर—(सं॰ पु॰) पंसली, ठठरी, पिंजरा।
पञ्चाल—(सं॰ पु॰) पंजाव देश।
पट—(सं॰ पु॰) कपड़ा, पर्दा, आड़, ओट।
पटतर—(सं॰ पु॰) उपमा, मिशाल
पटतारि—(सं॰ स्त्री॰) पैंजनी, घुघुरू।
पटरानी—(सं॰ स्त्री॰) पहली और बड़ी महारानी।
पटा—(सं॰ पु॰) गदका।
पटल—(सं॰ पु॰) ढकने का कपड़ा, आंख का पर्दा, समूह
पटीर—(सं॰ पु॰) चन्दन।
पटु (गु॰) चतुर, होशियार, तेज, प्रवीण।
पठन—(भा॰ पु॰) पढ़ना।
पटह—(सं॰ पु॰) ढोल, नगारा, वाजा।
पड़ाव—(सं॰ पु॰) टिकान, ठहरने की जगह, छावनी।
पड़ोस—(सं॰ पु॰) आस पास, नजदीक, आमने सामने।
पण—(सं॰ पु॰) प्रतिज्ञा, वचन, बाजी, शर्त्त, व्यवहार, लेनदेन,

पतन, शाक, करार, साग, द०: वस्तुओं को एक पण कहते हैं।
पणव—(सं· पु·) छोटा ढोल, नकारा।
पण्डित—(सं· पु·) बुद्धिमान, विद्वान।
पण्य—(सं· पु·) बेंचने की वस्तु, वाणिज्य, सौदा।
पतङ्ग—(सं· प·) सूर्य, पतङ्गा, गुड्डी, पारा।
पतन—(भा· पु·) गिरना, पछाड़, पटकन, नाश।
पताका—(सं· स्त्री·) धजा, झण्डा।
पति—(सं पु·) स्वामी, भर्त्ता, इज्जत।
पतित —(स· पु·) गिरा हुआ, पापी, धर्म और जाति से भ्रष्ट।
पतितपावन—(क· पु·) पापियों को पवित्र करनेवाला, ईश्वर।
पतिव्रता—(सं· स्त्री·) पतिकोसेवा करनेवाली स्त्री, कुलवती।
पत्तन—(सं· पु·) नगर, शहर।
पत्नी—(सं· पु) स्त्री, नारी, लुगाई।
पत्र —(सं· पु·)पत्ता, चिट्ठी,।
पत्रदाता—(सं· पु·) चिट्ठीरसा, पोष्टमैन।
पत्री, पत्रिका—(सं· पु·) पत्र, चिट्ठी।
पथ—(सं· पु·) रास्ता, मार्ग, डगर।
पथ्य—(सं· पु·) रोगी के हितकारी खाना।
पथिक—(क· पु·) राही, मुसाफिर, बटोही।
पद —(सं· पु·) पांव, पैर, स्थान, प्रतिष्ठा, शब्द, वस्तु, पदार्थ।
पदिक—(सं· पु·) जड़ाऊ चौकी।
पदंचर—(क्रि· वि·) पैदल, पैदल चलनेवाला।
पदज—(सं· पु·) पांव की अंगुली, शूद्र।
पदत्राण—(सं· पु·) जूता, पगरखी, पनही।
पद्म; पदुम—(सं· पु·) कमल, सौनील।
पदाति—(सं· पु·) पैदल, पांव पांव चलनेवाला।
पदाम्भोज, पदारविन्द—(सं· पु·) चरणकमल, कमलके ऐसे पांव।

परशु—(सं· पु·) फरसा, टांगी, कुल्हाड़ी ।
परस—(सं· पु·) छूना, स्पर्श, छूत ।
परस्पर—(क· पु·) आपस में ।
पराक्रम—(सं· पु·) बल, सामर्थ्य ।
पराक्रमी—(गु·) बलवान, साहसी ।
पराग –(सं· पु·) फूलों की पीली बुकनी, धूलि, रेणु ।
परागकोष—(सं· पु.) फूलों की धूलि का खजाना ।
पराङ्मुख—(गु·) विमुख, लज्जित, बागी ।
पराजय, पराभव—(भा· स्त्री·) हार शिकस्त ।
परामर्श—(सं· पु·) विचार, मन्त्र, सलाह, भेद ।
परामर्ष—(सं· पु·) क्रोध, क्षमा ।
परायण—(गु·) तत्पर, लगा ।
पराया—(गु·) दूसरा, और, दूसरे का ।
परास्त—(र्म· पु·) हारा हुआ ।
परि—(उप·) चारों ओर से, हर तरह से, पहले, पास, बहुत, आस [पास, बुरा, आपस में ।
परिकर—(सं· पु·) कमर, नौकर, परिवार, समूह, साज, तैयारी ।
परिक्रमा—(सं· स्त्री·) प्रदक्षिणा ।
परिक्षित, परीक्षित—(सं· पु·) अर्जुन का पोता, हस्तिनापुर का [राजा ।
परिखा—(सं· स्त्री·) खांई, किले के चारो ओर का नाला ।
परिग्रह—(सं· पु·) स्वीकार ।
परिघ—(सं· पु·) लोहे की लाठी, गदा ।
परिघोष—(सं· पु·) गाली, शब्द, मेघशब्द ।
परिचय—(सं· पु·) जानपहचान ।
परिचर्य्या—(सं· स्त्री·) सेवा, उपासना ।
परिचारक—(क· पु·) दास, सेवक, नौकर ।
परिच्छद—(सं· पु·) परिवार, घेरा, भूषण, वस्त्र ।
परम—(गु·) उत्तम, अत्यन्त, अधिक ।

परमा—(सं॰ स्त्री॰) शोभा, छवि।
परमाणु—(सं॰ पु॰) बहुत छोटा, कनिका।
परमार्थ—(सं॰ पु॰) यथार्थ, परोपकार, धर्म, पुण्य।
परमायु—(सं॰ स्त्री॰) पूरी उम्र, बड़ी आयु।
परम्परा—(सं॰ स्त्री॰) रीति, व्यवहार, सदा से चली आती चाल।
परलोक—(सं॰ पु॰) स्वर्ग, मृत्यु।
परवश—(गु॰) पराधीन।
परशु—(सं॰ पु॰) फरसा, कुठार।
परशुधर—(सं॰ पु॰) परशुराम जी।
परसों—(अ॰) आगे वा पीछे का तीसरा दिन।
परस—(सं॰ स्त्री॰) स्पर्श, छूना।
परसत—(क्रि॰) छूतेही।
परसना—(क्रि॰) छूना, भोजन परोसना।
परस्पर—(अ॰) आपस में।
पराक्रम—(सं॰ पु॰) बल, साहस।
पराक्रमी—(गु॰) बलवान, साहसी।
पराकाष्ठा—(सं॰ स्त्री॰) हद्द, सीमा।
पराग—(सं॰ पु॰) धूलि, फूल का रज।
पराङ्मुख—(गु॰) निवृत, हटा, मुंह मोड़े हुये।
पराजय—(सं॰ पु॰) हार, शिकस्त।
पराजित—(गु॰ पु॰) हाराहुआ, शिकस्त खायाहुआ।
परात—(सं॰ पु॰) बड़ाथार।
पराधीन—(गु॰) परवश, परतंत्र।
पराभव—(सं॰ पु॰) हार, शिकस्त।
पराभूत—(गु॰) हाराहुआ, पराजित।
परामर्श—(सं॰ प॰) विचार, सलाह।
परायण—(गु॰) तत्पर।

परावर—(सं॰ पु॰) जड़ चेतन, चर अचर।
परास्त—(गु॰) हाराहुआ।
पराह्न—(सं॰ पु॰) दोपहर के बाद का समय।
परिकर—(सं॰ पु॰) फांड़ा, सामग्री।
परिक्रमा—(सं॰ स्त्री॰) प्रदक्षिणा, चारो ओर घूमना, इधर उधर घूमना।
परिखा—(सं॰ स्त्री॰) खाई, खन्धक।
परिग्रह—(सं॰ पु॰) परिवार, बालबच्चा।
परिघ—(सं॰ पु॰) लोहे की लाठी।
परिचय—(सं॰ पु॰) जान पहचान, तारीफ़।
परिचर्य्या—(सं॰ स्त्री॰) सेवा, टहल, पूजा।
परिचारक—(सं॰ पु॰) सेवक, दास, टहलू।
परिचारिका—(सं॰ स्त्री॰) दासी, टहलनी।
परिचालक—(क॰ पु॰) आस पास में फैलाने वा चलानेवाला, मालिक, मुखिया।
परिचित—(गु॰) जाना पहचाना।
परिच्छद—(सं॰ पु॰) सामग्री, नौकर चाकर।
परिछिन्न—(सं॰ पु॰) आच्छादित, घेराहुआ, तौला वा नापाहुआ।
परिच्छेद—(सं॰ पु॰) अध्याय, भाग, खण्ड, नाप जोख।
परिजन—(सं॰ प॰) कुटुम्ब, परिवार, घराना, घर के लोग, नौकर चाकर।
परिणाम—(सं॰ पु॰) फल, नतीजा, आखिर, अन्त।
परिणत—(क॰ पु॰)भक्त, झुका हुआ, नम्र, दूसरी अवस्था में [पहुंचा।
परिणय—(सं॰ पु॰) विवाह, नम्रता।
परिताप—(सं॰ प॰) दुख, पीड़ा।
परित्याग—(क्रि॰ वि॰) त्याग, छोड़ना।
परितोष—(सं॰ पु॰) सन्तोष।

परित्राण—(सं· पु·) बचाव, रक्षा।
परिधान—(सं· पु·) पहनने का वस्त्र वा कपड़ा।
परिधि—(सं· स्त्री·) गोलरेखा जिस से वृत्त घिरा रहता है, घेरा मेंड़र, मण्डल।
परिपक्क—(गु·) खूब पका हुआ, चतुर, पक्का।
परिपाक—(सं· पु·) फल, नतीजा, हाज़मा, पूरा पक जाना, [पच जाना।
परिपाटी—(सं· स्त्री·) रीति।
परिभव—(सं· पु·) अनादर, हार, तिरस्कार।
परिभाषा—(सं· स्त्री·) व्याख्या, लक्षण, संज्ञा।
परिभूत—(गु·) हारा, पराजित, तिरस्कृत।
परिभृत—(गु·) परिपालित।
परिभ्रमण—(क्रि·) घूमना, टहलना, पर्य्यटन।
परिमल—(सं· पु·) सुगन्ध, सुवास।
परिमाण—(सं· पु·) नाप, तौल।
परिमार्जित—(गु·) शुद्ध, साफ, परिस्कृत।
परिमित(—र्म्म· स्त्री·) नापा हुआ।
परिमिति—(र्म्म· स्त्री·) परिमाण, हद्द, किनारा।
परिरम्भ—(सं· पु·) आलिंगन, मिलना, गले लगाना।
परिवर्तन—(सं· पु·) पलटना, बदलना, अदल बदल, उलटफेर।
परिवर्ता—(गु·) बदलनेवाला, सदा एकसा रहनेवाला।
परिवार—(सं· पु·) कुटुम्ब, घराना, खानदान।
परिवाद—(सं· पु·) निन्दा, अपयश।
परिवेषण—(भा· पु·) परोसना।
परिवेष्टन—(भा· पु·) लपेटना, बांधना, लिफाफा, कवर।
परिवेष्टित—(गु·) लपेटाहुआ, बान्धा हुआ।
परिव्राजक—(क· पु·) संन्यासी।
परिशिष्ट—(सं· पु·) अवशेष, बाकी, तितिम्मा।

परिशोधन—(भा· पु·) ऋण चुकाना, कर्जा अदा करना, बदला लेना।
परिश्रम—(सं· पु·) मिहनत, थकावट।
परिश्रान्त—(गु·) थका मांदा।
परिपद—(सं· पु·) सभा, समाज, दरबार, मजलिस।
परिष्कार—(गु·) सफ़ाई, स्वच्छता, सुथरापन।
परिष्कृत—(र्म्म· पु·) अलंकृत, भूपित, साफ़, सुथरा।
परिहरना—(क्रि· सं·) परिहार, त्यागना, छोड़ना।
परिहार—(भा· सं·) समाधान, खण्डन।
परिहास—(भा· पु·) हसी चुहुल।
परिहास्य—(र्म्म· पु·) हंसने योग्य।
परीक्षक—(क· पु·) परीक्षा करनेवाला, इम्तिहान लेनेवाला।
परीक्षा—(भा· स्त्री·) जांच, इम्तिहान, परख। [जांचाहुआ।
परीक्षित—(र्म्म· पु·) परीक्षा किया हुआ, एक राजा का नाम,
परीक्षोत्तीर्ण—(गु·) इम्तिहान में पास।
परुप—(गु·) कुवचन, गाली, कठोर, कड़ा, रुखड़ा।
परेवा—(सं· पु·) कबूतर, कपोत।
परेखा—(सं· स्त्री·) देखरेख, जांच, परीक्षा।
परोक्ष—(गु·) नहीं देखा हुआ, आंखों के परे, पीछे।
परोहा—(सं· पु·) चरस, मोट, पुर।
पर्ज्जन्य (सं· पु·) मेघ।
पर्ण—(सं· पु·) पत्ता, पान।
पर्णकुटी, पर्णशाला—(सं· स्त्री·) पत्तों की बनी कुटी, झोपड़ी।
पर्ण पुटी—(सं· स्त्री·) पत्तों का बना दोना या दोनी।
पर्य्यटन—(भा· पु·) घूमना, सैर करना।
पर्य्यन्त—(सं· पु·) अन्त, सीमा, हद्द। (अ·) तक, तलक।

पर्य्याप्त—(गु·) पूरा, काफी, समर्थ, योग्य।
पर्य्याय —(सं· पु·) एक अर्थ का शब्द, अनुक्रम, रीति, अवसर, पारी, उर्फ, हममानी।
पर्य्यवेक्षण, पर्य्यालोचना, पर्य्यालोचन —(भा· पु·) सब प्रकार से देखना. गौर करना, विचारना, तजवीज।
पल्लव—(सं· पु·) पत्ता, कोंपल।
पल्लवित—(म्सं· पु·) नये पत्ते वाला, पुलकित, प्रसन्न, (गु·) [बढ़ाया हुआ।
पल्ला—(सं· पु·) कपड़े का छोर, दामन, केवाड़ की पटरी, तख्ता, पक्ष, पीछा।
पर्व—(सं· पु·) त्यौहार, उत्सव, अध्याय, पूर्णमासी, अमावस्या।
पलाण्डु—(सं· पु·) प्याज।
पर्वत—(सं· पु·) पहाड़, एक मुनि, नारदजी के मामा।
पलायन—(सं· पु· (भागना।
पवन—(सं· पु·) हवा। किसी २ हिन्दीकोष में इस शब्द को स्त्रीलिङ्ग लिखा है,आज कल दोनो लिंगमें वर्त्ता जाता है।
पवनकुमार, पवनसुत—(सं· पु.) वायु के पुत्र, हनुमान।
पवि—(सं· पु·) वज्र, हीरा, इन्द्र का शस्त्र।
पवित्र—(गु·) पाक, साफ, निर्मल, शुद्ध, पापरहित।
पशु—(सं· पु·) चौपाया, जीव, गाय घोड़े आदि, देवता, साधारणजीव।
पशुपति—(सं· पु·) शिव।
पश्चात्—(क्रि· वि·) पीछे, इस के पीछे, पश्चिम दिशा की ओर।
पश्चात्ताप—(सं· पु·) पछतावा।
पश्चिम—(सं· पु·) पच्छिम दिशा, पिछला, आखिरी।
पंसली—(सं· स्त्री·) पंजरी की हड्डी, ठटरी।

पसाउ / पसाऊ—(सं· पु·) प्रसाद, प्रसन्नता, कृपा, दया।
पसेव—(सं· पु·) प्रसन्नता, पसीना, प्रस्वेद।
पहं—(अ·) पास, निकट।
पह—(सं· पु·) भोर, सवेरा, तड़का।
पहलू—(सं· पु·) ओर, बगल, पक्ष।
पहल—(सं· पु·) पर्त, पक्ष, रुई का पर्त।
पहला—(गु·) प्रथम।
पहाड़—(सं· पु·) पर्वत, शैल, गिरि, धरती के उस भाग को पहाड़ कहते हैं जो आसपास की धरती से ऊंचा और पथरीला हो।
पहाड़ी—(सं· स्त्री·) छोटा पहाड़, टीला।
पहेली—(सं· स्त्री·) दृष्टिकूट, बुझौवल, जो जल्द समझ में न आवे।
पांशु—(सं· स्त्री·) धूलि, दोष।
पांशुला—(सं· स्त्री·) व्यभिचारिणी स्त्री।
पाक—(सं· पु·) रांधना, रसोई, उल्लू, फलप्राप्ति, दशा, सफेद बाल, एक दैत्य का नाम।
पाकरिपु / पाकारि—(सं· पु·) इन्द्र।
पाककर्त्री—(क. स्त्री·) रसोई बनानेवाली, बावर्चिन।
पाककर्त्ता—(क· पु·) रसोई करनेवाला, बावर्ची।
पाकस्थली—(सं· स्त्री·) पचने की थैली, पाकाशय।
पाकशाला (सं· स्त्री·) रसोई घर।

पाखण्ड—(सं० पु०) छल, मकर।
पाखण्डी—(गु०) छली, मक्कार।
पांखुरी—(सं० स्त्री०) फूल की पत्ती, पंखुरी।
पाग—(सं० स्त्री०) पगड़ी।
पाञ्चजन्य—(सं० पु०) विष्णु का शंख।
पाञ्चाली—(सं० स्त्री०) द्रौपदी।
पाट—(सं० पु०) सन, पटुआ, तसर, राजसिंहासन, (स्त्री) धारा की चौड़ाई।
पाटम्बर—(सं० पु०) रेशमी कपड़ा, तसरी वस्त्र।
पाटल—(सं० पु०) गुलाब का फूल, गुलाबी रंग, पांडुल औषधि।
पाटलिपुत्र—(सं० पु०) पटना नगर।
पाठ—(सं० पु०) पढ़ना, सबक, अध्याय।
पाठक—(क० पु०) पढ़ानेवाला, शिक्षक, गुरु।
पाठन—(सं० पु०) पढ़ाना, सिखाना।
पाठशाला—(सं० स्त्री०) पढ़ाने की जगह, स्कूल, कालिज, मदर्सा।
पाठीन—(सं० पु०) एक प्रकार की हजार दांत वाली मछली।
पाणि—(सं० पु०) हाथ।
पाणिग्रहण—(सं० पु०) विवाह।
पाण्डव—(सं० पु०) पाण्डु के लड़के युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव।
पाण्डु—(सं० पु०) एक प्रकार का रोग, पीला और धौला रंग, उजला रंग, राजा विशेष, फीका।
पातक—(सं० पु०) पाप।
पात्र—(सं० पु०) वर्त्तन, बासन, (गु०) योग्य उचित।
पाथ—(सं० पु०) पानी, अनिल।
पाथेय—(सं० पु०) रास्ते का खाना, राह कलेवा, सम्बल, साम्हर।
पाथोज—(सं० पु०) कमल, जो जल में जन्मे।

पाथोधि—(सं॰ पु॰) समुद्र, सागर।
पाद—(सं॰ पु॰) पांव, चौथा भाग, जड़। [वाला।
पादप—(सं॰ पु॰) वृक्ष, पेड़, पादुका, खड़ाऊं (क॰) पैर से पीने
पादार्घ्य—(सं॰ पु॰) पुण्यजनों को पैर धोने को जलदान।
पादप्रहार—(भा॰ पु॰) लात मारना।
पादुका—(सं॰ स्त्री) खड़ाऊं, जूता।
पादोदक—(सं. पु॰) चरणामृत।
पाद्य—(सं॰ पु॰) पांव धोने का पानी।
पान—(सं. पु॰) पीना, ताम्बूल।
पानिप—(सं॰ स्त्री) शोभा, श्राव।
पानी—(सं॰ पु॰) हाथ, जल, प्रतिष्ठा, पत, लाज।
पान्थ—(सं॰ पु॰) पथिक।
पाप—(सं॰ पु॰) दोप, अपराध।
पापात्मा—(गु॰) पापी, दोपी।
पापिष्ट—(गु॰) बड़ा पापी।
पापमय—(गु॰) पाप से भरा।
पामर—(सं॰ पु॰) नीच, नालायक।
पामा—(सं॰ स्त्री॰) खजुली।
पायस—(सं. पु.) खीर, जावर।
पायक—(सं॰ पु॰) धावन, दूत। [पर जाते हैं।
पायन्दाज—(सं॰ पु॰) पांवपोस, जिसपर पांव पोछकर विछावन
पायल—(सं॰ स्त्री॰) पैजनी, पांवजेव।
पारखी—(गु॰) परखनेवाला।
पारङ्गत, पारग—(गु॰) पार गया हुआ, निपुण, चतुर।
पारद—(सं॰पु॰) पारा, पार करनेवाला।
पारमार्थिक—(क॰ पु॰) श्रेष्ठ, परोपकारी, यथार्थ।

पारागत—(सं० पु०) पार गया हुआ, समर्थ ।
पारस—(सं० पु०) एक प्रकार का पत्थर जिस में लोहा सटने से सोना हो जाता है, परोसा, छन्दा।
पारावत—(सं० पु०) कबूतर, पक्षी।
पारावार—(सं० पु० समुद्र ।
पारिजात—(सं० पु०) देवताओं का वृक्ष, सिंगारहार का पेड़ वा फूल ।
पारितोषिक—(सं० पु०) इनाम, भेंट, दान।
पार्लियामेण्ट (Parliament)—(सं० स्त्री०) महासभा प्रजा-प्रतिनिधि सभा ।
पार्थ—(सं० पु०) कुन्तीपुत्र, युधिष्ठिरआदिपाण्डव। [पृथ्वी का।
पार्थिव—(सं० पु०) राजा, शिव, मूर्ति भेद, (स्त्री०) सीता (गु०)
पारिषद—(सं० पु०) सेवक, सभासद ।
पार्श्व—(सं० पु०) पहलू, पांजर, पाख (गु०) पास, नगीच ।
पार्वण—(सं० पु०) पर्वका श्राद्ध ।
पालक—(क० पु०) पालनेवाला, एक प्रकार का साग ।
पालित—(गु०) पालापोसा हुआ ।
पालन—(भा० पु०) पोषण, रक्षा हिंडोला, झुलुआ, पलना ।
पावक—(सं० पु०) आग ।
पवन—(गु०) पवित्र, पवित्र करनेवाला।
पावरी—(सं० स्त्री०) खड़ाऊं ।
पावस—(सं० पु०) वर्षा ऋतु, वर्षाकाल, बर्सात ।
पाश, पास—(सं० स्त्री०) फन्दा, फंसरी, दो पहाड़ों के बीच की राह को पास या दर्रा कहते हैं (अव्य) निकट ।
पाशवी—(ग०) पशु का सा व्यवहार ।
पाशी—(सं० पु०) वरुण, यमराज ।

पासी—(सं· पु·) एकजात जो ताड़ी उतारता है।
पाषाण, पाहन—(सं· पु·) पत्थर।
पाहरू—(सं· पु·) पहरादार, रक्षक।
पाहि—(क्रि· स·) रक्षा करो, बचाओ।
पाही—(सं· स्त्री·) दूर की खेती।
पिक—(सं· स्त्री·) कोयल, कोकिल।
पिकबैनी—(गु· स्त्री·) कोयल के ऐसे मीठी स्वर से बोलनेवाली।
पिङ्गल—(गु·) पीला, दीया की लौ, छन्दशास्त्र का कर्त्ता, छन्द-ग्रन्थ, चिमगादर, सूर्य्य।
पिञ्जर—(सं· पु·) पिंजरा।
पिछौरी—(सं· स्त्री·) चादर, ओढनी।
पिण्ड—(सं· पु·) पिण्डा, देह, गोलवस्तु।
पिण्डारी—(सं· प·) लुटेरा, डकैत।
पिता, पितृ, पितु—(सं· प·) बाप, देवता, पुरुष।
पितृव्य—(सं· पु·) चचा।
पितृष्वसा—(सं· स्त्री·) फूफी, फूआ।
पितामह—(सं· पु·) दादा, आजा, ब्रह्मा।
पित्त—(सं· पु·) शरीर की एक प्रकार की धातु।
पिनाक—(सं· पु·) शिव का धनुष, शिव का त्रिशूल।
पिपासा—(सं· स्त्री·) पीने की इच्छा, प्यास, तृषा।
पिपीलिका—(सं· स्त्री·) लाल चींटी, पिपली।
पिरोना—(क्रि· सं·) गंथना, तागना।
पिशुन—(सं· पु·) चुगुल, निन्दक, भेदिया, जासूस।
पीड़ा—(सं· स्त्री·) पीर, दुःख, दर्द, व्यथा।

पीठ—(सं॰ पु॰) आसन, पीढ़ा।
पीढ़ी—(सं॰ स्त्री॰) पुरुखा, पुश्त।
पीत—(गु॰) पीला, पियाहुआ।
पीताम्बर—(सं॰ पु॰) रेशमी कपड़ा, मुकुटा पीला वस्त्र, श्रीकृष्ण।
पीन—(गु॰) मोटा, पुष्ट।
पीनस—(सं॰ पु॰) नाक का रोग विशेष।
पीयूष (सं॰ पु॰) अमृत।
पीर—(सं॰ स्त्री॰) पीड़ा, दर्द।
पील (پیل)—(सं॰ पु॰) हाथी।
पीवर—(गु॰) पुष्ट, मोटा।
पीहर (सं॰ पु॰) नैहर।
पुङ्पुष्प—(सं॰ पु॰) फूल जो पुरुष हो।
पुङ्ग—(सं॰ पु॰) सुपारी, पूंगीफल।
पुङ्गकेशर—(सं॰ पु॰) मर्दानाकेशर।
पुङ्गव—(सं॰ पु॰) बैल, श्रेष्ठ।
पुञ्ज—(सं॰ पु॰) ढेर, समूह।
पुच्छल (गु॰) पूंछवाला।
पुट—(सं॰ स्त्री॰) दोना, मिलाव, ढकना।
पुण्डरीक—(सं॰ पु॰) सफेद कमल, बाघ, एक प्रकार का सांप, कोढ़, शरद ऋतु का छाता।
पुण्डरीकाक्ष—(सं॰ पु॰) विष्णु, जिसके कमल के समान नेत्र हों।
पुण्य—(सं॰ पु॰) धर्म, सुकृत।
पुण्यकृत—(क॰ पु॰) धार्मिक।
पुत्र—(सं॰ पु॰) बेटा, लड़का, नरक से बचानेवाला।
पुनरागमन—(भा॰ पु॰) फिर आना, लौटना।
पुनर्विचार—(सं॰ पु॰) अपील।
पुनरुक्ति—(सं॰ स्त्री॰) फिर कहना, दो बार कहना।

पुनरुत्साहित—(गु.) फिर से उत्साह पाये हुआ।
पुनि—(श.) फिर।
पुनीत—(गु.) पवित्र, शुद्ध।
पुमान—(क· पु·) पुरुष, आदमी।
पुर –(सं· पु·) नगर, शहर।
पुरजन—(सं. पु·) पुर के मनुष्य।
पुरजन—(सं. पु·) जीव, एक राजा।
[illegible]र—(गु·) अगुवा, अग्रगामी, पेशवा।
पुरट—(सं· पु·) सोना।
पुरन्दर—(सं· पु·) इन्द्र, शत्रु के नगर को उजाड़नेवाला।
पुरहूत—(सं· पु·) इन्द्र।
पुरस्कार—(सं. पु.) सत्कार, आदर, इनाम, पारितोषिक।
पुरा—(अव्य.) प्राचीन काल में, पुरान समय में, पहले दिनों में।
पुराकृत—(र्म· पु.) पहले का किया हुआ।
पुराण –(सं· पु·) हिन्दुओं के धर्मग्रन्थ जिन्हें व्यास ने रचा। १ ब्रह्मपुरान, २ पद्मपुराण, ३ ब्रह्माण्डपुराण, ४ अग्निपुराण, ५ विष्णुपुराण, ६ गरुड़पुराण, ७ ब्रह्मवैवर्त्तपुराण, ८ शिवपुराण, ९ लिङ्गपुराण, १० नारदपुराण, ११ स्कन्द पुराण, १२ मार्कण्डेय पुराण, १३ भविष्यपुराण, १४ मत्स्यपुराण, १५ वाराहपुराण, १६ कूर्म्मपुराण, १७ वामनपुराण, और १८ श्रीमद्भागवतपुराण ये ही १८ पुराण हैं। (गु.)—पुराना।
पुराणपुरुष—(सं· पु.) विष्णु, भगवान।
पुरातन, पुरातम—(गु.) पुराना, प्राचीन।
पुरावृत्त—(सं. पु·) इतिहास।
पुरी—(सं· स्त्री.) नगरी।
पुरीष—(सं. पु.) विष्ठा, गूह, मल।

पुरारि—(सं॰ पु॰) शिव, महादेव, पुर नामक राक्षस के अरि।
पुरु—(सं॰ पु॰) एक चन्द्रवंशी राजा का नाम, बहुत, अधिक।
पुरुष—(सं॰ पु.) मनुष्य, आदमी, परमेश्वर। [कार।
पुरुषार्थ—(सं॰ पु॰) धर्म, अर्थ काम, मोक्ष, बल, साहस, परोप-
पुरुषोत्तम—(सं॰ पु॰) विष्णु, नारायण, उत्तम मनुष्य।
पुरोडास— सं॰ पु.) होम की सामग्री, घी आदि, हविस, खीर।
पुर्तगीज—(सं॰ पु॰) पुर्तगाल का रहनेवाला।
पुलक—(सं॰ पु॰) आनंद से रोंआं खड़ा होना, रोमांचित होना।
पुलकित—(सं॰ पु॰) आनन्दित, रोमांचित।
पुलिन—(सं॰ पु.) नदी के बीच में बालू का टापू, तट।
पुरोधा, पुरोहित —(सं. पु॰) यजमान के घर व्याह आदि करानेवाला ब्राह्मण।
पुश्त—(सं॰ स्त्री.) पीढ़ी।
पुश्तैनी —(गु॰) बाप दादों से जो चला आता हो, मौरूसी।
पुष्कर—(सं॰ पु॰) कमल, आकाश, पानी, पोखरा, ढोल, तुरही, हाथी की सूंड़।
पुष्करिणी—(सं॰ स्त्री॰) तलैया, पोखरी, हथिनी।
पुष्कल—(गु॰) बहुत, ढेर, पूर्ण।
पुष्ट—(गु.) मोटा।
पुष्टि—(भा॰) पालन, पोषण, तन्दुरुस्ती।
पुष्प, पुहुप—(सं॰ पु॰) फूल।
पुष्पचाप—(सं. पु.) कामदेव।
पुष्पपुर—(सं॰ पु.) कुसुमपुर, पटना, पाटलिपुत्र। [को चढ़ाना।
पुष्पाञ्जलि—(सं॰ स्त्री.) दोनों हाथों में फूल ले मन्त्र पढ़ देवताओं
पुष्पदल—(सं. पु.) फूल का पत्ता, पंखुरी।
पुष्परेणु—(सं. पु.) फूल की धूलि। [सजावट।
पुष्पविन्यास—(सं. पु.) फूल के ऊपर का खोइया, फूलों की

पुस्तकालय—(सं॰ पु॰) किताबों का घर, कुतुबख़ाना, लाइब्रेरी।
पुहुमि—(सं॰ स्त्री॰) पृथ्वी।
पूत—(गु॰) पवित्र, सफा, शुद्ध।
पूति—(भा॰ स्त्री॰) पवित्रता, दुर्गन्ध।
पूरक—(सं॰ पु॰) पूरा करनेवाला, प्राणायाम का भेद।
पूप—(सं॰ पु॰) पूआ, मालपूआ।
पूय—(गु॰) निषिद्ध, पीव, बिगड़ा रक्त।
पूर—(सं॰ पु॰) जल की बाढ़, ज्वार।
पूर्णिमा—(सं॰ स्त्री॰) पूर्णमासी।
पूर्ण—(गु॰) पूरा, समाप्त।
पूज्य—(सं. पु.) पूजनीय, गुरुजन।
पूज्या—(गु.) पूजायोग्य।
पूर्ण—(गु॰) पूरा, भरपूर, सब, समाप्त, तमाम।
पूर्णोन्नति—(सं. स्त्री.) पूरी उन्नति, पूरी तरक्की।
पूर्ति—(सं॰ स्त्री.) पुरौती, जिस से घटी पूरी हो।
पूर्व, पूर्ब—(सं॰ पु॰) पूरब दिशा, (गु.) पहला, पहले।
पूर्वज—(सं॰ पु॰) बड़ा भाई, पुरखे।
पूर्वोत्तर—(सं॰ पु॰) पहले कहे के पीछे, पूरब-उत्तर।
पूर्वोक्त—(सं॰ पु॰) पहले कहा हुआ।
पूर्ववत्—(अ॰) पहले की नाईं।
पूर्वार्द्ध—(सं॰ पु॰) पहला आधा।
पूषन—(सं. पु॰) सूर्य्य।
पृथक्करण—(भा॰ पु॰) अलग करना।
पृथा—(सं॰ स्त्री॰) कुन्ती।
पृथ्वी, पृथिवी, पृथवी—(सं॰ स्त्री.) धरती, ज़मीन।
पृषोदर—(गु.) छोटा पेटवाला।

पृष्ट—(सं. पु.) पूछा गया।
पृष्ठ—(सं. स्त्री.) पीठ, (पु.) सतह, तल। [खेल।
पेखना—(क्रि. स.) देखना, निरखना, परखना। (सं. पु.) स्वांग,
पेटी—(सं. स्त्री) कमरबन्द, पिटारी, छाती।
पेंठ—(सं. स्त्री.) बाजार।
पेनशन (Pension)—(सं. स्त्री.) सहायता, मदद, वज़ीफा।
पेय—(सं. पु.) पानी, पीने योग्य वस्तु।
पेला—(सं. पु.) दोष, अपराध।
पेशी—(सं. स्त्री.) मांस का लोथड़ा।
पैड़ी—(सं. स्त्री.) सीढ़ी।
पैज—(सं. स्त्री.) प्रतिज्ञा, कौल।
पैठ—(सं. स्त्री) षड्‌यन्त्र, बाज़ार, पेठिया, भरोसा।
पैतृक—(गु.) मौरूसी, बपौती।
पैंड़—(सं. पु.) पांव, क़दम, ऊंची धरती।
पैंड़ा—(सं. पु.) राह, डगर, रास्ता।
पैना—(गु.) तीखा, तेज, चोखा।
पैराक—(गु.) तैरनेवाला। [अंगहीन।
पोगण्ड—(सं. पु.) सोलह वर्ष की अवस्था। (गु.) नपुंसक,
पोच—(गु.) नीच, तुच्छ, बुरा, मूर्ख।
पोट—(सं. पु.) लहशुन का जवा, पोटली।
पोत—(सं. पु.) बालक, बच्चा, स्वभाव, काच का दाना, मालगुज़ारी (स्त्री.) नाव, जहाज।
पोतक—(सं. पु.) छोटा बच्चा।
पोर्ट (Port)—(सं. पु.) बन्दर, फाटक, शराब।
पोषण—(भा. पु.) पालन, भरन, रक्षा।
पोहना—(क्रि.) गूथना, पिरोना।
पोष्यपुत्र—(सं. पु.) दत्तकपुत्र, गोद लिया हुआ लड़का।

पौर—(सं॰ स्त्री॰) बड़ा दर्वाजा, फाटक (गु॰) पुरवासी।
पौरिया—(सं॰ पु॰) ड्योढ़ीदार, द्वारपाल, दरबान।
पौरी—(सं॰ स्त्री.) ड्योढ़ी, द्वार।
पौरुष—(सं॰ पु॰) सामर्थ्य, बल, जोर।
प्र—(उप॰) पहले, आगे, चारो ओर से।
प्रकरण—(सं॰ पु.) प्रसङ्ग, खण्ड, अध्याय।
प्रकाम—(गु॰) यथेष्ट।
प्रकाण्ड—(गु॰) बड़ा।
प्रकाश—(सं॰ पु॰) उंजाला।
प्रकीर्ण—(सं॰ पु॰) फैला हुआ, (सं. पु॰) चमर, चौंर, अश्व।
प्रकृत—(सं॰ पु॰) किया हुआ, ठीक ठीक, सच, स्वभाव, असल हालत, प्रसङ्गप्राप्त।
प्रकृति—(सं॰ स्त्री॰) माया, स्वभाव, टेव, आदत।
प्रकृष्ट—(गु॰) उत्तम।
प्रक्रिया—(सं. स्त्री॰) विभाग, रीति, प्रकार, महिमा।
प्रक्षालन—(सं॰ पु.) धोना।
प्रक्षेप—(सं॰ पु॰) फेकना।
प्रखर—(गु॰) बहुत तीखा, घोड़े वा हाथी का बखतर।
प्रख्यात—(गु.) प्रसिद्ध।
प्रगट—(गु॰) प्रकट, जाहिर, प्रसिद्ध, प्रत्यक्ष।
प्रगल्भ—(गु॰) ढीठ।
प्रचण्ड—(गु॰) बहुत तीखा, प्रबल, बहुत क्रोधी।
प्रचलित—(गु॰) व्यवहारी, जारी।
प्रजापति—(सं॰ पु॰) ब्रह्मा, दक्ष, कश्यप आदि।
प्रचुर (गु॰) बहुत।
प्रछन्न—(सं॰ पु॰) गुप्त, ढपा।
प्रज्ञ—(क॰ पु॰) पण्डित, बुद्धिमान्।

प्रज्वलित—(क· पु·) प्रकाशित, चमकीला।
प्रण—(सं· पु·) पण, प्रन, कौल, प्रतिज्ञा।
प्रणत—(सं· पु·) अधीन, शरणागत।
प्रणय—(सं· पु·) प्रेम।
प्रणव—(सं· पु·) ॐम्, वेद का मूलमंत्र, देवताओं का मन्त्र।
प्रणम्य—(पु· क्रि·) प्रणाम कर के, प्रणाम के योग्य।
प्रणाली—(सं· स्त्री·) नाली, परम्परा, रीति।
प्रणिधान—(भा· पु·) मन में ध्यान करना।
प्रताप—(सं· पु·) तेज, महिमा, शोभा, अकबाल, ऐश्वर्य्य।
प्रतारण—(सं· पु·) प्रवञ्चना, छलना, ठगना।
प्रतिकार, प्रतीकार—(सं· पु·) बैर का पलटा, बदला लेना।
प्रतिकूल—(गु·) उलटा, विरुद्ध, बरखिलाफ।
प्रतिक्षेप—(भा· पु·) छितराव, पसार, फैलाव।
प्रतिक्षिप्त—(सं· पु·) फैला हुआ, फैला, छितरा हुआ।
प्रतिग्रह—(सं· पु·) दानलेना, खैरातलेना।
प्रतिघात—(सं· पु·) घाव देना, पोछा मारना, चोटके पलटे चोट।
प्रतिच्छा—(सं· स्त्री) इन्तिजारी।
प्रतिच्छाया—(सं· स्त्री·) परछाईं।
प्रतिज्ञा—(सं· स्त्री·) वचन, कौल।
प्रतिद्वन्द्वी—(क्रि· पु· झगड़ालू, बराबरवाला, शत्रु।
प्रतिध्वनि—(सं· स्त्री·) प्रतिशब्द, गज।
प्रतिनिधि—(सं· पु·) एवज, सदृशता, प्रतिमा, मूरत, मुख्तार।
प्रतिपक्ष—(सं· पु·) वैरी, शत्रु।
प्रतिपद, प्रतिपत्—(सं· स्त्री·) परिवा, पहली तिथि।
प्रतिफल—(सं· पु·) बदला।
प्रतिभा—(सं· स्त्री·) बुद्धि, जेहन।
प्रतिभू—(सं· पु·) जमानतदार, बिचवई जामिन।

प्रतिमा
प्रतिमान } (सं· स्त्री·) मूर्ति, चित्र।

प्रतियोगी—(सं· पु·) वैरी, दुश्मन।

प्रतिरूप—(सं· पू·) छाया, तस्वीर।

प्रतिरोध—(सं· पु.) रोक, बाधा।

प्रतिलिपि—(सं· स्त्री·) नकल।

प्रतिलोम—(सं· पु·) उलटा, नीचजाति, लोम।

प्रतिबाद—(सं· पु·) जवाब, खण्डन।

प्रतिवादी—(सं· पु·) मुद्दालह।

प्रतिवासी—(सं· प·) पड़ोसी।

प्रतिविम्ब—(सं· पु·) छाया, परछांई।

प्रतिहारी—(सं· स्त्री.) महल की चोपदारिन।

प्रत्यंचा—(सं· स्त्री·) रोदा, चिल्ला, धनुष की डोरी।

प्रत्यवाय—(सं· पु·) पाप, दोष।

प्रत्यह (अ·) प्रतिदिन, रोजरोज।

प्रत्याशा—(सं· स्त्री·) राह देखना, बाट जोहना।

प्रत्युपकार—(सं· पु·) उपकार का बदला।

प्रत्यूष—(सं. पु·) सबेर, भोर।

प्रत्यूह—(सं· पु·) विघ्न, बाधा।

प्रथा—(सं· स्त्री·) रीति, चाल,यश।

प्रदोष—(सं· पु·) सन्ध्या समय।

प्रतिपन्न—(सं· पु·) अङ्गीकार किया हुआ, प्राप्त, शरणागत।

प्रतिपादन—(सं· पु·) त्याग, कथन, बोध।

प्रतिपाल, प्रतिपालन—(सं. पु·) पोषण, भरन, पालन।

प्रतिपादक—(सं· पु·) कहनेवाला।

प्रतिपाद्य—(गु·) कथनयोग्य।

प्रतिपत्ति—(सं· स्त्री.) गौरव।

प्रतिपालक—(क॰ पु॰) पालनेवाला।
प्रतिफल—(सं॰ पु॰) बदला।
प्रतिफलित—(गु॰) फैला हुआ, लौटा हुआ, पलटा, गिरा हुआ, [छितराया हुआ।
प्रतिबन्ध—(भा॰ पु॰) रोक।
प्रतिभा—(सं॰ स्त्री॰) समझ, बुद्धि, जोत, चमक।
प्रतिमा, पतिरूप—(सं॰ स्त्री॰) मूरत, पुतली, प्रतिविम्ब।
प्रतिरोधक—(क॰ पु॰) रोकनेवाला।
प्रतिलिपि—(सं॰ स्त्री॰) समान लेख, नक़ल।
प्रतिलोम—(सं॰ पु॰) उलटा, विपरीत, हरएक रोम।
प्रतिवादी—(क॰ पु॰) विरोधी, मुद्दालेह।
प्रतिवासी—(क॰ पु॰) पड़ोसी।
प्रतिविम्ब—(सं॰ पु॰) पर्छाईं, परछाहीं।
प्रतिश्रय—(क्रि॰ वि॰) अङ्गीकार, मंजूर।
प्रतिषेध—(सं॰ पु॰) निषेध।
प्रतिष्ठा—(सं॰ स्त्री॰) बड़ाई, आदर, नाम, स्थापना।
प्रतिसंहार्य्य—(सं॰ पु॰) लौटालेने के योग्य, अस्त्रादि।
प्रतिहार, प्रतीहार—(सं. पु॰) द्वारपाल, ड्योढ़ीदार, सिपाही, उपाय, ग्रहण, त्याग।
प्रतीक—(सं. पु॰) चिन्ह, मूर्ति।
प्रतीकार—(सं॰ पु॰) बचाव, हटाना, यत्न, उपाय, चारा।
प्रतीची—(सं॰ स्त्री॰) पश्चिमदिशा।
प्रतीत—(सं॰ पु.) विश्वास, ज्ञान।
प्रतीति—(सं॰ स्त्री.) विश्वास।
प्रतीप—(गु॰) प्रतिकूल।
प्रत्यक्ष—(गु॰) सन्मुख, सामने।
प्रतीक्षा—(सं॰ स्त्री॰) बाट देखना, अपेक्षा।

प्रत्यय—(भा॰ पु॰) व्याकरण में जो शब्द धातु और क्रिया में जोड़ा जाता है, प्रतीति, ज्ञान, विश्वास।
प्रत्यह—(क्रि॰ वि॰) रोज़ रोज़, भोर ही, नित्यही, नित उठ।
प्रत्यूह—(सं॰ पु॰) विघ्न, उपद्रव।
प्रथा (सं॰ स्त्री॰) नियम, प्रणाली, यश, विस्तार।
प्रथित—(मं॰ पु॰) प्रसिद्ध।
प्रद—(क॰ पु॰) देनेवाला।
प्रदक्षिण—(सं॰ स्त्री॰) परिक्रमा, फेरा।
प्रदर्शित—(सं॰ पु॰) दिखाया हुआ, बताया हुआ।
प्रदर्शनी—(सं॰ स्त्री॰) नुमायश, शोभा, सजाव।
प्रदत्त—(सं॰ पु॰) दिया हुआ।
प्रदान—(सं॰ पु॰) दान।
प्रदेश—(सं॰ पु॰) मुल्क, देश।
प्रदोष—(सं॰ पु॰) सन्ध्या।
प्रद्य म्न—(सं॰ पु॰) श्रीकृष्ण का बेटा, कामदेव का अवतार।
प्रधान—(सं॰ पु॰) ईश्वर, मुखिया, मंत्री, माया, महत्तत्व।
प्रधानाध्यक्ष—(सं॰ पु॰) मुख्य स्वामी, मुख्य अधिकारी।
प्रपञ्च—(सं॰ पु॰) माया, फैलाव, संसार, बखेड़ा, कपट।
प्रपात—(सं॰ पु॰) किनारा, बेसहारा, निर्झर, पतन, गिरना, झर्ना।
प्रपितामह—(सं॰ पु॰) परदादा, पुरुषा, ब्रह्मा।
प्रफुल्ल, प्रफुल्लित—(गु॰) फूला हुआ, प्रसन्न, आनन्दित।
प्रबन्ध—(सं॰ पु॰) लेख, बन्दोबस्त, इन्तज़ाम, यत्न, उपाय।
प्रबन्धक—(सं॰ पु॰) प्रबन्धकर्त्ता।
प्रबन्धकारिणी—(गु॰) बन्दोबस्त करनेवाली।
प्रबल—(गु॰) बलवान, बली।
प्रवाल—(सं॰ पु॰) मूंगा, नयापत्ता, कोंपल।
प्रबुद्ध—(गु॰) ज्ञानी, समझदार।

प्रबोध } —(सं. पु.) ज्ञान, समझाना, सन्तोष, तसल्ली।
प्रबोधन }
प्रभंजन—(सं. पु.) वायु, हवा, (क. पु.) तोड़नेवाला।
प्रभा—(सं. स्त्री.) चमक, शोभा, छवि, कान्ति।
प्रभाकर—(सं. पु.) सूर्य्य, चांद, आग।
प्रभात—(सं. पु.) भोर, सुबह, विहान।
प्रभाव—(सं. पु.) तेज, प्रताप।
प्रभास—(सं. पु.) एक तीर्थ।
प्रभु—(सं. पु.) मालिक, स्वामी।
प्रभुता—(भा. स्त्री.) बड़प्पन, बड़ाई, ईश्वरता।
प्रभुत्व—(भा. पु.) महिमा, बड़प्पन, बड़ाई।
प्रभूत—(गु.) ढेर, बहुत।
प्रभृति—(अ.) प्रकार, आदि, इत्यादि, और सब।
प्रमथ—(सं. पु.) महादेव के एक गण का नाम।
प्रमदा—(सं. स्त्री.) स्त्री, रूपवती स्त्री।
प्रमर—(सं. पु.) पंवार, पम्मार, राजपूतों की एक जाति।
प्रमा—(सं. स्त्री.) यथार्थ ज्ञान।
प्रमाण—(सं. पु.) माप, तौल, सबूत।
प्रमाद—(सं. पु.) नशा, पागलपन, चूक, भूल, असावधानी।
प्रमादी—(क. पु.) बौड़ाहा, मूर्ख।
प्रमुदित—(गु.) प्रसन्न, खुश।
प्रमुख—(गु.) मान्य, मुखिया, आदि, वगैरह।
प्रमेह—(सं. प.) एक रोग जिस से धातु बिगड़ जाता है।
प्रमोद—(गु.) हर्ष, खुशी, हुलास।
प्रयत्न—(सं. प.) अधिक उपाय, बहुत श्रम।
प्रयाण—(सं. पु.) धावा, कूच, यात्रा।
प्रयास—(सं. पु.) परिश्रम, मिहनत।

प्रयोग—(सं॰ पु॰) अनुष्ठान, वशीकरण, उदाहरण, काम, नियुक्त करना, वर्त्ताव, प्रयोजन।

प्रयोजनीय—(सं. पु॰) काम के योग्य, आवश्यक।
प्ररोह—(भा॰ पु॰) चढ़ना (सं. पु.) अंकुर।
प्रलय—(सं॰ पु॰) कल्प का अन्त, युगान्त।
प्रलम्ब—(गु॰) विशाल।
प्रलाप—(सं॰ पु॰) वृथा वकवाद।
प्रवञ्चना—(सं॰ स्त्री॰) ठगना, धोखादेना।
प्रलोभन—(सं॰ पु॰) लुभाना, फुसलाना।
प्रवर्त्तक—(क॰ पु॰) आरम्भ करनेवाला, प्रेरक, प्रचार करनेवाला
प्रवर्षण—(सं॰ पु॰) बहुत बरसानेवाला, बहुत वर्षा, किष्किन्धापुरी के पास का एक पहाड़ जिस पर राम लक्ष्मण वर्षाकाल में रहे थे।

प्रवास—(सं॰ प॰) विदेश।
प्रवासी—(सं॰ पु॰) परदेशी।
प्रवाह—(सं॰ पु॰) धारा, वहाव, सोता।
प्रवाहक—(क॰ पु॰) बहुत बहानेवाला, गाड़ीवान, संग्रहणी, दस्त।
प्रविष्ट—(गु॰) घुसा हुआ, प्रवेश किये हुआ।
प्रवीण—(गु॰) चतुर।
प्रवृत्ति—(सं॰ स्त्री॰) किसी काम में लगना, अभ्यास, वार्त्ता, समाचार, धारा, इच्छा।
प्रवेश—(भा॰ पु॰) घुसना, भीतर जाना।
प्रशंसा—(सं॰ स्त्री॰) बड़ाई, स्तुति, तारीफ।
प्रशमन—(सं॰ पु॰) शांत करना।
प्रशस्त—(गु॰) सराहने योग्य।
प्रशस्ति—(सं॰ स्त्री॰) सराहना, बड़ाई, स्तुति, तारीफ, प्रशंसा।
प्रसन्न—(क. पु॰) हर्षित, आनन्दित, कृपालु, अनुकूल।

प्रशान्त—(भा॰ पु॰) शान्त, स्थिर, एक महासागर का नाम (Pacific Ocean).
प्रष्टव्य—(स॰ पु॰) पूछने योग्य।
प्रश्वास, पश्वास—(सं॰ पु॰) सांस फेंकना, सांस छोड़ना।
प्रश्न—(सं. प॰) पूछना, सवाल।
प्रसङ्ग—(सं॰ प॰) प्रस्ताव, कथा।
प्रसव—(सं॰ पु॰) जन्मना, जन्म।
प्रसाद—(सं॰ प॰) देवता का नैवेद्य, गुरु का जठा; कृपा, दान, [भोजन।
प्रसारण—(भा॰ प॰) फैलाना, पसारना।
प्रसिद्ध—(गु॰) विख्यात, नामवर, प्रगट, मशहूर।
प्रसूति—(सं॰ स्त्री॰) प्रसव, सन्तान, उत्पत्ति, जननी, माता।
प्रसून—(सं॰ पु॰) फूल, फल, (गु॰) पैदा हुआ।
प्रस्ताव—(सं॰ पु॰) अवसर, चर्चा, प्रसंग।
प्रस्तार—(भा. पु॰) फैलाव।
प्रस्तावना—(भा॰ स्त्री.) भूमिका, प्रार्थना, वर्णन।
प्रस्तुत—(गु॰) सराहा हुआ, उद्यत, तैयार, पूरा किया हुआ, [हाज़िर।
प्रस्थान—(सं. पु.) कूच, गमन, यात्रा, गवन।
प्रस्फुटित—(गु.) खिलाहुआ।
प्रस्फुरक—(सं॰ पु॰) हवा से जलने योग्य वस्तु, फास्फरस।
प्रहर—(सं॰ पु॰) पहर, चार घड़ी का समय, तीन घंटे।
प्रहसन—(भा॰ पु॰) हास्यरस का नाटक, खेल, जीलगी, हंसी, तफरीह।
प्रह्लाद—(सं. पु॰) ईश्वर का एक भक्त, हिरण्याक्ष का पुत्र, आनन्द
प्रहार—(भा॰ पु.) चोट।
प्रकार—(सं॰ पु॰) किला की चाहारदीवारी, शहरपनाह, गढ़ की वाहरी दीवार।
प्राकृत } प्राकृतिक }—(गु.) नीच, स्वाभाविक, एक प्रकार की भाषा जो संस्कृत से बिगड़ कर बनी है।

प्राङ्गण—(सं• पु•) आंगन।
प्राइवेट—(Private)—(गु.) खानगी, खास, निज का, गुप्त।
प्राइवेट सेक्रेटरी (Private Secretary)–(सं• प•) गुप्तरीति से विचार देनेवाला।
प्राकृतइतिहास—(सं• प•) भौतिक इतिहास, जन्तुओं का इतिहास, जानवरों का हाल।
प्राची—(सं• प•) पूर्व दिशा।
प्राचीन—(गु•) पुराना, पहले समय का।
प्राचीर—(सं• पु•) नगर का घेरा, नगर के चारो ओर की दीवाल, किले की बाहरी चाहारदीवारी।
प्राण –(सं• पु•) जीव, श्वास, सांस।
प्राणनाथ—(सं• प•) पति, प्रीतम, मालिक।
प्राणायाम—(सं• पु•) सांस रोकना।
प्राणी—(सं• पु•) जीवधारी, जीव, (गु•) जीववाला।
प्रायद्वीप—(सं• पु•) जिस जमीन के तीन तरफ पानी हो।
प्रायश्चित—(सं• पु•) पाप दूर करने का साधन।
प्राज्ञ—(सं• पु•) पण्डित, चतुर।
प्रादुर्भाव—(भा• प•) प्रगट होना, निकलना, उगना।
प्रान्त—(सं• पु•) अन्त, छोर, सूवा।
प्राप्त—(सं• पु.) पाया हुआ, मिला हुआ, लब्ध, उचित।
प्रान्तर—(सं• पु•) पांतर, जहां पेड़ पानी न मिले वैसा बड़ा मैदान।
प्राप्ति—(सं• स्त्री•) पाना, लाभ, बढ़ती।
प्राप्य—(सं• पु•) पाने योग्य।
प्रायः, प्रायशः—(क्रि• वि•) बहुधा, बहुत बार।
प्रारब्ध—(सं• पु• स्त्री•) भाग्य।
प्रारम्भ—(भा• पु•) आरम्भ, शुरू।
प्राविट, प्रावृट—(सं• प•). वर्षाकाल।

प्रिवीकौन्सिल (Privy-council)—(सं॰ स्त्री॰) गुप्त सभा जिस में बादशाह राजकाज के विषय में विचार करता है।
प्रिज़्म (Prism)—(सं॰ पु॰) तिनपहल शीशा।
प्रिय—(सं॰ प॰) पति, भर्त्ता, (गु.) स्नेही, प्यारा।
प्रिंस (Prince)—(सं. पु॰) राजकुमार।
प्रेक्षक—(क॰ पु॰) द्रष्टा, देखनेवाला।
प्रेक्षण—(सं॰ पु॰) दर्शन।
प्रेमाश्रुपात—(भा॰ पु॰) प्रेम का आंसू गिरना।
प्रेमी—(गु.) प्यार करनेवाला, स्नेही, प्रियतम।
प्रेयसी—(सं॰ स्त्री॰) प्यारी।
प्रेमरङ्गराती—(गु॰) प्रेम से भींगी हुई।
प्रेरणा—(भा. पु॰) भेजना, आज्ञा करना, उभाड़ना।
प्रेरित, प्रेषित—(सं॰ पु॰) भेजा हुआ।
प्रोक्त—(गु॰) कहा हुआ।
प्रेस (Press)—(सं॰ पु॰) छापाखाना, छापने की कल।
प्रेसिडेंट (President)—(सं॰ पु॰) मुखिया, सभापति।
प्रोग्राम (Programme)—(सं॰ पु॰) होने वाले कामों का तिथिपत्र, ब्यौरा।
प्रोक्षक—(क॰ पु॰) सींचनेवाला।
प्रौविंस (Province)—(सं॰ पु.) प्रदेश, सूबा।
प्लव (सं॰ पु॰) मेड़क, डोंगा, वानर, चाण्डाल, बगुला, सारस, नम्र, डूबना।
प्लवग—(सं॰ पु॰) वानर, मेडक, बेंग।
प्लावित—(गु॰) डूबा हुआ, जलमयी।
प्लीहा—(सं. स्त्री॰) पिलही, तापतिल्ली।
प्लुत—(सं॰ पु॰) स्वरों का तीसरा भेद जिस के बोलने में ह्रस्व से तिगुना का काल लगे, कूदना, फांदना।

प्लेग (Plague)—(सं॰ पु॰) महामारी रोग, ताऊन।
प्लेटो—(सं॰ पु॰) ऊंचे डेल्टा को प्लेटो कहते हैं।

फ

फ—(सं॰ पु॰) साधन, वायु का झकोर, पकड़, फटकार।
फटिक—(सं॰ पु॰) बिल्लौर का पत्थर, स्फटिक।
फड—(सं॰ पु॰) दाव।
फण—(सं॰ पु॰) सांप का फैला हुआ सिर।
फणधर, फणधारी, फणिक फणी —(क॰ पु॰) फणवाला सांप।
फणीश, फणीन्द्र—(सं॰ पु॰) सर्पराज, शेष, वासुकी।
फण्ड (Fund)—(सं॰ पु॰) मूलधन, पूंजी।
फफाना—(क्रि॰) उतराना, उठना।
फब, फबन—(भा॰ स्त्री॰) शोभा, सजावट।
फरी—(सं॰ स्त्री॰) ढाल।
फर्नहाइट (Fahrenhejt)—(सं॰ प॰) एक यंत्र जिस से गर्मी सर्दी नापी जाती है।
फरोख़्त (فروخت)—(सं॰ प॰) बिक्री, बेंचना।
फलक—(सं॰ प॰) ढाल।
फलतः—(क्रि॰ वि॰) इस लिये।
फलाङ्ग—(सं॰ स्त्री॰) कूद।
फलित—(गु॰) फला हुआ, सफल।
फलितार्थ—(सं॰ पु॰) तात्पर्य्य, सिद्ध, सारांश।
फली—(सं॰ स्त्री॰) छीमी।
फलोत्तमा—(सं॰ स्त्री॰) द्राक्षा वृक्ष, मुनक्का।
फहम—(सं॰ पु॰) समझ।
फांक—(सं॰ स्त्री॰) छेद, टुकड़ा।

फाएट—(सं॰ पु॰) एक प्रकारका कांटा, जूस।
फांफ—(सं॰ पु.) उठान, उतराव।
फावड़ा—(सं॰ पु॰) कुदाल, कुदारी।
फिट—(क्रि॰ वि॰) छीछी।
फिरंगी—(सं. पु.) अंगरेज, यूरोप के रहनेवाले।
फिरकी—(सं॰ स्त्री॰) चकई।
फिरती—(सं॰ स्त्री॰) एकप्रकार का भोजन, खाना।
फिल्टर (Filter)—(सं. पु॰) पानी छानने की कल।
फिल्ली—(सं. स्त्री.) पिएडली।
फ्री (Free)—(गु॰) माफ, मुक्त, छूटा, आजाद, स्वाधीन।
फुर—(गु॰) सच, ठीक।
फुलस्टाप (Fullstop)—(सं. पु.) जहां पूरा ठहराव होता है वहां यह (·) चिन्ह रहता है, पूरा विराम।
फूही—(सं॰ स्त्री.) झींसी, झीनी २ बंद, फुनारी।
फेन—(सं॰ पु॰) झाग, कफ, फेना, समुद्रफल।
फेनवाही—(सं॰ पु॰) जल, रस, दूध, समुद्र।
फेफड़ा—(सं॰ पु.) फुसफुस।
फेट—(सं॰ पु॰) चक्कर, घुमाव, दूरी, पेच, ग्रंसूचन, फिर।
फोकट—(सं॰ पु) कङ्काल, मुफ्त, सेंतमेंत।
फोर्ट (Fort)—(सं॰ पु॰) किला, गढ़, कोट।
फौलाद (فولاد)—एक प्रकार का लोहा, इस्पात।
फ्रथ या इस्चुआरी (Frith or Estuary)—(सं॰ पु॰) उस को कहते हैं जहां नदी बहुत चौड़ी होकर समुद्र में मिलती है।
फ्रीहैएड—(गु॰) जो चित्र देख कर हाथ से खींचा जाता है उसे फ्रीहैएड कहते हैं।

व

व—(सं॰ पु॰) वरुण, घड़ा, समुद्र, पानी।
वंश—(सं॰ पु॰) सन्तान, बांस।
वंशक्षीरी—(सं॰ पु॰) वंशलोचन।
वंग—(सं॰ पु॰) बङ्गालदेश, बङ्गला, भस्म।
वन्दनवार—(सं॰ स्त्री.) फूल और पत्तों की माला जिसे व्याह अथवा किसी उत्सव और पर्व के दिन दरवाजे पर बांधते हैं।
वंदीगृह—(सं॰ पु॰) जेलखाना, कैदखाना।
वन्धुवा—(सं॰ पु॰) कैदी।
वन्दीजन—(सं॰ पु॰) यश बखाननेवाले।
वंद्योपाध्याय—(सं॰ पु.) बङ्गाली ब्राह्मणों की उपाधि, जिसे बनर्जी भी कहते हैं।
बक, बगला—(सं॰ पु॰) बकुला, बगुला, एक फूल।
बकसूआ—(सं॰ पु॰) चपरास।
बकासुर—(सं॰ पु॰) एक राक्षस का नाम जो बगुला बन कर श्रीकृष्ण को मारने आया था।
बकुल—(सं॰ पु॰) मौलसिरी।
बकेन—(गु॰) बहुत दिन की व्याई गाय भैंस।
बखरी—(सं॰ स्त्री॰) घर, मकान।
बखान—(सं॰ पु॰) प्रशंसा, तारीफ।
बखार—(सं॰ पु॰) अन्न की कोठी।
बखेरना—(क्रि॰) छीटना, बरात वगैरह में पैसे रुपया लुटाना (बखेर)।
बक्रदन्त—(सं. पु.) दन्तवक्र, शिशुपाल का भाई।
बगछूट—(सं॰ स्त्री.) सरपट, धावा।
बंगा—(गु.) उल्लू, नासमझ, बंगट, कपास।

बगपांति—(सं. स्त्री.) बगुले की पांती ।
बगमेल—(सं. पु.) बहुत पास, वाग(लगाम) में वाग का मिलजाना, दो दल का मेल ।
बगराना—(क्रि.) छितराना, फैलना, छहरजाना ।
बगार—(सं. प.) चरागाह, वाग, छितराव ।
बघारना—(क्रि०) छौकना, झूठीवात बनाना ।
बच—(सं. पु.) वचन, वाक्य, एक दवा, सुगन्ध द्रव्य ।
बच्छ—(सं. पु.) वत्स, लाल, प्यारा, बच्चा, लड़का, बछड़ा, बछरा
बच्छल—(सं. पु.) वत्सल, प्यारा, छोहीं, दयालु ।
बच्छासुर—(सं. पु.) एक राक्षस का नाम जो कंस के कहने से बछरा बन कर श्रीकृष्ण को मारने आया था ।
बजरा—(सं. पु.) नाव विशेष ।
बंजर—(सं. पु.) धरती जो जोती बोई न जावे, ऊसर, टांड़ ।
बज्र—(सं. पु.) बिजली, इन्द्र का शस्त्र, हीरा, कड़ा ।
बजूङ्ग—(सं. पु.) बज्राङ्ग, हनुमान ।
बट—(सं. पु.) बड़ ।
बटेर—(सं. स्त्री.) एक पक्षी का नाम ।
बटपार—(सं. पु.) लुटेरा ।
बटवार—(गु.) कर उगाहनेवाला ।
बटाऊ—(सं. पु.) बटोही, राही ।
बटोही—(सं. पु.) राहगीर, मुसाफिर ।
बड़ेरा—(गु.) अधिक बड़ा, मुख्य ।
बटवारा—(सं. पु.) भाग, अंश, बांट, बखरा ।
बटाऊ—(सं. पु.) मुसाफिर ।
बटु—(सं. पु.) ब्रह्मचारी, विद्यार्थी ।
बट्टा—(सं. पु.) भांज, दोष, कलंक, डिब्बा, संपुट ।
बड़वानल—(सं. पु.) समुद्र के भीतर की आग ।

बढ़ावा—(सं· पु·) उत्साह, छींटा, उभाड़।
बढ़िया (गु·) उत्तम, अच्छा।

बढ़ती
बढ़न्ती —(सं· स्त्री·) उन्नति, तरक्की।

बढ़ना—(क्रि·) उठना, उन्नत होना, फटजाना, ओराजाना, वुतजाना, गुल होजाना।
वणिक—(क· पु·) बनियां, सौदागर, व्यापारी।
वतराना—(क्रि·) बातचीत करना।
वतूनी—(गु.) बात बनानेवाला, गप्पी।
वत्सल—(गु·) मोही, दयालु, प्यार करनेवाला।
वत्तक—(सं· स्त्री·) जलपत्ती।
बत्तीसी—(सं. स्त्री·) दांतों की लड़ी, सब दांत।
वद—(गु·) बुरा, (क्रि·) कहो, बोलो।
वदन—(सं· पु·) मुंह, शरीर।
वदर—(सं· पु·) बेर का फल, काटदेना, नामंजूर करना।
वदरी—(सं· स्त्री·) बेर, एक फल का नाम, वादल, घटा।
वदा—(गु·) होनहार, होनी, लिखा।
वध—(सं· पु·) हत्या, हिंसा, मारना।
वधिक—(सं· पु·) व्याधा, बहेलिया, मारनेवाला।
वधिर—(गु·) वहिरा।
वधू—(सं· स्त्री.) बहू, लड़के की स्त्री, कुलवधू=कुल की स्त्री, देववधू=देवताओं की स्त्री।
वधूटी—(सं· स्त्री·) जवान स्त्री।
वद्ध—(गु·) बांधा।
वध्य—(गु·) मारने योग्य।
वनजारा—(सं· पु·) अन्न का व्यापारी, जो बैलों पर लाद कर ले आता है।

वन्दर—(सं॰ पु॰) वानर।
वनज—(सं॰ पु॰) कमल।
वनिज—(सं॰ पु॰) व्यापार, सौदागरी।
वनमाला / वनमाल —(सं॰ स्त्री॰) तुलसी, कुन्द, मन्दार, पारिजात, कमल इन पांच फूलों की बनी माला।
वनाव—(सं॰ पु॰) मेल, सिंगार, सजाव।
वनरा, वनरी—(सं॰ स्त्री॰) दुलहा, दुलहिन।
वन्दरगाह—(सं॰ स्त्री॰) समुद्र की कोल जहां जहाज आकर लंगर डालता है।
वन्दी—(सं॰ पु॰) कैदी, बंधुवा, माथे पर का गहना, यश वर्णन करनेवाली एक जाति।
वनौठी—(सं॰ स्त्री॰) कपास।
वन्ध—(सं॰ पु॰) बांध, कमल आदि काव्यचित्र।
वन्धक—(सं॰ पु॰) थाती, गिरों, रेहन।
वन्धन—(सं॰ पु॰) गांठ, कैद।
वन्धु—(सं॰ पु॰) भाई, मित्र।
वन्धूक—(सं॰ पु॰) एक तरह का लाल फूल, दुपहरिया।
वन्धेज—(सं॰ पु॰) नियम, रोजीना।
वन्ध्या—(गु॰) बांझ।
वन्य—(गु॰) वनैला।
वपु—(सं॰ पु॰) शरीर, देह।
वपुरा, वापुरा—(गु॰) अनाथ, दीन, विवश, वेचारा।
वयार—(सं॰ स्त्री॰) हवा, वतास।
वर—(सं॰ पु॰) वरदान, पति, दुलहा, (गु॰) अच्छा, श्रेष्ठ।
वरतना, वर्तना—(क्रि॰) काम में लाना।
वरत—(सं॰ स्त्री॰) चमोटी, रस्सी, डोरी।

वरन—(क्रि॰ वि॰) वल्कि।
वरना—(भा॰ क्रि॰) व्याह करना, पसन्द करना, चुनना, जलना।
वरवस—(सं॰ पु॰) वलात्कार, जोरावरी, वरजोरी (क्रि॰ वि॰) जवरदस्ती से, हठ से।
वरसौड़ी—(सं॰ स्त्री॰) सालियाना महसूल।
वरहा—(सं॰ पु॰) चरागाह, सन या चाम का मोटा रस्सा।
वरही—(सं॰ पु॰) मयूर, मोर, (स्त्री॰) कपास।
वराह—(सं॰ पु॰) सूअर, विष्णु का तीसरा अवतार, शूकर।
वरिवएड—(गु॰) जोरावर, दुष्ट।
वरु—(क्रि॰ वि॰) चाहे, भला, लेकिन।
वर्व्वर—(ग॰) मूर्ख, जंगली, वक्की।
वर्रे—(सं॰ पु॰) मुहासा, विरनी, कुसुम का वीआ।
वल—(सं॰ स्त्री॰) ऐंठ, मरोड़ (पु) ताकत।
वलभद्र, वलदाऊ,—(सं॰ पु॰) वलराम, श्रीकृष्ण का वड़ा भाई।
वलवीर—(सं॰ पु.) श्रीकृष्ण।
वलाका— सं॰ स्त्री॰) वकपंक्ति।
वलात्कार—(सं॰ पु॰) हठ, वरजोरी, जवरदस्ती।
वलकाना—(क्रि॰ स॰) कुदाना।
वलाहक—(सं॰ पु॰) वादल।
वलिभुक्, वलिभख, वलीभुक्—(सं॰ पु.) कौआ, काग।
वलिष्ठ—(गु॰) वलवान।
वलित—(गु॰) पूरा, भरा, वांका किया, फेरा हुआ।
वलीमुख—(सं॰ पु.) वानर।
वलीवर्द—(सं॰ पु॰) वड़ा वैल, सांढ़।
वल्ला—(सं॰ पु) काठ की वड़ी धरन।
वल्लरी—(सं॰ स्त्री॰) लता, लत्तर।

बवंडर—(सं· पु·) हवा के पेंचदार झोंक, बौंड़ेरा।
बसन—(सं· पु.) कपड़ा। [बहार।
बसन्त—(सं· स्त्री·) एक ऋतु जो चैत बैसाख में होती है, मौसिम
बसन्ती—(सं· पु·) पीला रंग, (गु·) पीला।
बसाय—(क्रि·) वश चलना।
बसु—(सं· पु·) आठ, धन, एक देवजाति।
बसुदेव—(सं· पु·) श्रीकृष्ण का बाप, शूरसेन का बेटा।
बसुधा, बसुन्धरा, बसुमति—(सं· स्त्री·) पृथ्वी।
बसेरा—(सं· पु·) रहना, टिकना, टिकने की जगह।
बहन करना—(क्रि·स·) ढोना, बोझ सहना। [खींचना।
बहना—(क्रि· अ·) द्रवहोकर चलना, जारी होना, ढोना,
बहरी—(सं· पु·) एक शिकारी पक्षी।
बहल—(सं· स्त्री·) एक तरह की गाड़ी।
बहाना—(सं· पु·) छल, हीला।
बहिर्मुख—(गु·) धर्मविमुख, अधर्मी, बागी।
बहु—(गु·) बहुत, अधिक, ढेर, अनेक।
बहुधा—(क्रि· वि·) बहुत बार, अक्सर।
बहुबाहु—(सं· पु.) रावण।
बहुमूल्य—(गु·) बहुत दाम का, महंगा, उत्तम।
बहुरि, बहोरि, बहोरी— अ·) फिर, पुनि, और।
बहुरना—(क्रि· अ·) फिरना।
बहुश्रुत—(गु·) पण्डित, विद्वान्।
बहू —(सं· स्त्री·) दुलहिन, पतोहू।
बांका—(गु·) टेढ़ा, वीर।
बांगा—(सं· पु·) बिनौला समेत रूई।
बागुर—(सं· पु·) फन्दा, जाल।
बागडोर—(सं· स्त्री.) लगाम की रस्सी।

वागा—(सं· पु·) जोड़ा।
वांछित—(सं· पु·) चाहा हुआ, इच्छित।
वाघम्बर—(सं· पु·) वाघ की खाल।
वाट—(सं· पु·) रास्ता, राह।
वाटिका—(सं· स्त्री·) फुलवारी, वाड़ी, वगीचा।
वाड़ा—(सं· पु·) घेरा, हाता।
वांदा—(सं· पु·) वृक्ष का एक रोग है।
वांदी—(सं· स्त्री·) लौंडी, दासी।
वाढ़—(सं· स्त्री·) बढ़ती, अधिकाई, दहार।
वाण, वान—(सं· पु·) तीर, वाणासुर, वानिज्य।
वाणिज्य—(सं· पु·) व्यापार, सौदागरी।
वात—(सं· स्त्री·) हवा, वोली, काम, सबंध।
वातल—(गु·) जो वाई में हो, पागल।
वादला—(सं· पु·) सोने रूपे का तार।
वादि—(अ·) व्यर्थ।
वाधा—(सं· स्त्री·) रोक, रुकाव, दुःख, पीड़ा।
वानिक—(सं· स्त्री·) वनाव, सजाव।
वान—(सं· स्त्री·) स्वभाव, टेव, चाल, आदत।
वाना—(सं· पु·) ढंग, स्वभाव, चिह्न।
वानिक—(सं· पु·) रूप, सजावट।
वानीर—(सं· पु·) वेंत।
वानैत—(सं· पु·) वाना-पटा फेरनेवाला।
वानी(ور)—(सं· पु·) जड़ डालनेवाला, वोल, सरस्वती।
वापुरा—(गु·) वेचारा, अधीन, अनाथ, वेबस।
वांवी—(सं· स्त्री·) सांप का बिल।
वाम—(गु·) वांया, उलटा (पु·) कामदेव, शिव।
वामा—(सं· स्त्री·) स्त्री, देवी, पार्वती, कुटिला।

वार—(सं· स्त्री·) समय, अवसर, देर, लड़का, केश, द्वार।
वारण—(सं· पु·) हाथी, मना करना।
वारनारि—(सं· स्त्री·) वेश्या।
वारहदरी—(सं· स्त्री·) वह मकान जिस में बारह दरवाजे हों, [बंगला।
वाराह—(सं· पु·) सूअर, शूकर।
वारी—(सं· स्त्री·) लड़की, पारी, वाड़ी, बगीचा, एक जाति।
वारुणी—(सं· स्त्री·) मदिरा, शराब, पश्चिम दिशा, शतभिषा नक्षत्र, दूब।
वाल—(सं· पु·) बालक, केश, (गु·) मूर्ख।
वाला—(सं· स्त्री·) लड़की, स्त्री।
वालका—(सं· पु·) योगी वा संन्यासियों का चेला।
वालिग—( ) —(गु·) जवान, युवा।
वालोद्यान—(सं· पु·) बालकों का बाग, किण्डर्गार्टन नामक [शिक्षाप्रणाली।
वालधी—(सं· स्त्री·) पूंछ।
वास—(सं· स्त्री·) महक, गन्ध, (पु·) रहने की जगह, डेरा।
वालम—(सं· पु·) पति, वल्लभ, प्यारा।
वासना—(सं· स्त्री·) इच्छा, (क्रि· वि·) सुगन्धित करना।
वासुदेव—(सं· पु·) श्री कृष्ण।
वाहन—(सं· पु·) सवारी, घोड़ा, गाड़ी।
वाहु—(सं· पु·) भुजा।
वाहिनी—(सं· स्त्री·) नदी, सेना।
विकट—(गु·) भयङ्कर, डरावना, कठिन।
विकल, विकल—(गु·) व्याकुल, बेचैन।
विकराल—(गु·) भयङ्कर।
विकाश, विकाश —(भा· पु·) प्रकाश, चमक, (गु·) प्रसन्न, आनन्दित, चमकता हुआ।
विजना—(सं· पु·) पंखा।

विज्जु—(सं· स्त्री·) बिजली।
विट—(सं· पु·) वैश्य वर्ण, विष्ठा, भड़ुआ।
विटप—(सं· पु·) वृक्ष, डाल, शाखा।
वित्त—(सं· पु·) धन, गात, बूता।
विथुरना—(क्रि·) फैलना, बगरना।
विधना, विधि—(सं· पु·) विधाता, ब्रह्मा, दैव, विधान।
विनती, विनती—(सं· स्त्री.) विनय, नम्रता, प्रार्थना।
विदर्भदेश—(सं· पु·) एक प्रदेश जिस को आज कल बेरार कहते हैं।
विपरीत, विपरीत—(गु·) उलटा, विरुद्ध।
विवर—(सं· पु·) छेद, बिल, दरार।
वियालू वियारी—(सं· पु·) रात का भोजन।
विरदावलि—(सं· स्त्री·) बहुत यश, प्रशस्ति, बड़ी नामवरी, यश [की पंक्ति।
विरमना—(क्रि. पु·) ठहरना, देर करना, चुपहोना।
विरवा—(सं· पु·) वृक्ष, पौधा।
विरह, विरह—(सं· पु.) जुदाई, बिछोह, वियोग।
विरियां—(सं. स्त्री.) समय, वेला।
विरुझना—(क्रि· अ·) नाराज होना, दुखमानना।
विलखना—(क्रि· अ·) रोना, देखना।
विलग, विलग—(गु·) अलग।
विसात—(सं. स्त्री·) पूंजी, औकात।
विसूती—(सं· पु.) एक प्रकार का पौधा। (स्त्री·) मूल, पंजी।
विसाहना—(क्रि· स·) मोल लेना।
विसूरना—(क्रि.) रोना, कलपना, झखना, बिलखना।
विस्वा—(सं· पु·) कट्ठा, बीस धर।
विहरना—(क्रि. अ.) विहार करना, सैरकरना।
विह्वल, विह्वल—(गु·) दुबला, कमजोर, खिन्न, बेचैन।

बीज—(सं. पु·) कारण, मूल, बीया।
बीजक—(सं. पु·) माल की फिहरिस्त।
बीजना—(सं· पु·) पंखा, बेना, (क्रि.) हवा करना, झलना।
बीभत्स—(गु·) घिनौना, (सं· पु·) एक रसभेद।
बीर, बीर,—(सं. पु·) बहादुर, बलवान, (स्त्री.) बहन, सखी।
बीरबहूटी—(सं· स्त्री·) रानी, एक बरसाती मखमली कीट।
बुत (بت) (सं· स्त्री·) मूर्ति।
बुदबुद—(सं. पु.) बुल्ला, बुलबला।
बुध (सं· पु.) पण्डित, चतुर, बुद्धिमान, एक ग्रह।
बुद्ध—(सं· पु·) बौद्धमत का स्थापन करनेवाला, जिन्हें शाक्य सिंह, गौतम, मायादेवीसुत और अर्कबन्धु भी कहते हैं।
बुद्धि—(सं· स्त्री·) समझ, विचार, ज्ञान।
बुद्धीन्द्रिय—(सं· स्त्री·) आंख, नाक, कान, जीभ, त्वचा।
बुभुक्षा—(सं· स्त्री·) खाने की चाह।
बूआ —(सं· स्त्री·) बहन, फूफू।
बूता—(सं· पु·) बल, ज़ोर।
बूर—(सं· स्त्री·) भूसी, छिलका।
बृजिन—(सं· पु·) पाप।
बृषभ—(सं. पु·) बैल (गु.) श्रेष्ठ।
बृहत—(गु.) बडा।
बृहती—(सं· स्त्री.) सरडंटा, रेंगनी, छन्द।
बेगि—(क्रि· वि·) शीघ्रता से, जल्द, तुरत।
बेगम (بیگم)—(सं· स्त्री·) रानी।
बेणु—(सं. पु.) बांसुरी, मुरली, बांस, एक अधर्मी राजा।
बेत—(सं. पु.) बेंत, छड़ी, आकाश।
बेध—(सं. पु.) छेद।
बेधना—(क्रि. स.) छेदना।

बेन्दी—(सं· स्त्री·) बुन्दा, टीका, आड़।
बेना—(सं. पु.) पंखा।
बेनी—(सं. स्त्री·) चोटी, लट।
बेर—(सं. पु.) फल, (स्त्री.) विलम्ब।
बेरा—(सं. पु.) जहाज़, नाव, समय।
बेरहम—(गु.) निर्दयी, निठुर।
बेल—(सं. पु·) विल्वफल, (स्त्री.) लत्तर, लता।
बेला—(सं. पु.) सरंगी सा एक बाजा, समय।
बेला—(सं· पु.) कटोरा, बाजा विशेष।
बेहया—(بیحیا)—(गु.) बेशर्म, निर्लज्ज।
बैन—(सं· पु.) वचन।
बैनतेय—(सं. पु.) गरुड़।
बैरख—(सं. पु.) झण्डा, ध्वजा, पताका।
बैटरी—(Battery)—(सं. स्त्री.) बिजली उत्पन्न करनेवाला यंत्र।
बैजन्तीमाल—(सं. स्त्री·) नीलम, मोती, माणिक, पुखराज, हीरा की माला, एक फूल के काले दाने की माला, रंगबिरंगी माला।
बैरिष्टर (Barrister)—(सं· पु·) विलायत से पास कर आये हुए वकील।
बैरोमेटर (Barometer)—(सं· प·) एक यन्त्र जिस से हवा और ज़मीन की उंचाई नापी जाती है।
बैलर—(सं· पु·) आस्ट्रेलिया का बड़ा २ घोड़ा।

बैश्वानर / बैसन्दर—(सं· पु·) आग।

बोटेनी (Botany)—(सं. पु.) उद्भिद-वनस्पति की विद्या।
बोर्डिङ्ग हाउस (Boarding House)—(सं. पु·) वह मकान जिस में पढ़नेवाले विद्यार्थी रहते हैं।
बोर्ड ऑफ कन्ट्रोल (Board of Control)—(सं· स्त्री·) शासन सभा।

बोर्ड आॅफ रेवेन्यु (Board of Revenue)—(सं० स्त्री०) राजकरसम्बन्धी सभा।
बोध—(सं० पु०) ज्ञान, बुद्धि, समझ।
बोधक—(सं० पु०) वाचक, द्योतक, समझानेवाला, बतानेवाला।
बोरिया—(सं० पु०) बोरा, चटाई।
बोहित—(सं० स्त्री०) नाव, जहाज़।
बौद्ध—(सं० पु०) बौद्धमती, विष्णु का एक अवतार, जगन्नाथजी।
बौर—(सं० स्त्री०) मंजर।
बौराहा, बौरा—(गु०) दीवाना, पागल, बावला।
व्यक्त—(गु०) प्रगट, जाहिर।
व्यक्ति—(सं० स्त्री०) मनुष्य।
व्यग्र—(गु०) व्याकुल, व्यस्त।
व्यतिरेक—(सं० पु०) अधिकता, एक अलङ्कार, एक के विना दूसरा का अभाव।
व्यभिचार—(सं० पु०) अभाव, पररति।
व्याधि—(सं० स्त्री०) रोग, मर्ज़।
व्याल—(सं० पु०) सांप, (गु०) पगला।
व्यालू—(सं० पु०) रात का भोजन।
व्यौंत—(सं० पु०) बन्दोबस्त, युक्ति, उपाय।
व्यौंतना—(क्रि०) काटना छांटना, बन्दिस लगाना।
व्यौरा—(सं० पु०) समाचार, पता, निशान, भेद।
व्यौहार, व्यवहार—(सं० पु०) काम, धंधा, लेनदेन, रीतभांत।
व्रज—(सं० पु०) मथुरा का जिला ८४ कोस के घेरे में, बथान, गोठ, समूह।
व्रण—(सं० पु०) क्षत, घाव।
ब्रह्म—(सं० पु०) परमेश्वर, वेद, तत्त्व, तप, ब्राह्मण।
ब्रह्मण्य—(गु०) ब्राह्मण का भक्त, ब्राह्मण के योग्य।
ब्रह्मअस्त्र—(सं० प०) ब्रह्मबाण, ब्रह्मा का दिया हुआ अस्त्र।

ब्रह्माण्ड—(सं. पु.) जगत।
ब्रह्मसूत्र-(सं· पु·) वेदान्त,यज्ञोपवीत, जनेऊ, एक स्थान।
ब्रह्मावर्त्त—(सं. पु.) एक प्रदेश जो विठूर के नाम से मशहूर है।
व्रीडा—(सं· स्त्री.) लाज, शर्म।
ब्लैकबोर्ड (Black Board)—(सं. स्त्री.) स्याह, तख़्ता, काला तख़्ता, जिस पर स्कूल के छात्र खली से लिखते हैं।
ब्लैक सी (Black Sea)—(सं. पु.) ब्लैक = काला, सी = सागर, काला सागर।
ब्लैक होल (Black Hole)—(सं. पु.) काली कोठरी।
ब्राह्म मुहूर्त्त—(सं. प.) ऊषाकाल, भोर।
ब्राह्मी—(सं. स्त्री· । एक बूटी, बरमी।

भ

भ—(सं. पु·) नक्षत्र, ग्रह, राशि, शुक्राचार्य, भरद्वाज, भ्रमर
भंवर—(सं. पु.) भौंरा, चक्र, आवर्त्त, पानी में नाभी के समान जो गड़हा होता है।
भकुवा—(ग्रु.) उल्लू, मूर्ख।
भक्त—(सं· पु·) भक्ति करनेवाला, सेवक, दास, भगत।
भक्तवत्सल—(सं. पु.) भक्त = दास, वत्सल = दया करनेवाला, भक्तों पर दया करनेवाला, परमेश्वर।
भक्ति—(सं. स्त्री.) भजन,, सेवा, नवधा भक्ति, प्रीति।
भक्ष, भक्ष्य—(सं· पु.) खाने के योग्य, खाना, भोजन।
भक्षण—(भा. पु·) भोजन, खाना।
भख—(सं. पु.) भक्षक।
भग—(सं. पु.) योनि, स्त्रीचिन्ह, सुभाग, ऐश्वर्य्य, यश, लक्ष्मी ज्ञान, वैराग्य, समता।
भगवत—(सं. पु.) भगवान, ईश्वर।
भगवती—(सं· स्त्री·) देवी, ऐश्वर्य्यवाली।

भगिनी—(सं॰ स्त्री॰) वहिन, सहोदरा।
भग्न—(गु॰) टूटा हुआ, नष्ट।
भङ्ग—(भा॰ पु॰) तोड़ना, खण्डन, लहर, पराजय, (स्त्री॰) भांग
भङ्गी—(सं॰ पु॰) भांग पीनेवाला, भंगवाला, मेहतर, पाखाना साफ करनेवाला, झाड़ूकश।
भृङ्गराज—(सं॰ पु॰) पक्षी विशेष।
भङ्गुर—(गु॰) टेढ़ा, नाश होनेवाला।
भजन—(भा॰ पु॰) जप, सेवा, परमेश्वर का नाम लेना।
भज्यमान—(र्म्म॰ पु॰) सेवित, सेवा जाता हुआ, टूटता हुआ।
भञ्जन—(भा॰ पु॰) तोड़ना, फोड़ना, (गु॰) तोड़नेवाला।
भट—(सं॰ पु॰) वीर, योधा, वहादुर।
भट्ट—(सं॰ पु॰) मरहटे ब्राह्मणों की पदवी।
भट्टू—(सं॰ स्त्री॰) सखी।
भणन—(क्रि॰ स॰) भनना, कहना।
भड़िहाई—(सं॰ स्त्री॰) भड़िहापन, चोरी, धूर्तपना।
भणित—(सं॰ पु॰) कहा हुआ, वाक्य, कविताई।
भण्डार—(सं॰ पु॰) खजाना, समूह।
भदेश—(गु॰) कुडौल, बुरा, भद्दा, नीरस।
भद्दा—(गु॰) निर्बुद्धि, उल्लू, भोंदू।
भद्र—(सं॰ पु॰) कल्याण, उत्तम, शिव।
भनसा, भांनस—(सं॰ पु॰) रसोईघर।
भय—(सं॰ पु॰) डर, शङ्का।
भयङ्कर, भयानक—(क॰ पु॰) डरावना।
भयभीत, भयातुर—(सं॰ पु॰) डर से घवराया हुआ, घवराया हुआ।
भर—(गु॰) पूरा, माल, भार, वोझ, एक जाति।

भरण—(भा० पु०) पालन, पोषण ।
भरद्वाज—(सं० पु०) बृहस्पतिपुत्र ।
भरम—(सं० पु०) भ्रम, सन्देह, भूल, यश, नामवरी ।
भरताग्रज—(सं० पु०) श्रीरामचन्द्र जी ।
भर्ग—(सं० पु०) महादेव जी ।
भर्त्ता—(सं० पु०) पति, भतार, स्वामी ।
भर्त्सक—(क० पु०) निन्दक, डांटने-धमकाने वाला ।
भर्तृहरि—(सं. पु०) विक्रमादित्य का भाई जिस ने त्रयशतक बनाया।
भव—(सं० पु.) संसार, जन्म, कुशल, शिव ।
भवदीय—(गु.) तुम्हारा ।
भवन—(सं० पु.) घर, मकान, स्थान, होना ।
भवभूति—(सं. पु.) मालती माधव, वीरचरित, उत्तरचरित आदि नाटकों के कर्त्ता, भोजराजा के एक पण्डित, शिव का ऐश्वर्य ।
भवार्णव—(सं. पु.) संसारसागर ।
भवानी—(सं. स्त्री.) शिवा, दुर्गा ।
भवितव्य—(गु०) होनेवाला. होनहार ।
भविष्य, भविष्यत्—(सं. पु.) होनहार, होनेवाला, आगे आनेवाला समय ।
भव्य—(गु.) भागवान, होनहार, योग्य, शुभ ।
भा—(सं० स्त्री.) प्रकाश, चमक, शोभा, (क्रि०) भया, (अव्य) या, अथवा ।
भाईचारा—(सं० पु०) भायप, नाता ।
भागहार—(सं० पु०) भाजक ।
भागाभाग—(अ.) दौड़ा दौड़ ।
भागिनेय—(सं. पु०) भगिना, भांजा ।
भागी—(क० पु.) साझी, हिस्सेदार ।
भाग्य—(सं० पु०) प्रारब्ध, नसीब ।

भाग्यशाली—(गु·) अच्छा भागवाला, खुशनसीब।
भाजक—(क· पु·) बांटनेवाला।
भाजन—(सं. पु.) बासन, बरतन, पात्र [जाता है।
भाज्य—(सं. पु.) भाग देने योग्य, जिस संख्या में भाग दिया
भाटा—(सं· पु·) समुद्र के पानी का घटना, कजावा (पजावा)।
भाण्ड—(सं· पु·) बासन, बरतन।
भांति—(सं. स्त्री·) प्रकार, रीति।
भाथा—(सं· स्त्री·) तीर रखने का खोल, तूण. तर्कस।
भाना—(क्रि· स·) अच्छा लगना।
भानु—(सं· पु·) सूर्य, सूर्य की किरण।
भानुज—(सं· पु·) अश्विनीकुमार, शनिश्चर, यमराज. कर्ण।
भानुजा—(सं· पु·) जमुना।
भानुपीठ—(सं· स्त्री·) सूर्य्यमुखी पथरी।
भाभी—(सं· स्त्री·) भावज, भौजाई।
भामा—(सं· स्त्री·) क्रोधयुक्त स्त्री।
भामिनी—(सं· स्त्री·) स्त्री, लुगाई, खिसियानी।
भायप—(भा· पु·) भाईपन, भाईचारा।
भार्य्या—(सं· स्त्री·) नारी, स्त्री। [भारतवर्ष, हिन्दुस्तान।
भारत—(सं· पु·) भरत राजा का वंश अथवा देश, भरतखण्ड,
भारती—(सं· स्त्री·) सरस्वती, वाणी।
भारद्वाज—(सं· पु·) द्रोणाचार्य्य।
भारिक—(· · पु.) कहार।
भार्गव—(सं· पु.) शुक्र, परशुराम. गज, धनुषधारी (स्त्री.)पार्वती, लक्ष्मी, दुर्गा, दूब।
भाल—(सं. पु.) माथ, तीर की नोक।
भाला—(सं. पु.) बर्छी।
भाव—(सं. पु·) अभिप्राय, मतलब, मत, दशा, अवस्था, स्वभाव, मोल, निर्ख।

भावना—(सं. स्त्री.) चिन्ता, सन्देह, अनुभव।
भावक—(क. पु.) चिन्ताकारक, सोचनेवाला।
भाविक—(क. पु.) अभिप्राय ज्ञाता, चतुर, परखनेवाला।
भावित—(गु.) चिन्तित, फिक्रमन्द, शंकित, सावित।
भावी (गु.) होनहार, होनेवाला, भवितव्यता।
भावुक—(गु.) कल्याण, नीरोग, भाग्य, महाशय. भावजाननेवाला, रसिक, मर्मज्ञ।
भाषण—(भा. पु.) कहना, बोलना।
भाषा—(सं. स्त्री.) बोली, बानी।
भाष्य - (सं. पु.) टीका. टिप्पणी।
भाष्यकार—(क. पु) टीकाकार टीका करनेवाला।
भासुर—(गु.) शोभित, चमकीला, बिल्लौर पत्थर, कुष्ठ की औषधि।
भास्कर—(सं. पु.) सूर्य, आग, सोना, चमकता हुआ।
भिक्षा—(सं. स्त्री) भीख।
भिक्षुक—(क. पु.) भिखार, मंगता, संन्यासी।
भिन्दिपाल—(सं. पु.) हाथ से फेंकने का एक हथियार, ढेलवांस
भिन्न—(गु.) जुदा, अलग, टुकड़ा।
भिश्ती—(सं. पु.) मशक में पानी लानेवाला, पनभरा।
भीठ—(सं. स्त्री.) ऊंची धरती।
भीत—(क. पु.) डरा हुआ। (सं. स्त्री.) दीवार।
भीति—(सं. स्त्री.) डर, भय, त्रास, शंका।
भीम—(सं. पु.) युधिष्ठिर का भाई, डरावना, रस, शिव।
भीरु—(क. पु.) डरनेवाला।
भीषण—(गु.) भयानक, भयङ्कर, डरावना (सं. पु.) सेंहुड़ वृक्ष बाजपक्षी, शिव।
भीष्म—(सं. पु.) पाण्डवों का दादा, गाङ्गेय (गु.) डरावना।

भुक्त—(सं. पु.) भोजन किया हुआ, खाया हुआ।
भुक्ति—(सं. स्त्री.) भोग, ऐश्वर्य्य।
भुजग, भुजङ्ग—(सं. पु.) सांप,
भुज—(सं. पु.) बांह, बाहु, खेत की एक सीमा।
भुजा—(सं. स्त्री.) हाथ, बांह।
भुव—(सं. पु.) स्वर्ग, आकाश, धरती, संसार।
भुवंग—(सं. पु.) सर्प, भुजंग।
भुवन—(सं. पु.) लोक, संसार।
भुवाल, भुआल—(सं. पु.) राजा, भूपाल।
भुस—(सं. पु.) चोकर, भूसी।
भू—(सं. स्त्री.) पृथ्वी, धरती।
भूकम्प, भूडोल, भूचाल,—(सं. पु.) पृथ्वी के डोलने को कहते हैं।
भूगोल—(सं. पु.) भूमण्डल, धरती का घेरा जिसमें धरती का वर्णन हो।
भूत—(सं. पु.) पिशाच, बीता हुआ समय, शिव के गण, तत्त्व, जीव।
भूति—(सं. स्त्री.) ऐश्वर्य्य, सम्पत्ति, राख, भस्म।
भूधर—(सं. पु.) पहाड़।
भूप, भूपाल, भूपति, भूमिपति,—(सं. पु.) राजा, धरतीका रक्षा करनेवाला।
भूमि—(सं. स्त्री.) धरती, पृथ्वी, जगह, स्थान।
भूमिकर्षण—(सं. पु.) खेत जोतना।
भूमिशायी—(गु.) भूमि = पृथ्वी, शायी = सोया हुआ वा सोनेवाला, भूमि पर सोया हुआ।
भूरि—(गु.) बहुत, अधिक, ढेर।
भूरुह—(सं. पु.) पेड़, वृक्ष।
भूषण—(सं. पु.) गहना, अलङ्कार, ज़ेवर।
भूसुर—(सं. प.) ब्राह्मण।

भृकुटी—(सं. स्त्री.) भ्रू, भौं का चढ़ाना।
भृगुनाथ, भृगुपति भृगुकुलकेतु—(सं. पु. परशुराम।
भृङ्ग—(सं. पु.) भौंरा।
भृङ्गी— सं. स्त्री.) भौंरी, पार्वती, शिवगण।
भृति—(सं. स्त्री.) वेतन।
भृत्य—(सं. पु.) नौकर।
भेक—(सं. पु.) मेंढक।
भेड़िया—(सं. पु.) हुंड़ार, वृक।
भेजा—(सं. पु.) सिर का गूदा मगज।
भेव, भेद—(सं. पु.) गुप्त बात, मर्म, प्रकार, जाति, विरोध।
भेदन—(भा. पु.) तोड़ना, फोड़ना।
भेद्ग—(सं. पु.) भेद जाननेवाला।
भेरी—(सं. स्त्री.) तुरही, सहनाई, नक्कारा।
भेष—(सं. पु.) रूप, सूरत, रूप बदलना।
भेषज, भैषज्य—(सं. पु.) दवा, औषध।
भैरव—(सं. पु.) शिव, दुर्गा के पास रहनेवाला देवता, भैर आठ हैं, जैसे—असिताङ्ग, रुरु, चण्ड, क्रोध, उन्मत्त कुपित, भीषण और संहार (गु.) डरावना।
भो—(अ.) हो, सम्बोधन का चिन्ह (क्रि) हुआ।
भोज—(सं. पु.) राजा, जिस ने संस्कृत का बड़ा प्रचार किया थ जेवनार।
भोक्ता—(क. पु.) खानेवाला।
भौतिक—(गु.) सांसारिक, पिशाचादि सम्बन्धी।
भौमवार—(सं. पु.) भौम = मङ्गल, वार = दिन, मङ्गलवार।
भोरे—(अ.) धोखे, सवेरे।
भ्रमण—(सं. प.) सैरसपाटा, पर्य्यटन।
भ्रमर—(सं. पु.) भौंरा।

भ्रष्ट—(सं. पु.) गिरा हुआ, पतित, अधर्मी।
भ्राजना—(अ. क्रि.) शोभना।
भ्राता, भ्रातृ—(सं. पु.) भाई।
भ्रान्त—(क. पु.) भूला हुआ, भ्रममें पड़ा हुआ।
भ्रान्ति—(सं. स्त्री.) भ्रम, भूल, चूक, अशुद्धि।
भ्रू—(सं. पु.) भौंह, भौं।
भ्रूण—(सं. पु.) गर्भ, हमल।
भङ्ग—(सं. पु.) भौं टेढ़ा करना, कटाक्ष, भौं चढ़ाना, तोड़ना, फोड़ना।

म

म—(सं. पु.) ब्रह्मा, शिव, चन्द्र, विष्णु, यम, समय, विष।
मकर—(सं. पु.) मगर, घड़ियाल, एकराशि, नखरा।
मकरकेतु, मकरध्वज—(सं. पु.) कामदेव।
मकरवृत्त, मकरक्रान्ति—(सं. पु.) जो वृत्त विषुवत् वृत्त से २३½ अंश दक्खिन की ओर खींचा गया है।
मकरन्द—(सं. पु.) फूलों का रस, पराग, ज्योतिष का ग्रन्थ जिस से पञ्चाङ्ग बनाया जाता है।
मकु—(अव्य.) बल्कि, बरुक।
मुकुट—(सं. पु.) किरीट, ताज।
मुकुर—(सं. पु.) दर्पण।
मुकुल—(सं. स्त्री.) फूल की कली, कोंपल।
मकराकृत—(गु.) मछली के डौल का।
मख—(सं. पु.) यज्ञ।
मक्खन—(सं. पु.) माखन, नेनू, नवनीत।
मग—(सं. पु.) रास्ता, डगर, बाट।
मगध—(सं. प.) सूबे विहार का दक्षिणी भाग, मगह।

मगन, मग्न—(गु·) खुश, प्रसन्न, डूबा हुआ, आनन्दित।
मगर—(सं· पु·) घड़ियाल, मगर, मच्छ।
मगरा—(गु.) घमण्डी।
मघवा—(सं. पु.) इन्द्र।
मंगलामुखी—(सं. स्त्री.) व्याह आदि अच्छे कामों में गानेवाली, [गायन।
मङ्गल—(सं. पु.) कुशल, कल्याण, मङ्गलवार, (गु.) शुभ, आनन्द।
मचलाई—(भा. सं· स्त्री,) ढिठाई, हठ, छरिआना, ओकाई, मतली।
मजहब—(सं· पु·) धर्म, पथ, मत। [जिलाधीश।
मजिस्ट्रेट (Magistrate)—(सं. पु.) ज़िले का मालिक,।
मज्जन—(सं· पु.) स्नान, डूबना।
मज्जा—(सं. स्त्री·) हड्डी के भीतर का गूदा, चर्बी।
मजीठ—(सं· पु·) एक लाल चीज़ जो रंगने के काम में आती है।
मझला—(गु·) विचला।
मझार—(सं. पु.) बीच, मध्य।
मञ्च—(सं. पु.) मचान, पलंग, खाट, खटिया।
मञ्जा—(सं. पु.) वर्षा का प्रथम पानी जिस से मछली मर जाती है।
मञ्जार—(सं. पु.) मार्जार, विलाव, बिल्ला, विलार।
मञ्जरी—(सं. स्त्री.) कोंपल, कली, मोजर, अंखुआ।
मञ्जीर—(सं· पु·) मंजीरा, कंसी, नूपुर, पांवका गहना, पाजेब।
मञ्जु, मञ्जुल—(गु·) सुन्दर, कोमल, मनोहर, मधुर।
मञ्जूषा—(सं. स्त्री·) सन्दूक, पिटारी।
मटका—(सं. पु.) बड़ा घड़ा, गगरा।
मठ—(सं· पु·) साधु-स्थान, ठाकुरवाड़ी।
मढी—(सं· स्त्री·) कुटी, झोपड़ी।

मणि—(सं. पु.) रत्न, हीरा, पन्ना, सर्प से उत्पन्न जवाहिर, बेशकीमती पत्थर। कोई कोई मणि शब्द को भाषा में स्त्रीलिंग मानते हैं।

मण्डन—(भा. पु.) गहना, शोभा, अलङ्कार, भूषण, निरूपण।

मण्डित—(गु.) शोभित।

मण्डप—(सं. पु.) मडवा।

मण्डल—(सं. पु.) गोल, चक्कर, चांद वा सूर्य का घेरा, देश, पृथ्वी

मण्डली—(सं. स्त्री.) समाज, गिरोह, सभा।

मण्डी—(सं. स्त्री.) बाजार।

मण्डूक—(सं. पु.) मेंढ़क।

मतङ्ग—(सं. पु.) हाथी, मेघ, एक ऋषि का नाम।

मत—(सं. पु.) सलाह, सम्मति, धर्म (क्रि.) नहीं, न।

मति—(सं. स्त्री.) बुद्धि, समझ, इच्छा, राय।

मतिमन्द—(गु.) गंवार, मूर्ख।

मतिमान—(गु.) बुद्धिमान्।

मतीर—(सं. पु.) तरबूजा, लालमी, हिन्दुवाना, कलींदा।

मत्त—(गु.) मतवाला, पागल।

मत्सर—(सं. पु.) डाह, ईर्षा, जलन, हसद।

मत्स्य—(सं. पु.) मछली, विष्णु का पहला अवतार।

मत्स्यगन्धा—(सं. पु.) मच्छोदरी, व्यास की माता।

मथन—(सं. पु.) मथना, विलोना, महना।

मद—(सं. पु.) आनन्द, हाथी की कनपट्टियों वा गालों से चुआ हुआ पानी, शराब, घमण्ड, नशा, वीर्य्य, कस्तूरी।

मदन—(सं. पु.) कामदेव।

मदिरा, मद्य—(सं. पु.) शराब।

मद्यशाला—(सं. स्त्री.) भट्टी, शराबखाना, कलवरिया।

मधु—(सं. पु.) मध, शहद, फूलों का रस, शराब, महुआ, चैत-
मास, वसन्त ऋतु (गु.) मीठा।
मधुप, मधुकर—(सं. पु.) भौंरा, मधुकरी (सं. स्त्री.) भौंरी, रोटी।
मधुकोष—(सं. पु.) मधुमक्खी का छत्ता।
मधुपर्क—(सं. पु.) दही, घी और शहद मिली हुई वस्तु।
मधुपुरी—(सं. स्त्री.) मथुरा, मधुवन—(पु.) वनविशेष।
मधुमास—(सं. पु.) चैत का महीना।
मधुर—(गु.) मीठा, प्यारा, सुन्दर।
मधुसूदन—(सं. पु.) विष्णु भगवान, मधुनामक दैत के नाशक।
मधुक—(सं. पु.) महुआ वृक्ष।
मधूप—(पु.) गुड़हर।
मध्यरेखा—(सं. स्त्री.) वह वृत्त है जो ध्रुवों पर होते हुए पृथ्वी के
आस पास खींचे गये हैं।
मध्य—(सं. पु.) बीच, में, भीतर।
मध्यमा—(सं. स्त्री) बीच की अंगुली।
मध्यस्थ—(क. पु.) साक्षी, बिचवैया, सरदार।
मध्याह्न—(सं. पु.) दोपहर, दिन का बीच।
मन—(सं. पु.) चित्त, दिल, अन्तःकरण।
मनन—(सं. पु.) चिन्तन।
मनभावन—(गु.) मनोहर, सुहावन।
मनभावता, मनमाना—(गु.) मनचाहा, जो मन को रुचै।
मन्मथ—(सं. पु.) कामदेव, बंगाल में प्रसिद्ध एक देवी।
मनसिज—(सं. पु.) कामदेव, मन से जो पैदा हो।
मनिहार—(सं. पु.) चूड़ी बेचनेवाला।
मनीषा—(सं. स्त्री.) बुद्धि, अक्ल।
मनीषी—(गु.) पंडित, अक्लमन्द।
मनु—(सं. पु.) ब्रह्मा का बेटा, मनुष्यों का पुरषा।
मनुज, मनुष्य—(सं. पु.) जो मनु से जन्मा हो, मनुष्य, आदमी।

मनुजाद—(सं. पु.) राक्षस, मनुज = मनुष्य. अद = खानेवाला, मनुष्य को खानेवाला ।
मनुहार—(स्त्री.)आदर,मनावन, मान मीठा बोलना।
मनोनीत—(गु.) चुनाहुआ।
मनोभव, मनोज—(सं. पु.) कामदेव।
मनोज्ञ—(गु.) सुन्दर, सुडौल।
मनोरथ—(सं. पु.) मनकामना, मन में जो चाहते हों।
मनोहर, मनोरम—(गु.) सुन्दर।
मन्तव्य—(सं. पु.) माननीय, चिन्तनीय, राय, सलाह।
मन्थर— (गु.) धीमाचलनेवाला, सुस्त, काहिल।
मन्त्र—(सं. पु.) सम्मति, सलाह, छिपी बात, जादू।
मन्त्री—(सं पु.) प्रधान, उपदेशक. सलाहकार, वज़ीर।
मन्द—(गु.) सुस्त, धीमा, नीच, कम।
मन्दमन्द—(क्रि. वि.) धीरे धीरे।
मन्दाकिनी—(सं. स्त्री.) स्वर्गगंगा, चित्रकूट की एक नदी।
मन्दर—(सं. पु.) एक पर्वत, स्वर्ग, भारी, मोटा।
मन्दार—(सं. पु.) स्वर्ग का पेड़।
मन्मथारी, मन्मथारि—(सं. पु.) शिव, काम का बैरी।
मम—(सर्व.) मेरा।
ममता—(सं. स्त्री.) मोह, माया, प्रेम, घमण्ड, अपनापन।
मय—(सं. पु.) एक राक्षस का नाम, रूप, मिला हुआ।
मयङ्क—(सं. पु.) चांद, चन्द्रमा।
मयतनया—(सं. स्त्री.) मन्दोदरी।
मयन—(सं. पु.) मदन, कामदेव।
मयूर—(सं. पु.) मोर, एक पक्षी का नाम।
मयूख—(सं. पु.) किरण।
मरकत—(सं. पु.) हरा मणि।

मरघट—(सं. पु.) मसान
मरण—(भा. पु.) मरना, मौत, नाश।
मराल—(सं· पु.) हंस, मेघ, साफ, स्वच्छ।
मरीच—(सं. पु.) ब्रह्मपुत्र। (स्त्री.) किरण।
मरु—(सं. पु.) निर्जलदेश, मरुस्थल, मारवाड़, रेता।
मरुत, मरुत्—(सं· पु.) हवा, पवन देवता।
मरुधर—(सं. स्त्री.) मारवाड़ की भूमि।
मरुभूमि—(सं· स्त्री·) रेतीली ज़मीन, रेगिस्तान।
मर्कट—(सं· पु·) वानर
मर्द्दन—(भा· पु.) मलना, रगड़ना, नाश करना।
मर्म्म—(सं· पु·) भेद, छिपी वात, मतलब, अंग का अति सुकुमार स्थान।
मर्म्मज्ञ—(फ· पु.) भेद जाननेवाला, बुद्धिमान।
मर्यादा—(सं· स्त्री·) प्रतिष्ठा, मान, पत, सीमा।
मलमास—(सं· पु·) लौंद, आधा मांस।
मलय—(सं· पु·) दक्षिण में एक पहाड़ जिस पर श्रीखण्ड चन्दन होता है।
मलयज—(सं· पु·) चन्दन।
मलान—(ग·) मलिन, खिन्न, उदास, जैसे-"मन जनि करसि मलान"।
मलिन्द—(सं· पु·) भौंरा।
मल्ल—(सं· पु·) पहलवान।
मल्लिका—(सं· स्त्री·) एक फूल का नाम, चमेली।
मलेरिया (Malaria)—(सं· पु·) बुरी हवा जिस के लगने से ज्वर हो जाता है, उस ज्वर को भी मलेरिया कहते हैं।
मशक—(सं· पु·) मच्छर, मसा, विलार, (स्त्री·) चमड़े का थैला जिस में भिश्ती पानी भरता है।
मशहरी—(सं· स्त्री·) मच्छर से बचने के लिये पलंग पर तानने का कपड़ा, मसहरी।

मष्ट—(सं॰ भा॰) चुप, मौन। [जगह।
मसान—(सं॰ पु॰) श्मशान, मरघट, मुर्दा जलाने वा गाड़ने की
मसी—(सं॰ स्त्री॰) स्याही, रोशनाई।
मसोसना—(क्रि॰) कुढ़ना, ऐंठना, मरोड़ना।
मस्तक—(सं॰ पु॰) शिर, सिर, माथा।
मस्तिष्क—(सं॰ पु॰) दिमाग, मेधा।
महत्—(ग॰) बड़ा।
महत्व—(भा॰ पु॰) बड़प्पन, बड़ाई।
महराई—(सं॰ स्त्री॰) गोपों या कहारों का राजा, मेठ।
महा, महान—(गु॰) बड़ा, उत्तम, श्रेष्ट।
महाजन—(सं॰ पु॰) श्रेष्ठ मनुष्य, ऋण देने वाला, साहुकार।
महादेश—(सं. पु॰) बड़ा राज्य, जमीन का वह बड़ा भाग जिस में कईएक राज्य हों और कईएक जाति के लोग रहते हों।
महाद्वीप—(सं॰ पु॰) बड़ाद्वीप, ज़मीन का वह बड़ा भाग जो बहुत दूर तक लगातार फैल गया हो और जिस में कई सूबे और शहर हों।
महानस—(सं. पु॰) रसोईघर, भानस।
महानुभाव—(गु॰) प्रतापी।
महादेव—(सं॰ पु॰) शिव, महेश, कामारि।
महापुरुष—(सं॰पु॰) बड़ा आदमी, सज्जन, महात्मा।
महाप्रभु—(सं॰ पु॰) परमेश्वर, शिव, महाराजा, पवित्र मनुष्य।
महाप्रलय—(सं॰ पु॰) सृष्टि का नाश, कल्पांत।
महाप्रसाद—(सं॰ पु॰) देवता का भोग वा नैवेद्य, जगन्नाथ जी का प्रसाद।
महाभारत—(सं॰ पु॰) भरतवंशी राजों कौरवों और पांडवों की लड़ाई जो कुरुक्षेत्र में हुई थी, उस की कथा जिस में लिखी है उस ग्रन्थ का नाम भी महाभारत है।

महामणि—(सं॰ पु.) जहर मुहरा।
महामारी (सं॰ स्त्री॰) मरकी, वबा, हैजा।
महाराज—(सं॰पु॰) बड़ा राजा।
महाराजाधिराज—(सं.पु॰) राजाओं के राजा, शाहनशाह।
महाशय—(गु.) सज्जन, महात्मा, उदार, जिस का आशय बड़ा हो।
महि, मही—(सं॰ स्त्री॰) पृथ्वी, ज़मीन, धरती।
महिदेव, महिसुर—(सं॰ पु॰) ब्राह्मण।
महिप, महिपाल, महिपति—(सं॰ पु॰) राजा।
महिमा—(सं॰ स्त्री॰) प्रशंसा, बड़ाई, महात्मा।
महिला—(सं॰ स्त्री॰) स्त्री, औरत।
महिष—(सं. पु.) भैंसा।
महिषी—(सं॰ स्त्री॰) भैंसी, पटरानी।
मही—(सं॰ स्त्री॰) छाछ, मट्ठा, पृथ्वी।
महीरुह—(सं॰ पु॰) वृक्ष, पेड़, वनस्पति।
महीधर—(सं॰ पु॰) पहाड़, भूमि का धरनेवाला।
महेश—(सं॰ पु॰) महादेव, शिव, महा = बड़ा, ईश-देव समर्थ।
मा, माई— (सं॰ स्त्री॰) माता, महतारी, लक्ष्मी, शोभा।
माइनर (Minor)—(गु॰) छोटा, नाबालिग।
माख—(सं॰ पु॰) क्रोध।
मांग—(सं॰ स्त्री.)लिलार, स्त्रियां जहां लिलार में सिन्दूर करती हैं, मंगाहट।
मांजा—(सं॰ पु॰) मछलियों का एक रोग, वर्षा के नवीन जल का फेन।
मांझी—(सं॰ पु॰) नाविक, मल्लाह। [वाला, मांसखोर।
मांसाहारी—(सं. पु॰) मांस+आहारी = मांसाहारी, मांस खाने
माखना—(क्रि॰) क्रोध करना, कोप करना। [करते हैं।
मागध—(सं॰ पु॰) भाट वा कड़खैत जो राजादि का यश बखान

मातङ्ग—(सं· पु·) हाथी, चण्डाल, एक ऋषि।
मात, माता, मातृ, मातु—(सं. स्त्री·) मा, महतारी।
मातामह—(सं· पु.) मा का बाप, नाना।
मातुल—(सं· पु.) माता का भाई, मामा।
मातृक—(गु·) माता का (सं· पु·) नानिहाल।
मातृहीन - (गु·) बिना माता का, टूअर।
मात्र—(क्रि· वि·) भर, केवल, थोड़ा, कुछ, उतनाही।
मात्रा—(सं· स्त्री·) नाप, परिमाण, अन्दाज, स्वरों का दूसरा रूप।
मादक—(क· पु·) नशीली वस्तु।
माधव—(सं· पु·) श्रीकृष्ण, वैशाख, वसंत ऋतु।
माधुरी—(भा· स्त्री·) मिठास, सुन्दरता।
माधुर्य—(भा· पु·) मीठापन। [(गु·) बराबर।
मान—(सं· पु·) माप, नाप, अन्दाज, आदर, नाम, पत, घमण्ड,
मानव—(सं· पु·) मनुष्य, बालक, मनु के बेटे पोते, आदमी।
मानसिक—(गु·) मन का, मन से पैदा।
मानिक—(सं· पु·) लाल, पर्वत से उत्पन्न बेशकीमती पत्थर।
मानिनी—(सं· स्त्री·) घमण्ड करनेवाली स्त्री।
मानी—(सं· पु·) घमण्डी।
मान्य—(सं· पु·) मानने योग्य, पूजने योग्य।
मानव—(सं· पु·) मनुष्य, आदमी।
मानस—(सं· पु·) मन, मनसा, मानसरोवर। [कहा जाय।
मानसाङ्क—(गु·) जो अङ्क मन से कहा जाय, अर्थात् जो मौखिक
माप—(सं· पु·) नाप, परिमाण।
मापक—(क· पु·) पैमाना, अमीन, नापनेवाला। [प्रेम।
माया—(सं· स्त्री·) ईश्वर की शक्ति, छल, धन, कृपा, मोह, दया,
मार—(सं· पु·) कामदेव, (क्रि·) मारना।
मारात्मक—(गु·) घातक।

मार्कण्डेय—(सं. पु०) एक ऋषि का नाम ।
मारुत—(सं० पु०) हवा, पवन ।
मारुतसुत—(सं० पु०) हनुमान, वायु का लड़का ।
मारू—(सं० पु०) युद्ध का बाजा, मारवाड़ के निवासी ।
मार्ग—(सं० पु०) रास्ता ।
मार्गशिर, मार्गशीर्ष—(सं० पु०) अगहन ।
मार्जन—(भा० पु०) शुद्ध करना, सन्ध्या पूजा आदि करने के पहले शुद्धता के लिये शरीर आदि पर पानी छींटना ।
मार्जार—(सं० पु०) बिलाव, बिलार ।
मार्त्तण्ड—(सं० पु०) सूर्य, शूकर ।
मालती—(सं० स्त्री०) नाम फूल ।
मालभूमि—(सं० स्त्री०) ऊंचा, चौरस, मैदान, ऊंची ज़मीन ।
मालव—(सं० पु०) मालवा देश ।
माला—(सं० स्त्री०) फूलों का हार, पांती, पंक्ति, श्रेणी ।
मावस—(सं० स्त्री०) अमावस, कृष्णपक्ष की १५ वीं तिथि ।
माष—(सं० पु०) कोप, खीस, ईर्षा, उरद ।
मासिक—(सं० स्त्री०) महीने का, जो महीने में मिले, मुशाहरा, स्त्रियों की ऋतु ।
माहात्म्य—(गु०) बड़ाई, प्रशंसा, महिमा ।
माहिर—(गु०) प्रसिद्ध, आगाही, जानकारी ।
मित—(सं० पु०) नापा हुआ, परिमित ।
मितप्रद—(क० पु०) अन्दाज से थोड़ा देनेवाले ।
मित्र—(सं० पु०) दोस्त, हित, प्यारा, सूर्य ।
मिथिला—(सं० स्त्री०) जनकपुर, तिरहुत ।
मिथिलेश—(सं० पु०) जनक, मिथिला के राजा ।
मिथुन—(सं० पु०) जोड़ा, एक राशि का नाम ।
मिनट (Minute)—(सं० पु०) एक घंटे का साठवां अंश ।
मिश्रण—(भा० पु०) मेल, मिला हुआ, जुड़ा हुआ ।
मिश्रित—(गु०) मिला हुआ ।

मिषं, मिस—(सं· पु·) छल, कपट, बहाना, हीला, बनावट।
मिहिर—(सं· पु·) सूर्य।
मीच—(सं· स्त्री·) मौत, मृत्यु।
मीत—(सं· पु·) मित्र, सखा, सुहृद, दोस्त।
मीणा, मीना—(सं· पु·) जंगली आदमियों की एक जाति जो चोर डाकू होते हैं, एक कारीगरी का नाम।
मीन—(सं· स्त्री·) मछली, एक राशि।
मीनकेतु—(सं· पु·) कामदेव।
मीनार—(सं· पु·) लाट, धौरहरा।
मीमांसा—(सं· स्त्री·) सिद्धान्त, विचार, एक शास्त्र का नाम।
मिरियास—(सं. स्त्री·) जमीन्दारी, माश, वपौती।
मिस—(सं. पु·) बहाना।
मुंहमोड़ना—(म·) किसी काम करने से हटजाना, फिरजाना।
मुकरना—(क्रि·) न करना, इनकार करना, नटना।
मुकरी—(सं· स्त्री·) बुभौअल. एक छन्द जिस में चार चरण होते हैं, उस में कहनेवाली सखी अपने प्रियतम की बात कहती है पर पूछने पर नकार के दूसरी चीज बता देती है। जैसे - वाबिन चित्त चहू दिसि डोले, चातक ज्यौं पुनि पिय पिय बोले। प्रलय होय आवे नहिं गेह, क्यों सखि सज्जन ना सखि मेह॥
मुकुट—(सं· पु·) ताज, राजा की टोपी।
मुकुन्द—(सं· पु·) मुक्तिदाता, विष्णु, भगवान।
मुकुर—(सं· पु·) दर्पण, मौलश्री, कुम्हार का डण्डा, चोर।
मुकुल—(सं· पु·) कली।
मुकुलित—(गु·) कोंढ़िआया, कलीदार।
मुक्त—(सं· पु·) छुटा हुआ।
मुक्तकण्ठ—(गु·) खुलेमुंह।
मुक्ता—(सं· पु·) मोती, (गु·) बहुत।

मुक्तावलि, मुक्तावली—(सं॰ स्त्री॰) मोतियों की माला, मोतियों का [समूह]
मुक्ति—(सं॰ स्त्री॰) संसार के दुख से छुटजाना, उद्धार, निस्तार, मोक्ष।
मुख—(सं॰ पु॰) भूमिका, सब का आशय, सारांश, मुंह।
मखर—(गु॰) बहुत बोलनेवाला, (सं॰ पु.) मुखिया, शब्द करने वाला, काक, प्रधान, शंख।
मखोपाध्याय—(सं. पु.) मकर्जी, प्रधान, एक पदवी।
मुख्य—(गु॰) प्रधान, मुखिया।
मुग्ध—(गु॰) मूर्ख, भकुवा, कण्ठबन्द, सुन्दर, कम उम्र, मोहित।
मुक्ताहल—(सं. पु॰) मोती।
मचकुन्द—(सं. पु.) एक राजा का नाम, एक फूल।
मुजरा—(सं. पु.) प्रणाम, दण्डवत।
मुठभेड़—(मु.) साम्हना होना, मिल जाना।
मुद—(भा॰ पु॰) प्रसन्नता, आनन्द, खुशी, सुख।
मुदिर—(सं॰ पु॰) मेघ, बादल, कामी।
मुदित—(क॰ पु.) आनन्दित, प्रसन्न, खुश। [करते थे।
मुद्गर, मुद्गल—(सं॰ पु॰) मोगरा, एक ऋषि जो मगेर में निवास
मुद्रणयन्त्र—(सं॰ पु॰) छापने की कल।
मुद्रा—(सं॰ स्त्री॰) रुपया, अशर्फी आदि, छापा; मोहर, अंगूठी, योगियों के कान का कुण्डल, सन्ध्या, पूजा में अंगलियों को आपस में मिलाना।
मुद्रिका—(सं॰ स्त्री॰) अंगूठी, मुंदरी। [अनखिला।
मुद्रित—(सं॰पु॰) छापा हुआ, मोहर लगा हुआ, मदा हुआ,
मुधा—(क्रि॰ वि॰) व्यर्थ, निरर्थक, झूठा।
मुनीन्द, मुनीन्द्र, मुनीश—(सं॰ पु॰) मुनिवर, ऋषिराज।
मुमुक्षु—(क॰ पु॰) मुक्ति चाहनेवाला।
मुमूर्ष—(सं॰ पु॰) जो आदमी मरने पर है।

मुरली—(सं० स्त्री०) बांसुरी, वंशी।
मुरारि—(सं० पु०) श्री कृष्ण, मुर नाम दैत्य का वैरी।
मुरहा—नटखट, ढीठा।
मुलाजिम—(सं. पु.) नौकर, कर्मचारी।
मुष्टि—(सं० स्त्री०) मुट्ठी, मूठी।
मुष्टिक —(सं. पु.) घूसा, मुक्का।
मुष्टिका (सं० स्त्री.) घूसा, मुक्का।
मुरचङ्ग (सं. पु.) एक प्रकार का बाजा।
मुष्क—(सं० पु.) वृषण, अण्डकोष, फोता, चोर, समूह, कस्तूरी। स्थूल, मोटा।
मुसाहिब—(सं. पु.) सभासद, साथी, दोस्त।
मुहाना—(सं. पु.) पानी के उस तङ्ग और छोटे हिस्से का नाम है जो पानी के दो बड़े हिस्सों को मिलाता है।
मुहासा—(सं० पु.) फुनसी।
मुहूर्त—(सं. पु०) दो घड़ी का समय, शायत।
मूक—(गु.) गूंगा, मौन, दैत्य, दीन, प्रेत, चुप।
मूकना—(क्रि. सं०) छोड़ना।
मूढ़—(गु.) मूर्ख, अनपढ़, गंवार।
मूर, मूरि—(सं. पु.) जड़, जड़ी, बूटी।
मूर्ख—(गु.) अज्ञानी, विनपढ़ा, बेवकूफ़।
मूर्छा—(सं० स्त्री०) झंव, अचेत होना, बेहोशी।
मूर्ति— (सं० स्त्री०) मूरत, प्रतिमा।
मूर्तिमान—(गु०) देहधारी, शरीरवाला।
मूर्द्धन्य—(गु०) सिर सम्बन्धी, शिर का प्रधान।
मूर्द्धा—(सं० स्त्री०) शिर, मस्तक, माथा, ऊपरी दांत और तालू के बीच मूर्द्धा से बोला जाने वाला।

मूल—(सं· पु·) जड़, कन्द, असल, पूजी, १६ वां नक्षत्र।
मूलक—(सं·पु·) मुरई, मूली।
मूलाधार—(सं.पु·) जड़ का अवलम्ब, अपानवायु की स्थिति का चक्र।
मूल्य—(सं· पु·) दाम, भाव, मोल, क़ीमत।
मृग—(सं· पु·) पशुमात्र, हरिण, हाथी, खोजना।
मृगतृष्णा—(सं· स्त्री·) झूठा जल।
मृगनयनी—(गु·) सुन्दर स्त्री, मृगा के नेत्र सा जिस का नेत्र हो।
मृगराज, मृगपति—(सं· पु.) सिंह, शेर।
मृगमद—(सं· पु·) कस्तूरी।
मृगया—(सं· स्त्री·) आखेट, शिकार।
मृगाङ्क—(सं· पु·) मयंक, चन्द्रमा।
मृगी—(सं· स्त्री.) हरिणी।
मृणाल—(सं· पु.) कमल की जड़, कमलनाल।
मृत—(सं· पु·) मरा हुआ, मरा।
मृत्युंजय—(सं. पु·) शिव, मौत को दबानेवाला।
मृत्यु—(सं· स्त्री·) मौत, मरना।
मृत्तिका—(सं. स्त्री·) मिट्टी, मट्टी।
मृदङ्ग—(सं. स्त्री·) ढोलक, पखावज।
मृदु, मृदुल—(गु·) कोमल, नम्र।
मृषा—(गु·) झूठ, बेफायदह।
मेढ़ा—(सं· पु·) भेड़ा।
मेकलसुता—(सं· स्त्री·) मेकल पहाड़ की लड़की, नर्मदा।
मेख—(सं· स्त्री·) कील।
मेखला—(सं· स्त्री·) क्षुद्रघण्टिका, करधनी, जनेऊ, तलवार का परतला, पहाड़ का उतरा या ढाल।
मेघाच्छन्न—(गु·) बादल से ढका, घटा से घिरा हुआ।

मेघनाद—(सं॰ पु॰) रावण का पुत्र, इन्द्रजित ।
मेचकताई—(भा॰ स्त्री॰) कालापन ।
मेजेंटा (Magenta)—(स॰ पु॰) फीका लाल रंग वा फल ।
मेढक—(सं॰ पु॰) बेंग ।
मेडल—(सं॰ पु॰) पदक, तमगा ।
मेडिकल (Medical)—(सं॰ पु॰) वैद्दई औषधि सम्बन्धी ।
मेडिटरेनियन (Mediterranean —(सं॰ पु॰) भूमध्य, पृथ्वी के बीच का स्थल ।
मेदिनी—(सं॰ स्त्री॰) धरती, पृथ्वी, ज़मीन, मधु और कैटभ की मज्जा से भूमि भर गई तब से इस का नाम मेदिनी पड़ा ।
मेदुर—(गु.) घना, निविड़ ।
मेध—(सं॰ पु॰) यज्ञ, वलिदान, मख ।
मेधा—(सं॰ स्त्री॰) धारण करनेवाली बुद्धि, अनुभव, समझबूझ ।
मेधावी—(सं॰ पु॰) बुद्धिमान ।
मेम्बर (Member)—(सं॰ पु॰) सभासद ।
मेरु—(सं॰ पु॰) एक पर्वत, ध्रुव, केन्द्र ।
मेरुदण्ड—(सं॰ पु.) रीढ़ ।
मेष—(सं॰ पु॰) मेढ़ा, भेड़ा, पहिली राशि ।
मेका—(सं॰ पु॰) मा का घर, नैहर, पीहर ।
मेगनेट (Magnet)—(सं. पु॰) चुम्बक पत्थर, मेकनातिस ।
मेगनेटिक (Magnetic —(गु॰) चुम्बक का ।
मेजिस्ट्रेट (Magistrate) (सं॰पु॰) जिलाधीश, मजिष्टर ।
मैत्री—(सं॰ स्त्री॰) मित्रता, मिताई, दोस्ती, प्यार ।
मैथिली—(सं॰ पु॰) जानकी, सीता ।
मैथुन—(सं॰ स्त्री॰) स्त्री पुरुष का मिलाप, रति, प्रसङ्ग, सङ्गम ।
मैन—(सं॰ पु॰) कामदेव, मदन ।
मैनाक—(सं. पु.) हिमालय पहाड़ का बेटा, जो इन्द्र के भय से समुद्र में छिपा था ।

मोक्ष—(सं॰ पु॰) मुक्ति, छुटकारा, संसार के दुःख वा पाप से [छूट जाना]
मोखा—(सं॰ पु.) झरोखा।
मोघ—(गु.) बेफायदह, व्यर्थ।
मोचन—(भा॰ पु.) छुटकारा, छुड़ानेवाला, छुड़ाना।
मोचती—(क्रि॰) छोड़ती, गिराती, बहाती।
मोद—(सं. पु.) आनन्द।
मोदक—(फ. पु.) आनन्द देनेवाला, एक प्रकार का लड्डू।
मोलम्मा—(गु॰) कलई, कलाबत्तू।
मोह—(सं. प॰) मूर्छा, बेहोशी, माया, दुलार, छोह।
मोहन—(सं॰ पु॰) श्रीकृष्ण, लुभानेवाला।
मोहमय—(गु॰) झूठा, स्नेह से भरा हुआ।
मौज (موج)—(स॰ पु॰) लहर, हलोरा।
मौन—(सं॰ पु.) चुप, चुप्पी।
मौनसून—(Monsoon)—(सं॰ पु॰) मौसिमी हवा, ऋतुवायु, वह हवा जो अप्रेल से अक्टूबर तक नैर्ऋत्य कोण से फिर अक्टूबर से अप्रेल तक इस के विरुद्ध चलती है।
मौर—(सं॰ पु॰) सेहरा जो दुलहे व्याह के समय शिर पर पहनते हैं।
मौर्य्य—(गु॰) मुरा का, मुरा से पैदा हुआ (चन्द्रगुप्त)।
मौर्वी—(सं॰ स्त्री॰) त्रिदत्ता, धनुष की डोरी।
मौलि—(सं॰ स्त्री॰) मस्तक, शिर, मुकुट, शिखर, चोटी।
म्यूनिसिपल (Municipal)—(गु॰) जो म्युनिसिपैलिटी से लगाव रक्खे, वा म्युनिसिपैलिटी का हो।
म्युनिसिपैलिटी (Municipality)—(सं॰ स्त्री॰) चक्र, घेरा, मण्डल, शहर की सफाई आदि का मुहकमा।
म्लान—(सं॰ पु॰) मलीन, मैला, उदासीन, सूखा, मुरझाया हुआ।
म्लेच्छ—(सं॰ पु॰) पापी, यवन, नीच जाति, वे लोग जिन की

बोली संस्कृत नहीं है और न वे हिन्दुओं के शास्त्र को मानते हैं। प्रायः यह शब्द जंगली और दूसरी विलायत के लोगों के लिये बोला जाता है।

य

य—(सं· पु·) हवा, यश, कीर्ति, मेल, योग, सवारी, गति (गु·) जानेवाला।

यकृत—(सं· पु·) पेटका रोग, जो पेटमें दाहिनी ओर रहता है।

यक्ष—(गु·) कुवेर के नौकर।

यक्ष्मा—(सं· स्त्री·) क्षयीरोग।

यजन, यजसूत्र, यज्ञ—(सं· पु·) बलिदान, पूजा, होम, हवन।

यज्ञोपवीत—(सं· पु·) जनेऊ।

यज्ञपुरुष—(सं· पु·) श्रीनारायण।

यज्ञशाला—(सं· स्त्री·) यज्ञस्थान, यज्ञ करने की जगह।

यतः—(अ·) यस्मात्, क्योंकि।

यती, यति—(सं· पु.) सन्न्यासी, वैरागी, जैनी भिखारी।

यत्न—(सं. पु.) यतन, उपाय, कोशिश।

यत्र—(अ.) जहां।

यथा—(क्रि· वि.) जिस प्रकार, जैसे।

यथाक्रम—(क्रि. वि.) क्रम से, परिपाटी से, सिलसिले से।

यथायोग्य—(क्रि. वि.) जैसा चाहिये, जैसा उचित हो।

यथार्थता—(भा. स्त्री·) सत्यता, सचाई, ठीक।

यथार्थ—(गु.) ठीक, सत्य, सच, जैसा चाहिये।

यथाशक्ति—(क्रि. वि.) अपने बल के अनुसार।

यथासाध्य—(क्रि. वि.) इच्छापूर्वक, काबूभर।

यथेष्ट—(क्रि· वि.) जैसी इच्छा हो, चाह के अनुसार, पूरा।

यथोचित—(क्रि. वि.) जैसा उचित हो, यथायोग्य।

यदा—(अ.) जिस समय ।
यदि—(अ.) जो, अगर ।
यदुराई—(सं. पु.) श्रीकृष्ण ।
यदुवंशी—(क॰ पु॰) यदु के वंश वाले, यादव ।
यद्यपि, यद्पि—(अ॰) जो भी, अगर्चे ।
यद्वा—(अ॰) अथवा, पक्षान्तरबोधक, ज्यों ।
यन्त्रस्थ—(गु॰) जो छपरहा हो, मुद्रित हो रहा हो, यन्त्रालय के भीतर रहनेवाला ।
यन्त्रणा—(सं॰ स्त्री.) कष्ट, दुःख, क्लेश, पीड़ा ।
यन्त्रिका—(सं॰ स्त्री॰) ताला ।
यम—(सं॰ पु॰) यमराज, इन्द्रियों को रोकना, जोड़ा ।
यमज—(सं॰ पु॰) दो लड़के जो एक साथ पैदा हों ।
यमल –(सं, पु॰) जोड़ा, जौआं ।
यमी—(सं॰ पु॰) यम करनेहारा, जमुना जी ।
यलो सी (Yellow Sea)— (सं॰ पु.)पीला सागर, पीत सागर ।
यव, जव—(सं॰ पु॰) एक प्रकार का अनाज, जौ, वेग, तेजी ।
यवक्षारजन—(सं॰ पु॰) नाइट्रोजन, शोरा, जवाखार ।
यवन—(सं॰ पु॰) म्लेच्छ, मुसलमान ।
यवनिका—(सं॰ स्त्री॰) कनात, पर्दा, ओट, चिक, चिलमन ।
यश—(सं॰ पु॰) कीर्ति, सुख्याति ।
यशस्वी—(क॰ पु॰) यशवाला, नामी, प्रतिष्ठित, नामवर ।
या— (सं॰ ना॰) यह ।
याग—(सं॰ पु.) यज्ञ, बलिदान ।
याचक—(क. पु॰) मांगनेवाला, भिखारी ।
यातना (सं॰ स्त्री॰) पीड़ा, नरक का दुःख, भारी दुःख ।
यातुधान— (सं॰ पु.) राक्षस ।
यात्रा—(सं॰ स्त्री॰) प्रस्थान, विदा, सफर जाना ।

यात्रिक } —(क. पु.) यात्रा करनेवाला, राही, बटोही।
यात्री }

यादव—(सं.पु.) यदुवंशी, श्रीकृष्ण।

यादृश—(क्रि. वि.) जैसा।

यान (सं. पु.) सवारी, गमन।

याम—(सं. पु.) पहर।

यामिनी—(सं. स्त्री.) रात।

यावत्—(क्रि. वि.) तक, जबतक, जितना।

युक्ति—(भा. स्त्री.) मिलना, मेल, चतुराई, रीति, तरकीब।

युग—(सं. स्त्री.) जोड़ा, समय, युग (सतयुग, द्वापर, त्रेता, कलियुग)।

युगल, युग्म—(सं. पु.) जोड़ा, दो।

युत—(गु.) मिला हुआ, संयुक्त।

युद्ध—(सं. पु.) लड़ाई, संग्राम।

युधिष्ठिर—(सं. पु.) धर्मराज, कुन्ती और पांडवों का बड़ा बेटा।

युनाईटेड (United) (सं. पु.) सम्मिलित, मिला हुआ।

युनिवर्सिटी (University) विश्वविद्यालय, महाविद्यालय।

युवक—(गु.) जवान, तरुण।

युवती—(सं. स्त्री.) जवान स्त्री।

युवराज—(सं.पु.) राजा का बड़ा बेटा, राज का हकदार।

युवा—(सं. पु.) जवान, तरुण।

यूथ—(सं. पु.) समूह, झुण्ड।

यूथप—(सं. पु.) सेनापति, सेना का मालिक।

यूप—(सं. पु.) स्तम्भ, खंभा।

योग—(सं. पु.) समाधि, ध्यान, तप, ईश्वर में मन लगाना, (भा.) मिलाप, सम्बन्ध, जोड़।

योगरूढ़ि—(सं. स्त्री.) जो दो शब्दों से मिल कर बनी हो और

अपने अर्थ में विशेषता रक्खे, जैसे पीताम्बर।

योगिनी—(सं० स्त्री०) शक्ति आदि ६४ है, ज्योतिष में की भला बुरा बतानेवाली।

योगी— (क० पु०) तपस्वी, संन्यासी।

योगीश—(सं० पु०) परमेश्वर, सिद्ध तपस्वी, बड़ा ऋषि।

योग्य—(गु०) ठीक, उचित, निपुण, लायक, समर्थ।

योग्यता—(भा० स्त्री.) सामर्थ्य, लियाक़त।

योजक—(क० पु०) मिलानेवाला।

योजन—(सं. पु०) चार कोस, मिलाना।

योद्धा, योधा—(सं० पु०.) वीर, बहादुर, लड़नेवाला, सिपाही।

योनि—(सं० स्त्री०) भग, पैदा होने की जगह।

योषित, योषिता—(सं० स्त्री०) स्त्री, नारी, अबला, अङ्गना।

यौगिक—(गु.) दो शब्दों अथवा प्रकृति और प्रत्यय के योग से बना हुआ शब्द, योग से बना, संयोगी।

यौतुक (सं० पु.) दहेज, दायज।

यौवन—(सं. पु०) तरुनाई, जवानी।

र

र—(सं. पु.) आग, कामदेव की आग, तेज, वेग, क्रोध।

रई—(सं. स्त्री.) मथनी, बिलोनी, सुज्जी।

रक्त—(सं. पु०) लोहू, रुधिर, कुङ्कुम, केसर, तांबा, (गु.) लाल।

रक्तचन्दन—(पु.) लालचन्दन।

रक्तबीज—(सं०पु.) अनार, दाड़िम, एक राक्षस।

रक्षक—(क. पु.) रक्षा करनेवाला, पालनेवाला।

रक्षा—(सं. स्त्री०) बचाव, पालन, उद्धार।

रघु—(सं. पु०) सूर्यवंशी राजा दलीप का बेटा रामचन्द्र का परदादा।

रघुनन्दन, रघुनाथ—(सं. पु०) रामचन्द्र।

रघुवंशमणि
रघुवर } —(सं पु.) रघु के वंश में श्रेष्ठ रामचन्द्र, दशरथ आदि।
रङ्क—(गु.) कंगाल, दरिद्र, सूम, लालची।
रङ्गभूमि—(सं. स्त्री·) खेल वा लड़ाई की जगह।
रङ्गमहल—(सं· पु.) भोग विलास का घर।
रङ्गराता—(गु·) प्रसन्न।
रचना—(क्रि.) बनाना, निकालना, पैदा करना, तैयार करना।
रचयिता—(क· पु·) निर्माण करनेवाला, रचनेवाला, ग्रन्थकार, किताब बनानेवाला।
रचित—(सं. पु.) बनाया हुआ।
रज—(सं. पु.) धूलि, फूलों की सुगन्धित धूलि, स्त्री का फंवल या फूल, रजोगुण।
रजक—(सं· पु.) धोबी, रंगरेज। [(गु·)सफेद, उज्ज्वल।
रजत—(सं· पु.) चान्दी, रूपा, हाथी का दांत, रुधिर, हार,
रजनि, रजनी—(सं· स्त्री·) रात्रि, रात, हरदी, हल्दी।
रजनीमुख—(सं. पु·) सांझ।
रजनीचर—(सं. पु·) राक्षस, रात को चलनेवाला।
रजवाड़ा—(सं· पु.) राज, राजपुताना।
रजस्वला—(सं· स्त्री·) वह स्त्री जो कपड़े से हो, ऋतुमती।
रजाई
रजायसु } —(सं·स्त्री·) राजा की आज्ञा या हुक्म, तुराई, नेहाली।
रज्जु—(सं· स्त्री·) रस्सी।
रंजन—(भा· पु·) प्रसन्न करना, अनराग, (गु·) प्रसन्न करनेवाला।
रण—(सं· पु·) लड़ाई, ध्वनि। रणित (गु·) बजाता हुआ।
रणभूमि—(सं· स्त्री.) युद्धक्षेत्र, लड़ाई की जगह।
रत—(गु.) लगा हुआ, आसक्त, मैथुन,, स्त्रीप्रसङ्ग।
रति—(सं. स्त्री·) कामदेव की स्त्री, स्त्रीसङ्ग, प्रेम, खेल।
रतनार—(गु·) लाल, लालरङ्ग।

रतिपति—(सं॰ पु॰) कामदेव।
रत्न—(सं॰ पु॰) रतन, जवाहिर, माणिक्य, बहुत दाम का पत्थर।
रत्नगर्भा—(सं॰ स्त्री॰) पृथ्वी।
रत्नाकर—(सं॰ पु॰) समुद्र, रत्नों की खान।
रथ—(सं॰ पु॰) चार पहियों की गाड़ी, गाड़ी, चौकड़ी।
रथाङ्ग—(सं॰ पु॰) पहिया, चक्रवाक।
रद, रदन—(सं॰ पु॰) दांत।
रदिनी—(सं॰ स्त्री॰) हथिनी।
रदपुट—(सं॰ पु॰) होंठ, लब।
रनवांस, रनिवांस—(सं॰ पु॰) रानियों के रहने का महल, अन्तःपुर।
रन्ध्र—(सं॰ पु॰) छेद, दोष।
रम (*Rum*)—सं॰ स्त्री॰) शराब।
रमचेरा—(सं॰ पु॰) दास।
रमण—(भा॰ पु॰) खेल, मैथुन, रमनेवाला, प्यारा, कामदेव, मनोहर, गर्दभ, पटोल की जड़।
रमणी—(सं॰ स्त्री॰) सुन्दर स्त्री।
रमणीक, रमणीय—(गु॰) सुन्दर, सुहावना।
रमा—(सं॰ स्त्री॰) लक्ष्मी, स्त्री।
रम्भा—(सं॰ स्त्री॰) एक अप्सरा का नाम, वेश्या, केला, पार्वती, [बिचली, खती।
रम्य—(क॰ पु॰) सुन्दर, मनोहर।
रये—(क्रि॰ अ॰) रंगे, मिले।
ररत—(क्रि॰) बोलता है, रटता है।
रलना—(क्रि॰ अ॰) मिलना।
रव—(सं॰ पु॰) शब्द, आवाज़।
रवा—(सं॰ पु॰) चांदी वा सोने का रेतन वा चूर, बालू।
रवि—(सं पु॰) सूर्य।
रवितनया—(सं॰ पु॰) यमुना नदी, सूर्य की लड़की।

रविपुत्र—(सं. पु.) सुग्रीव, शनिश्चर, कर्ण, यम।
रविमणि—(सं. स्त्री.)सूर्य्यकान्तमणि।
रश्मि—(सं. स्त्री.) किरण, तेज, रास, घोड़े की बागडोर।
रस—(सं. पु.) गन्ध, अर्क, स्वाद, बहनेवाली वस्तु, सार, सवाद, भोजन में रस छः प्रकार के होते हैं—१ मीठा, २ खट्टा, ३ खारा, ४ कड़ुवा, ५ तीता वा चरपरा, ६ कसैला साहित्य में नौ रस हैं जैसे—१ शृंगार, २ हास्य, ३ करुणा, ४ रौद्र, ५ वीर, ६ भयानक, ७ बीभत्स, ८ अद्भुत और ९ शान्त, वा वात्सल्य।
रसना—(सं. स्त्री.) जीभ, करधनी।
रसरस, रसेरसे—(क्रि. वि.) धीरेधीरे।
रसज्ञ—(क. पु.) रस वा भाव को जाननेवाला, कवि, पति, रसायनी।
रसा—(सं. स्त्री.) पृथ्वी।
रसायन—(सं. पु.) (रस = अर्क या पारा, अयन = घर, राह वा जाना) दो तीन वस्तुओं को मिला कर एक चीज़ बनाने की अथवा एक चीज़ को दो तीन चीज़ों में जुदा करने की विद्या, कीमिया।
रसायनविद्या—(सं. स्त्री.) जिस शास्त्र में रसायन का वर्णन हो।
रसाल—(सं. पु.) आम, पनस, ऊख।
रसिक—(क. पु.) रस जाननेवाला, रसिया, रसीला, लम्पट।
रसेन्द्रिय—(सं. स्त्री.) स्वाद की इन्द्रिय, जिह्वा, जीभ।
रहस्य—(सं. पु.) एकान्त, निर्जन, गोपनीय।
रहित—(गु.) छोड़ा हुआ, खाली, पृथक्, भिन्न।
राऊ—(सं. पु.) राजा, प्रधान।
राका—(सं. स्त्री.) पूर्णमासी, नदी, खजुली, प्रथम रजोवती स्त्री।
राकेश—(सं. पु.) पूर्णमासी का चन्द्रमा।

राग—(सं. पु.) क्रोध, प्यारा, रंग, गान, सुर, राग छः हैं और हरएक की छः छः रागिनियां हैं जैसे—
राग—भैरव, मल्लार, श्रीराग वा सारंग, हिंडोल, वसन्त, दीपक।
रागिणी क्रम से—भैरवी, वङ्गाली, वरारी, मधुमाधवी, सिन्धवी, गुर्जरी ६।
विलावली, वर्षा, कानडा, माधवी, कौड़ा, परमंजरी ६।
गान्धारी, सुभगी, गौरी, कौमारिका, वैरागी, काफी ६।
मायूरी, दीपक, देशावरी, पाहिडा, वराड़ी, मोरहारी ६।
टोर्डी, पञ्चमी, ललिता, पटमंजरी, गुर्जरी, विभासा ६।
देशी, कामोदा, केदारा, कान्हड़ा, कर्नाटकी, गुर्जरी ६।
राजा—(सं. पु.) बादशाह, राजा।
राजकर—(सं. पु.) लगान, सरकारी मालगुजारी।
राजकीय—(गु.) सरकारी, बादशाही।
राजकुमार—(सं. पु.) राजा का बेटा, राजपुत्र, शाहजादा।
राजकोश, राजकोष—(सं. पु.) बादशाही खजाना।
राजदण्ड—(सं. पु.) राज सम्बन्धी दण्ड, राजा वा राजकर्मचारी की आज्ञा से जो दण्ड होता है। [नगर में राजकाज हो।
राजधानी—(सं. स्त्री.) जिस नगर में राजा रहे, राजस्थान, जिस
राजना—(क्रि. अ.) शोभना।
राजभवन—(सं. पु.) राजमन्दिर, राजा के रहने का मकान।
राजसूय—(सं. पु.) एक यज्ञ जिस को केवल चक्रवर्ती राजा ही करता है।
राजमार्ग—(सं. पु.) बड़ी सड़क।
राजसभा—(सं. स्त्री.) राजा का दरबार, कचहरी।
राजाधिराज—(सं. पु.) बड़ा राजा, महाराज।
राजि—(सं. स्त्री.) पंक्ति, पांती।
राजीव—(सं. पु.) कमल, राजा के चलने का मार्ग।

राजेश्वर—(सं· पु.) राजाओं का राजा।
राज्य—(सं· पु.) राज, बादशाहत।
राज्याभिषेक—(सं. पु·) राजतिलक, राजटीका।
राणा—(सं. पु·) राजा।
राते—(गु.) लाल, रक्त, लगे।
रात्रिचर—(क. पु.) राक्षस, भूत, चोर, चौकीदार।
राद—(सं. स्त्री·) पीव, मवाद।
राधा—(सं. स्त्री·) राधिकाजी, श्रीकृष्ण की प्यारी।
रामगिरि—(सं. पु·) चित्रकूट पहाड़, सुरगुजा में रामगढ़।
रार, रारि—(सं· स्त्री.) लड़ाई, दंगा, फसाद।
राल—(सं. पु·) धूना, गोंद।
रावणारि—(सं. पु.) श्रीरामचन्द्र, रावण के शत्रु।
राशि—(सं· पु·)समूह, ढेर, ज्योतिष में मेष, वृष, मिथुन आदि बारह राशियां।
राष्ट्र—(सं. पु·) बसा हुआ देश, मुल्क।
रास—(सं. स्त्री·) डोर, बाग, क्रीड़ा।
रासभ—(सं. पु.) गदहा,।
राहु—(सं. पु·) आठवां ग्रह, रास्ता।
रिक्त—(गु.) छूछा, खाली।
रिझाना—(क्रि.) प्रसन्न करना, खुश करना।
रिपु—(सं· पु·) वैरी, शत्रु।
रिष्ट—(सं· पु.) मंगल, कल्यान, अशुभनाश, कठोर।
रिस—(सं. पु·) कोप, क्रोध, गुस्सा।
रीझ—(सं. स्त्री·) खुशी।
रीडर (Reader)—(सं· पु·) पढ़ने की किताब, पाठ, पढ़नेवाला।
रीति—(सं· स्त्री·) कायदा।
रीता, रीते—(गु·) खाली, छूछा, शून्य।

रुक्मिणी—(सं· स्त्री.) श्रीकृष्ण की पटरानी, भीष्म की लड़की और रुक्म की बहन।
रुत्त, रूक्ष—(गु·) रूखा, कठोर।
रुख, रूख—(सं· पु·) सामने, क्रोध, तरफ़, मुंह, पेड़, दरख़्त।
रुग्ण—(गु·) टेढ़ा, रोगी।
रुचि—(भा· स्त्री·) चाह, इच्छा, शोभा, प्यार, अनुराग।
रुचिकर—(गु.) प्यारा, पाचक, भूख लगानेवाला।
रुचिर—(ग·) सुन्दर, मीठा, सुस्वादु।
रुज—(सं· पु·) रोग, बीमारी।
रुण्ड—(सं· पु·) धड़, विना शिर की देह।
रुदन—(भा· पु·) आंसू बहाना, रोना।
रुधिर—(सं· पु·) लोहू, रक्त।
रुद्ध—(सं. पु·) रुका वा छेंका हुआ, बंधा हुआ।
रुद्र—(सं· पु.) शिव, ११ की संख्या, महादेव की ग्यारह मूर्ति-अजैकपाद, अहिर्बुध्न, विरूपाक्ष, सुरेश्वर, जयन्त, बहुरूप, त्र्यम्बक, अपराजित, सावित्र, हर, रुद्र।
रुरु—(सं· पु.) दैत्य, सर्प, अतिक्रूर, मृगभेद।
रुष्ट—(गु·) क्रुद्ध।
रुह—(गु·) उत्पन्न हुआ।
रूढ़—(क· पु·) पैदा हुआ, प्रसिद्ध, पुष्ट, हुआ।
रूपान्तर—(भा· पु.) दूसरा रूप, बदला, परिवर्तन।
रूप—(सं· पु·) आकार, स्वरूप, सूरत, शोभा, सुन्दरता।
रूपी—(गु·) सुन्दरी।
रेखा—(सं· स्त्री·) लकीर, प्रारब्ध, भाग।
रेखाङ्कित—(गु.) चिह्नित, चिन्ह खींचा हुआ, रेखा खींची हुई।
रेचक—(क· पु·) दस्तकारक, जुलाब।
रेड सी (Red Sea)—(सं· पु·) लाल सागर।

रेणु, रेणुका—(सं॰ स्त्री॰) रेत, धूलि, परशुराम की माता।
रेत —(सं. पु॰) वीज, वालू, धार के बीच में उभड़ी हुई धरती।
रेल (Rail)—(सं॰ स्त्री॰) लोहे की पटरी, एक प्रकार की गाड़ी।
रेवती—(सं॰ स्त्री॰) रेवत राजा की बेटी, बलदेव जी की स्त्री। सत्ताइसवां नक्षत्र।
रेवा—(सं॰ स्त्री॰) नर्मदा नदी।
रेवेन्यु (Revenue)—(सं॰ पु॰) माल का काम, मालगुजारी।
रेसीडेन्ट (Resident)—(सं॰ पु॰) रहनेवाला, राजनीति सम्बन्धी काम करनेवाला।
रैन—(सं॰ स्त्री॰) रात।
रोगग्रस्त—(सं. पु॰) रोगी, बीमार।
रोगावस्था—(सं. स्त्री॰) बीमारी की हालत।
रोचक—(गु॰) चाह करनेवाला, रुचि करानेवाला, पाचक।
रोड (Road)—(सं॰ पु॰) सड़क, मार्ग।
रोडसेस (Road cess)—(सं॰ पु॰) सड़क का टिकट।
रोदन—(भा. पु.) रोना, रुदन।
रोम—(सं॰ पु॰) रोआं, बाल।
रोमन्थ—(सं॰ पु॰) पागुर।
रोमपाट—(सं. पु.) दोशाला।
रोमाञ्च—(भा॰ पु॰) रोम खड़ा होना।
रोमावली—(सं. स्त्री॰) रोओं का समूह, रोवें की धारी जो नाभि के बीच में से हो कर ऊपर जाती है।
रौंदना—(क्रि॰) धांगना, कुचलना।
रौताई—(भा॰) ठकुराई।
रौर—(सं. पु.) हल्ला, शब्द, हांक।
रौष—(सं॰ पु॰) कोप, क्रोध।
रोहन—(भा॰ पु॰) चढ़ाव।

रोहित—(सं· पु·) लाल, इन्द्र धनुष।
रोहिताश्व—(सं· पु·) हरिश्चन्द्र के बेटे का नाम।
रौद्र—(गु·) डरावना धूप।
रौप्यविवाह—(सं· पु·) इंगलैंडदेशीय विवाह से २५ वें वर्ष का [उत्सव।
रौरव—(सं· पु.) एक नरक का नाम।
रौला—(सं. पु·) हल्ला, शोर गुल, भीड़, धूमधाम।

ल

ल—(सं. पु·) इन्द्र, मंत्र, प्रकाश, दीप्ति, आह्लाद, वायु।
लकुट—(सं· पु·) लाठी, लकड़ी, छड़ी।
लक्ष—(सं. पु·) एक लाख, सौ हजार, छल, बहाना, चिन्ह।
लक्षणा—(सं· स्त्री·) अध्याहार, जो ऊपर से लिया जाय। जहां मुख्य अर्थ के अभाव से अर्थात् न लगने से जिस शक्ति से दूसरा प्रासङ्गिक अर्थ जान पड़ता है उसे लक्षणा कहते हैं। जैसे गंगा में बथान है। पर गंगा के प्रवाह में कोई रह नहीं सकता है तो यहां इस अर्थ की लक्षणा होती है कि पवित्रशीतल गंगा जी के किनारे पर बथान है। यह अर्थ लक्षणा शक्ति से होता है।
लक्षित—(सं· पु·) देखा हुआ, चिन्ह किया हुआ।
लक्ष्मणावती—(सं. स्त्री·) गौड़नगर।
लक्ष्मी—(सं· स्त्री·) विष्णु की स्त्री, सम्पत्ति, शोभा, सुन्दरता।
लक्ष्य—(सं. पु·) निशान, ताक (सं·) देखने योग्य, जो देखा जाय।
लगभग - (अ·) आसपास, प्रायः।
लगि—(अ·) लिये, वास्ते, तक, तलक।
लग्न—(अ·) साइत, प्रेम, मुहूर्त्त।
लघिमा—(सं. स्त्री.) लघुता।
लघिष्ठ—(ग.) बहुत, छोटा।
लघु—(ग·) हलका, छोटा, शीघ्र।

लङ्क—(सं. स्त्री·) कटि। [का राजा।
लङ्केश, लङ्कापति—(सं· पु.) लङ्का+ईश=लङ्केश, रावण, लङ्का
लङ्घन—(भा· पु·) लांघना, उपास, फाका।
लज्जा—(सं· स्त्री·) लाज, शर्म, सङ्कोच। [छूई मूई का पेड़।
लज्जावती—(सं· स्त्री·) लजालू स्त्री, लजाधुर, लजौनी पौधा,
लज्जित—(क· पु.) लजाया हुआ, शर्मिंदा, संकुचित।
लटा—(गु.) दुबला, थका, मांदा।
लंठ—(गु·) मूर्ख, गंवार।
लत—(सं· स्त्री·) आदत, टेव।
लतिका, लता—(सं. स्त्री·) लत्तर, बेल, बेली, दूर्वा।
लपट—(भा· स्त्री·) सुगन्ध, मंहक, दहक, भिड़ाव, लूका।
लपाट, लपाटिया—(गु.) झूठा, लवरा।
लटापटा—(अ·) ऐसे तैसे।
लब्धि, लब्धी—(सं· स्त्री.) प्राप्ति, भाग देने पर जो मिले।
लभ्य—(सं. पु·) पाने योग्य, पाया हुआ, प्राप्त।
लमछड़ा—(गु.) ऊंचा, लम्बा, छरहरा।
लम्पट—(गु·) कुकर्मी, लुचा, झूठा।
लम्ब—(गु·) ऊंचा, लम्बा, कोटि, खड़ी लकीर।
लम्बकर्ण—(सं· पु·) खरहा।
लम्बोदर—(सं· पु·) गणेश जी, (ग·) बड़े पेटवाला।
ललना—(सं· स्त्री·) स्त्री।
ललाम—(गु·) सुन्दर, ललाम, चिन्ह, ध्वजा, शृंग, प्रधान,
भूषण, घोड़ा, पुच्छ, पूछ।
ललित—(गु·) सुन्दर, चञ्चल, कोमल, प्यारा, स्त्री।
लली—(सं· स्त्री·) लड़की, कन्या, बेटी।
लव—(सं· पु·) क्षण, पल, अंश, निमेष का ६० भाग, श्रीरामचन्द्र
के द्वितीय पुत्र।

लवण—(सं· पु·) नोन, नमक, खारा।
लवा—(सं· स्त्री·) वटेर, एक प्रकार का पक्षी।
लषित—(सं· पु·) चाहा हुआ, शोभायमान।
लसना—(क्रि·) शोभना, सजना, चमकना।
लहकौर—(सं· स्त्री.) खीर जो दुलहा दुलहिन खाते हैं।
लहना—(क्रि· सं·) लेना, पाना, जानना, (सं· पु·) उधार, कर्ज, ऋण।
लहर—(सं· स्त्री.) तरङ्ग, हिलोरा, हिलोर, हिलकोरा।
लाघव—(भा· पु.) हलकाई, अपमान, लघुता, शीघ्रता।
लाग—(सं· स्त्री·) वैर, द्वेष, प्यार, मेल, खर्च, आश्रय।
लाङ्गल—(सं· पु·) हल।
लाटी—(सं· स्त्री.) फेटी, फफड़ी।
लाठ—(सं· स्त्री·) मीनार।
लाजा—(सं. स्त्री·) खीला, धान का विना भूसे का लावा।
लाभ—(सं· प·) फल, प्राप्ति, नफा, फायदा, मिलना।
लाल—(गु·) लालरंग, प्यारा, (पु·) बेटा, (स्त्री·) थूक, लार।
लालसा—(सं· स्त्री·) इच्छा, अभिलाष, चाह।
लालित्य—(भा· पु·) सुन्दरता, कोमलता।
लावण्य—(भा· पु·) सौन्दर्य्य, शोभा, नमकीन, मोती के समान देह में जो झलक देख पड़ती है उसी को लावण्य कहते हैं।
लाह / लाहु —(सं· पु·) लाभ, फायदा, लाख।
लिखित—(सं· पु·) लिखा हुआ, (पु·) लेख, पत्र, लिपि।
लिङ्ग—(सं. पु.) पुरुषचिन्ह, इन्द्री, शिव की मूरत, चिन्ह, व्याकरण में जाति जैसे पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग।
लिपि—(सं· स्त्री·) लिखा हुआ कागज, लेख।
लिप्त—(क· पु·) लीपाहुआ, पोताहुआ, मिलाहुआ, चर्चाहुआ।

लीक—(सं· स्त्री·) गाड़ी का मार्ग, लकीर।
लीन—(गु·) लय, लगा हुआ, मिला हुआ, डूबा हुआ, सोखा हुआ।
लीला—(सं· स्त्री·) खेल, क्रीड़ा।
लुगाई—(सं· स्त्री·) स्त्री।
लुनाई—(सं· स्त्री·) सुन्दरता।
लुब्ध—(क. पु·) लोभी, शिकारी, लुचा, लंपट।
लून—(सं· पु·) काटा गया, लुना गया, छिन्न।
लून—(सं· पु·) पुच्छ, पूंछ।
लेख—(भा· पु·) लिखा हुआ कागज़, पत्र, लिपि।
लेखक—(क· पु·) लिखनेवाला, मोहर्रिर।
लेखनी—(सं· स्त्री·) लिखने की वस्तु, कलम।
लेखनीय—(सं· पु·) लिखितव्य, लिखने के योग्य।
लेजिसलेटिव काउनसिल (Legislative Council)—(सं· स्त्री·) व्यवस्थापकसभा, कानून बनानेवाली सभा।
लेन्स (Lens)—(सं· पु·) एक प्रकार का कांच।
लेश—(ग·) थोड़ा, छोटा, अल्प, किञ्चित्, कण।
लेशमात्र—(गु·) थोड़ा, भी, किञ्चित् भी, ज़रासा।
लेफ्टिनेण्टगवर्नर (Lieutenant-Goveror)— सं·पु·) छोटे लाट।
लेमोनेड (Lemonade)—,सं· पु·) नीबू का शर्बत।
लेह्य—(गु.) चाटने के योग्य।
लैण्ड (Land)—(सं· प.) भूमि, धरनी, ज़मीन।
लों, लौं—(अ·) तलक।
लोअर, लोवर (Lower)—(गु·) नीचा, नीचे का, निम्न निचला।
लोक—(सं. पु.) लोग, मनुष्य, भवन, सृष्टि के विभाग।
लोकनाथ—(सं· पु·) राजा, शिव, ब्रह्मा, विष्णु।
लोकल (local)—(गु·) स्थानीय, देशी, मुकामी, स्थानिक।
लोकलसेल्फ़गवर्नमेण्ट(Local self Government)—(सं· स्त्री.)

स्थानीय आत्मशासन प्रणाली, इख़्तियारी मुक़ामी हुकूमत।
लोकेश—(सं· पु·) ब्रह्मा, राजा, लोक का स्वामी।
लोचन—(सं· पु·) आंख, नेत्र।
लोन—(सं· पु·) लवण, निमक।
लोप—(भा· पु·) काटना, मिटाना, छिपा, गुप्त, अदृश्य, नाश।
लोभ—(सं· पु·) लालच, चाह, दूसरे का धन लेने की इच्छा।
लोम, रोम—(सं· पु·) रोआं।
लोमकूप—(सं· पु·) रोएं की जड़, रोएं के छेद।
लोमश—(सं· पु·) एक ऋषि का नाम, जिस को बहुत बाल हों।
लोयन—(सं· पु·) आंख, लोचन।
लोल—(गु·) चंचल।
लोलुप—(गु·) बड़ा लालची।
लोहकार—(सं· पु·) लुहार।
लोहाम्ल—(सं· पु·) मुर्चा, कैंटी।
लोह, लौह—(सं· पु·) लोहा।
लोहित—(गु·) लाल, लोह, लाल रङ्ग। [कोकिला पक्षी।
लोहिताक्ष—(सं· पु·) लाल आंखवाला, विष्णु, लाल नेत्र वाला,
लौंद—(सं· पु·) मलमास।
लौ—(सं· स्त्री·) जलती हुई वत्ती का शोला या ज्वाला।
लौकिक—(गु·) जो लोक व्यवहार में आता हो, सांसारिक, दुनियावी।

व

व—(सं· पु) हवा, राहु, कल्याण, समुद्र, बाघ, वरुण, मन्त्रणा, सलाह।
वंश—(सं· पु·) कुल, सन्तान, बेटे पोते, बांस।
वंशलोचन—(सं· पु·) बांस में से निकली हुई उजली सी वस्तु

जो स्वाती की बूंद पड़ने से उत्पन्न होती है।
वंशीधर—(सं० पु०) श्रीकृष्ण, वंशी के धरने वाले।
वंशीवट—(सं० पु०) एक वटवृक्ष जिस के नीचे बैठ कर श्रीकृष्ण जी वंशी बजाया करते थे।
वक्ता—(सं० पु०) बोलनेवाला, कहनेवाला।
वक्तृता—(सं० स्त्री०) कथन, व्याख्यान।
वकुल—(सं० पु०) मौलश्री का पेड़।
वक्र—(गु०) टेढ़ा, बांका।
वक्रोक्ति—(सं० स्त्री०) टेढ़ी बात, व्यङ्गवचन, ताना।
वंक—(गु०) बांका, टेढ़ा।
वक्षःस्थल—(सं० पु०) छाती, हृदय।
वचन—(सं० पु०) बात, वाक्य, करार, शर्त।
वचनबद्ध होना—(मु०) वचन देना, प्रतिज्ञा से बंध जाना।
वज्राघात—(सं० पु०) वज्रपात, वज्र की चोट, वज्र से मरना।
वज्री, वज्रहस्त, वज्रधर, वज्रपाणि—(सं० पु०) इन्द्र।
वञ्चक—(सं० पु०) ठग, धूर्त, सियार, न्योला, नकुल।
वट—(सं० पु०) बड़ का पेड़।
वटु—(सं० पु०) ब्रह्मचारी, बालक, विद्यार्थी।
वत्—(अ०) समान, तुल्य, ऐसा, सा, बराबर।
वत्स—(सं० पु०) बच्चा, बछड़ा, बरस, प्यार का शब्द।
वत्सर—(सं० पु०) बरस।
वत्सल—(गु०) प्रेमी, प्यारा, स्नेही, मोही, दयालु।
वदन—(सं० पु०) मुख, चेहरा।
वदान्य—(सं० पु०) दानशील, वक्ता, प्रिय।
वन—(सं० पु०) जंगल, विपिन, अटवी, पानी।
वनचर—(सं० पु०) जंगली, वनमानुष, वानर, वनमें चलनेवाला।
वनचारी—(सं० पु०) वनैला, जंगली।

वनज—(सं॰ पु.) कमल।
वनमाला—(सं॰ स्त्री.) पांच फूलों की माला।
वनमाली—(सं. पु.) श्रीकृष्ण।
वनस्पति—(सं॰ स्त्री॰) भूमि से उगने वाली चीज़ें, जैसे घास पात, पेड़।
वनिता—(सं॰ स्त्री.) स्त्री, प्यारी।
वन्दन—(सं॰ पु.) वन्दना (स्त्री.) प्रणाम, नमस्कार।
वन्दनीय—(सं॰ पु॰) सराहने के योग्य, नमस्कार करने के योग्य
वन्दीजन—(सं॰ पु.) भाट, प्रशंसक जातिविशेष।
वन्य—(गु.) जंगली, वनैला, वन का।
वपन—(भा॰ पु.) बोना, हजामत।
वपुस्—(सं॰ पु.) शरीर, देह।
वबा—(सं. स्त्री.) महामारी, मरकी, हैजा।
वमन—(सं. पु.) उलटी, के, रद्द।
वयस—(सं. स्त्री॰) उम्र, अवस्था। [वाला, सखा, बालिग़
वयस्य, वयस्थ—(क. पु॰) समर्थ, समवयस्क, युवा, बराबर उम्र
वर—(सं. पु॰) आशीर्वाद, वरदान, चाही हुई वस्तु, पति, स्वामी जवांई, (गु॰) श्रेष्ठ, उत्तम, बड़ा।
वरण—(सं॰ पु.) वेष्टन, पूजना, खरना, लपेटना, आमन्त्रण [सूर्य।
वरुण—(सं॰ पु॰) जल, जल के देवता, पश्चिम दिशा का स्वामी
वरुणदिशा—(सं॰ स्त्री.) पश्चिम, पच्छिम।
वरद्—(सं॰ पु॰) अभयदाता, अभीष्टदाता।
वरन—(अ.) बल्कि।
वराङ्गना—(सं. स्त्री॰) सुन्दर स्त्री, वेश्या।
वराणसी, वाराणसी—(सं॰ स्त्री॰) बनारस, काशी, वरुणा और असी नदियों के बीचवाली नगरी।

वरासन—(सं. पु.) श्रेष्ठासन, राज्यासन।
वराह—(सं. पु) शूकर, विष्णु का अवतार, सुअर।
वरिष्ट—(गु.) श्रेष्ट।
वरूथ—(सं· पु·) समूह।
वरारोहा } —(गु.) श्रेष्ठ जंघा वाली, स्त्री।
वरोरु }
वर्ग—(सं· पु·) गण, एक जाति का समूह, दर्जा, क्लास, समकोण चतुर्भुज, किसी अङ्क का उसी अङ्क से गुणनफल. एस्क्वायर।
वर्ज्जक—(सं. पु.) रोकनेवाला।
वर्ण—(सं· पु.) जाति, क़ौम, रंग, अक्षर, हर्फ़।
वर्णन—(सं. पु·) बखान, बयान, सराह, स्तुति, रंगना।
वर्णना—(सं· स्त्री·) सराहना, स्तुति करना, गुण कहना।
वर्णमाला—(सं· स्त्री.) ककहरा।
वर्णसङ्कर—(सं. पु.) दोग़ला, मिश्रित। [विद्यमान।
वर्तमान—(सं. पु·) जो समय बीत रहा हो (गु.) मौजूद,
वर्तुल—(गु.) गोल।
वर्ताव—(भा· पु·) व्यवहार।
वर्द्धन—(भा. पु·) बढ़ना, बढ़ती, वृद्धि।
वर्द्धित—(सं· पु.) बढ़ा हुआ।
वर्नेक्यूलर (Vernacular)—(गु.) स्वदेशी भाषा, जैसे हिन्दी बंगला, गुजराती, मैथिली आदि।
वर्बर—(सं. पु.) मूर्ख, बहुत वातूनी।
वर्म—(सं. पु·) बक्तर, कवच।
वर्म्मा—(सं· पु.) जातियों के नाम का उच्च पद, जैसे ब्राह्मणों का शर्म्मा, वैश्यों का गुप्त, शूद्रों का दास।
वर्ष—(सं· पु.) साल, संवत्।

वर्षगांठ—(सं. स्त्री.) वर सौड़ी, सालगिरह, जन्मतिथि का उत्सव।
वर्षण—(भा. पु.) वरसना।
वर्षाऋतु—(सं. स्त्री.) वरसात, चौमासा।
वर्हिण, वर्ही—(सं. पु.) मोर।
वलय—(सं. पु.) कंकण, वाला।
वल्कल—(सं. पु.) छाल, छिलका, वकला।
वल्मीक—(सं. पु.) दीमक, दियका, चिम्बौट, वांवी।
वलाका—(सं. पु.) बगुला।
वलाहक—(सं. पु.) मेघ।
वलीमुख—(सं. पु.) वानर।
वल्लभ—(गु.) प्यारा। (सं. पु.) पति, अधिकारी।
वश— सं. पु.) अधीन, काबू, इख़्तियार।
वशीभूत—(गु.) अधीन, दूसरे के वश में, तावेदार।
वसन—(सं. पु.) वस्त्र।
वसन्त—(सं. पु.) एक ऋतु का नाम जो चैत वैशाख में रहता है, [मौसिम बहार।
वसन्तदूत—(सं. पु.) कोकिला, आमवृक्ष, माधवीलता।
वसीठ—(सं. प.) दूत, हलकारा, वकील।
वसु—(सं. पु.) धन, एक प्रकार के देवता, जो आठ हैं, आठ की [संख्या।
वसुधा—(सं. स्त्री.) पृथ्वी।
वसुन्धरा—(सं. स्त्री.) पृथ्वी।
वह्नि— (सं. स्त्री.) आग।
वस्तुतः—(अ.) यथार्थ में, सचमुच।
वस्तपाठ—(सं. पु.) (Object lesson) ओवजेक्टलेसन, पदार्थ के विषय में पाठ, चीजों का सबक।
वस्त्र—(सं. पु) कपड़ा।
वहिष्कोण—(सं. पु.) वहिः = वाहर का कोन।
वा—(अ.) अथवा।

वाइसराय (Viceroy)—(सं॰ पु॰) राज्यप्रतिनिधि ।
वाक्, वाग्, वाच्—(सं॰ पु॰) वाणी, वात ।
वागीशा(—सं॰ स्त्री॰) सरस्वती ।
वागुरा—(सं॰ स्त्री.) फांसी, फन्दा, जाल ।
वाग्मी—(सं॰ पु.) बोलनेवाला ।
वागीश—(सं. पु॰) बृहस्पति, ब्रह्मा, कवि, (गु.) अच्छा बोलने वाला ।
वाङ्मय—(गु॰) शास्त्र, ।
वाच (Watch)—(सं. स्त्री॰) जेबघड़ी ।
वाचस्पति—(सं॰ पु॰) बृहस्पति, देवताओं के गुरु ।
वाचाल—(क. पु.) बहुत बोलनेवाला, गप्पी ।
वाचा—(सं. स्त्री.) सरस्वती, वाणी, वाक्य, वचन ।
वाचाल—(क. गु.) वातूनी, बहुत बोलनेवाला ।
वाजपेय—(सं. पु.) यज्ञ विशेष ।
वाजी –(सं. पु॰) घोड़ा, तीर, वेगयुक्त ।
वांछा—(सं॰ स्त्री.) इच्छा ।
वाटर शेड (Watershed)—(क. पु.) जलविभाजक रेखा ।
वात—(सं॰ पु॰) पवन, हवा, गठिया, वाव ।
वातावर्त—(सं॰ पु॰) हवा का चक्र, ववंडर ।
वात्सल्य—(भा॰ पु॰) प्रेम, दयालुता ।
वाद— (सं॰ पु॰) शास्त्रार्थ ।
वादरायण—(सं॰ पु॰) व्यासमुनि वद्रिकाश्रम वासी ।
वाद्य—(सं॰पु॰) वाजा ।
वाण—(सं॰ पु॰) तीर, स्वर्ग, दैत विशेष ।
वानप्रस्थ—(सं॰ पु.) एक आश्रम जो ब्रह्मचर्य और गृहस्थाश्रम के पीछे होता है ।
वापी—(सं॰ स्त्री॰) वावड़ी, वावली ।

वाम—(सं· पु·) महादेव, कामदेव, नारि। (गु·) उलटा, बायां, सुन्दर।
वायस—(सं· पु.) कौआ, काग, एक पेड़ का नाम।
वायवीय—(गु·) वायु का, हवा का।
वायव्य, वायुकोण—(सं·पु·) वायुकोन, पच्छिम उत्तर का कोना, (गु) हवा का।
वायुमण्डल—(क· पु·) हवा का घेरा जो चारो ओर ४५ मील तक जमीन घेरे है।
वायुपुत्र—(सं· पु·) हनुमान।
वायुसञ्चारक—(सं· पु·) हवा का सञ्चार करनेवाला जिसमें होकर हवा जाय।
वायोलेट (Violet)—(सं· पु·) वैगनी रङ्ग।
वार—(सं· पु·) द्वार, अवसर, ठोकर।
वारण—(भा·पु·) रोक निषेध, हाथी, बख़्तर, कवच।
वाराङ्गना—(सं· स्त्री·) वेश्या।
वाराणसी—(सं· स्त्री.) काशी।
वारि—(सं· पु·) पानी।
वारिचर—(सं·पु·) जलचर, जलजन्तु (गु·) पानी में रहनेवाला।
वारिज—(सं·पु·) कमल, शङ्ख, नोन, शम्बूक, सितुही।
वारिद—(सं· पु·) बादल।
वारिधर—(सं· पु·) मेघ।
वारिधि—(सं· पु·) सागर, समुद्र।
वारिवाह—(सं· पु·) मेघ।
वारुणी—(सं· स्त्री·) मदिरा, दूब, पश्चिम दिशा, शतभिषा नक्षत्र, वरुण की स्त्री।
वार्ता—(सं· स्त्री··) वृत्तान्त, बात, समाचार।
वार्तालाप—(भा· पु·) बातचीत।

वार्त्तिक—(सं॰ पु॰) गद्य।
वार्षिक—(गु॰) वरस का, वरसौड़ी।
वालनटियर (Volunteer)—(सं॰ पु॰) विना मुशाहरे की सेना।
वाष्प—(सं॰ स्त्री॰) भाफ, धुवां, धुआं।
वासर—(सं॰ पु॰) दिन।
वासव—(सं॰ पु॰) इन्द्र, शुक्र, देवताओं का राजा।
वासुदेव—(सं॰ पु॰) श्रीकृष्ण।
वास्तविक, वास्तव—(गु॰) ठीक ठीक, यथार्थ, सचमुच।
वाहन—(सं॰ पु॰)सवारी।
वाहिनी (सं॰ स्त्री॰) सेना, जिस में ८१ रथ, २४३ घोड़े, ४०५ पैदल, ८१ हाथी हों, नदी, लेजाने वाली।
वाहु—(सं॰ पु॰) भुजा, वाजू।
वाह्य—(गु॰) वाहरी, वाहर का।
विकर्षण—(सं॰ पु॰) खिंचाव, हटाव।
विकराल—(गु॰) बहुत डरावना।
विकल—(गु॰) व्याकुल, घबराया
विकल्प—(सं॰ पु॰) सन्देह, भ्रम, संशय, विपरीत, इच्छानुसार, कल्पना।
विकशन, विकसन—(भा॰ पु॰) प्रकाश, खिलना, फूलना।
विकार—(सं॰ पु॰) दोष, ऐव।
विकाश—(भा॰ पु॰) प्रकाश, चमक, फूलना।
विकिरण—(भा॰ पु॰) फैलाव, फैकाव, फैलाना।
विकीर्ण—(गु॰) फैलाया हुआ।
विकृत—(सं॰ पु॰) वदला हुआ, उलटा, वीमार, मलीन।
विक्टोरिया (Victoria) भारत की अधीश्वरी इङ्गलैण्ड की महारानी।
विक्रम—(भा॰ पु॰) पराक्रम, वल, वीरता (सं॰ पु॰) उज्जैन का राजा विक्रमादित्य, विष्णु।

विक्रमादित्य—(सं॰ पु॰) पम्मार क्षत्रिय उज्जैन नगरी का महाराज जिस ने संवत चलाया है।
विक्रय—(भा॰ पु॰) बेचना, नोलाम करना।
विक्षेप—(सं॰ पु॰) घबराहट, फेंकना, अन्तर।
विक्षिप्त—(गु॰) पागल, मतिभ्रम।
विख्यात—(सं॰ पु॰) यशी, बहुत प्रसिद्ध, नामी।
विगत (गु.) जो चला गया, बीता हुआ, हीन।
विगोये—(गु.) छिपे हुए, नाश हुए।
विग्रह—(सं॰ पु॰) लड़ाई, शरीर, फैलाव, भाग, आकार।
विघटन —(सं॰ पु॰) तोड़ना, बिगाड़ना।
विघातक—(सं॰ पु॰) नाशक।
विचक्षण—(गु॰) चतुर, स्याना, सयान।
विचरण—(भा. पु॰) भ्रमण, इधर उधर घूमना।
विचार—(सं॰ पु॰) सोच, समझ, ज्ञान, मतलब, मन का भाव।
विचित्र—(गु॰) अद्भुत, रङ्ग, विरङ्ग।
विच्छेद—(सं॰ पु॰) वियोग, अन्तर, जुदाई।
विजय — (सं॰ स्त्री.) जीत, जय, फतह।
विजयिनी—(क॰ स्त्री॰) जीतनेवाली।
विजयी—(क॰ पु॰) जीतनेवाला।
विज्ञ—(क॰ पु॰) प्रवीण, पण्डित, चतुर, विद्वान, बुद्धिमान।
विज्ञान—(सं॰ पु॰) विशेष ज्ञान, बहुत ज्ञान, शास्त्र ज्ञान, शिल्प-विद्या, सायंस (Science)।
विज्ञापन—(सं॰ पु॰) विशेष कर के जना देना, सूचित करना, विनती, इश्तिहार, नोटिस।
विटप—(सं॰ पु॰) वृक्ष, पेड़, शाख।
विडरि—(गु॰) विशेष भय के, बहुत करके, बिथराना, छितराना।
विडम्बना—(भा॰स्त्री॰) तिरस्कार,अनुकरण,नकल,निन्दा,आडंबर।

वितरण—(सं॰ पु॰) दान, निर्वाह, उद्धार, बांटना, खर्च करना।
वितण्डा—(सं॰ स्त्री॰) मिथ्यावाद।
वितान—(सं पु॰) चंदवा, मंडप, यज्ञ, फैलाव।
वित्त—(सं॰ पु॰) धन, द्रव्य।
विद—(क॰ पु॰) जाननेवाला, पण्डित।
विदर्भ—(सं॰ पु.) बंगाल के दक्षिण पश्चिम का जिला जो आज कल नागपुर अथवा बरार के नाम से प्रसिद्ध है।
विदित—(सं॰ पु.) जाना हुआ, समझा हुआ, प्रगट, प्रसिद्ध।
विदिश—(सं॰ स्त्री॰) दिशा का बीच, कोन।
विदीर्ण—(सं॰ पु॰) फाड़ा हुआ, चीरा हुआ।
विद्वुप—(सं॰ पु॰) पण्डित।
विदूषक—(क॰ पु॰) निन्दक, भांड़, अपने अङ्ग, वचन और भेष को बिगाड़ कर लोगों को हंसाने वाला।
विदेह—(सं॰पु॰) जनक राजा, मिथिला के राजा।
विद्ध—(सं॰ पु॰) छेदा हुआ।
विद्यमान—(गु॰) वर्त्तमान, मौजूद।
विद्या—(सं॰ स्त्री॰) ज्ञान, शास्त्र का ज्ञान, दुर्गा, वृत्त विशेष, विद्या चौदह हैं—४ वेद, ६ वेदांग, पुराण, मीमांसा, न्याय और धर्मशास्त्र।
विद्याधर—(सं. पु.) देवता विशेष, पण्डित, गुणी।
विद्यालय—(सं. पु॰) पाठशाला, स्कूल, कौलेज, मदर्सा।
विद्युत्—(सं. स्त्री.) बिजली।
विद्रावक—(गु॰) चुआने वाला, गलानेवाला।
विद्रुम—(सं. पु॰) मूगा।
विद्रोह—(सं. पु.) बैर, शत्रुता, बलवा।
विद्वत्ता—(सं॰ स्त्री॰) पण्डिताई, बुद्धिमानी।
विद्वान्—(क. पु.) पण्डित, विद्यावान।

विधाता—(सं॰ पु॰) ब्रह्मा।
विधात्री—(सं. स्त्री.) ब्रह्माणी।
विधान—(सं॰ पु॰) विधि, रीति, शास्त्र में कही रीति।
विधायक—(क. पु.) करनेवाला।
विधि—(सं. स्त्री॰) ढंग, रीति, चाल, ब्रह्मा, भाग, किस्मत, शास्त्र में कही हुई रीति।
विधु—(सं॰ पु.) चन्द्रमा, कपूर, विष्णु, एक राक्षस, ब्रह्मा।
विधुन्तुद—(सं॰ पु॰) राहु।
विधुवदनी—(गु॰) चन्द्रमुखी।
विध्वंस—(सं॰ प॰) नाश, विनाश।
विनयी—(ग॰) विनीत, विनयशील, नम्र।
विनायक—(सं॰ पु॰) गणेश, बुध, गरुड़।
विनिमय—(सं॰ पु॰) परिवर्तन, अदली बदली।
विनीत—(ग॰) नम्र, सुशील।
विनोद—(सं॰ पु॰) खेल, हंसी, ठट्ठा, आनन्द।
विन्दङ्कित—(सं॰ पु॰) विन्दु खींचा हुआ।
विन्ध्य—(सं॰ पु॰) विन्ध्याचल पर्व्वत।
विन्यास—(सं॰ पु॰) स्थापन करना, रचना, समूह, संग्रह, संग्रह की जगह।
विपक्ष—(सं॰ पु॰) शत्रु।
विपरीत—(गु॰) उलटा।
विपर्य्यय—(सं॰ पु॰) उलटापलटा, विपरीत।
विपद्, विपत्—(भा॰ स्त्री॰) विपत्ति, आपद, आफत।
विपाक—(सं॰ पु॰) कर्मभोग, फल, नतीजा।
विपिन—(सं॰ प॰) बन।
विपुल—(गु॰) बहुत।
विप्र—(सं॰ पु॰) ब्राह्मण।
विप्लव—(सं॰ पु॰) देशोपद्रव, राष्ट्रोपद्रव।

विबुध—(सं॰ पु॰) देवता, पण्डित, चन्द्र ।
विभक्त—(सं॰ पु॰) बांटा हुआ, अलग अलग, पृथक् पृथक् ।
विभक्ति—(सं॰ स्त्री॰) अंश, बांट, टुकड़ा, हिस्सा, कारकों के चिन्ह ।
विभव—(सं॰ पु॰) ऐश्वर्य्य, धन, सम्पत्ति, एक संवत्सर का नाम ।
विभाग—(सं॰ पु॰) टुकड़ा, भाग, प्रकरण, हिस्सा ।
विभाज्यता—(सं॰ स्त्री॰) पदार्थों का एक गुण जिस के रहने से वे किसी प्रकार का बल लगाने से टुकड़े टुकड़े किये जा सकते हैं ।
विभावरी—(सं॰ स्त्री॰) रजनी, रात्रि, कुटनी, हल्दी ।
विभिन्न—(गु॰) अलग, जुदा, फर्क ।
विभु—(ग॰) समर्थ, प्रभु, सर्वव्यापी, मालिक. (पु॰) शिव, ब्रह्मा, [विष्णु ।
विभूति—(सं॰ स्त्री॰) धन. ऐश्वर्य्य, राख, भस्म ।
विभूषण—(सं॰ पु॰) गहना, शोभा ।
विभूषित—(ग॰) शोभित, शोभायमान, संवारा हुआ ।
विभेद—(सं॰ पु॰) अन्तर, फूट. फर्क ।
विमल—(गु॰) निर्मल, स्वच्छ ।
विमला—(सं॰ स्त्री॰) श्री पार्वती जी ।
विमाता—(सं॰ स्त्री॰) सौतेली मा ।
विमान—(सं॰ पु॰) देवताओं का रथ ।
विमुक्त—(सं॰ पु॰) रहित, छूटा हुआ ।
विमुख—(गु॰) विरोधी, उलटा, फिरा हुआ ।
विमोचन—(क॰ पु॰) छोड़ना ।
विम्ब—(सं॰ पु॰) मूरत, छाया, तस्वीर, सूर्य वा चन्द्र का मण्डल, [कन्दरू ।
वियोग—(भा॰ पु॰) विछोह, जुदाई, विरह, विछुड़ना ।
विरत, विरक्त—(गु॰) वैरागी, उदासी ।
विरचित—(गु॰) बनाया ।

विरञ्चि—(सं· पु·) ब्रह्मा।
विरज—(गु·) क्रोध रहित, धूलि रहित, साफ रजोगुण रहित।
विरद—(सं· पु·) यश, नामवरी, हथियार, अस्त्र, शस्त्र।
विरल—(गु·) छिटफुट।
विरला—(गु·) कोई।
विरह—(सं· पु·) विछोह, जुदाई।
विराग—(सं· पु·) वैराग।
विराजित—(गु·) शोभित। [नाम।
विराट—(सं· पु·) विष्णु की बड़ी मूरत, विश्वरूप, एक देश का
विराम—(सं· पु·) ठहराव, अन्त, विश्राम, पढ़ने में ठहरने के लिये एक प्रकार का चिन्ह।
विरुद्ध—(गु·) उलटा, विपरीत।
विरेचन—(भा· पु·) जुलाव, मलनिःसारक।
विरेचक—(क· पु·) दस्तावर, दस्त लानेवाला।
विरोध—(सं· पु·) वैर, द्वेष, शत्रुता।
विलक्षण—(गु·) अनूप, उत्तम, अद्भुत।
विलम्ब—(स्त्री·) देरी।
विलाप—(सं· पु·) रोना, सोच, सन्ताप, शोकमय कथा।
विलास—(सं· पु·) विहार, खेल, क्रीड़ा, आनन्द, ऐश।
विलासिनी—(सं· स्त्री·) नारी।
विलीन—(क· प·) विरत, नष्ट, लयप्राप्त, लुप्त।
विलोकना—(क्रि·) देखना, ताकना।
विलोचन—(सं· पु·) आंख, नेत्र, नयन।
विलोम—(गु·) उलटा।
विलोना—(क्रि·) महना, मथना।
विल्व—(सं· पु·) बेल, बेल का पेड़।
विवर—(सं· पु·) बिल, छेद, गढ़ा, सेंध, दोष।

विवरण—(सं॰ पु॰) टीका, वखान, रिपोर्ट, बहस।
विवर्ण—(गु॰) कुरूप।
विवर्द्धक—(क॰ पु॰) बढ़ानेवाला।
विवश—(गु॰)वशीभूत, वश्य, पराधीन।
विवाद (सं॰ पु॰) वाद, झगड़ा।
विविध—(गु॰) अनेक प्रकार का।
विवेक—(सं॰ पु॰) विचार, ज्ञान, समझ।
विवेचना—(सं॰ स्त्री॰) सत्य असत्य का विचार, विवेक।
विवेचित, विवेच्य—(सं॰ पु॰) विचारित, विचारा हुआ, विचारने योग्य।
विशद—(गु॰ । निर्मल, साफ, उज्वल।
विशारद—(गु॰) पण्डित, विद्वान, निपुण, श्रेष्ठ।
विशाल—(गु॰) बहुत बड़ा, चौड़ा, फैला हुआ।
विशिख—(सं॰ पु॰) तीर, बाण, बिन चोटी का, शिखा रहित।
विशिष्ट (क॰ पु॰) साथ, संयुक्त, सहित, जुड़ा हुआ, उत्तम।
विशुद्ध—(गु॰) बहुत पवित्र, निर्मल, विमल, निखालिस।
विशूचिका—(सं॰ स्त्री॰) छर्द, हैजा।
विशेषण—(गु॰) गुण, धर्म, तारीफ।
विशेष्य—(सं॰ पु॰) नाम, प्रधान, जिस के द्वारा किसी वस्तु वा [व्यक्ति का बोध हो।
विशोक—(गु॰) जिस को किसी बात का सोच न हो।
विश्रम्भ—(सं॰ पु॰) विश्वास, निश्चय।
विश्रान्त—(गु॰) चैन सहित, सुस्थिर।
विश्राम—(सं॰ पु॰) आराम, चैन, ठहराव।
विश्लेष—(सं॰ पु॰) वियोग।
विश्व—(भा॰ पु॰) संसार, सब, सम्पूर्ण।
विश्वकर्मा—(सं॰ पु॰) ब्रह्मा का एक बेटा, सूर्य, देवताओं का [के प्रधान देव।
बढ़ई या राज, कारीगर।

विश्वनाथ—(सं॰ पु॰) शिव, महादेव, संसार के स्वामी, काशी
विश्वविद्यालय—(सं॰ पु॰) सब से ऊंचे दरजे का स्कूल, पाठशाला, युनिवर्सिटी (University)।
विश्वम्भर—(सं॰ पु॰) विष्णु, इन्द्र।
विश्वम्भरा—(सं॰ स्त्री॰) पृथ्वी।
विश्वामित्र—(सं॰ पु॰) एक ऋषि का नाम।
विश्वास—(सं॰ पु॰) प्रतीति, भरोसा, यकीन।
विष—(सं॰ पु॰) ज़हर, गरल।
विषधर—(सं॰ पु॰) सांप, विषधारण करनेवाला।
विषम—(गु॰) अतुल्य, असमान।
विषमज्वर—(सं॰ पु॰) कठिन तप, एक प्रकार का ज्वर।
विषय—(सं॰ पु॰) देश, वस्तु, रङ्ग, पदार्थ, काम, भोगविलास, वाचन जो इन्द्रियों से जाना जाय, जैसे रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द, ये ही पांच।
विषयक—(गु॰) सांसारिक, विषय का।
विषयवासना—(सं॰ स्त्री॰) भोगविलास की इच्छा।
विषयी—(क॰ पु॰) संसारी, भोगी।
विषाण—(सं॰ पु॰) हाथी दांत, सींग।
विषाद—(भा॰ पु॰) शोक, दुःख, ताप, उदासी।
विषुवतवृत्त—(सं॰ पु॰) भूमध्य रेखा, वह बड़ा घेरा है जिस से पृथ्वी के दो समान भाग होते हैं वह ठीक पृथ्वी के बीचोबीच खिंचा है।
विष्ठा—(सं॰ स्त्री॰) बीट, गूह, मल, पुरीष।
विष्णु—(सं॰ पु॰) परमेश्वर, भगवान, नारायण, सृष्टि का पालनेवाला।
विष्णुपद—(सं॰ पु॰) आकाश, एक छन्द का नाम, भगवान का चरणचिन्ह जो गयाजी में है।
विष्णुपदी—(सं॰ स्त्री॰) श्री गंगा जी।

विस—(सर्व०) उस।
विसर्जन—(भा. पु०) विदा, त्याग, दान, प्रेरणा, प्रतिमा आदि को जल में मिला देना।
विसूचिका—(सं० स्त्री०) एक रोग, हैज़े की बीमारी।
विस्तार—(भा० पु०) फैलाव, चौड़ाई।
विस्तीर्ण—(क. पु०) फैला, फैला हुआ।
विस्तृत—(क० पु०) फैलाहुआ।
विस्फोट—(सं० पु०) फोड़ा, घाव।
विस्मय—(सं० पु०) अचरज, अचम्भा।
विस्मरण—(भा० पु०) भूलना।
विहग, विहङ्ग, विहङ्गम—(सं० पु०) पक्षी, बादल, तीर, सूर्य, चांद, ग्रह।
विहरण—(भा० पु०) विहार करना, खेल करना, घूमना, सैर करना।
विहाय—(अ०) त्याग, छोड़।
विहार—(भा० पु०) विलास, खेल, आनन्द से घूमना, बौद्धों के रहने की जगह, बंगाल का एक हिस्सा।
विहारी—(सं० पु०) श्रीकृष्ण, (क० पु०) विहार करनेवाला, आनन्द करनेवाला, विहार का रहनेवाला।
विहित—(सं०) ठीक, उचित, करने योग्य, ठहराया हुआ।
विहीन—(सं०) रहित, बिना, छोड़ा हुआ।
विह्वल—(गु.) व्याकुल, चंचल।
वीक्षण—(सं० पु०) दर्शन देखना।
वीचि, वीचि—(सं० स्त्री०) लहर, तरंग, मौज।
वीथि, वीथी—(सं० स्त्री०) गली, रास्ता, पंक्ति, श्रेणी।
वीज—(सं० पु०) व्यथा, मूल, मंत्र, वीर्य्य।
वीर—(सं० पु०) योद्धा, बहादुर, शूर काव्य में एक रस, (स्त्री.) सखी।
वीर्य्य—(सं० पु०) वीज, धातु, पुरुषार्थ, प्रताप, तेज।

वृक—(सं· पु·) भेड़िया, हंडार।
वृकोदर—(सं· पु·) भीमसेन, ब्रह्मा।
वृत्त—(सं· पु·) गोला, घेरा, चक्कर, छंद, रीति, पैदा हुआ।
वृत्तान्त—(सं· पु·) समाचार, हाल।
वृत्ति ·(सं· स्त्री·) जीविका, वजीफा, स्कालरशिप, रोज़ी।
वृथा—(क्रि· वि·) व्यर्थ, निष्फल।
वृद्धि—(सं· स्त्री·) बढ़ती, बढ़ती।
वृन्द—(सं· पु·) समूह, ढेर, थोक।
वृन्दा—(स्त्री·) तुलसी, राधिका, एक देवी।
वृन्दारक—(सं· पु·) देवता।
वृश्चिक—(सं· पु·) बिच्छू, आठवां राशि।
वृष, वृषभ—(सं· पु·) बैल, दूसरी राशि।
वृषकेतु—(सं. पु·) महादेव, शिव, जिस की ध्वजा में बैल का चिन्ह हो।
वृषल—(सं· पु·) शूद्र. गाजर, प्याज़, घोड़ा, पापी, चन्द्रगुप्त नृप।
वृष्टि—(सं· स्त्री·) बरसा, वर्षा।
वृहत्—(गु·) बड़ा।
वेग—(सं. पु.) प्रवाह, धारा, चाल, बहाव।
वेगि—(क्रि· वि·) शीघ्र, जल्दी।
वेणी—(सं· स्त्री·) चोटी।
वेणु—(सं· पु.) बांस, मुरली।
वेत—(सं. पु.) वृक्ष विशेष, आकाश।
वेतन—(सं. पु.) मासिक, महीने का मुशाहरा।
वेत्ता—(क. पु·) पण्डित, जाननेवाला।
वेद—(सं· पु.) श्रुति, हिन्दू का धर्मग्रन्थ जो चार हैं:—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, चार की संख्या।
वेदना—(सं. स्त्री.) पीड़ा, दुःख, जानना।

वेदाङ्ग—(सं॰ पु॰) वेद के अङ्ग यथाः—१ शिक्षा, २ कल्प, ३ व्याकरण, ४ छन्द, ५ ज्योतिष, ६ निरुक्त।
वेला—(सं॰ स्त्री॰) समय, काल।
वेश, वेष—(सं॰ पु॰) भेष।
वेशर—(सं॰ पु॰) खच्चर।
वैतरणी—(सं॰ स्त्री॰) नरक की नदी।
वेष्ट—(West)—(सं॰ पु॰) पच्छिम।
वेष्टित—(सं॰ पु॰) लपटा हुआ, लपेटा गया।
वैकुण्ठ—(सं॰ पु॰) विष्णुलोक, परमपद।
वैखानस—(सं॰ पु॰) वानप्रस्थ, तपस्वी।
वैज्ञानिक—(गु॰) विज्ञानसम्बन्धी।
वैदूर्य—(सं॰ पु॰) नीलम, नीलमणि।
वैदेही—(सं॰ स्त्री॰) सीता, जानकी, जनक की बेटी।
वैनतेय—(सं॰ पु॰) गरुड़।
वैभव—(भा॰ पु॰) धन, दौलत, ऐश्वर्य्य।
वैमनस्य—(सं॰ पु॰) उदासीनता, रंज, बिगाड़।
वैयाकरण—(सं॰ पु॰) व्याकरण पढ़ा पण्डित।
वैराग, वैराग्य—(भा॰ पु॰) त्याग, संसार की वासनाओं का छोड़ना।
वैश्य—(सं॰ पु॰) बनिया, तीसरे वर्ण के लोग, क्षत्रियों की एक किस्म।
व्यक्त—(सं॰ पु॰) जाना हुआ, प्रगट, स्पष्ट।
व्यक्ति—(सं॰ स्त्री॰) एकता, प्रकट होना, (पु॰) जन, मनुष्य।
व्यग्र—(गु॰) व्याकुल।
व्यङ्ग—(ग॰) कूट, अङ्गहीन, एक प्रकार की कविता।
व्यजन—(सं॰ पु॰) पङ्खा, बेना, ताल, वृन्तक।
व्यंजक—(क॰ पु॰) प्रकाशक, भावबोधक।

व्यंजन—(सं॰ पु॰) तरकारी।
व्यतिक्रम—(सं॰ पु॰) विलोम, विपरीत, उलटा पुलटा।
व्यतिरेक—(भा॰ पु॰) भेद, वियोग, विशेष, भिन्नता, विना।
व्यतीत—(गु॰) बीता हुआ।
व्यथा—(सं॰ स्त्री॰) पीड़ा, दःख, दर्द।
व्यभिचार—(भा॰ पु॰) बुराकाम, परस्त्रीगमन, कुकर्म।
व्यय—(सं॰ पु॰) खर्च, नाश, क्षय।
व्यर्थ—(गु॰) वृथा, निष्फल।
व्यवकलन—(सं॰ पु॰) घटाना, बाकी निकालना।
व्यवधान—(सं॰ पु॰) आच्छादन, रोक।
व्यवसाय, व्यवहार—काम, उद्योग, उद्यम, रोज़गार, विचार।
व्यवस्था—(सं॰ स्त्री॰) दशा, हालत, प्रणाली।
व्यवस्थापक—(क॰ पु॰)व्यवस्था करनेवाला, नियम बनानेवाला।
व्यवहृत—(सं॰ पु॰) व्यवहार किया हुआ।
व्यवहरिया—(सं॰ पु॰) महाजन।
व्यसन—(सं॰ पुं॰) दोष, बुरा काम, शौक, चस्का, जूआ, दिन को सोना, झूठ बोलना आदि व्यसन हैं।
व्यस्त—(क॰ पु॰) व्याकुल, विपरीत, विलोम, हीन, असमग्र।
व्याकुल—(ग॰) व्यग्र, दुखी, पीड़ा से जिस का चित्त चञ्चल हो।
व्याख्या—(सं॰ स्त्री॰) टीका, वर्णन।
व्याख्यान—(सं॰ पु॰) कथन, वर्णन, उपदेश।
व्याघ्र—(सं॰ पु॰) बाघ, शेर।
व्याज—(सं॰ पु॰) छल, कपट, मिस।
व्याध—(सं॰ पु॰) बहेलिया, जानवरों को मारनेवाला।
व्याधि—(सं॰ स्त्री॰) रोग, पीड़ा, बीमारी।
व्यापक, व्यापी, व्याप्त—(क॰ पु॰) फैलनेवाला, फैला हुआ, [परमेश्वर।
व्यापार—(सं॰ पु॰) वणिज, काम, तिजारत।

व्याप्त—(गु०) फैला।
व्यायाम—(सं० पु०) परिश्रम, कुश्ती, कसरत।
व्याल—(सं. पु०) सांप, दुष्ट, हाथी, मारनेवाला जानवर, धूर्त।
व्यासार्द्ध—(सं० पु०) व्यास का आधा, त्रिज्या।
व्याहृति—(सं० स्त्री०) उक्ति, कथन, वर्णन।
व्युत्पत्ति—(सं० स्त्री०) शास्त्र समझने की शक्ति, उत्पत्ति, वजह।
व्युत्पन्न—(गु०) शास्त्र में प्रवीण।
व्यूह—(सं. पु.) सेना की रचना, सेना का कोट, भीड़, समूह, बल, विन्यास, निर्माण।
व्योम—(सं. पु०) आकाश, आसमान।
व्योमजान—(सं० पु.) विमान।
व्रज—(सं० पु.) समूह।
व्रण—(सं. पु.) घाव, फोड़ा।
व्रत—(सं. पु०) उपास, उपवास, उत्तम या पवित्र काम।
व्रात—(सं० पु०) समूह।
व्रीड़ा—(सं० स्त्री.) लाज।

श

श—(सं० पु०) शिव, कल्याण, शयन, हृदय, शस्त्र, हथियार।
शकट—(सं० पु.) गाड़ी, छकड़ा।
शकारि—(सं० पु०) विक्रमादित्य राजा।
शकुन—(सं. पु.) सगुन, पक्षी।
शक्त—(सं० पु०) समर्थ, दृढ़, पुष्ट।
शकृत—(अ०) एक बार।
शक्ति—(सं. स्त्री०) बल, बर्छी, सांग, देवी, लक्ष्मी, गौरी आदि [आठ शक्ति।
शक्तिमान—(गु०) बलवान, जोरावर।
शक्तिहीन—(गु०) निर्बल, दुर्बल, दुबला, बलहीन, कमज़ोर।

शक्र—(सं. पु.) इन्द्र, देवताओं का राजा।
शक्रजित—(सं. पु.) इन्द्र को जीतने वाला, रावण का बेटा, [मेघनाद।
शक्रसुत—(सं. पु.) इन्द्र का बेटा जयन्त, वालि वानर।
शङ्का—(सं. स्त्री.) सन्देह, डर, भय।
शङ्कर –(सं. पु.) कल्यान करनेवाला, शिव।
शङ्कराचार्य्य—(सं. पु.) शिव के पूजने वाले एक आचार्य्य, [अद्वैतवादी।
शङ्कित—(गु.) डरा हुआ, संदिग्ध।
शची—(सं. स्त्री.) इन्द्र की स्त्री, इन्द्राणी।
शठ—(गु.) छली, कपटी।
शत—(गु.) एक सौ, १००।
शतक—(सं. पु.) सैकड़ा, शताब्द।
शतक्रतु—(सं. पु.) इन्द्र, सौ यज्ञ करनेवाला।
शतपत्र—(सं. पु.) कमल।
शताब्द—(सं. स्त्री.) सौ वर्ष।
शताब्दी—(सं. स्त्री.) सदी, सौ बरस।
शत्रु—(सं. पु.) वैरी, रिपु, द्वेषी, विरोधी, दुश्मन।
शत्रुघ्न, शत्रुसूदन—(सं. पु.) शत्रु को हननेवाला, लक्ष्मण के भाई शत्रुहन।
शनि—(सं. पु.) सातवां ग्रह, सूर्य के बेटे, छाया से उत्पन्न।
शनैः शनैः—(क्रि. वि.) धीरे धीरे, क्रम से।
शपथ—(सं. पु.) सौगन्द, कसम।
शब्द—(सं. पु.) बोल, वचन, शब्द।
शम—(सं. पु.) मन की शान्ति, चैन, इन्द्रियों और मन को रोकना।
शमन—(सं. पु.) शान्ति, ठंढा करना, यमराज।
शमी—(सं. पु.) वृक्ष विशेष, मुनि।
शम्बल—(सं. पु.) कूल, किनारा, राहखर्च, मत्सर।

शम्भु—(सं· पु·) आप से आप पैदा होने वाला. शिव।
शयन—(सं· पु·) सोना, नींद, पलंग।
शय्या—(सं. स्त्री.) बिछौना, पलंग, खाट।
शर—(सं. पु·) वाण, तीर, सरकंडा।
शरण—(सं. पु·) आसरा, रक्षा, बचाव।
शरणागत—(गु·) शरण में आया हुआ, आश्रित।
शरण्य—(सं· पु.) शरणागत, रक्षक।
शरण्यु—(सं· पु·) मेघ, वायु।
शरत, शरद्—(सं· स्त्री.) एक ऋतु का नाम जो आश्विन से कार्तिक तक रहती है।
शरासन—(सं· पु·) धनुष, कमान।
शर्म्मा—(सं· पु·) ब्राह्मणों की पदवी।
शरीर—(सं· पु·) देह, काया, (गु·) (شریر) बदमाश।
शर्करा—(सं· स्त्री·) शक्कर, चीनी, खांड़।
शर्व्वरी—(सं· स्त्री·) रात।
शलभ, सलभ—(सं· पु·) टिड्डी, पतंग।
शलाका—(सं· स्त्री·) सुर्मा की सलाई।
शव—(सं. पु.) मुर्दा, मरा, लोथ।
शवरी—(सं. स्त्री·) भिलनी, नीच जाति की स्त्री।
शश, शशक—(सं· पु·) खर्गोश, खरहा।
शशाङ्क, शशि—(सं· पु·) चन्द्रमा।
शशिशेखर—(सं· पु.) शिव, महादेव।
शश्वत्—(अ.) निरन्तर, सदा।
शस्त्र—(सं· पु·) हथियार, हाथ में रख के मारने का हथियार जैसे तलवार आदि।
शस्य—(सं· पु·) धान, फसिल आदि।
शाक—(सं· पु·) साग, तरकारी, एक द्वीप का नाम।

शाकाहारी—(क॰ पु॰) शाक खाने वाले जीव, जैसे गौ, बैल, घोड़े आदि। [देवी।
शाकम्भरी—(सं॰ स्त्री॰) पृथ्वी को सब चीज से भरने वाली,
शाक्त—(क॰ पु॰) देवी का पूजनेवाला।
शाखा—(सं॰ स्त्री॰) डाल, टहनी, वेद का विभाग, भांति, प्रकार, भाग, हिस्सा।
शाखानदी—(सं॰ स्त्री॰) नदी से निकली हुई धारा, नहर।
शाखामृग—(सं॰ पु॰) वानर, बन्दर।
शान्त—(गु॰) स्थिर, नम्र, चुप, बन्द, मृत, साहित्य में एक रस।
शान्ति—(सं॰ स्त्री॰) स्थिरता, चैन, सुख, काम, क्रोध आदि को जीत लेना।
शाप—(सं॰ पु॰) श्राप, धिक्कार, दुराशिष, शपथ, सौगन्द।
शाम्य—(गु॰) क्षमा युक्त, शमता।
शायक—(सं॰ पु॰) तीर, बाण, तलवार।
शायी—(क॰ पु॰) सोनेवाला।
शारद, शारदा—(सं॰ स्त्री॰) सरस्वती, चातुरी।
शारदी—(गु॰) शरद ऋतु की। [मक्खी, दीपक।
शारङ्ग—(सं॰ पु॰) पपीहा, मृग, हाथी, भौंरा, मोर, धनुष, मधु-
शारीरिक—(गु॰) शरीर का, देह का।
शार्दूल—(सं॰ पु॰) व्याघ्र, पक्षीभेद, पशुभेद, सिंह, श्रेष्ठ।
शाला—(सं॰ स्त्री॰) घर, जगह, स्थान।
शालि—(सं॰ पु॰) धान।
शालीन—(गु॰) सलज्ज, लजाधुर।
शालुर—(सं॰ पु॰) मंडूक, मेंढ़क।
शाल्मली—(सं॰ पु॰) सेमर का पेड़, एक टापू का नाम।
शावक—(सं॰ पु॰) बच्चा, बालक।
शावर—(सं॰ पु॰) शिव का रचा मंत्र।

शासक—(क· पु·) राजा, शासन करनेवाला ।
शासन—(सं· पु·) आज्ञा, हुक्म, राज करना, दंड, ताड़ना, शिक्षा, सीख, हुकूमत ।
शासनप्रणाली—(सं· स्त्री·) राज का नियम, हुकूमत ।
शास्ति—(स्त्री·) आज्ञा, दंड, सजा ।
शास्त्र—(सं· पु·) हिन्दुओं की धर्मपुस्तक, शास्त्र, छः हैं जैसे—वेदान्त, न्याय, सांख्य, मीमांसा, पातंजल, वैशेषिक ।
शाह—(شاہ)—(सं· पु·) बादशाह, राजा । [राज ।
शाहनशाह—(شاہنشاہ)—(सं· पु·) महाराज, सम्राट, राजाधि·
शिकड़—(सं· पु·) बाज, गुच्छ ।
शिक्य—(सं· पु·) शिकहर, छींका ।
शिक्षक—(क· पु·) सिखानेवाला, पढ़ानेवाला गुरु, उपदेशक ।
शिक्षा—(सं· स्त्री·) सीख, सिखाई, तालीम, उपदेश, वेद का एक अंग ।
शिखर—(सं· पु·) पहाड़ की चोटी, शृङ्ग ।
शिखा—(सं· स्त्री·) चोटी, टीक, टेम ।
शिखी—(सं· पु·) मोर, आग, एक पेड़ का नाम ।
शिथिल—(गु·) ढीला, सुस्त, आलसी ।
शिरच्छेद—(भा· पु·) शिर काटना ।
शिरा—(सं· स्त्री·) नाड़ी, नस ।
शिरोमणि—(सं· पु·) शिरका गहना, उत्तम, सब से बड़ा मुखिया ।
शिरोरुह—(सं· पु·) बाल, केश ।
शिरोवेदना—(सं· स्त्री·) शिर की पीड़ा, माथा का दुखना ।
शिल, शिला —(सं· स्त्री·) चट्टान, पत्थर, पाषाण, शिलौट, स्लेट ।

शिलाजीत—(सं· पु·) चट्टान रस जिस से धातु पुष्ट होता है।
शिल्पविद्या—(सं· स्त्री·) कारीगरी, दस्तकारी का हुनर, हस्तकार्य्य।
शिलीमुख—(सं· प·) तीर, भौंरा।
शिल्प—(सं· पु·) कारीगरी, दस्तकारी।
शिवा—(सं· स्त्री·) पार्वती, उमा, दुर्गा, हर्रे।
शिविका—(सं· स्त्री·) पालकी, डोली।
शिविर—(सं· पु·) सैन्यस्थान, छावनी।
शिशिर—(सं· स्त्री·) एक ऋतु जो माघ और फागुन में रहती है।
शिशु—(सं· पु·) बालक, बच्चा, जिस को दांत न हुआ ऐसा लड़का।
शिशुबोधक—(क· पु·) बालकों को ज्ञान करानेवाला।
शिष्ट—(सं· पु·) उत्तम, अच्छा, सभ्य, सीखने योग्य, आज्ञाकारी।
शिष्टाचार—(सं·न·) सम्मान, आदर, अच्छी चालचलन।
शिशुमार—(सं· पु·) मच्छ, मगर, सूंस।
शिश्न—(सं· पु·) मेढ़, लिङ्ग, पुरुषचिन्ह।
शीकर—(सं· पु·) जलकन, फुहारा, सरल, द्रव्य, वायु।
शीघ्र—(गु·) जल्दी, उतावला, (अ·) तुरत, झटपट।
शीघ्रगामी—(क· प·) जल्दी चलनेवाला।
शीत—(गु·) ठंढा, सर्द, सुस्त, (पु·) जाड़ा।
शीतकर—शीतांशु—(सं· पु·) चांद, कपूर।
शीतल—(गु·) ठंढा।
शीतला—(सं· स्त्री·) देवी, माता, चेचक, गोटी।
शीर्ण—(गु·) कृश, दुर्बल।
शीर्ष—(सं· पु·) सिर।
शील—(सं· पु·) अच्छा स्वभाव।
शुक—(सं· पु·) तोता, सुग्गा, शुकदेव मुनि।
शुक्ति—(सं· स्त्री·) सीपी।

शुक्र—(सं० पु०) छठा ग्रह, भृगुपुत्र, आग, बीज।
शुक्ल—(गु०) धौला, सफेद, उजला। (सं० पु०) श्वेत वर्ण।
शुचि—(सं० स्त्री०) पवित्रता, सफाई, स्वच्छता।
शुण्ड—(सं० पु०) सूँड़।
शुद्ध—(गु०) पवित्र, निर्दोषी, साफ, सही।
शुभ—(गु०) अच्छा, भला, कल्याण।
शुभग—(गु०) कल्याण करनेवाला, सुन्दर।
शुभ्र—(गु०) उजला, धौला, स्वच्छ, चमकीला।
शुम्भ—(सं० पु०) राक्षस जिसे दुर्गा ने मारा।
शुल्क—(सं० पु०) चुंगी, सरकारी कर, टैक्स।
शुश्रूषा—(स० स्त्री०) सेवा, टहल।
शुष्क—(गु०) सूखा, खुश्क, नीरस।
शूकर—(सं०पु०) सूअर, वराह।
शून्य—(गु०) निर्जन स्थान, आकाश, विन्दु।
शूर—(सं० पु०) साहसी, वीर, सूरसेन, श्री कृष्णचन्द्र के दादा, सिंह, सूर्य, सूअर, साल का पेड़।
शूर्प—(सं० पु०) सूप।
शूल—(सं० पु०) पीड़ा, दुख, रोग, लोहे का तीखा काँटा, त्रिशूल।
शृगाल—(सं० पु०) सियार, गीदड़।
शृङ्खला—(सं० स्त्री०) सांकल, सिकरी, करधनी।
शृङ्ग—(सं० पु०) सींग, शिखर, पहाड़ की चोटी, चिन्ह।
शृङ्गार—(सं० पु०) गहना, शोभा, रस विशेष।
शेखर—(सं० पु०) मुकुट, किरीट, शिखा, चोटी, फलों की माला जिसे मुकुट के ऊपर पहनते हैं।
शेष—(सं० प०) अन्त, सर्पराज, शेषनाग, (गु०) वाकी बचा हुआ।
शैल—(सं० पु०) पर्वत, पहाड़।

शैली—(सं. स्त्री.) रीति, परिपाटी. प्रणाली।
शैव—(गु.) शिव का, (सं. पु.) शिव का भक्त।
शैशव—(सं. पु.) शिशुता, बालकपन, लड़कपन।
शोणित—(सं. पु.) लोहू, कुंकुम, लाल।
शोधक—(क. पु.) शोधनेवाला, शुद्ध करनेवाला।
शोधन—(भा. पु.) पवित्र करना, शुद्ध करना।
शोधित—(सं. पु.) शुद्ध किया हुआ।
शोभा—(सं. स्त्री.) सुन्दरता, चमक, झलक, खूबसूरती।
शोभायमान—(क. पु.) शोभित।
शोला—(सं. पु.) खसरा, लूक, ज्वाला।
शोषक—(क. पु.) सोखनेवाला, रसाकर्षक, वायु, सूर्यादि।
शोषण—(भा. पु.) सोखना।
शौच—(सं. पु.) शुद्धता, सफाई, स्नान आदि।
शौर्य्य—(सं. पु.) शूरता, बहादुरी, वीरता।
श्मशान—(सं. पु.) मरघट, मसान, मुर्दाघाट।
श्याम—(गु.) काला नीला मिला हुआ, श्री कृष्ण।
श्यामकर्ण—(सं. पु.) घोड़ा विशेष।
श्यामा—(सं. स्त्री.) काली, दुर्गा, देवी, चिड़िया विशेष, षोड़सी।
श्यामता—(भा. पु.) कालापन।
श्येन—(सं. पु.) बाज़ पक्षी।
श्रवण—(सं. पु.) कान, सुनना।
श्रद्धा—(सं. स्त्री.) इच्छा, चाह, विश्वास, आदर।
श्रम—(सं. पु.) मिहनत, थकावट, दौड़धूप, परिश्रम।
श्राद्ध—(सं. पु.) पितृकृत्य, पार्वणादि, श्रद्धा पूर्वक जो दिया जाय, मृतक के अर्थ जो ब्राह्मण भोजनादि कराया जाय, पिण्ड तर्पन।
श्री—(सं. स्त्री.) लक्ष्मी, धन, सम्पत्ति, शोभा, सुन्दरता।
श्रावक—(सं. पु.) जैनी, सुनानेवाले।
श्रीखण्ड—(सं. पु.) चन्दन।

श्रीपती, श्रीनिवास—(सं. पु·) विष्णु भगवान्।
श्रीमन् श्रीमान्—(सं· पु·) भाग्यवान, प्रतापी, धन्यवान, श्रीयुत।
श्रीमती—(सं. स्त्री.) भाग्यवती, धनवती, श्रीसहित।
श्रीवत्स—(सं· पु·) विष्णु का एक चिन्ह।
श्रुत—(सं· पु·) सुना हुआ, शास्त्र।
श्रुति—(सं· स्त्री·) वेद, कान, सुनना।
श्रुवा—(सं· स्त्री·) खैर का बनाया चमच, हाथ के आकार का जिस से घी आदि अग्नि में देते हैं।
श्रेणी—(सं· स्त्री·) पांती, पंक्ति, कतार, समूह।
श्रेष्ठ—(गु·) बहुत अच्छा, सब से अच्छा, उत्तम।
श्रेय—(सं. पु·) कल्याण।
श्रोणित—(सं. पु.) खून, रक्त।
श्रोता—(क· पु·) सुननेवाला।
श्लाघा—(सं· पु·) सराह, प्रशंसा, तारीफ, चाह, इच्छा।
श्लेष—(सं· पु·) मिलाव, अलङ्कार विशेष जिस में एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं।
श्लेष्मा—(सं. स्त्री·) कफ, सर्दी।
श्वपच—(सं· पु·) चाण्डाल।
श्वान—(सं· पु·) कुत्ता, कुकुर, बिल्लल।
श्वेत—(गु·) धौला, सफेद।
श्वेतसार—(सं· पु·) सफेदसत, उजला रस।

ष

ष—(सं· पु·) केश, हृदय, (गु·) श्रेष्ठ, विज्ञ।
षट—(सं· पु.) छः, ६।
षट्कर्म—(सं. पु·) स्नान, संध्या, जप, तर्पण पूजा आदि, (१ वेद पढ़ना, २ पढ़ाना, ३ यज्ञ करना, ४ यज्ञ कराना,

शैली—(सं. स्त्री.) रीति, परिपाटी, प्रणाली।
शैव—(गु.) शिव का, (सं. पु·) शिव का भक्त।
शैशव—(सं· पु.) शिशुता, बालकपन, लड़कपन।
शोणित—(सं· पु·) लोहू, कुंकुम, लाल।
शोधक—(क· पु·) शोधनेवाला, शुद्ध करनेवाला।
शोधन—(भा· पु·) पवित्र करना, शुद्ध करना।
शोधित—(सं· पु·) शुद्ध किया हुआ।
शोभा—(सं· स्त्री·) सुन्दरता, चमक, झलक, खूबसूरती।
शोभायमान—(क· पु·) शोभित।
शोला—(सं· पु·) खसरा, लूक, ज्वाला।
शोषक—(क· पु·) सोखनेवाला, रसाकर्षक, वायु, सूर्यादि।
शोषण—(भा· पु·) सोखना।
शौच—(सं· पु·) शुद्धता, सफाई, स्नान आदि।
शौर्य्य—(सं· पु·) शूरता, बहादुरी, वीरता।
श्मशान—(स· पु·) मरघट, मसान, मुर्दाघाट।
श्याम—(गु·) काला नीला मिला हुआ, श्री कृष्ण।
श्यामकर्ण—(सं· पु·) घोड़ा विशेष।
श्यामा—(सं· स्त्री.) काली, दुर्गा, देवी, चिड़िया विशेष, षोड़सी।
श्यामता—(भा· पु·) कालापन।
श्येन—(सं· पु·) बाज़ पक्षी।
श्रवण—(सं· पु·) कान, सुनना।
श्रद्धा—(सं· स्त्री·) इच्छा, चाह, विश्वास, आदर।
श्रम—(सं· पु·) मिहनत, थकावट, दौड़धूप, परिश्रम।
श्राद्ध—(सं· पु·) पितृकृत्य, पार्वणादि, श्रद्धा पूर्वक जो दिया जाय, मृतक के अर्थ जो ब्राह्मण भोजनादि कराया जाय, पिण्ड तर्पन।
श्री—(सं. स्त्री.) लक्ष्मी, धन, सम्पत्ति, शोभा, सुन्दरता।
श्रावक—(सं. पु·) जैनी, सुनानेवाले।
श्रीखण्ड—(सं. पु·) चन्दन।

श्रीपती, श्रीनिवास—(सं. पु·) विष्णु भगवान्।
श्रीमत् श्रीमान्—(सं· पु·) भाग्यवान, प्रतापी, धन्यवान, श्रीयुत।
श्रीमती—(सं. स्त्री.) भाग्यवती, धनवती, श्रीसहित।
श्रीवत्स—(सं· पु·) विष्णु का एक चिन्ह।
श्रुत—(सं· पु·) सुना हुआ, शास्त्र।
श्रुति—(सं· स्त्री·) वेद, कान, सुनना।
श्रुवा—(सं· स्त्री·) खेर का बनाया चमच, हाथ के आकार का जिस से घी आदि अग्नि में देते हैं।
श्रेणी—(सं· स्त्री·) पांती, पंक्ति, कतार, समूह।
श्रेष्ठ—(गु·) बहुत अच्छा, सब से अच्छा, उत्तम।
श्रेय—(सं. पु·) कल्याण।
श्रोणित—(सं. पु.) खून, रक्त।
श्रोता—(क· पु·) सुननेवाला।
श्लाघा—(सं· पु·) सराह, प्रशंसा, तारीफ, चाह, इच्छा।
श्लेष—(सं· पु·) मिलाव, अलङ्कार विशेष जिस में एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं।
श्लेष्मा—(सं. स्त्री·) कफ, सर्दी।
श्वपच—(सं· पु·) चाण्डाल।
श्वान—(सं· पु·) कुत्ता, कुक्कुर, विट्टल।
श्वेत—(गु·) धौला, सफेद।
श्वेतसार—(सं· पु·) सफेदसत, उजला रस।

ष

ष—(सं· पु·) केश, हृदय, (गु·) श्रेष्ठ, विज्ञ।
षट्—(सं· पु·) छः, ६।
षट्कर्म—(सं. पु·) स्नान, संध्या, जप, तर्पण पूजा आदि, (१ वेद पढ़ना, २ पढ़ाना, ३ यज्ञ करना, ४ यज्ञ कराना,

५ दान देना, ६ दान लेना, ब्राह्मण के ये ६ कर्म हैं, योग शास्त्र में नेती धोती आदि छः कर्म लिखे हैं)।

पट् दर्शन, षड् दर्शन, षट् शास्त्र—(सं॰ पु॰) छः शास्त्र जैसे—वेदान्त, मीमांसा, सांख्य, पातंजल, न्याय, और वैशेषिक।

षट्पद—(सं॰ पु॰) भौंरा।

षट्वदन, षड़ानन—(सं॰ पु॰) कार्तिकेय, महादेव का एक बेटा।

षष्ठि—(गु॰) साठ, ६०।

षष्ठ—(गु॰) छठां।

षष्ठी—(सं॰ स्त्री॰) छठीं तिथि।

षोड़श—(गु॰) सोलह, १६।

षोड़शांश—(गु॰) सोलहवां भाग।

स

स—(सं॰ पु॰) विष्णु, सांप, शिव, पखेरू, भृगु, (अ॰) साथ, बराबर, सामने।

संक्षिप्त, संक्षेप—(सं॰ पु॰) कम किया हुआ, मुख्तसर, सारभाग।

संगमर्मर—(सं॰ पु॰) एक प्रकार का पत्थर, स्फटिकशिला।

संज्ञा—(सं॰ स्त्री॰) नाम, बुद्धि, चेतना, गायत्री, सूर्य की स्त्री।

संयम—(भा॰ पु॰) नेम, नियम, बन्धन, परहेज, इन्द्रियनिग्रह।

संयुक्त—(गु॰) मिला हुआ, जुड़ा हुआ।

संयुग—(सं॰ पु॰) लड़ाई, युद्ध।

संयोग—(सं॰ पु॰) मेल, दैवयोग।

संलग्न—(गु॰) मिलित, संयुक्त।

संलाप—(भा॰ पु॰) परस्पर, कहना।

संवत्—(सं॰ पु॰) राजा विक्रमादित्य का चलाया साल।

संवाद—(सं॰ पु॰) बातचीत, चर्चा, प्रसंग, समाचार, संदेशा।

संवादपत्र—(सं. पु.) समाचारपत्र, अख़बार।
संशय—(सं. पु.) सन्देह, भ्रम, शक।
संशयात्मक—(गु.) जिस से संदेह उत्पन्न हो।
संशोधन—(भा. पु.) भलीभांति शोधना, दुबारा देखना, ध्यान से [देखना।
संस्करण—(सं. पु.) आवृत्ति।
संसर्ग—(सं. पुं.) सङ्गत, सम्बन्ध, मेल।
संसृति—(सं. स्त्री.) संसार, जगत्, आवागमन।
संस्कार—(सं. पु.) सफाई, पवित्रता, गर्भाधान जनेऊ आदि कर्म शुद्ध करने की रीति, मरम्मत, प्रारब्ध।
संस्कृत—(सं.) जिस का संस्कार किया गया हो, पवित्र, उत्तम, [देववाणी।
संस्थापक—(क. पु.) नियम करनेवाला, निर्माण करने वाला।
संहार—(सं. पु.) नाश, प्रलय।
सकर्मक—(ग.) कर्म सहित धातु वा क्रिया।
सकल— गु.) सब, पूरा, सम्पूर्ण।
सकाम—(गु.) कामना सहित, सफल।
सकार—(सं. पु.) सवेरा, भोर, प्रातःकाल।
सकृत—(अ.) एकवार।
सकेत, सकरा, संकड़ा—(सं. पु.) तंग, छोटा।
सखा—(सं. पु.) मित्र, दोस्त, साथी, बन्धु।
सगाई—(सं. स्त्री.) भाईचारा, नाता, मंगनी, नीच जाति की स्त्री का दूसरा विवाह।
सघन—(गु.) घना, गहरा, गहन।
सङ्कट—(सं. पु.) दुख, विपत, तकलीफ।
सङ्कर—(सं. पु.) दोगला, दो जात का।
सङ्कर्पण—(सं. पु.) बलदेव जी।
सङ्कलन—(सं. पु.) जोड़, जोड़ना।
सङ्कलित—(सं. पु.) जोड़ा हुआ, संगृहीत।
संकेत—(सं.पु.) सैन, इशारा, वचन।

सङ्कल्प—(सं. पु·) मन की इच्छा, प्रतिज्ञा, देना, प्रण।
संकुल—(गु·) भरा हुआ।
सङ्कीर्ण—(गु·) संकेत, कोतह, कम, घना।
सङ्कोच, सकोच—(सं. पु.) लाज, सिमटाव।
सङ्कोचित, संकुचित—(क.पु·) सकुचा हुआ, लज्जित, सिकुराहुआ
संक्रांति—(सं. पु·) मेल, मिलाप।
संक्रमण—(भा. पु·) भ्रमण करना, घूमना, मिलजाना।
संक्रामक—(क· पु· घूमनेवाला, पर्य्यटन, छुतिहा।
संख्या—(सं· स्त्री·) गिनती।
सङ्गमस्थान—(सं· पु·) जहां दो नदियां मिलती या गिरती हैं।
सङ्गर—(सं· पु·) युद्ध।
सङ्गीत—(सं· पु·) गान, गानविद्या।
संगृहीत—(सं· पु.) इकट्ठा किया हुआ।
संग्रहणी—(स· स्त्री·) बहुत दस्त आना, एक प्रकार का रोग।
संग्राम—(सं. पु.) लड़ाई, युद्ध।
संघट्ट—(सं. पु·) साथ, मेल।
सची, शची—(सं. स्त्री.) इन्द्रपत्नी।
संघर्ष—(सं. पु.) रगड़।
सचिव—(सं· पु·) मन्त्री, सलाह देनेवाला।
सच्चरित्र—(सं· पु·) नेकचलन।
सच्चिदानन्द—(सं· पु·) परमेश्वर, परब्रह्म।
सचेतन—(सं· पु.) चेत रखनेवाला।
सजग—(गु.) होशियार।
सजधज—(सं· स्त्री·) बनाव, तैयारी।
सजनी—(सं. स्त्री·) सखी।
सजल—(गु.) पानी से भरा हुआ, गीला, भींगा, तर, नम।
सजातीय—(गु·) एक जाति का।

सजीव—(गु.) जीव वा प्राणवाला प्राणी।
सञ्चय—(सं· पु·) ढेर, इकट्ठा, संग्रह।
सञ्चार—(सं· पु·) गति, वृद्धि, उत्तेजना, चालन।
सञ्चारक—(क· पु·) नायक, चलानेवाला, रहबर।
सञ्चारण—(भा· पु·) प्रकाशन, सञ्चालन, सञ्चार, फैलाव।
सञ्चालन—(भा. पु·) चलाना, फैलाना।
सत्—(गु) सच, ठीक, परमेश्वर।
सत—(सं. पु·) जोर, बल, सार, हीर, रस, सत्वगुण।
सतराना—(क्रि·) क्रोध करना, कुढ़ना। [स्त्री।
सती—(सं.स्त्री·) दक्ष की बेटी, शिव की पत्नी (गु.) पतिव्रता
सत्कर्म—(गु.) अच्छा काम, पवित्र काम, सच्चा काम।
सत्कार—(सं. पु.) आदर, मान, खातिर।
सत्तम—(गु.) बहुत उत्तम, सज्जन, प्रधान। [उत्तमता।
सत्ता—(सं. स्त्री.) होना, विद्यमानता, बल, जोर, भलाई,
सत्व—(सं. पु·) सत्वगुण, बल, वस्तु, सार, प्राण, व्यवसाय, हृदय, सांख्य।
सत्य—(गु.) सच, ठीक, यथार्थ, सच्चा, सत्ययुग, शपथ, ब्रह्मलोक।
सत्यवादी—, सत्यसन्ध — }—(गु.) सच्चा, सच बोलनेवाला, सच्चीप्रतिज्ञावाला।
सत्वर—(अ.) तुरत।
सदन—(स·पु·) घर, पानी।
सदय—(गु.) दयावान।
सदसत्, सदासद—(गु·) (सत्+असत्=सदसत) सच झूठ।
सदा—(अ·) हमेशा, नित्य।
सदृश—(गु·) बराबर, समान, तुल्य, एक सा।
सदैव—(क्रि. वि·) सर्वदा, नित्यही।
सद्यः—(क्रि· वि·) तुरत, उसी समय।
सद्वंशजात—(गु.) अच्छे कुल में जन्मा हुआ।

सङ्कल्प—(सं. पु·) मन की इच्छा, प्रतिज्ञा, देना, प्रण।
संकुल—(गु·) भरा हुआ।
सङ्कीर्ण—(गु·) संकेत, कोतह, कम, थना।
सङ्कोच, सकोच—(सं. पु.) लाज, सिमटाव।
सङ्कोचित, संकुचित—(क.पु·) सकुचा हुआ, लज्जित, सिकुराहुआ।
संक्रांति—(सं. पु·) मेल, मिलाप।
संक्रमण—(भा. पु·) भ्रमण करना, घूमना, मिलजाना।
संक्रामक—(क· पु· घूमनेवाला, पर्य्यटन, छुतिहा।
संख्या—(सं· स्त्री·) गिनती।
सङ्गमस्थान—(सं· पु·) जहां दो नदियां मिलती या गिरती हैं।
सङ्गर—(सं· पु·) युद्ध।
सङ्गीन—(सं· पु·) गान, गानविद्या।
संगृहीत—(सं· पु.) इकट्ठा किया हुआ।
संग्रहणी—(स· स्त्री·) वहुत दस्त आना, एक प्रकार का रोग।
संग्राम—(सं. पु.) लड़ाई, युद्ध।
संघट्ट—(सं· पु·) साथ, मेल।
सची, शची—(सं. स्त्री.) इन्द्रपत्नी।
संघर्ष—(सं. पु.) रगड़।
सचिव—(सं· पु·) मन्त्री, सलाह देनेवाला।
सच्चरित्र—(सं· पु·) नेकचलन।
सच्चिदानन्द—(सं· पु·) परमेश्वर, परब्रह्म।
सचेतन—(सं· पु.) चेत रखनेवाला।
सजग—(गु.) होशियार।
सजधज—(सं· स्त्री·) वनाव, तैयारी।
सजनी—(सं. स्त्री·) सखी।
सजल—(गु.) पानी से भरा हुआ, गीला, भींगा, तर, नम।
सजातीय—(गु·) एक जाति का।

सजीव—(गु.) जीव वा प्राणवाला प्राणी।
सञ्चय—(सं. पु.) ढेर, इकट्ठा, संग्रह।
सञ्चार—(सं. पु.) गति, वृद्धि, उत्तेजना, चालन।
सञ्चारक—(क. पु.) नायक, चलानेवाला, रहबर।
सञ्चारण—(भा. पु.) प्रकाशन, सञ्चालन, सञ्चार, फैलाव।
सञ्चालन—(भा. पु.) चलाना, फैलाना।
सत्—(गु.) सच, ठीक, परमेश्वर।
सत—(सं. पु.) जोर, वल, सार, हीर, रस, सत्वगुण।
सतराना—(क्रि.) क्रोध करना, कुढ़ना। [स्त्री।
सती—(सं.स्त्री.) दक्ष की बेटी, शिव की पत्नी (गु.) पतिव्रता
सत्कर्म—(गु.) अच्छा काम, पवित्र काम, सच्चा काम।
सत्कार—(सं. पु.) आदर, मान, खातिर।
सत्तम—(गु.) बहुत उत्तम, सज्जन, प्रधान। [उत्तमता।
सत्ता—(सं. स्त्री.) होना, विद्यमानता, वल, जोर, भलाई,
सत्त्व—(सं. पु.) सत्त्वगुण, वल, वस्तु, सार, प्राण, व्यवसाय, हृदय, सांख्य।
सत्य—(गु.) सच, ठीक, यथार्थ, सच्चा, सत्ययुग, शपथ, ब्रह्मलोक।
सत्यवादी—, सत्यसन्ध—(गु.) सच्चा, सच बोलनेवाला, सच्चीप्रतिज्ञावाला।
सत्वर—(अ.) तुरत।
सदन—(सं.पु.) घर, पानी।
सदय—(गु.) दयावान।
सदसत्, सदासद—(गु.) (सत्+असत्=सदसत) सच झूट।
सदा—(अ.) हमेशा, नित्य।
सदृश—(गु.) बराबर, समान, तुल्य, एक सा।
सदैव—(क्रि. वि.) सर्वदा, नित्यही।
सद्यः—(क्रि. वि.) तुरत, उसी समय।
सद्देशजात—(गु.) अच्छे ...

सन—(सं. अ.) से, साथ, एक सम्वत्, (स्त्री·) सनई।
सनाह—(सं· पु.) बख्तर, जिरह, कवच।
सनेह (सं· पु·) प्रीति।
सन्त, सभ्य—(सं· पु.) सज्जन, साधु।
सन्तत—(क्रि. वि.) सर्वदा, लगातार, हमेशह, फैला हुआ।
सन्तप्त—(क. पु·) तपा हुआ, थका हुआ, गर्म, दुःखी।
सन्ताप—(सं. पु·) शोक, शोच, दुःख, आंच।
सन्तुष्ट—(गु·) प्रसन्न, तृप्त।
सन्तोष (भा· पु·) तृप्ति, सुख, सब्र।
सन्था—(सं. स्त्री.) पाठ, सबक।
सन्तति—सन्तान—(सं· स्त्री·) लड़कावाला, सन्तान, वंश।
सन्दिग्ध—(क. पु·) सन्देहयुक्त, जिस में सन्देह पाया जाय।
सन्दर्भ—(सं· पु.) रचना, प्रबन्ध, गुहना, गूढ़ार्थ, प्रकाश।
सन्देश—(सं. पु·) समाचार।
सन्देह—(सं· पु·) शक।
सन्दोह—(सं· पु.) समूह, विस्तार, पूर्ण, अच्छी भांति दुहना।
सन्धा—(सं. पु·) प्रतिज्ञा।
सन्धान—(सं·पु·) भेद लेना, पता, जोड़ना, युक्ति, परामर्श, कार्य्यप्रवृत्ति, आचरण।
सन्धि—(सं· स्त्री·) मेल, गांठ, छेद, सुलह, व्याकरण में दो अक्षरों की मिलावट, वस्तुओं वा हड्डियों की जोड़, सेंध, दर।
सन्ध्या—(सं·स्त्री.) सांझ, शाम, प्रभात, मध्यान्ह और सायंकाल की पूजा, जप ध्यान आदि।
सन्नद्ध—(गु·) लगा हुआ, तय्यार, तैयार, मुस्तैद।
सन्नाह—(स· पु·) कवच, बख्तर।
सन्निधि—(सं· पु.) समीप।

सन्निहित—(गु·) समीपी, समीप, पास का।
सपदि—(क्रि· वि.) शीघ्र, तुरत।
सपोला—(सं· पु·) सांप का बच्चा।
सप्त—(गु·) सात, ७।
सप्तम—(गु·) सातवां।
सप्ताह—(सं· पु.) सात दिन, हफ्ता।
सफर, सफरी—(सं· स्त्री·) मत्स्य, मछली, पुंटी, पोठिया।
सबडिवीजन (Sub Division)—(सं·पु·) सब = छोटा, डिवीज़न = भाग, टुकड़ा) उपभाग,विभाग, टुकड़े का टुकड़ा।
सभा—(सं· स्त्री.) समाज, मण्डली, दरबार।
सभापति—(सं· पु.) सभा का मालिक, मण्डली का स्वामी।
सभासद—(सं· पु.) सभा में बैठनेवाला मेम्बर (Member)।
सभ्य—(सं· पु·) सभा में बैठनेवाले मेम्बर (गु·) चतुर।
सभीत—(गु·) डरा हुआ।
सम—(गु·) समान, बराबर, जोड़ा।
समक्ष—(सं· पु·) सम्मुख, प्रत्यक्ष, सामने।
समग्र—(गु·) सब।
समता—(गु·) बराबरी, तुल्यता।
समर्थ—(गु·) बलवान, योग्य, लायक।
समर्थन—(भा· पु·) प्रमाण करना, ताईद करना।
समपृष्ठ—(गु·) समतल, बराबरवाला सतह।
समदर्शी—(क· पु·) दोनों ओर बराबर देखनेवाला, अपक्षपाती ईश्वर।
समय—(सं· पु·) वेला, अवसर, अवकाश।
समस्त—(गु.) कुल, बिलकुल, सब।
समर—(सं·पु·) लड़ाई।
समस्या—(सं· स्त्री.) तर्ज, कठिन बात। [भाड़, संयोग, मेला।
समागम—(सं· पु·) आगमन, आना, मिलना, मिलाप, भीड़

समाचार—(सं॰ पु॰) सन्देशा, खबर।
समाज—(सं. पु॰) सभा, समूह, झुण्ड।
समाधान—(सं॰ पु॰) शङ्का का उत्तर करना, ढारस, शांति, परमेश्वर का ध्यान।
समाधि—(सं॰ स्त्री॰) ध्यान, योगाभ्यास, इन्द्रियों को रोकना और मन को ईश्वर में लगाना, योगी के मृतक शरीर के गाड़ने की जगह, कब्र।
समान—(गु.) बराबर, तुल्य।
समानान्तर—(गु॰) बीच, बराबर, जिन दो रेखाओं के बीच समान अन्तर हो।
समाप्त—(सं॰ पु.) पूरा, सम्पूर्ण।
समारोह (सं॰ पु॰) भीड़ भाड़।
समालोचना—(सं॰ स्त्री॰) भली भांति देखना भालना।
समास—(सं॰ पु॰) संक्षेप, अविग्रह, व्याकरण में समास छः हैं—तत्पुरुष, कर्मधारय, अव्ययीभाव, द्वन्द्व, द्विगु, बहुव्रीहि।
समिध—(सं॰ स्त्री.) होम की लकड़ी।
समीकरण—(भा॰ पु.) बराबर करना।
समीचीन—(गु॰) सच, ठीक, उत्तम, योग्य, लायक।
समीप—(अ॰) पास, निकट।
समीर—(सं॰ पु॰) हवा, वायु।
समीहा—(सं॰ स्त्री.) अधिक चेष्टा करना, लाज, शर्म।
समुच्चय—(सं. पु.) इकट्ठा, राशि, समूह, वाक्यों का मेल।
समुदाय—(सं॰ पु॰) समूह, झुण्ड।
समुद्र—(सं. पु॰) सागर, समुन्द्र।
समूह—(सं. पु॰) भीड़।
समृद्ध—(सं. पु॰) भाग्यमान, सम्पदावाला, धनवान।
सम्पत्ति, सम्पद, सम्पदा—(सं॰ स्त्री॰) धन, दौलत, विभव।

सम्पन्न—(गु॰) पूरा, भरा, परिपूर्ण, धनवान।
सम्पर्क—(सं॰ पु॰) संसर्ग, लगाव, सम्बन्ध।
सम्पात—(सं. पु.) सम्बन्ध, लगाव, संसर्ग।
सम्पादक—(क॰ पु.) पूरा करने वाला, प्रबन्ध करनेवाला, पानेवाला, निरूपक, समापक, कहनेवाला।
सम्पादन—(भा. पु.) निरूपण, बनाना, कथन, समाप्ति करना।
सम्पुट—(सं॰ पु॰) डब्बा, मिलान।
सम्पूर्ण—(गु॰) पूरा, सब।
सम्प्रदान—(सं॰ पु.) दान देना, व्याकरण में चौथा कारक।
सम्प्रदाय—(सं॰ पु.) परम्परा का धर्म, परिपाटी।
सम्बन्ध—(सं॰ पु.) मेल, लगाव, नाता, छठा कारक।
सम्बन्धी—(सं॰ पु.) सम्बन्ध रखनेवाला, नातेदार।
सम्बल—(सं॰ पु॰) राह खर्च।
सम्बोधन—(सं॰ पु॰) चिताना, सामने करना, पुकारना, व्याकरण में ८ वां कारक।
सम्भव—(सं॰ पु॰) पैदा होना, कारण, मिलना, होनहार, उचित।
सम्भावना—(गु॰) सम्भव होना, चाह, दुविधा।
सम्भाषण—(भा॰ पु॰) बोलचाल, बातचीत।
सम्भ्रम—(सं॰ पु॰) घबराहट, वेग, उतावली, घूमना, डर।
सम्मति—(सं॰ स्त्री॰) राय, सलाह, इच्छा।
सम्मिलित—(गु॰) संयुक्त, मिला हुआ।
सम्यक्—(क्रि॰ वि॰) अच्छी तरह से, ठीक, लियाकत के साथ।
सम्राट—(सं॰ पु॰) राजा, चक्रवर्ती राजा, शाहनशाह।
सर—(सं॰ पु॰) तालाब, झील, तीर बाण, (अंगरेज़ी में Sir) महाशय, साहिब।
सरपोश (سرپوش)—(सं. पु॰) ढकना, ढपना, चिलम का ढपना।
सरल—(गु॰) सीधा, सच्चा।

सरवर, सरोवर—(सं॰पु॰) ताल, तालाव, पोखरा।
सरवरि—(सं॰ स्त्री॰) वरावरी।
सरस—(गु॰) रसीला, रसवाला।
सरसाना—(क्रि॰) वढ़ना, अधिक होना।
सरसिज—(सं॰ पु॰) कमल।
सरस्वती—(स॰ स्त्री॰) वाणी, बोली, वागीश्वरी, शारदा, रागकी देवी, एक नदी का नाम।
सरित, सरिता—(सं॰ स्त्री॰) नदी, दरिया।
सरीसृप—(सं॰ पु॰) छाती के वल से चलनेवाला जीव, सांप आदि।
सरुज—(गु॰) रोगी।
सरेश—(सं॰ पु॰) लसलसी चीज जिस से लकड़ी आदि की चीजें, जोड़ते हैं और जो खुर और सींग के छीलन से वनता है।
सरोजभव—(सं॰ पु॰) ब्रह्मा, कमल से उत्पन्न।
सर्क्यलर(Circular)—(सं॰ पु॰) विज्ञापनपत्र, सूचना।
सर्ग—(सं॰ पु॰) उत्पत्ति, निश्चय, अध्याय।
सर्प—(सं॰ पु॰) सांप।
सर्प्पी—(सं॰ पु॰) घी।
सर्व—(गु॰) सव, (पु॰) शिव।
सर्वज्ञ—(क॰ पु॰) सव जाननेवाला, परमेश्वर, शिव।
सर्वत्र—(गु॰) सव जगह।
सर्वथा—(अ॰) सव प्रकार।
सर्वदा—(गु॰) सदा, सव समय।
सर्वनाम—(सं॰ पु॰) संज्ञा, प्रतिनिधि, जैसे मैं तू वह आप।
सर्वस—(सं॰ पु॰) सव धन, सव कुछ।
सर्वाङ्ग—(गु॰) समूचा अङ्ग।
सर्वोपरि—(गु॰) सव से वढ़ कर, सव से वड़ा।
सविता—(सं॰ पु॰) सूर्य्य।

सलभ—(सं॰ स्त्री॰) पतंग, टिड्डी, टीड्डी।
सलिल—(सं॰ पु॰) पानी, आसान।
सहचर—(क॰ पु॰) साथी, साथ चलनेवाला।
सहनशील—(गु॰) ग़मख़ोर, परहेज़ी।
सहसा—(क्रि॰ वि॰ अव्य॰) झटपट, बिना विचारे, एकाएक।
सहस्र—(गु॰) हजार।
सहसानन—(सं॰ पु॰) शेषनाग जिस के हजार मुंह हैं।
सहस्राक्ष—(सं॰ पु॰) इन्द्र, विष्णु, ईश्वर, हजार आंखवाला।
सहानुभूति—(सं॰ स्त्री॰) हमदर्दी।
सहायक—(क॰ पु॰) सहायता देनेवाला, मददगार।
सहारा—(सं॰ पु॰) मदद, सहायता।
सहिदानी—(सं॰ स्त्री॰) निशानी, चिन्ह।
सहिष्णु—(क॰ पु॰) सहनशील, क्षमावान।
सहोदर—(सं॰ पु॰) एकही पेट अर्थात् एक माता से जन्मा हुआ भाई, सगा भाई।
सांकर, सांकरी—(गु॰) सिंकली, कर्धनी, नाका, घाटा, कठिनता, दुःख, झंझट, संकड़ा, सँकेत, तंग।
साक्षात—(गु॰) प्रगट, साम्हने।
साख—(सं॰ स्त्री॰) गवाही, विश्वास।
सांग, सांगी—(सं॰ स्त्री॰) बर्छी, सेल।
सागर—(सं॰ पु॰) समुद्र।
साज़िश (سازش)—(सं॰ पु॰) मेल, संयोग, कपट प्रबंध।
साटोप—(गु॰) विकट, घमण्डी, सगर्व।
सात्विक—(क॰ पु॰) सतोगुणी, साधु, सच्चा, सरल।
साथरी—(सं॰ स्त्री॰) पत्तों का बिछौना, चटाई, आसनी।
सादर—(क्रि॰ वि॰) आदर से, सम्मान से।
सादृश्य—(भा॰ पु॰) समानता, बराबरी।
साध—(सं॰ पु॰) साधु, सन्त, वैरागी।

साधक—(क॰ पु॰) साधनेवाला, अभ्यासी, तपस्वी।
साधारण—(गु॰) सामान्य, सहज, बराबर, सीधा।
साधारणतः—(गु॰) सामान्य रीति से, आम तौर से।
साध्य—(गु॰) पूरा होने योग्य।
सानन्द—(गु॰) आनन्द के साथ।
सानुकूल—(गु॰) कृपालु, दयालु, सहायक।
सान्त्वना—(सं॰ स्त्री॰) ढाढ़स, धीरज, प्रबोध, तसल्ली।
साफल्य—(क॰ पु॰) फलित होना, सफलता, कामयाबी।
साबर } —(सं॰ पु॰) एक तरह का बारहसींगा, बारहसींगे का चमड़ा।
सांबर }
सामग्री—(सं॰ स्त्री॰) सामा, सामान, असबाब।
सामन्त—(सं॰ पु॰) सरदार, बड़े राजा के अधीन छोटे छोटे जमीन्दार।
सामयिक—(गु॰) समय का, औसर का।
सामा—(सं॰ स्त्री॰) सामान, सामग्री।
सामान्य—(गु॰) आम।
साम्प्रत—(अ॰) इस समय।
सायुज्य—(सं॰ पु॰) एक प्रकार की मुक्ति, परमेश्वर में मिल जाना, एक हो जाना, अभेद।
सार—(सं॰ पु॰) गुदा, मूल, बल, खाद, खात, लोहा, धन, लाभ, अच्छा, श्रेष्ठ।
सारङ्ग—(सं॰ पु॰) मोर, सांप, बादल, हरिन, पानी, पपीहा, हाथी, हंस, कोकिल, सिंह, कामदेव, धनुष आदि।
सारथी—(क॰ पु॰) रथवान, रथ हांकनेवाला।
सार्थक—(गु॰) अर्थ सहित, सिद्ध, सफल।
सारिका—(सं॰ स्त्री॰) मैना, पक्षी।
सार्वभौम—(सं॰ पु॰) सब संसार का राजा, चक्रवर्त्ती।
सालन (سالن)—(सं॰ पु॰) मांस, साग, तरकारी।

सावक—(सं॰ पु॰) बच्चा।
सावकाश—(सं॰ पु॰) फुर्सत पाया हुआ।
सावधान—(गु॰) होशियार।
साहस—(सं॰ पु॰) बल, वीरता, ज़ोर, हिम्मत।
साहित्य—(सं॰ पु॰) एक विद्या, जिस से बोली बोलने और लिखने पढ़ने की सुन्दरता जानी जाती है, काव्य अलङ्कार आदि, मेल, साथ।
सिकता—(सं॰ स्त्री॰) बालू, रेत।
सिक्ख—(सं॰ पु॰) शिष्य, छात्र, चेला, नानक के मत माननेवाले।
सिक्त—(सं॰ पु॰) सींचा हुआ, भींगा, पटाया हुआ।
सित—(गु॰) उजला, धौला, शुक्ल, सफेद।
सिथिया—(सं॰ पु॰) मध्य एशिया।
सिद्ध—(सं॰ पु॰) योगी, तपस्वी, (गु॰) पूरा, पक्का, तैयार, सफल, साबित किया हुआ।
सिद्धान्त—(सं॰ पु॰) सच ठहराई हुई बात, परिणाम, नतीजा, [निर्णय।
सिन्धु—(सं॰ पु॰) समुद्र, एक देश और नद।
सिन्धु—(सं॰ पु॰) हाथी।
सिंहलद्वीप—(सं॰ पु॰) लङ्का, सीलोन।
सिंहासन—(सं॰ पु॰) राजा का आसन, तख्त।
सिमूम—(सं॰ स्त्री॰) अरब के रेगिस्तान की गर्म हवा।
सिल्ट (Siet)—(सं॰ स्त्री॰) छारन, झाड़न, सिट्ठी।
सीकर—(सं॰ पु॰) पानी के कण, पसीना।
सीता, सीय—(सं॰ स्त्री॰) जानकी, राजा जनक की कन्या, हल के अग्रभाग से जिन की उत्पत्ति हुई है।
सींदना—(क्रि॰) दुखी होना, दुख पाना।
सीरा—(गु॰) ठंढा, पतली राब।
सुअन—(सं॰ पु॰) पुत्र, बेटा।
सुकण्ठ—(सं॰ पु॰) सुग्रीव, सुन्दर कण्ठवाला।

सुकुमार—(गु.) कोमल।
सुकृत—(सं॰ पु॰) धर्म, पुण्य, अच्छा काम।
सुखदायक, सुखदायिनी—(क॰ पु॰) सुख देनेवाला।
सुखपाल—(सं. पु.) पालकी।
सुखमा—(सं. स्त्री.) सुन्दरता, शोभा, सब से बढ़ कर शोभा।
सुगन्ध—(सं॰ स्त्री॰) अच्छी वास, महक, खुशबू।
सुगन्धित—(गु॰) सुगन्धवाला, खुशबूदार।
सुगम—(गु॰) सहज।
सुख्याति—(भा. स्त्री.) सुयश, बड़ी नामवरी, प्रसिद्धि।
सुघड़—(गु.) सुन्दर।
सुठि—(गु.) सुन्दर।
सुजान—(गु.) ज्ञानी, चतुर, अच्छा जानकार।
सुत—(सं. पु.) बेटा।
सुता—(सं॰ स्त्री॰) बेटी, लड़की।
सुदर्शन—(सं॰ पु॰ विष्णुचक्र, (गु.) जो देखने में अच्छा हो
सुदृढ़—(गु॰) बहुत बली, खूब मजबूत।
सुधर्मा—(सं॰ स्त्री॰) देवसभा, सुरसमाज।
सुधा—(सं॰ पु॰) अमृत, चूना।
सुधार—(सं. स्त्री.) मरम्मत।
सुधाकर—(सं॰ पु॰) चन्द्रमा।
सुधि, सुध—(सं॰ स्त्री॰) चेत, सन्देसा, याद, ख़बर।
सुनासीर—(सं॰ पु॰) इन्द्र।
सुन्दरि, सुन्दरी—(सं॰ स्त्री॰) रूपवती।
सुन्दरता (सं॰ स्त्री॰) शोभा, सुघराई।
सुपास—(सं॰ पु॰) सुख, सुभीता, आराम। [सदर कचहरी
सुप्रीमकोर्ट – (Supreme Court)—(सं॰ स्त्री॰) प्रधान सभा
सुम—(गु॰) सोया।

सुफल—(गु) सिद्ध, सफल, फलदायक ।
सुप्तावस्था—(सं· स्त्री·) सोने की हालत, सोते समय ।
सुभग—(गु·) सुन्दर भागवाला, सुरूप ।
सुमति—(गु·) अच्छी बुद्धि ।
सुमन—(सं. पु·) फूल ।
सुमेरु—(सं. पु·) एक पहाड़ जहां देवताओं का निवास माना जाता है, उत्तर ध्रुव, माला के सिरे पर का दाना, मनका ।
सुयश—(सं. पु.) अच्छा यश, अच्छा नाम, सुख्याति ।
सुयोग्य—(गु·) लायक, काबिल ।
सुर—(सं· पु·) देवता, सूर्य ।
सुरगुरु, सुराचार्य—(सं· पु·) देवताओं के गुरु बृहस्पति ।
सुरतरु—(सं· पु.) कल्पवृक्ष, देवताओं का वृक्ष ।
सुरङ्ग—(सं. स्त्री·) ज़मीन के नीचे का रास्ता, सुन्दर रङ्गवाला ।
सुरधेनु—(सं· स्त्री.) इन्द्र की गाय, कामधेनु ।
सुरपति—(सं·पु.) इन्द्र, देवताओं के स्वामी ।
सुरपुर, सुरलोक—(सं· पु·) इन्द्रपुरी स्वर्ग ।
सुरभि—(सं· पु.) सुगन्ध, (स्त्री.) कामधेनु गाय (गु·) सुगन्धित, [सुन्दर ।
सुरसरि—, सुरापगा— —(सं· स्त्री·) आप = जल समूह, ग = चलनेवाली । गङ्गा, देव-नदी ।
सुरसेनप—(सं· पु·) कार्तिकेय ।
सुरा—(सं· स्त्री·) मदिरा, दारू, मद्य, शराब ।
सुरम्य—(गु·) सुन्दर, रमणीक ।
सुलभ—(गु·) सहज, सुगम, जो सहज में मिल जाय ।
सुलोचना—(सं· स्त्री·) मेघनाद की स्त्री, जिस स्त्री का नेत्र सुन्दर हो ।
सुवन—(सं· पु.) बेटा, पुत्र, लड़का ।
सुवर्ण—(सं·पु.) सोना, हरि, चन्दन, अच्छी जात, सुन्दर, सुरंग ।

सशील—(गु॰) सत्स्वभाव, जिस का सुभाव अच्छा हो।
सुप्त—(क. पु॰) सोया हुआ, ज्ञानशून्य।
सुस्थ—(गु॰) नीरोग।
सुहृद—(गु.) मित्र, दोस्त, सखा।
सूक्ष्म—(गु॰) छोटा, मिहीन।
सूचक—(क॰ पु॰) जतलानेवाला, बतलाने वाला, बोधक, पिशुन, चुगुल, खल, चवाई।
सूची—(सं॰ स्त्री.) सूई, नियमावली, फिहरिस्त।
सूत—(सं. पु॰) सारथी, पुराण जाननेवाला, रथवान, डोरा।
सूतक—(सं. पु॰) जननाशौच।
सूत्रधार—(सं. पु.) प्रधान नट, नाटक के खेल का मुखिया।
सूनु—(सं. पु॰) बेटा, पुत्र, लड़का छोटा भाई।
सूर—(अ.) सूर्य्य, सूरदास, सूरमा।
सूरमा—(गु.) योद्धा, वीर।
सृष्टि—(सं. स्त्री॰) संसार, उत्पत्ति, जगत्।
सृष्टिकर्त्ता—(क॰ पु.) संसार का उत्पन्न करनेवाला, ब्रह्मा।
सूबा—(सं. पु॰) प्रदेश, देश का एक भाग, जैसे बंगाल, विहार आदि।
सेक्रेटरी (Secretary)—(सं॰पु.) कार्याध्यक्ष, कार्यसम्पादक।
सेंटप (Sent up)—(सं॰ पु॰) जो भेजा गया।
सेन्टल (Central)—(गु.) बीच वा मध्य का, बिचला।
सेट्लमेंट (Settlement)– बन्दोबस्त।
सेतु—(सं॰ पु॰) पुल, बांध, नियम।
सेना—(सं॰ स्त्री॰) कटक, फौज, दल सिपाह।
सेनानी—(सं॰ पु॰) सेनापति।
सेमीकोलन (Semicolou)—(सं॰ पु॰) पाठ में विश्राम के लिये एक प्रकार का चिन्ह।
सेवक—(क. पु.) दास, नौकर, सेवा करनेवाला।

सेव्य—(सं॰ पु॰) सेवा करने के योग्य, पूजा करने के योग्य।
सेशन्स (Sessions)—(सं॰ पु.) फौजदारी।
सैन—(सं॰ स्त्री॰) इशारा, फौज।
सैन्धव—(सं॰ पु॰) घोड़ा, नमक, सिन्धदेश का रहनेवाला।
सैन्य—(सं. स्त्री॰) कटक, दल, फौज, सेना।
सोडा (Soda)—(सं॰ पु॰) खारा पदार्थ।
सोपान—(सं॰ पु॰) सीढ़ी।
सोम—(सं॰ पु॰) चन्द्रमा, कपूर, कुवेर, यमराज, वायु, सोमलता।
सौजन्य—(भा॰ पु॰) सुजनता भलमनसाहत।
सौध—(सं॰ पु॰) राजमन्दिर, महल, कोठा।
सौन्दर्य्य—(भा॰ पु॰) सुन्दरता, रंगरूप।
सौमित्र—(सं॰ पु॰) लक्ष्मण।
सौम्य—(गु॰) प्रियदर्शी, मनोहर।
सौर—(गु॰) सूर्य सम्बन्धी, सूरज का, शनीचर।
सौरभ—(सं॰ पु॰) सुगन्ध।
सौलिड (Solid)—(गु.) घन, ठोस।
स्टेपल (Staple)—(सं॰ पु॰) साइबीरिया का वृक्षहीन मैदान।
स्तनपायी—(क॰ पु॰) दूध पीनेवाले।
स्टैण्डर्ड (Standard)—(सं॰ पु॰) क्लास, श्रेणी, मान, कक्षा, माननीय, प्रधान।
स्टीम—(Steam)—(सं॰ पु॰) धूआं, भाफ।
स्टेशन (Station)—(सं॰ पु॰) टिकान, स्थान, जहां रेलगाड़ी से लोग उतरते और चढ़ते हैं।
स्तन—(सं. पु॰) थन, छाती।
स्तब्ध—(गु॰) ठहरा हुआ, चुप, रुका हुआ, उजड्ड।
स्तम्भ—(सं॰ पु॰) खंभा, थंभ, थूनी, रुकाव, अटकाव।
स्तवक—(सं. पु॰) गुच्छा, गुलदस्ता।

स्तव, स्तुति—(सं· स्त्री·) प्रशंसा, बड़ाई, तारीफ।
स्त्रीधन—(सं· पु·) दहेज, किसी प्रकार से जो रुपया वा गहना आदि स्त्री को दिया गया हो।
स्त्रीपुष्प—(सं· पु·) नारीफूल, औरत का गुण रखनेवाला फूल।
स्त्रीलिङ्ग—(गु·) स्त्रीचिन्ह, स्त्रीवाची।
स्थल—(सं· पु·) सूखी भूमि, खुश्क जमीन, स्थान।
स्थापन—(सं. पु·) बैठाना, रखना, ठहराना।
स्थापित—(सं· पु·) स्थापन किया हुआ।
स्थिति—(भा· स्त्री·) ठहराव, वास, रहना, आसन।
स्थिर—(गु·) ठहरा हुआ, अटल।
स्थूल—(गु·) मोटा, बड़ा, फूला हुआ।
स्नान—(सं· पु·) न्हाना, नहाना।
स्नायु—(सं· पु·) नस, रग।
स्निग्ध— (गु·) चिकना।
स्नेह—(सं· पु·) प्रेम, प्यार, छोह, मोह, तेल।
स्पञ्ज (Sponge)—(सं· पु·) पानी सोखनेवाला एक पदार्थ, समुद्रफेन।
स्पर्द्धा—(सं· स्त्री·) बैर, डाह, जलन, हिस्का, ईर्षा।
स्पर्श—(सं·पु·) छूना, एक प्रकार का रोग जो छूने से हो जाता है।
स्पष्ट—(गु·) साफ, शुद्ध।
स्पिरिट (Spirit)—(सं· पु·) सार, मद्यसार, मदिरा, शराब।
स्प्रिङ्ग (Spring)—(सं· पु·) कमानी।
स्पर्शेन्द्रिय—(सं. स्त्री·) छूने की इन्द्रिय, त्वचा।
स्पृहा—(सं· स्त्री·) चाह।
स्फटिक—(सं· पु·) बिल्लौर पत्थर।
स्फूर्ति—(सं· स्त्री·) स्फुरन, हिलाव, चञ्चलता।
स्मर—(सं· पु·) कामदेव।
स्मरण—(सं· पु·) चिन्तन, सुध, चेत, याद।
स्मरणशक्ति—(सं· स्त्री.) याद रखने की शक्ति।

स्मारक—(क॰ पु॰) याद करानेवाला।
स्मित—(सं॰ पु॰) थोड़ी हंसी।
स्मृति—(सं॰ स्त्री॰) याद, स्मरण, धर्मशास्त्र जैसे मनुस्मृति आदि।
स्यन्दन—(सं॰ पु॰) रथ, सारथी, जल, वृक्ष।
स्यात्—(अ॰) शायद।
स्यानपन—(भा॰ पु॰) चतुराई, निपुणता, बुद्धिमानी।
स्रक—(सं. पु॰) माला।
स्रोत—(सं॰ पु॰) सोता, नाला, बहाव, धारा।
स्लीपर—(Slipper)—(सं॰ पु॰) बिना एँड़ी का जूता, चट्टी जूता, [चपौरा।
स्लेट—(Slate)—(सं॰ पु॰) पत्थर की पाटी जिस पर लड़के लिखते हैं।
स्व—(अ॰) अपना, आप, ख़ुद।
स्वकीया—(सं॰ स्त्री.) अपनी व्याही स्त्री।
स्वच्छन्द, स्वतन्त्र—(गु॰) अपनी इच्छा के अनुसार चलनेवाला, स्वाधीन, मनमौजी।
स्वतः—(क्रि. वि.) आप से आप, आपही, स्वभाव से, स्वयं।
स्वधा—(सं॰ स्त्री.) अग्नि की स्त्री, मातृका देवी, पितृ लोगों के लिये जल वा पिण्डदान का मन्त्र।
स्वप्न—(सं. स्त्री॰) जो सोते समय देखा जाय, सपना।
स्वभाव—(सं॰ पु॰) प्रकृति, सुभाव, टेव, बान, आदत।
स्वयम्—(अ.) आप, आप से।
स्वयम्भू—(क॰ पु॰) ब्रह्मा, आप से पैदा होनेवाला।
स्वयंसिद्ध—(गु॰) आप से जो सच हो, जिस की सचाई के लिये किसी प्रमाण की आवश्यकता न हो।
स्वर—(सं॰ पु॰) शब्द गानविद्या में तान सुर, वे अक्षर जिन का उच्चारण व्यञ्जनों के बिना ही आप से आप हो, जैसे अ आ इ ई इत्यादि।

स्वरापगा—(सं· स्त्री.) आकाशगङ्गा।
स्वरूप—(सं· पु·) अपना रूप, छवि, शोभा, सुन्दरता।
स्वर्ग—(सं· पु·) वैकुण्ठ, देवताओं के रहने की जगह।
स्वर्गवास—(सं· पु.) मृत्यु, स्वर्ग में जिस का वास हो।
स्वर्गीय—(गु·) स्वर्ग का, मृत।
स्वर्णकार—(सं· पु·) सोनार।
स्वर्णमुद्रा—(सं· स्त्री·) अशर्फी, मुहर।
स्वल्प—(गु·) बहुत थोड़ा, बहुत छोटा।
स्वस्ति—(सं· पु.) कल्याण, भला।
स्वस्त्ययन—(गु.) शुभ।
स्वस्थ—(क· पु.) सुख से रहनेवाला, (गु·) नीरोग, सुखी।
स्वागत—(सं· पु·) आये हुए का आदर, सम्मान, सत्कार, कुशलक्षेम।
स्वाद—(सं. पु·) रस, सवाद, मज़ा।
स्वादयुक्त, स्वादिष्ट—(गु·) स्वादवाला, मज़ेदार।
स्वाधीन—(गु·) स्वतन्त्र, खुदसर।
स्वाभाविक—(गु·) जो स्वभाव से हो, आप से आप होनेवाला।
स्वामी—(सं· पु.) प्रभु, राजा, पति, गुरु, मालिक।
स्वार्थ—(सं. पु.) अपने लिये, अपने लाभ की चाह।
स्वार्थी—(गु·) आपकाजी, आत्मपालक, खुदगरज़।
स्वास्थ्य—(भा· पु.) आरोग्य, तन्दुरुस्ती, सुख, सन्तोष, नीरोगता।
स्वीकार, स्वीकृत—(भा. पु.) अङ्गीकार, मानना, मंजूर, कबूल।
स्वेद—(सं· पु·) पसीना, ताप, गर्मी।
स्वेदज—(सं. स्त्री·) चीलर, ढील आदि छोटे२ जानवर जो पसीने से या भाफ वा गर्मी से पैदा हो जाते हैं।
स्वप्रबन्ध—(सं. पु.) अपना रचा हुआ, बनाया हुआ।
स्वैरिणी—(सं· स्त्री·) कुलटा, स्वेच्छाचारिणी, छिनार औरत।

ह

ह—(सं. पु.) शिव, जल, शून्य, आकाश, मङ्गल, स्वर्ग, हाय, रुधिर।
हंस—(सं· पु·) पक्षी विशेष, जीव, ब्रह्म, सूर्य।
हंसक—(क· पु·) बिछुवा, घुंघरू, पायजेब।
हंसगमनी, हंसगामिनी—(सं· स्त्री·) हंस के समान चाल चलने-वाली स्त्री।
हट्ट—(सं· स्त्री.) बाजार, हाट, दूकान।
हड़ताल—(सं· स्त्री.) बाजारबन्द, सब काम बन्द कर देना।
हठात्—(क्रि· वि·) बलात्, बल से, जबरन।
हतना, हनना—(क्रि·) मारना, मार डालना।
हनन—(भा· पु.) मारना, घात, हिंसा।
हन्ता—(क· पु·) मारनेवाला, घातक।
हताशा—(गु·) नाउम्मीद, छिन्नाशा।
हय—(सं· पु·) घोड़ा।
हर—(सं. पु.) शिव, हरण करनेवाला।
हरण—(भा· पु.) लूट, चोरी, बल से किसी की वस्तु ले लेना।
हरष—(सं. पु·) हर्ष, आनन्द, सुख, प्रसन्नता।
हरगिरि—(सं. पु·) महादेव का पर्वत, कैलाश पर्वत।
हराम (उर्दू)—(गु·) शास्त्रविरुद्ध, निषिद्ध।
हरावल—(सं· स्त्री·) आगे की सेना।
हरास—(सं. पु·) ह्रास, दुख, शोक, घटती।
हरि—(सं· पु.) विष्णु, इन्द्र, सांप, मेंडक, सिंह, घोड़ा, सूर्य, चांद, सूगा, वानर, यमराज, हवा, ब्रह्मा, शिव, किरण, मोर, कोयल, हंस, आग, धनुष, पहाड़, हाथी, कामदेव, हरारंग। [विष्णु।
हरिअरे,—(गु·) हराहरा।
हरित्—(गु·) हरा, पीला, सूर्य का घोड़ा, सिंह, सूर्य, दिशा,

हरिद्रा—(सं· स्त्री.) हल्दी, हरदी।
हरियान, हरिवाहन—(सं· पु·) गरुड, विष्णु की सवारी।
हरीश—(सं· पु·) वानरों का राजा, सुग्रीव।
हर्त्ता—(सं· पु·) हरनेवाला।
हर्म्य—(सं· पु·) प्रासाद, कोठा।
हर्ष—(सं·पु·) आनन्द, खुशी, सुख।
हल—(सं· पु·) खेत जोतने का हर, व्यंजन अक्षर. कठिन को सहज मे करदेना।
हलचल—(सं· पु·) खलबली, हल्ला।
हलधर—(सं· पु·) वलराम, वलदेव, हल के धरनेवाले।
हलायुध—(सं· पु·)वलदेव जी, हलधर।
हलाहल, हालाहल—(सं· पु·) विष, ज़हर, माहुर।
हवन—(सं· पु·) होम, यज्ञ, आहुति।
हवस (هوس) —(सं·स्त्री.) हौंस, चाह, लालसा, इच्छा, ख्वाहिश।
हविः, हविष्य—(सं· पु·) घी, तिल, चावल आदि होम की सामग्री।
हस्त— सं· पु·) हाथ, हाथी की सूंड़, एक नक्षत्र का नाम।
हस्तगत—. म. पु·) हाथ में आया हुआ।
हस्तलिपि—(सं. स्त्री·) हाथ का लिखना, हाथ का लेख।
हस्ताक्षर—(सं· पु·) हाथ का लेख, दस्तखत।
हस्तामलक—(गु·) सहज, सुगम, एक ग्रन्थ का नाम।
हस्तिनापुर—(सं· पु·) पुरानी दिल्ली, हस्ती राजा ने जिस को वसाया था।
हस्ती—(सं· पु·) हाथी।
हस्तिनी—(सं. स्त्री·) हथिनी।
हाइड्रोजन (Hydrogen)—(सं· पु·) उद्जनक, जलकर, पानी उत्पन्न करनेवाला।

हाई कोर्ट (High court)—(सं. स्त्री.) ऊँचे दरजे की कचहरी, प्रधान न्यायालय।
हाउस (House)—(सं. पु.) घर, मकान।
हाट—(सं. पु.) बाजार, पैंठिया, दूकान।
हाटक—(सं. पु.) सोना, धतूरा, सोने का बना हुआ।
हाटकपुर—(सं. पु.) सोने का नगर, लङ्का।
हानि—(सं. स्त्री.) घटी, टूटी, नुकसान।
हायन—(सं. स्त्री.) वर्ष, वत्सर, वर्ष का दिन।
हार—(सं. पु.) माला, (स्त्री.) पराजय, घटी, शिकस्त।
हार्दिकदुःख—(सं. पु.) दिलीदुख, मन का क्लेश।
हार्य्य—(गु.) चोराने के लायक, हर्तव्य।
हाव—(सं. पु.) नखरा, युवती की विलासचेष्टा।
हास्य—(सं. पु.) हंसी, कौतुक, खेल, ठट्ठा।
हाहा—(क्रि. वि.) हाय, हाय, आह, ओह, अचम्भा, वाह वाह।
हाहाकार—(सं. पु.) हाय हाय करना, घबराहट।
हि—(अ.) निश्चयबोधक, जिस से, चूंकि।
हिंसक, हिंसूक—(क. पु.) मारनेवाला, घातक, वधिक, दुष्ट, पापी, जङ्गली जानवर, बाघ चीता आदि।
हिंसा—(सं. स्त्री.) मारना, घात, नुकसान।
हिजरा—(सं. पु.) नपुंसक, नामर्द।
हित—(सं. पु.) प्यार, उपकार, भलाई, उचित, भला।
हितकारी, हितू—(क. पु.) हित करनेवाला, भला करनेवाला, मित्र, सज्जन, उपकारी।
हितैषी—(क. पु.) परोपकारी, दूसरे की भलाई चाहनेवाला।
हितोपदेश—(सं. पु.) भली शिक्षा, एक पुस्तक का नाम।
हिन्द—(सं. पु.) हिन्दुस्तान, भारतखण्ड।

भारतेन्दु की नाटकावली

नेय आकार में छप कर तैयार है।

इस वार यह नाटकावली निर्णयसागर प्रेस के सुन्दर टाइपों में वहुत चिकने कागज पर वड़ी शुद्धता और सफाई के साथ छापी गई है। रत्नावली (प्रस्तावना भी वावू साहव ने अनुवाद किया था) भी पूरी करा दी गई है। इस से इस की पृष्ठ संख्या पहले से वहुत वढ़ गयी है। तौ भी सर्वसाधारण की सुविधा का ख्याल करके भारतेन्दु जी के ग्रन्थों के अधिक प्रचार की अभिलाषा से १०४८ पृष्ठों की इस वड़ी और सुन्दर कपड़े की जिल्द वाली पुस्तक का मूल्य केवल ३) रखा गया है। हिन्दी प्रेमियों को शीघ्र ही इसे मंगा कर लाभ उठाना चाहिए।

☞ इस नाटकावली की सव पुस्तकें अलग भी मिल सकती हैं।

मिलने का पता—मैनेजर खड्गविलास-प्रेस, वांकीपुर।
